मुराकामी

नॉर्वे की लकड़ी

हारुकी मुराकामी का जन्म 1949 में क्योटो में हुआ था। उनकी उपन्यास रचनाओं में 'डांस डांस डांस', 'द एलिफेंट वैनिशेस', 'हार्ड-बॉइल्ड वंडरलैंड एंड द एंड ऑफ द वर्ल्ड', 'ए वाइल्ड शीप चेज़', 'द विंड-अप बर्ड

क्रॉनिकल', 'साउथ ऑफ द बॉर्डर', 'वेस्ट ऑफ द सन' और 'स्पुतनिक स्वीटहार्ट' शामिल हैं। उनकी पहली गैर-कथा रचना 'अंडरग्राउंड' टोक्यो मेट्रो गैस हमले का विश्लेषण है। उन्होंने एफ. स्कॉट फिट्जगेराल्ड, ट्रूमैन कैपोर्टे, जॉन इरविंग और रेमंड कार्वर की रचनाओं का जापानी भाषा में अनुवाद किया है।

जे रूबिन हार्वर्ड विश्वविद्यालय में जापानी साहित्य के प्रोफेसर हैं। उन्होंने हारुकी मुराकामी की रचना 'द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल' का अनुवाद किया है और 'हारुकी' नामक एक अध्ययन पूरा किया है।

हारुकी मुराकामी की अन्य रचनाओं का अंग्रेजी अनुवाद भी उपलब्ध है।

नाचो नाचो नाचो
हाथी गायब हो जाता है
हार्ड-बॉयल्ड वंडरलैंड और दुनिया का अंत
एक बेतहाशा भेड़ का पीछा
विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल
सीमा के दक्षिण में, सूर्य के पश्चिम में
स्पुतनिक स्वीटहार्ट
गैर-काल्पनिक
भूमिगत

हारुकी मुराकामी
नॉर्वे की लकड़ी
जापानी से अनुवादित
जे रूबिन

इस ई-बुक को बेचा नहीं जा सकता।

स्कैन किया गया: डिटैब

हारविल प्रेस
लंदन
कई अवसरों के लिए
3

यह पुस्तक पहली बार 1987 में टोक्यो के कोडान्शा द्वारा 'नोर्मेई नो मार्ल' शीर्षक से प्रकाशित हुई थी।
यह पुस्तक सर्वप्रथम ग्रेट ब्रिटेन में वर्ष 2000 में द हार्विल प्रेस, 2 एज़्टेक रो, बर्नर्स रोड, लंदन N10PW द्वारा प्रकाशित की गई थी।
इस पेपरबैक संस्करण का पहला प्रकाशन 2001 में हुआ था।
www.harvill.com
1 3 5 7 9 8 6 4 2
© हारुकी मुराकामी, 1987
अंग्रेजी अनुवाद © हारुकी मुराकामी, 2000
हारुकी मुराकामी इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने के नैतिक अधिकार का दावा करते हैं। ब्रिटिश लाइब्रेरी से एक सीआईपी कैटलॉग रिकॉर्ड उपलब्ध है (आईएसबीएन 186046 818 7)।
विल्टशायर के मार्लबोरो स्थित लिबानस प्रेस में आयोवन ओल्ड स्टाइल में डिजाइन और टाइपसेट किया गया। चैथम के मैकेज़ द्वारा मुद्रित और जिल्दबंद किया गया।
जॉन बनागन/इमेज बैंक द्वारा ली गई हाफटाइटल तस्वीर। बिक्री की शर्तें।
सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन का कोई भी भाग पुनरुत्पादित, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से प्रसारित नहीं किया जा सकता है।
यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि इसे प्रकाशक की पूर्व सहमति के बिना, व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से, उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा या किसी अन्य प्रकार से प्रसारित नहीं किया जाएगा, सिवाय उस रूप में

जिसमें यह प्रकाशित हुई है, और बाद के खरीदार पर भी इसी प्रकार की शर्त लागू होगी।

4

真正的

तब मेरी उम्र 37 वर्ष थी, मैं अपनी सीट पर बेल्ट बांधे बैठा था और विशाल 747 विमान घने बादलों को चीरते हुए हैम्बर्ग हवाई अड्डे पर उतरने की तैयारी कर रहा था। नवंबर की ठंडी बारिश ने धरती को भिगो दिया था, जिससे हर चीज़ फ्लेमिश परिदृश्य की उदासी से भर गई थी: वाटरप्रूफ कपड़ों में ग्राउंड क्रू, हवाई अड्डे की एक छोटी इमारत पर लहराता झंडा, एक बीएमडब्ल्यू का बिलबोर्ड। तो - जर्मनी फिर से।

विमान के ज़मीन पर उतरते ही, छत पर लगे स्पीकरों से मधुर संगीत बजने लगा: बीटल्स के गाने का एक सुरीला ऑर्केस्ट्रल कवर संस्करण। "नॉर्वेजियन वुड"। यह धुन हमेशा मुझे कंपकंपा देती थी, लेकिन इस बार इसने मुझे पहले से कहीं ज्यादा गहराई से प्रभावित किया।

मैं आगे की ओर झुक गया, अपना चेहरा हाथों से ढक लिया ताकि मेरी खोपड़ी फट न जाए। थोड़ी देर बाद एक जर्मन एयर होस्टेस मेरे पास आई और अंग्रेजी में मुझसे पूछा कि क्या मैं बीमार हूँ।

"नहीं," मैंने कहा, "बस चक्कर आ रहे हैं।"

"क्या आपको यकीन है?"
"जी हां, मुझे यकीन है। धन्यवाद।"
वह मुस्कुराई और चली गई, और संगीत बदलकर बिली जोएल का एक गाना बजने लगा। मैं सीधा खड़ा हुआ और खिड़की से बाहर उत्तरी सागर के ऊपर छाए काले बादलों को देखने लगा, अपने जीवन में खोई हुई हर चीज़ के बारे में सोचने लगा: वो पल जो हमेशा के लिए बीत गए, वो दोस्त जो मर गए या गुम हो गए, वो एहसास जिन्हें मैं फिर कभी महसूस नहीं कर पाऊंगा।
विमान गेट पर पहुँच गया। लोग अपनी सीट बेल्ट खोलने लगे और ऊपर के लॉकरों से अपना सामान निकालने लगे, और इस सब के दौरान मैं घास के मैदान में था। मुझे घास की खुशबू आ रही थी, चेहरे पर हवा का झोंका महसूस हो रहा था, पक्षियों की चहचाहट सुनाई दे रही थी। शरद ऋतु 1969, और जल्द ही मैं 20 साल का हो जाऊंगा।
5

एयर होस्टेस दोबारा मेरा हालचाल पूछने आई। इस बार वह मेरे बगल में बैठ गई और मुझसे पूछा कि क्या मैं ठीक हूँ।
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "मैं ठीक हूँ, धन्यवाद। बस थोड़ा उदास महसूस कर रही हूँ।"
"मैं समझती हूँ तुम क्या कहना चाह रही हो," उसने कहा। "मेरे साथ भी कभी-कभार ऐसा होता है।"
वह खड़ी हुई और उसने मुझे प्यारी सी मुस्कान दी। "अच्छा, तो आपकी यात्रा मंगलमय हो।"
अलविदा।"
"अलविदा।"

अठारह साल बीत गए हैं, और आज भी मुझे उस घास के मैदान में बिताए उस दिन की हर एक बात याद है। कई दिनों की हल्की बारिश से गर्मी की धूल साफ हो चुकी थी और पहाड़ गहरे हरे रंग के थे। अक्टूबर की हवा से सिर तक ऊंची घास की सफेद पत्तियां लहरा रही थीं। एक लंबा बादल नीले आसमान के ऊपर छाया हुआ था। उस दूर के आकाश को देखना लगभग कष्टदायक था। हवा का एक झोंका घास के मैदान से होते हुए उसके बालों से गुजरा और फिर जंगल में चला गया, जहां से डालियां सरसरा उठीं और दूर से आती हुई भौंकने की हल्की-सी आवाज सुनाई दी - एक धुंधली सी आवाज जो मानो किसी दूसरी दुनिया के द्वार से हम तक पहुंच रही हो। हमें कोई और आवाज सुनाई नहीं दी। हमें कोई और इंसान नहीं मिला। हमने बस दो चमकीले लाल पक्षियों को घास के मैदान के बीच से चौंककर उछलते और जंगल की ओर भागते देखा।
जैसे-जैसे हम धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे, नाओको ने मुझसे कुओं के बारे में बात की।

याददाश्त बड़ी अजीब चीज़ है। जब मैं उस दृश्य में था, तो मैंने उस पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि यह कोई ऐसी घटना होगी जो मुझ पर अमिट छाप छोड़ेगी, और निश्चित रूप से कभी कल्पना भी नहीं की थी कि 18 साल बाद मुझे यह सब इतनी बारीकी से याद होगा। उस दिन मुझे आसपास के नज़ारों की कोई परवाह नहीं थी। मैं सिर्फ़ अपने बारे में सोच रहा था। मैं अपने बगल में चल रही उस खूबसूरत लड़की के बारे में सोच रहा था। मैं हम दोनों के साथ होने के बारे में सोच रहा था, और फिर से अपने बारे में। मैं उस उम्र में था, जीवन के उस पड़ाव पर था जब हर दृश्य, हर भावना, हर विचार बूमरैंग की तरह मेरे

पास लौट आता था। और इससे भी बुरा, मैं प्यार में था। एक ऐसा प्यार जिसमें कई उलझनें थीं। आसपास का नज़ारा मेरे दिमाग में सबसे आख़िरी चीज़ थी।

6

अब, हालांकि, वह घास का मैदान वाला दृश्य ही सबसे पहले मेरे दिमाग में आता है। घास की खुशबू, हवा की हल्की ठंडक, पहाड़ियों की श्रृंखला, कुत्ते का भौंकना: ये सब पहली चीजें हैं, और बिल्कुल स्पष्ट रूप से याद आती हैं। ऐसा लगता है जैसे मैं हाथ बढ़ाकर उन्हें अपनी उंगली से छू सकता हूँ। फिर भी, दृश्य कितना भी स्पष्ट क्यों न हो, उसमें कोई नहीं है। कोई नहीं। नाओको वहाँ नहीं है, और न ही मैं। हम कहाँ गायब हो गए? ऐसा कैसे हो सकता है? उस समय जो कुछ भी इतना महत्वपूर्ण लगता था - नाओको, और मैं जो तब था, और वह दुनिया जो तब मेरे पास थी: वे सब कहाँ चले गए? यह सच है, मैं उसका चेहरा भी याद नहीं कर सकता - कम से कम तुरंत तो नहीं। मेरे पास बस एक पृष्ठभूमि बची है, शुद्ध दृश्य, सामने कोई इंसान नहीं।

सच है, अगर मुझे पर्याप्त समय मिले, तो मैं उसका चेहरा याद कर सकता हूँ। मैं छवियों को जोड़ना शुरू करता हूँ - उसका छोटा, ठंडा हाथ; उसके सीधे, काले बाल जो छूने में इतने मुलायम और ठंडे थे; एक कोमल, गोल कान की लोब और उसके ठीक नीचे सूक्ष्म तिल; सर्दियों में पहना जाने वाला ऊँट के बालों का कोट; प्रश्न पूछते समय मेरी आँखों में सीधे देखने की उसकी आदत; उसकी आवाज़ में कभी-कभार आने वाली हल्की सी कंपन (जैसे कि वह किसी हवादार पहाड़ी पर बोल रही हो) - और अचानक उसका चेहरा मेरे सामने आ जाता है, पहले हमेशा साइड से, क्योंकि नाओको और मैं हमेशा साथ-साथ टहलते थे। फिर वह मेरी

ओर मुड़ती है, मुस्कुराती है, अपना सिर थोड़ा सा झुकाती है, और बोलना शुरू करती है, और वह मेरी आँखों में ऐसे देखती है जैसे किसी निर्मल झरने के तालाब में तैरती हुई छोटी मछली की छवि को पकड़ने की कोशिश कर रही हो।
नाओको का चेहरा दिखने में समय लगता है। और जैसे-जैसे साल बीतते गए, समय और लंबा होता गया। दुखद सच्चाई यह है कि जो बात मुझे 5 सेकंड में याद आ जाती थी, उसे याद करने में बहुत जल्द 10 सेकंड, फिर 30 सेकंड, फिर पूरा एक मिनट लग गया - जैसे शाम ढलते समय परछाइयाँ लंबी होती जाती हैं। शायद एक दिन ये परछाइयाँ अंधेरे में समा जाएँगी। इससे बचा नहीं जा सकता: मेरी स्मृति उस जगह से और दूर होती जा रही है जहाँ नाओको खड़ी होती थी - जहाँ मेरा पुराना रूप खड़ा होता था। और बस वही दृश्य, अक्टूबर के महीने में घास के मैदान का वो नज़ारा, बार-बार मेरे सामने लौटता है, जैसे किसी फिल्म का कोई प्रतीकात्मक दृश्य हो। हर बार जब वो दृश्य प्रकट होता है, तो 7 नए आयाम खोलता है।

मेरे दिमाग के किसी हिस्से पर एक लात पड़ी। जाग जाओ, वो कहती है। मैं अभी भी यहाँ हूँ। जाग जाओ और इसके बारे में सोचो। सोचो कि मैं अभी भी यहाँ क्यों हूँ। उस लात से मुझे कभी दर्द नहीं होता। बिलकुल भी दर्द नहीं होता। बस हर लात के साथ एक खोखली सी आवाज़ गूँजती है। और वो भी एक दिन फीकी पड़ जाएगी। लेकिन हैम्बर्ग हवाई अड्डे पर, वो लातें हमेशा से ज़्यादा लंबी और तेज़ थीं। इसीलिए मैं ये किताब लिख रहा हूँ। सोचने के लिए। समझने के लिए। बस यही मेरी फितरत है। मुझे चीज़ों को पूरी तरह समझने के लिए उन्हें लिखना पड़ता है।

चलिए देखते हैं, उस दिन नाओको किस बारे में बात कर रही थी?
बेशक: वह "खेत का कुआँ"। मुझे नहीं पता कि ऐसा कोई कुआँ था भी या नहीं। हो सकता है वह नाओको के मन में बसी एक छवि या संकेत हो, जैसे उन अंधकारमय दिनों में वह अपने मन में कई चीज़ें गढ़ती रहती थी। लेकिन एक बार जब उसने मुझे उसका वर्णन कर दिया, तो मैं उस घास के मैदान के दृश्य की कल्पना कुएँ के बिना नहीं कर पाई। उस दिन से, जिस चीज़ को मैंने कभी देखा भी नहीं था, उसकी छवि मेरे सामने फैले खेत के वास्तविक दृश्य से अटूट रूप से जुड़ गई। मैं कुएँ का विस्तृत वर्णन कर सकती हूँ। वह ठीक उस सीमा पर था जहाँ घास का मैदान समाप्त होता था और जंगल शुरू होता था - ज़मीन में एक गज चौड़ा एक गहरा गड्ढा, जो घास से छिपा हुआ था। उसकी सीमा का कोई निशान नहीं था।
कोई बाड़ नहीं, कोई पत्थर की चौखट नहीं (कम से कम ऐसी कोई नहीं जो जमीन से ऊपर उठी हो)।
वह बस एक गड्ढा था, एक चौड़ा खुला मुँह। उसके किनारे के पत्थर घिस-घिस कर अजीब से मटमैले सफेद रंग के हो गए थे। उनमें दरारें थीं और टुकड़े गायब थे, और एक छोटी हरी छिपकली एक खुली दरार में रेंगती हुई चली गई। आप किनारे पर झुककर नीचे देख सकते थे, लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं देता था। मुझे उस कुएँ के बारे में बस इतना ही पता था कि वह कितना भयानक गहरा था। वह इतना गहरा था कि उसकी गहराई नापी नहीं जा सकती थी, और अंधेरे से भरा हुआ था, मानो दुनिया के सारे अंधेरे को उसकी चरम सीमा तक उबाल दिया गया हो।
"यह सचमुच बहुत गहरा विषय है," नाओको ने सोच-समझकर शब्दों का चयन करते हुए कहा।
वह कभी-कभी इसी तरह बोलती थी, सही शब्द ढूंढने के लिए अपनी गति

धीमी कर देती थी। "लेकिन कोई नहीं जानता कि यह कहाँ है," उसने आगे कहा। "एक बात जो मुझे पक्का पता है वह यह है कि यह यहीं कहीं है।"

कहीं।"
अपने हाथों को अपनी ट्वीड जैकेट की जेबों में डालकर, उसने मेरी ओर मुस्कुराते हुए कहा, "यह सच है!"
मैंने कहा, "तो फिर यह बेहद खतरनाक होगा। एक गहरा कुआँ, लेकिन किसी को नहीं पता कि वह कहाँ है। आप उसमें गिर सकते हैं और बस आपकी जान चली जाएगी।"
"अंत। आआआआह! धड़ाम! समाप्त।"
"ऐसी चीजें तो होनी ही चाहिए।"
"वे ऐसा कभी-कभार करते हैं। शायद दो या तीन साल में एक बार।"
कोई अचानक गायब हो जाता है और उसे कोई ढूंढ नहीं पाता। तब यहाँ के लोग कहते हैं, "ओह, वह खेत के कुएँ में गिर गया होगा।"
मैंने कहा, "मरने का यह कोई अच्छा तरीका नहीं है।"
"नहीं, यह मरने का बहुत भयानक तरीका है," नाओको ने अपनी जैकेट से घास के बीजों का गुच्छा झाड़ते हुए कहा। "सबसे अच्छा तरीका होगा अपनी गर्दन तोड़ लेना, लेकिन इससे शायद सिर्फ आपका पैर ही टूटेगा और फिर आप कुछ भी नहीं कर पाएंगे।"
तुम अपनी पूरी ताकत से चिल्लाओगे, लेकिन कोई तुम्हें सुनेगा नहीं, और तुम किसी के तुम्हें ढूंढने की उम्मीद भी नहीं कर सकते, और तुम्हारे ऊपर कनखजूरे और मकड़ियां रेंग रही होंगी, और तुमसे पहले मरे हुए लोगों की हड्डियां तुम्हारे चारों ओर बिखरी होंगी, और चारों ओर अंधेरा और नमी होगी, और ऊपर आसमान में एक छोटा सा प्रकाश का गोला होगा, जैसे

सर्दियों का चांद। तुम वहीं इस जगह पर धीरे-धीरे, अकेले ही मर जाओगे।
"छी, इसके बारे में सोचते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं," मैंने कहा।
"किसी को वह चीज ढूंढकर उसके चारों ओर दीवार बना देनी चाहिए।"
"लेकिन इसे कोई ढूंढ नहीं सकता। इसलिए ध्यान रखें कि आप रास्ते से न भटकें।"
"चिंता मत करो, मैं ऐसा नहीं करूंगा।"
नाओको ने अपना बायां हाथ जेब से निकाला और मेरा हाथ दबाया।
"चिंता मत करो," उसने कहा। "तुम ठीक रहोगे। तुम आधी रात को भी यहाँ चारों ओर दौड़ सकते हो और कभी कुएँ में नहीं गिरोगे। और जब तक मैं तुम्हारे साथ हूँ, मैं भी नहीं गिरूँगी।"
"कभी नहीं?"
"कभी नहीं!"
"आप इतने निश्चित रूप से कैसे कह सकते हैं?"
9

"मुझे बस पता है," उसने मेरा हाथ और कसकर पकड़ते हुए कहा और चुपचाप आगे चलने लगी। "मुझे ये सब पता है। मैं हमेशा सही होती हूँ। इसका तर्क से कोई लेना-देना नहीं है: मैं बस इसे महसूस करती हूँ। उदाहरण के लिए, जब मैं तुम्हारे इतने करीब होती हूँ, तो मुझे ज़रा भी डर नहीं लगता। कोई भी बुरी या शैतानी चीज़ मुझे कभी लुभा नहीं सकती।"
"ठीक है, यही जवाब है," मैंने कहा। "तुम्हें बस इसी तरह हर समय मेरे साथ रहना होगा।"
"क्या आपका यह मतलब है?"
"बिल्कुल।"
नाओको एकदम रुक गई। मैं भी। उसने अपने हाथ मेरे कंधों पर रखे और

मेरी आँखों में गहराई से देखा। उसकी खूबसूरत आँखें काफी देर तक मेरे भीतर झाँकती रहीं। फिर वह पूरी तरह से झुकी और अपना गाल मेरे गाल से छुआ। यह एक अद्भुत, स्नेहपूर्ण भाव था जिसने एक पल के लिए मेरे दिल को थाम दिया।

"धन्यवाद।"

मैंने उत्तर दिया, "मुझे खुशी हुई।"

"मुझे बहुत खुशी हुई कि आपने ऐसा कहा। सचमुच बहुत खुशी हुई," उसने उदास मुस्कान के साथ कहा।

"लेकिन यह असंभव है।"

"असंभव? क्यों?"

"यह गलत होगा। यह भयानक होगा। यह..."

नाओको ने अपना मुंह कसकर बंद कर लिया और फिर से चलने लगी। मैं समझ गई थी कि उसके दिमाग में तरह-तरह के विचार घूम रहे थे, इसलिए मैंने दखल देने के बजाय चुप रहना ही बेहतर समझा और उसके साथ-साथ चलने लगी।

"यह गलत होगा - आपके लिए भी गलत, मेरे लिए भी गलत," उसने लंबे विराम के बाद कहा।

"गलत कैसे?" मैंने धीरे से कहा।

"क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा? एक व्यक्ति के लिए दूसरे व्यक्ति की हमेशा-हमेशा के लिए देखभाल करना संभव नहीं है। मेरा मतलब है, मान लो हमारी शादी हो गई।"

आपको दिन में काम करना होगा। आपके जाने के बाद मेरी देखभाल कौन करेगा? या अगर आप किसी व्यावसायिक यात्रा पर जाते हैं, तो मेरी देखभाल कौन करेगा? क्या मैं जीवन भर हर पल आपसे चिपकी रह सकती हूँ?

उसमें किस प्रकार की समानता होगी? किस प्रकार की 10

यह कैसा रिश्ता होगा? देर-सवेर तुम मुझसे ऊब जाओगे। तुम सोचोगे कि तुम अपनी जिंदगी में क्या कर रहे हो, अपना सारा समय इस औरत की देखभाल में क्यों बिता रहे हो। मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकती। इससे मेरी कोई समस्या हल नहीं होगी।
"लेकिन आपकी समस्याएं जीवन भर जारी नहीं रहने वाली हैं।"
मैंने उसकी पीठ छूते हुए कहा, "ये सब आखिरकार खत्म हो जाएंगे। और जब ये खत्म होंगे, तो हम रुककर सोचेंगे कि आगे कैसे बढ़ना है। शायद तुम्हें मेरी मदद करनी पड़े। हम अपनी ज़िंदगी किसी हिसाब-किताब के हिसाब से नहीं जी रहे हैं। अगर तुम्हें मेरी ज़रूरत हो, तो मेरा इस्तेमाल करो। समझ नहीं आ रहा? तुम्हें इतना सख्त क्यों होना पड़ता है? आराम करो, अपनी हिचक छोड़ दो। तुम इतनी तनाव में रहती हो कि हमेशा सबसे बुरा ही सोचती हो। अपने शरीर को आराम दो, और बाकी सब कुछ अपने आप हल्का हो जाएगा।"
"आप ऐसा कैसे कह सकते हैं?" उसने भावहीन स्वर में पूछा।
नाओको की आवाज ने मुझे इस संभावना के प्रति सचेत किया कि मैंने कुछ ऐसा कह दिया है जो मुझे नहीं कहना चाहिए था।
"मुझे बताओ तुम ऐसा कैसे कह सकते हो," उसने अपने पैरों के नीचे ज़मीन की ओर देखते हुए कहा। "तुम मुझे कुछ ऐसा नहीं बता रहे हो जो मुझे पहले से पता न हो। 'अपने शरीर को आराम दो, और तुम्हारा बाकी शरीर भी हल्का हो जाएगा।' मुझसे ऐसा कहने का क्या मतलब है? अगर मैंने अभी अपने शरीर को आराम दिया, तो मैं बिखर जाऊंगी।"
मैं हमेशा से ऐसे ही जीती आई हूँ, और जीने का यही एक तरीका मुझे पता है। अगर मैं एक पल के लिए भी आराम करूँ, तो मैं कभी वापस

नहीं लौट पाऊँगी। मैं बिखर जाऊँगी, और मेरे टुकड़े भी उड़ जाएँगे। तुम यह क्यों नहीं समझ पा रहे हो?
अगर आप यह देख ही नहीं सकते तो आप मेरी रक्षा करने की बात कैसे कर सकते हैं?
मेंने कुछ नहीं कहा।
मैं उलझन में हूँ। सचमुच बहुत उलझन में हूँ। और यह आपकी सोच से कहीं ज्यादा गंभीर मामला है।
और गहरा... और अंधेरा... और ठंडा। लेकिन मुझे एक बात बताओ। उस समय तुम मेरे साथ कैसे सो सकते थे? तुम ऐसा कैसे कर सकते थे?
तुमने मुझे अकेला क्यों नहीं छोड़ दिया?
अब हम चीड़ के जंगल की भयानक खामोशी में चल रहे थे।
गर्मी के अंत में मर चुके झींगुरों के सूखे शव रास्ते पर बिखरे पड़े थे, जो हमारे जूतों के नीचे चरमरा रहे थे। मानो हम कुछ खोई हुई चीज़ की तलाश कर रहे हों, नाओको और मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ते रहे।

रास्ते के किनारे।
"मुझे माफ करना," उसने मेरा हाथ पकड़ते हुए और अपना सिर हिलाते हुए कहा।
"मेरा इरादा आपको चोट पहुंचाने का नहीं था। मैंने जो कहा, उसे अपने मन पर हावी न होने दें।"
सच में, मुझे खेद है। मैं बस खुद पर गुस्सा था।
मैंने कहा, "मुझे लगता है कि मैं अभी तक आपको पूरी तरह से समझ नहीं पाया हूँ। मैं उतना बुद्धिमान नहीं हूँ। मुझे चीज़ें समझने में समय लगता है। लेकिन अगर मुझे समय मिला, तो मैं आपको समझ जाऊँगा - दुनिया में किसी और से बेहतर।"

हम रुक गए और शांत जंगल में खड़े होकर सुनने लगे। मैंने अपने पैर के अंगूठे से चीड़ के शंकु और टिड्डियों के खोल उछाले, फिर चीड़ की शाखाओं के बीच से झांकते आसमान के टुकड़ों को देखा। जेब में हाथ डाले नाओको वहीं खड़ी सोच रही थी, उसकी निगाहें किसी खास चीज पर टिकी नहीं थीं।

"टोरू, मुझे एक बात बताओ," उसने कहा। "क्या तुम मुझसे प्यार करते हो?"

"तुम जानते हो कि मैं करता हूँ।"

"क्या आप मेरे दो काम करेंगे?"

"आप अधिकतम तीन इच्छाएँ माँग सकती हैं, महोदया।"

नाओको मुस्कुराई और सिर हिलाया। "नहीं, दो ही काफी हैं। पहला यह कि आप समझें कि मैं कितनी आभारी हूँ कि आप मुझसे मिलने यहाँ आए। मुझे उम्मीद है कि आप समझेंगे कि आपने मुझे कितनी खुशी दी है। मुझे पता है कि अगर कोई चीज मुझे बचा सकती है, तो वह यही है। हो सकता है मैं इसे दिखाऊं नहीं, लेकिन यह सच है।"

मैंने कहा, "मैं तुमसे दोबारा मिलने आऊंगा। और तुम्हारी दूसरी इच्छा क्या है?"

मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे हमेशा याद रखो। क्या तुम्हें याद रहेगा कि मैं कभी था, और मैं तुम्हारे बगल में इस तरह खड़ा था?

मैंने कहा, "हमेशा। मैं हमेशा याद रखूंगा।"

वह बिना कुछ बोले चलती रही। पेड़ों की शाखाओं से छनकर आती शरद ऋतु की रोशनी उसकी जैकेट के कंधों पर नाच रही थी। एक कुत्ता फिर भौंका, इस बार पहले से ज़्यादा नज़दीक। नाओको एक छोटी सी टीले पर चढ़ी, जंगल से बाहर निकली और एक हल्की ढलान से तेज़ी से नीचे उतरने लगी। मैं उसके दो-तीन कदम पीछे-पीछे चला।

"इधर आओ," मैंने उसकी पीठ की ओर पुकारा। "कुआँ शायद यहीं कहीं हो।" नाओको रुकी, मुस्कुराई और मेरा हाथ पकड़ लिया। हम बाकी का रास्ता साथ-साथ चले। "क्या तुम सच में 12

"वादा करो कि मुझे कभी नहीं भूलोगे?" उसने लगभग फुसफुसाते हुए पूछा।
मैंने कहा, "मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूंगा। मैं तुम्हें कभी नहीं भूल सकता।"

फिर भी, मेरी याददाश्त लगातार धुंधली होती जा रही है, और मैं कई बातें भूल चुका हूँ। इस तरह याददाश्त के सहारे लिखते हुए, मुझे अक्सर डर सताता है। क्या पता मैं सबसे महत्वपूर्ण बात ही भूल गया हूँ? क्या पता मेरे भीतर कहीं कोई अंधकारमय कोना हो जहाँ सारी महत्वपूर्ण यादें जमा हो गई हों और धीरे-धीरे मिट्टी में मिल रही हों?
खैर, मेरे पास बस यही सहारा है। इन धुंधली, मिटती, अपूर्ण यादों को सीने से लगाए, मैं भूख से बेहाल होकर हड्डियों को चूसते हुए इस किताब को लिखने में जुटी हुई हूँ।
नाओको से किया वादा निभाने का यही एकमात्र तरीका है जो मुझे पता है।
बहुत समय पहले, जब मैं अभी जवान था, जब यादें आज की तुलना में कहीं अधिक जीवंत थीं, तब मैंने अक्सर उसके बारे में लिखने की कोशिश की। लेकिन मैं एक पंक्ति भी नहीं लिख पाया। मुझे पता था कि अगर वह पहली पंक्ति आ गई, तो बाकी सब अपने आप पन्ने पर उतर जाएगा, लेकिन मैं ऐसा कभी नहीं कर पाया।
सब कुछ इतना स्पष्ट और साफ था कि मुझे कभी समझ ही नहीं आया

कि शुरुआत कहाँ से करनी है - ठीक वैसे ही जैसे बहुत अधिक जानकारी दिखाने वाला नक्शा कभी-कभी बेकार हो सकता है।
अब मुझे एहसास होता है कि लेखन के अपूर्ण पात्र में मैं केवल अपूर्ण यादें और अपूर्ण विचार ही समाहित कर सकता हूँ। नाओको की यादें मेरे भीतर जितनी धुंधली होती जाती हैं, मैं उसे उतना ही गहराई से समझ पाता हूँ। मैं यह भी जानता हूँ कि उसने मुझसे उसे न भूलने के लिए क्यों कहा था।
नाओको खुद यह जानती थी, बेशक। वह जानती थी कि उसकी यादें मेरे मन से मिट जाएंगी। इसीलिए उसने मुझसे विनती की कि मैं उसे कभी न भूलूं, यह याद रखूं कि वह कभी अस्तित्व में थी।
यह सोचकर मुझे असहनीय दुख होता है। क्योंकि नाओको ने मुझसे कभी प्यार नहीं किया।

13

बहुत समय पहले की बात है, कई साल पहले - असल में 20 साल पहले - मैं एक छात्रावास में रहता था। मैं 18 साल का था और प्रथम वर्ष का छात्र था। मैं टोक्यो में नया था और अकेले रहने का मुझे अनुभव भी नहीं था, इसलिए मेरे चिंतित माता-पिता ने मेरे लिए एक निजी छात्रावास का इंतजाम किया, न कि उस तरह के एक कमरे का जो अधिकांश छात्र लेते थे। छात्रावास में भोजन और अन्य सुविधाएं उपलब्ध थीं और शायद इससे उनके अनुभवहीन 18 वर्षीय बच्चे को गुजारा करने में मदद मिल जाती।

खर्च भी एक अहम मुद्दा था। छात्रावास का किराया निजी कमरे से कहीं कम था। जब तक मेरे पास बिस्तर और एक लैंप था, तब तक बहुत सारा सामान खरीदने की कोई ज़रूरत नहीं थी। मेरी अपनी इच्छा थी कि मैं एक फ्लैट किराए पर लेकर आराम से एकांत में रहूँ, लेकिन यह जानते हुए कि मेरे माता-पिता को निजी विश्वविद्यालय में दाखिले और ट्यूशन फीस पर कितना खर्च करना पड़ता है, मैं ज़िद करने की स्थिति में नहीं था। और वैसे भी, मुझे इस बात की परवाह नहीं थी कि मैं कहाँ रहता हूँ।

शहर के बीचोंबीच एक पहाड़ी पर स्थित, खुले नज़ारों से भरपूर, छात्रावास परिसर एक कंक्रीट की दीवार से घिरे एक बड़े चौक में बना हुआ था। मुख्य द्वार के ठीक अंदर एक विशाल, ऊँचा ज़ेलकोवा का पेड़ खड़ा था। लोगों का कहना था कि यह कम से कम 150 साल पुराना था। इसके आधार पर खड़े होकर, आप ऊपर देख सकते थे और इसकी घनी हरी पत्तियों के कारण आसमान का कोई नज़ारा दिखाई नहीं देता था।

गेट से निकलने वाला पक्का रास्ता पेड़ के चारों ओर से घूमता हुआ एक चौड़े चौकोर मैदान में सीधा आगे बढ़ता था। रास्ते के दोनों ओर आमने-सामने कंक्रीट की दो तीन मंजिला छात्रावास इमारतें थीं। ये इमारतें बड़ी थीं और इनमें ढेर सारी खिड़कियाँ थीं, जिन्हें देखकर ऐसा लगता था मानो ये फ्लैट जेल में बदल दिए गए हों या जेल को फ्लैट में बदल दिया गया हो। लेकिन इनमें न तो कोई गंदगी थी और न ही अंधेरा। खुली खिड़कियों से रेडियो की आवाज़ सुनाई दे रही थी, जिन पर एक ही तरह के क्रीम रंग के पर्दे लगे थे, जिन पर सूरज की रोशनी का कोई असर नहीं हो रहा था।

दो छात्रावासों के आगे, रास्ता एक दो मंजिला सार्वजनिक भवन के प्रवेश द्वार तक जाता था, जिसकी पहली मंजिल पर भोजन कक्ष और स्नानघर थे, जबकि दूसरी मंजिल पर सभागार, बैठक कक्ष और अतिथि कक्ष भी थे, जिनका उपयोग मैं कभी नहीं कर पाया।

विशाल क्षेत्र। मुख्य भवन के बगल में एक तीसरा छात्रावास था, जो तीन मंजिला था। चौक में चौड़े हरे-भरे लॉन फैले हुए थे, और घूमते हुए स्प्रिंकलर सूरज की रोशनी में चमक रहे थे। मुख्य भवन के पीछे बेसबॉल और फुटबॉल के लिए एक मैदान और छह टेनिस कोर्ट थे। इस परिसर में वह सब कुछ था जो आप चाह सकते थे।

उस जगह में बस एक ही समस्या थी: उसमें राजनीतिक साया था। उसका संचालन किसी संदिग्ध संस्था द्वारा किया जा रहा था, जिसका केंद्र एक धुर दक्षिणपंथी व्यक्ति था, और मुझे लगता था कि उनके संचालन का तरीका कुछ अजीबोगरीब था। यह बात नए छात्रों को दिए जाने वाले पर्चे और छात्रावास के नियमों में साफ झलकती थी। छात्रावास का घोषित "संस्थापक भाव" था "शिक्षा के मूलभूत सिद्धांतों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करके राष्ट्र की सेवा के लिए मानव संसाधन तैयार करना", और इस "भाव" का समर्थन करने वाले कई वित्तीय नेताओं ने इसके निर्माण में अपना निजी धन लगाया था। यह परियोजना का सार्वजनिक चेहरा था, हालांकि इसके पीछे की सच्चाई बेहद अस्पष्ट थी। कुछ लोगों का कहना था कि यह कर चोरी थी, कुछ इसे दानदाताओं के लिए प्रचार का हथकंडा मानते थे, और कुछ का दावा था कि छात्रावास का निर्माण जनता को एक कीमती जमीन हड़पने का बहाना था। हालांकि, एक बात निश्चित थी: छात्रावास परिसर में विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलीन छात्रों का एक विशेष क्लब मौजूद था। उन्होंने "अध्ययन समूह" बनाए जो महीने में कई बार मिलते थे और उनमें कुछ संस्थापक भी शामिल थे। क्लब के किसी भी सदस्य को स्नातक होने के बाद अच्छी नौकरी मिलने का आश्वासन दिया जा सकता था। मुझे नहीं पता था कि इनमें से कौन सा सिद्धांत सही था, लेकिन उन सभी में यह धारणा समान थी कि कुछ गड़बड़ है।

उस जगह के बारे में।
बहरहाल, मैंने 1968 की वसंत ऋतु से 1970 की वसंत ऋतु तक दो साल इस संदिग्ध छात्रावास में बिताए। इतने लंबे समय तक इसे बर्दाश्त क्यों किया, यह मैं ठीक से नहीं कह सकता। रोजमर्रा की जिंदगी के लिहाज से, मेरे लिए इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता था कि वह जगह दक्षिणपंथी थी या वामपंथी या कुछ और।
प्रत्येक दिन की शुरुआत ध्वजारोहण की भव्य रस्म से होती थी। वे 15 नंबर का संगीत बजाते थे।

राष्ट्रगान भी, बेशक। एक के बिना दूसरा नहीं हो सकता।
ध्वजदंड परिसर के ठीक बीच में खड़ा था, जहाँ से यह तीनों छात्रावासों की हर खिड़की से दिखाई देता था।
पूर्वी छात्रावास (मेरी इमारत) के प्रमुख झंडे के प्रभारी थे। वे पचास के दशक के उत्तरार्ध या साठ के दशक के आरंभिक काल के एक लंबे, तेज नजर वाले व्यक्ति थे।
उसके घने बालों में सफ़ेद बाल आ गए थे, और धूप से झुलसी गर्दन पर एक लंबा निशान था। लोग फुसफुसाते थे कि वह युद्धकालीन नाकानो जासूसी स्कूल का स्नातक था, लेकिन कोई भी निश्चित रूप से नहीं जानता था। उसके बगल में एक छात्र खड़ा था जो उसका सहायक था। इस लड़के को भी कोई ठीक से नहीं जानता था।
उसके बाल दुनिया के सबसे छोटे थे और वह हमेशा गहरे नीले रंग की छात्र वर्दी पहनता था। मुझे उसका नाम या कमरा नहीं पता था, मैंने उसे कभी भोजन कक्ष या स्नानघर में नहीं देखा था। मुझे यह भी पक्का नहीं पता कि वह छात्र था या नहीं, हालाँकि वर्दी देखकर तो यही लगता था कि वह छात्र ही होगा - और यही वर्दी जल्द ही उसका उपनाम बन गई। सर

नाकानो के विपरीत, "यूनिफॉर्म" कद में छोटा, गोल-मटोल और पीला चेहरा वाला था। यह अजीबोगरीब जोड़ा हर सुबह छह बजे सूर्योदय का झंडा फहराता था।

जब मैंने पहली बार छात्रावास में प्रवेश किया, तो इस आयोजन की नवीनता ही मुझे अक्सर इस देशभक्तिपूर्ण अनुष्ठान को देखने के लिए जल्दी उठने के लिए प्रेरित करती थी।

रेडियो पर छह बजने का संकेत मिलते ही दोनों लगभग उसी समय प्रांगण में प्रकट हुए। यूनिफॉर्म ने हमेशा की तरह अपनी वर्दी पहनी हुई थी, साथ में काले चमड़े के जूते भी थे, और नाकानो ने एक छोटी जैकेट और सफेद स्नीकर्स पहने हुए थे। यूनिफॉर्म के हाथ में बिना पॉलिश की हुई पॉलोनिया की लकड़ी का एक औपचारिक बक्सा था, जबकि नाकानो के बगल में एक सोनी टेप रिकॉर्डर था। उन्होंने इसे ध्वजदंड के आधार पर रखा, और यूनिफॉर्म ने बक्सा खोलकर उसमें से करीने से तह किया हुआ बैनर निकाला। उन्होंने आदरपूर्वक इसे नाकानो को दिया, जिन्होंने इसे ध्वजदंड की रस्सी पर लगा दिया, जिससे शुद्ध सफेद पृष्ठभूमि पर उगते सूरज का चमकीला लाल घेरा दिखाई दिया। फिर यूनिफॉर्म ने राष्ट्रगान बजाने के लिए बटन दबाया।

"हमारे प्रभु का शासन कायम रहे..."

और झंडा ऊपर चढ़ता चला जाएगा।

"जब तक कंकड़ बड़े पत्थरों में न बदल जाएं... यह खंभे के आधे हिस्से तक पहुंच जाएगा।"

और काई से ढक जाए।

16

अब वे सबसे ऊपर थे। दोनों सीधे खड़े थे, एकदम अकड़े हुए, झंडे को

देख रहे थे, जो साफ मौसम में हवा चलने पर देखने लायक नजारा होता था।

शाम ढलते ही ध्वज को उसी श्रद्धापूर्ण समारोह के साथ उतारा जाता था, लेकिन उल्टे क्रम में। ध्वज नीचे आता और बक्से में अपनी जगह पाता। रात में राष्ट्रीय ध्वज नहीं फहराया जाता था।

मुझे समझ नहीं आता था कि रात में झंडा क्यों उतारा जाता है। अंधेरा होने पर भी देश चलता रहता है, और बहुत से लोग रात भर काम करते हैं - रेलवे निर्माण दल, टैक्सी ड्राइवर, बार होस्टेस, दमकलकर्मी और रात के चौकीदार: मुझे यह अन्यायपूर्ण लगता था कि ऐसे लोगों को झंडे की सुरक्षा से वंचित रखा जाए। या शायद यह बात इतनी मायने नहीं रखती थी और किसी को परवाह भी नहीं थी - सिवाय मेरे। वैसे मुझे भी कोई खास परवाह नहीं थी। बस यूं ही मेरे मन में यह ख्याल आया था।

कमरों के आवंटन के नियमों के अनुसार, प्रथम और द्वितीय वर्ष के छात्रों को दो कमरों में रखा गया था, जबकि तृतीय और अंतिम वर्ष के छात्रों को एकल कमरे दिए गए थे। दो कमरे नौ-बाई-बारह से थोड़े लंबे और संकरे थे, जिनमें दरवाजे के सामने वाली दीवार में एल्यूमीनियम फ्रेम वाली खिड़की थी और खिड़की के पास दो डेस्क इस तरह से रखे गए थे कि कमरे में रहने वाले लोग एक-दूसरे की पीठ करके पढ़ाई कर सकें। दरवाजे के बाईं ओर एक स्टील का बंक बेड था। उपलब्ध फर्नीचर मजबूत और सादा था, जिसमें दो लॉकर, एक छोटी कॉफी टेबल और कुछ अंतर्निर्मित अलमारियां शामिल थीं। यहां तक कि सबसे सौम्य व्यक्ति भी इस परिवेश को काव्यात्मक कहना मुश्किल पाता। अधिकांश कमरों की अलमारियों में ट्रांजिस्टर रेडियो, हेयर ड्रायर, इलेक्ट्रिक कैराफ़ और कुकर, इंस्टेंट कॉफी, टी बैग, चीनी के क्यूब्स और इंस्टेंट नूडल्स बनाने के लिए साधारण बर्तन और कटोरे जैसी वस्तुएं रखी थीं। दीवारों पर गर्ल मैगज़ीन के पिन-अप या

चोरी किए गए पोर्नो फिल्मों के पोस्टर लगे थे। एक लड़के के पास सूअरों के संभोग की तस्वीर थी, लेकिन यह आमतौर पर लगी नग्न महिलाओं, महिला पॉप गायिकाओं या अभिनेत्रियों की तस्वीरों से बिल्कुल अलग थी।
डेस्क पर बनी अलमारियों में पाठ्यपुस्तकें, शब्दकोश और उपन्यास रखे हुए थे।
इन सिर्फ पुरुषों के कमरों की गंदगी भयावह थी। कूड़ेदानों के तले में फफूंदी लगे संतरे के छिलके चिपके हुए थे। खाली डिब्बे 17

ऐशट्रे में सिगरेट के बटों के ढेर लगे होते थे, और जब ये सुलगने लगते थे तो इन्हें कॉफी या बीयर से बुझा दिया जाता था और छोड़ दिया जाता था जिससे एक खट्टी बदबू आती थी। कालापन लिए हुए
अलमारियों पर रखे सभी कटोरों और प्लेटों पर गंदगी और न जाने क्या-क्या चिपका हुआ था, और फर्श पर इंस्टेंट नूडल्स के रैपर, खाली बीयर के डिब्बे और तरह-तरह के फेंके हुए ढक्कन बिखरे पड़े थे। किसी को भी इन्हें साफ करके कूड़ेदान में फेंकने का ख्याल नहीं आता था। हवा का हर झोंका धूल के बादल उड़ा देता था। हर कमरे की अपनी एक भयानक बदबू थी, लेकिन उस बदबू के घटक हमेशा एक जैसे ही होते थे: पसीना, शरीर की दुर्गंध और कूड़े-कचरे की।
बिस्तरों के नीचे गंदे कपड़ों का ढेर लग जाता था, और नियमित रूप से गद्दों को हवा देने की जहमत न उठाने के कारण, पसीने से तर ये गद्दे असहनीय दुर्गंध फैलाते थे। अब पीछे मुड़कर देखें तो यह आश्चर्यजनक लगता है कि गंदगी के इन ढेरों से कोई जानलेवा महामारी नहीं फैली।
दूसरी तरफ, मेरा कमरा मुर्दाघर जितना साफ-सुथरा था। फर्श और खिड़कियाँ एकदम साफ थीं, गद्दों को हर हफ्ते हवा दी जाती थी, सभी

पेंसिलें पेंसिल स्टैंड में रखी रहती थीं, और यहाँ तक कि पर्दे भी महीने में एक बार धोए जाते थे। मेरा रूममेट सफाई का दीवाना था। जब मैंने पर्दों के बारे में बाकी लोगों को बताया, तो किसी ने भी मेरी बात पर यकीन नहीं किया।

उन्हें यह नहीं पता था कि पर्दों को धोया जा सकता है। बल्कि उनका मानना था कि पर्दे खिड़की के अर्ध-स्थायी हिस्से होते हैं।

"उस आदमी में कुछ गड़बड़ है," वे कहते थे, और उसे नाज़ी या स्टॉर्म ट्रूपर करार देते थे।

हमारे पास पिन-अप तस्वीरें भी नहीं थीं। नहीं, हमारे पास एम्स्टर्डम की एक नहर की तस्वीर थी। मैंने एक नग्न तस्वीर अपलोड की थी, लेकिन मेरे रूममेट ने उसे हटा दिया। उसने कहा, "अरे वातानाबे, मुझे इस तरह की चीज़ें ज़्यादा पसंद नहीं हैं," और फिर नहर वाली तस्वीर अपलोड हो गई। मुझे नग्न तस्वीरों से कोई खास लगाव नहीं था, इसलिए मैंने कोई विरोध नहीं किया।

जब भी कोई दूसरा लड़का मेरे कमरे में आता, तो एम्स्टर्डम की तस्वीर देखकर सबकी एक ही प्रतिक्रिया होती थी, "यह क्या बकवास है?"

"ओह, स्टॉर्म ट्रूपर इसे देखकर हस्तमैथुन करना पसंद करता है," मैंने कहा।

18

मैंने इसे मजाक के तौर पर कहा था, लेकिन उन सभी ने इसे गंभीरता से ले लिया - इतनी गंभीरता से कि मुझे खुद भी इस पर विश्वास होने लगा। सब लोग मेरे साथ सहानुभूति जताते थे क्योंकि मेरा रूममेट स्टॉर्म ट्रूपर था, लेकिन मुझे सच में इससे कोई खास परेशानी नहीं थी। जब तक मैं अपना कमरा साफ रखता, वो मुझे अकेला छोड़ देता था, और सच कहूँ

तो उसके रूममेट होने से कई मायनों में मेरी ज़िंदगी आसान हो गई थी। वो सारी सफाई करता था, गद्दों को धूप में सुखाता था, कूड़ा फेंकता था। अगर मैं कुछ दिनों से नहाने का समय नहीं निकाल पाता, तो वो सूंघकर मुझे नहाने की सलाह देता था। यहाँ तक कि वो मुझे ये भी बता देता था कि नाई के पास जाने का या नाक के बाल कटवाने का समय हो गया है। बस एक ही बात मुझे परेशान करती थी, और वो ये कि अगर उसे कमरे में एक भी मक्खी दिख जाती, तो वो कीटनाशक का छिड़काव कर देता था, जिसके बाद मुझे पास के कूड़े के ढेर में जाकर छिपना पड़ता था।

स्टॉर्म ट्रूपर एक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में भूगोल की पढ़ाई कर रहा था। जब हम पहली बार मिले थे, तब उन्होंने मुझसे कहा था, "मैं नक़्शे का अध्ययन कर रहा हूँ।"

मैंने पूछा, "क्या आपको नक्शे पसंद हैं?"

"जी हां। जब मैं स्नातक हो जाऊंगा, तो मैं भौगोलिक सर्वेक्षण संस्थान के लिए काम करूंगा और नक्शे बनाऊंगा।"

जीवन में मौजूद सपनों और लक्ष्यों की विविधता ने मुझे बहुत प्रभावित किया। टोक्यो आने पर मुझे जो पहली नई अनुभूति हुई, उनमें से यह एक थी। मेरे मन में यह विचार आया कि समाज को कुछ ऐसे लोगों की ज़रूरत है - बस कुछ ही - जो मानचित्र बनाने में रुचि रखते हों और इसके प्रति बेहद जुनूनी हों। हालांकि, यह अजीब बात थी कि जो व्यक्ति सरकार के भौगोलिक सर्वेक्षण संस्थान में काम करना चाहता था, वह "मानचित्र" शब्द बोलते ही हकलाने लगा। स्टॉर्म ट्रूपर तो कभी नहीं हकलाता था, सिवाय "मानचित्र" शब्द के उच्चारण के, जिसमें वह शत प्रतिशत निश्चित होता था।

"तुम क्या पढ़ रहे हो?" उसने मुझसे पूछा।

मैंने कहा, "ड्रामा।"

"क्या तुम नाटक करने वाले हो?"
"नहीं, बस स्क्रिप्ट पढ़ो और रिसर्च करो। रेसीन, इओनेस्को, शेक्सपियर, इस तरह की चीजें।"
उन्होंने कहा कि उन्होंने शेक्सपियर के बारे में तो सुना था, लेकिन बाकी के बारे में नहीं। मैं तो 19 के बारे में मुश्किल से ही जानता था।

मुझे बाकी लोगों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है, मैंने तो बस लेक्चर के हैंडआउट्स में उनके नाम देखे थे।
"तुम्हें नाटक पसंद हैं?" उसने पूछा।
"खास तौर पर नहीं।"
इससे वह भ्रमित हो गया, और जब वह भ्रमित हुआ तो उसकी हकलाहट और बढ़ गई। मुझे बहुत दुख हुआ कि मैंने उसके साथ ऐसा किया।
मैंने कहा, "मैं कुछ भी चुन सकता था। नृविज्ञान, एशियाई इतिहास। बस संयोगवश मैंने नाटक चुन लिया, बस इतना ही।" यह कोई बहुत ठोस स्पष्टीकरण नहीं था जो मैं दे सकता था।
"मुझे समझ नहीं आ रहा," उसने कहा, मानो उसे सचमुच समझ नहीं आ रहा हो। "मुझे नक़्शे पसंद हैं, इसलिए मैंने टोक्यो आने का फैसला किया और अपने माता-पिता से पैसे मँगवाए ताकि मैं नक़्शे का अध्ययन कर सकूँ। लेकिन तुम नहीं, है ना?"
उसका तरीका मेरे तरीके से ज़्यादा तर्कसंगत था। मैंने खुद को समझाने की कोशिश छोड़ दी। फिर हमने चारपाई चुनने के लिए लॉटरी (माचिस की तीलियाँ) निकाली। उसे ऊपर वाली चारपाई मिली।
लंबे कद काठी वाला, क्रूकट हेयरस्टाइल और उभरी हुई गाल की हड्डियों वाला वह हमेशा एक ही तरह के कपड़े पहनता था: सफेद कमीज, काली पतलून, काले जूते और गहरे नीले रंग का स्वेटर। विश्वविद्यालय जाते

समय वह इसमें एक वर्दी जैकेट और काला ब्रीफकेस भी जोड़ लेता था: एक ठेठ दक्षिणपंथी छात्र। इसीलिए सब उसे स्टॉर्म ट्रूपर कहते थे। लेकिन असल में उसे राजनीति से कोई लेना-देना नहीं था। वह वर्दी इसलिए पहनता था क्योंकि वह कपड़े चुनने की झंझट में नहीं पड़ना चाहता था। उसकी दिलचस्पी तो समुद्र तट में होने वाले बदलावों या नई रेलवे सुरंग के निर्माण जैसी चीजों में थी।

और कुछ नहीं। एक बार जब वह ऐसे किसी विषय पर बोलना शुरू कर देता, तो घंटों तक बोलता रहता, जब तक कि आप या तो भाग न जाएं या सो न जाएं।

वह हर सुबह छह बजे "मे आवर लॉर्ड्स रेन" की धुन के साथ उठते थे। कहने का तात्पर्य यह है कि झंडा फहराने की वह दिखावटी रस्म पूरी तरह व्यर्थ नहीं थी। वह कपड़े पहनते, बाथरूम जाते और अपना चेहरा धोते - मानो कभी खत्म ही नहीं होता। मुझे कभी-कभी ऐसा लगता था कि वह एक-एक करके अपने दांत निकाल कर धो रहे होंगे। कमरे में वापस आकर, वह अपने तौलिए की सिलवटें हटाते और उसे सूखने के लिए रेडिएटर पर रख देते, फिर अपना टूथब्रश और साबुन शेल्फ पर रख देते। अंत में वह रेडियो 20 सुनते।

देश के बाकी लोगों के साथ कैलिस्टेनिक्स का अभ्यास करें।

मुझे देर रात तक पढ़ने और सुबह आठ बजे तक सोने की आदत थी, इसलिए जब उसने कमरे में इधर-उधर घूमना और कसरत करना शुरू किया, तब भी मैं बेहोश ही रही - सिवाय उस पल के जब उसने उछलना शुरू किया। वह उछलने को गंभीरता से लेता था और हर बार जब वह ज़मीन पर गिरता तो बिस्तर उछल जाता था। मैंने तीन दिन तक इसे बर्दाश्त किया क्योंकि उन्होंने हमें बताया था कि सामूहिक जीवन में कुछ

हद तक सहनशीलता ज़रूरी होती है, लेकिन चौथे दिन की सुबह तक मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकी।

मैंने कहा, "अरे, क्या तुम छत पर या कहीं और ऐसा कर सकते हो? मुझे नींद नहीं आ रही है।"

"लेकिन अभी तो 6:30 बज चुके हैं!" उसने मुंह खुला रखकर कहा।

"हाँ, मुझे पता है कि 6:30 बज रहे हैं। मुझे अभी भी सोना चाहिए। मुझे ठीक से समझाना नहीं आता, लेकिन मेरे लिए यही नियम है।"

"खैर, मैं छत पर ऐसा नहीं कर सकता। तीसरी मंजिल पर कोई शिकायत कर देगा। यहाँ, हम एक स्टोररूम के ऊपर हैं।"

"तो क्वाड पर जाओ। लॉन पर जाओ।"

"वो भी ठीक नहीं है। मेरे पास ट्रांजिस्टर रेडियो नहीं है। मुझे इसे प्लग इन करना होगा। और संगीत के बिना रेडियो का अभ्यास नहीं किया जा सकता।"

हाँ, उसका रेडियो पुराना और बेकार था, उसमें बैटरी नहीं चलती थी। मेरा रेडियो ट्रांजिस्टर वाला पोर्टेबल था, लेकिन वो सिर्फ FM पर चलता था, वो भी सिर्फ संगीत के लिए।

"ठीक है, चलो समझौता करते हैं," मैंने कहा। "व्यायाम करो, लेकिन कूदने वाला हिस्सा छोड़ दो। उससे बहुत शोर होता है। तुम्हारा क्या कहना है?"

"जे-जंपिंग? वो क्या होता है?"

"कूदना तो कूदना ही होता है। ऊपर-नीचे उछलना।" "लेकिन यहाँ तो कोई कूदना नहीं है।"

मेरे सिर में दर्द होने लगा था। मैं हार मानने को तैयार थी, लेकिन मैं अपनी बात मनवाना चाहती थी। मैं बिस्तर से उठी और उछल-कूद करते हुए एनएचके के रेडियो कैलिस्टेनिक्स की शुरुआती धुन गाने लगी। "मैं इसी

बारे में बात कर रही हूँ," मैंने कहा।
"ओह, वो बात। मुझे लगता है आप सही कह रहे हैं। मैंने कभी ध्यान ही नहीं दिया।"
"समझे मेरी बात?" मैंने बिस्तर के किनारे बैठते हुए कहा। "बस वो हिस्सा छोड़ दो। बाकी मैं बर्दाश्त कर लूंगी। उछलना बंद करो और मुझे सोने दो।"
21

"लेकिन यह असंभव है," उन्होंने सहज भाव से कहा। "मैं कुछ भी छोड़ नहीं सकता। मैं पिछले दस सालों से हर दिन यही काम कर रहा हूँ, और एक बार शुरू करने के बाद मैं पूरी दिनचर्या को अनजाने में ही करता हूँ। अगर मैं कुछ भी छोड़ दूं, तो मैं इनमें से कुछ भी नहीं कर पाऊंगा।"
मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं बचा था। मैं क्या कह सकता था? इसे रोकने का सबसे तेज़ तरीका यही था कि उसके कमरे से बाहर जाने का इंतज़ार करूं और उसका रेडियो खिड़की से बाहर फेंक दूं, लेकिन मुझे पता था कि अगर मैंने ऐसा किया तो हंगामा मच जाएगा। स्टॉर्म ट्रूपर अपनी हर चीज़ को बहुत अहमियत देता था। जब उसने मुझे बिस्तर पर चुपचाप बैठे देखा तो वह मुस्कुराया और मुझे दिलासा देने की कोशिश की।
"अरे, वातानाबे, तुम भी उठकर मेरे साथ व्यायाम क्यों नहीं करते?"
और वह नाश्ता करने चला गया।

जब मैंने नाओको को स्टॉर्म ट्रूपर और उसके रेडियो व्यायाम की कहानी सुनाई, तो वह खिलखिलाकर हंस पड़ी। मेरा इरादा उसे हंसाने का नहीं था, लेकिन मैं खुद ही हंसने लगा। हालांकि उसकी मुस्कान पल भर में गायब हो गई, लेकिन मुझे लंबे समय बाद उसे मुस्कुराते हुए देखकर बहुत

अच्छा लगा।

हम योत्सुया स्टेशन पर ट्रेन से उतर चुके थे और स्टेशन के किनारे बने तटबंध पर टहल रहे थे। मई के मध्य में रविवार की दोपहर थी। सुबह की हल्की-फुल्की बारिश दोपहर से पहले ही रुक गई थी और दक्षिण की ओर से आती हवा ने नीचे लटके बादलों को उड़ा दिया था। चेरी के पेड़ों के चमकीले हरे पत्ते हवा में लहरा रहे थे और सूरज की रोशनी चारों ओर बिखेर रहे थे। यह गर्मियों की शुरुआत का एक खूबसूरत दिन था।

जिन लोगों के पास से हम गुज़रे, उन्होंने अपने स्वेटर या जैकेट कंधों पर या बाहों में उठा रखे थे। रविवार की दोपहर की सुहावनी धूप में सभी खुश दिख रहे थे। तटबंध के उस पार टेनिस कोर्ट में खेल रहे युवकों ने अपने कपड़े उतारकर सिर्फ़ शॉर्ट्स पहन रखे थे। केवल दो ननें सर्दियों की पोशाक में एक बेंच पर बैठकर बातें कर रही थीं, वहीं गर्मी की रोशनी पहुँचती हुई नहीं लग रही थी, हालाँकि धूप में बातें करते हुए दोनों के चेहरे पर संतुष्टि का भाव था।

पंद्रह मिनट चलने के बाद मुझे इतना पसीना आ गया कि मैंने अपनी मोटी सूती कमीज़ उतारकर टी-शर्ट पहन ली। नाओको ने अपनी टी-शर्ट की आस्तीनें मोड़ रखी थीं।

उसकी हल्के भूरे रंग की स्वेटशर्ट कोहनी तक ढकी हुई थी। वह अच्छी तरह से फीकी पड़ गई थी, जाहिर है कई बार धोई गई थी। मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने उसे उस शर्ट में बहुत पहले देखा हो। यह सिर्फ एक एहसास था, कोई स्पष्ट याद नहीं। उस समय मुझे नाओको के बारे में ज्यादा कुछ याद नहीं था।

"आपको सामूहिक जीवन कैसा लगता है?" उसने पूछा। "क्या बहुत सारे लोगों के साथ रहना मजेदार है?"

"मुझे नहीं पता, मैं इसे लगभग एक महीने से ही कर रहा हूँ। यह उतना बुरा नहीं है, मैं इसे सहन कर सकता हूँ।"
वह एक फव्वारे के पास रुकी और एक घूंट पानी पिया, फिर अपनी पतलून की जेब से एक सफेद रुमाल निकालकर उससे अपना मुंह पोंछा। इसके बाद वह झुकी और ध्यान से अपने जूतों के फीते दोबारा बांधे।
"क्या आपको लगता है कि मैं यह कर सकता हूँ?"
"क्या? छात्रावास में रहना?"
"अहां।"
"मुझे लगता है कि यह सब रवैये की बात है। अगर आप चाहें तो बहुत सी चीजें आपको परेशान कर सकती हैं - नियम, वे बेवकूफ जो खुद को बहुत बड़ा समझते हैं, सुबह 6:30 बजे रेडियो पर कसरत करने वाले रूममेट्स।"
लेकिन आप कहीं भी जाएं, स्थिति लगभग एक जैसी ही होती है, आप काम चला सकते हैं।"
“शायद हाँ,” उसने सिर हिलाते हुए कहा। ऐसा लग रहा था जैसे वह कुछ सोच रही हो। फिर उसने सीधे मेरी आँखों में देखा, मानो किसी अनोखी चीज़ को निहार रही हो। अब मैंने देखा कि उसकी आँखें इतनी गहरी और निर्मल थीं कि मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। मुझे एहसास हुआ कि मुझे पहले कभी इस तरह उसकी आँखों में देखने का मौका नहीं मिला था। हम दोनों पहली बार साथ में सैर पर निकले थे या इतनी देर तक बातें की थीं।
मैंने पूछा, "क्या तुम हॉस्टल में रहने के बारे में सोच रहे हो?"
"उह-उह," उसने कहा। "मैं बस सोच रही थी कि सामुदायिक जीवन कैसा होगा। और..." ऐसा लग रहा था जैसे वह सही शब्द या भाव खोजने की कोशिश कर रही हो - और नाकाम हो रही हो। फिर उसने आह भरी और नीचे देखने लगी। "ओह, मुझे नहीं पता। छोड़ो।"

बातचीत यहीं समाप्त हो गई। वह पूर्व दिशा की ओर चलती रही और मैं उसके ठीक पीछे-पीछे चलने लगा।

23

नाओको को देखे हुए लगभग एक साल बीत चुका था, और इस दौरान उसका वजन इतना कम हो गया था कि वह बिल्कुल अलग इंसान लग रही थी।

उसके गोल-मटोल गाल, जो उसकी खूबसूरती की पहचान हुआ करते थे, लगभग गायब हो चुके थे, और उसकी गर्दन नाजुक और पतली हो गई थी। ऐसा नहीं था कि वह अब हड्डियों का ढांचा बन गई थी या अस्वस्थ दिखती थी: उसके दुबलेपन में एक स्वाभाविक और शांत भाव था, मानो वह किसी लंबी, संकरी जगह में छिपी रही हो और खुद भी लंबी और पतली हो गई हो। और वह पहले से कहीं ज्यादा खूबसूरत लग रही थी। मैं उसे यह बताना चाहता था, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि कैसे कहूँ।

हमारी मुलाकात की कोई योजना नहीं थी, लेकिन हम चूओ कम्यूटर लाइन पर अचानक मिल गए। उसने अकेले फिल्म देखने का फैसला किया था, और मैं कांडा में किताबों की दुकानों की ओर जा रहा था - दोनों ही मामलों में कोई जरूरी काम नहीं था।

उसने सुझाव दिया था कि हम ट्रेन से उतर जाएँ, और संयोग से हम योत्सुया में उतरे, जहाँ हरे-भरे तटबंध पर पुराने किले की खाई के किनारे टहलना बहुत अच्छा लगता है। अकेले में, हमारे पास बात करने के लिए कुछ खास नहीं था, और मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा था कि नाओको ने हमें ट्रेन से उतरने का सुझाव क्यों दिया था। वैसे भी, हमारे बीच कभी भी ज्यादा बातचीत नहीं होती थी।

सड़क पर आते ही नाओको चलने लगी और मैं भी उसके पीछे-पीछे कुछ कदम बढ़ाते हुए तेज़ी से चलने लगा। मैं उसके और नाओको के बीच की दूरी कम कर सकता था, लेकिन किसी चीज़ ने मुझे रोक रखा था। मैं उसकी कंधों और सीधे काले बालों पर नज़र गड़ाए चलता रहा। उसने एक बड़ी, भूरे रंग की हेयरस्लाइड पहनी हुई थी, और जब वह अपना सिर घुमाती तो मुझे उसका एक छोटा सा सफेद कान दिखाई देता। बीच-बीच में वह पीछे मुड़कर कुछ कहती।

कभी-कभी यह ऐसी टिप्पणी होती थी जिसका मैं जवाब दे सकता था, और कभी-कभी यह ऐसी बात होती थी जिसका जवाब देना मुझे बिल्कुल नहीं आता था।

कई बार तो मुझे उसकी बात सुनाई ही नहीं देती थी। उसे ज़रा भी परवाह नहीं थी। अपनी बात खत्म करने के बाद वह फिर से सामने की ओर मुड़कर चलने लगती थी। खैर, मैंने मन ही मन सोचा, आज टहलने के लिए अच्छा दिन है।

हालांकि, उस सैर को देखकर ऐसा लगता है कि नाओको के लिए यह कोई साधारण सैर नहीं थी।

वह लिदाबाशी पर दाईं ओर मुड़ी, खाई के पास से निकली, जिंबोचो चौराहे को पार किया, ओचानोमिज़ू की पहाड़ी पर चढ़ी और 24 नंबर पर बाहर निकली।

होंगो में। वहाँ से वह ट्राम की पटरियों का अनुसरण करते हुए कोमागोमे पहुँची। यह एक चुनौतीपूर्ण मार्ग था। जब तक हम कोमागोमे पहुँचे, सूरज डूब रहा था और दिन एक सुहावनी वसंत शाम में बदल चुका था।

"हम कहाँ हैं?" नाओको ने पूछा, मानो वह पहली बार अपने आसपास के वातावरण को देख रही हो।

मैंने कहा, "कोमागोमे, क्या तुम्हें पता नहीं था? हमने यह बड़ा आर्क बनाया है।"
हम यहाँ क्यों आए?
"आप हमें यहाँ लाए थे। मैं तो बस आपका पीछा कर रहा था।"
हम स्टेशन के पास एक दुकान पर नूडल्स का एक कटोरा लेने गए। प्यास से बेहाल, मैंने पूरी एक बियर अकेले ही पी ली। ऑर्डर देने से लेकर खाना खत्म करने तक हम दोनों में से किसी ने एक शब्द भी नहीं बोला। मैं पैदल चलने से थक गया था, और वह बस मेज पर हाथ रखे बैठी कुछ सोच रही थी। टीवी समाचारों में बताया जा रहा था कि इस गर्म रविवार को सभी घूमने-फिरने की जगहें भरी हुई थीं। और हम तो योत्सुया से कोमागोमे तक पैदल ही आए थे, मैंने मन ही मन सोचा।
"वाह, आप तो अच्छी सेहत में हैं," मैंने अपने नूडल्स खत्म करने के बाद कहा।
"हैरान?"
"हाँ।"
"आपको बता दूं, मैं स्कूल में लंबी दूरी की दौड़ लगाती थी। मैं 10,000 मीटर की दौड़ लगाती थी। और मेरे पिताजी मुझे बचपन से ही हर रविवार को पहाड़ पर चढ़ाई के लिए ले जाते थे। आपको हमारा घर तो पता ही होगा - ठीक वहीं, पहाड़ के बगल में। मेरे पैर हमेशा से ही मजबूत रहे हैं।"
मैंने कहा, "यह दिखाई नहीं देता।"
"मुझे पता है," उसने जवाब दिया। "हर कोई सोचता है कि मैं एक नाजुक सी छोटी लड़की हूँ।"
लेकिन किसी किताब को उसके कवर से नहीं आंकना चाहिए।" यह कहते हुए उन्होंने एक पल के लिए मुस्कुरा दिया।
"और यही बात मुझ पर भी लागू होती है," मैंने कहा। "मैं थक गया हूँ।"

"ओह, मुझे माफ़ करना, मैं तुम्हें पूरे दिन इधर-उधर घसीटता रहा।" "फिर भी, मुझे खुशी है कि हमें बात करने का मौका मिला। हमने पहले कभी अकेले में बात नहीं की थी," मैंने कहा, और यह याद करने की कोशिश की कि हमने क्या बात की थी, लेकिन सफल नहीं हो पाई।
वह मेज पर रखी ऐशट्रे से खेल रही थी।
"मुझे आश्चर्य हो रहा है..." उसने कहना शुरू किया, "...अगर आपको कोई आपत्ति न हो... मेरा मतलब है, अगर यह 25 हो जाए।"

आपको इससे कोई परेशानी नहीं होगी... क्या हम दोबारा मिल सकते हैं? मुझे पता है कि मुझे आपसे यह पूछने का कोई हक नहीं है।
"कोई भी अधिकार? आपका इससे क्या मतलब है?"
वह शरमा गई। उसकी विनती पर मेरी प्रतिक्रिया शायद थोड़ी ज़्यादा ही तीव्र थी।
"मुझे नहीं पता... मैं इसे ठीक से समझा नहीं सकती," उसने अपनी स्वेटशर्ट की आस्तीन को कोहनी तक ऊपर खींचते हुए और फिर नीचे करते हुए कहा। उसकी बाहों के मुलायम बाल दुकान की रोशनी में सुनहरे रंग में चमक रहे थे। "मेरा मतलब बिल्कुल 'सही' कहना नहीं था। मैं इसे कहने का कोई और तरीका ढूंढ रही थी।"
टेबल पर कोहनी टिकाए, वह दीवार पर लगे कैलेंडर को घूर रही थी, मानो उसमें अपने भाव व्यक्त करने का सही तरीका ढूंढ रही हो। असफल होकर उसने आह भरी, आंखें बंद कीं और अपने बालों की लटों से खेलने लगी।
"कोई बात नहीं," मैंने कहा। "मुझे लगता है मैं समझ गया हूँ कि तुम क्या कहना चाह रहे हो। मुझे भी नहीं पता कि इसे कैसे कहूँ।"
"मैं कभी वो नहीं कह पाती जो मैं कहना चाहती हूँ," नाओको ने आगे

कहा। "काफी समय से ऐसा ही चल रहा है। मैं कुछ कहने की कोशिश करती हूँ, लेकिन मेरे मुँह से गलत शब्द ही निकलते हैं - या तो गलत शब्द या फिर मेरे मतलब के बिल्कुल उलट शब्द। मैं खुद को सुधारने की कोशिश करती हूँ, और इससे बात और बिगड़ जाती है। मैं भूल ही जाती हूँ कि मैं शुरू में क्या कहना चाह रही थी। ऐसा लगता है जैसे मैं दो हिस्सों में बँट गई हूँ और खुद से ही लुका-छिपी खेल रही हूँ। एक हिस्सा दूसरे हिस्से का पीछा कर रहा है, एक बड़े से खंभे के चारों ओर। दूसरे हिस्से के पास सही शब्द हैं, लेकिन यह हिस्सा उसे पकड़ नहीं पा रहा है।" उसने अपना चेहरा ऊपर उठाया और मेरी आँखों में देखा। "क्या तुम्हें मेरी बात समझ आ रही है?"

मैंने कहा, "हर कोई कुछ हद तक ऐसा महसूस करता है। वे खुद को व्यक्त करने की कोशिश कर रहे हैं और सही तरीके से व्यक्त न कर पाने से परेशान होते हैं।"

मेरे जवाब से नाओको निराश दिखीं। "नहीं, यह भी सही नहीं है।"

उसने बिना और स्पष्टीकरण दिए कहा।

मैंने कहा, "खैर, आपसे दोबारा मिलकर मुझे खुशी होगी। मैं रविवार को हमेशा खाली रहता हूँ, और टहलना मेरे लिए अच्छा रहेगा।"

हमने यामानोते लाइन में ट्रेन पकड़ी और नाओको ने शिंजुकु में चुओ लाइन में ट्रेन बदल ली। वह पश्चिमी छोर पर एक छोटे से फ्लैट में रहती थी।

कोकुबुनजी का उपनगर।

"बताओ," उसने विदा होते हुए कहा। "क्या मेरे बोलने के तरीके में कुछ बदलाव आया है?"

मैंने कहा, "मुझे लगता है ऐसा ही है, लेकिन मुझे पक्का नहीं पता कि

क्या। सच कहूँ तो, मुझे याद है कि मैंने तुम्हें उस समय कई बार देखा था, लेकिन मुझे तुमसे ज्यादा बात करना याद नहीं है।"
"हाँ, यह सच है," उसने कहा। "वैसे, क्या मैं आपको शनिवार को कॉल कर सकती हूँ?"
"ज़रूर। मुझे आपके जवाब का इंतज़ार रहेगा।"

नाओको से मेरी पहली मुलाकात तब हुई जब मैं स्कूल में छठी कक्षा में पढ़ रहा था। वह भी एक ईसाई मिशन द्वारा संचालित एक आलीशान लड़कियों के स्कूल में छठी कक्षा में पढ़ रही थी। स्कूल इतना सभ्य था कि अगर आप ज्यादा पढ़ाई करते थे तो आपको असभ्य समझा जाता था। नाओको मेरे सबसे अच्छे (और इकलौते) दोस्त किज़ुकी की प्रेमिका थी। वे दोनों लगभग जन्म से ही एक-दूसरे के बहुत करीब थे, उनके घर 200 गज से भी कम दूरी पर थे।
बचपन से साथ रहने वाले ज़्यादातर जोड़ों की तरह, किज़ुकी और नाओको के रिश्ते में भी एक सहज खुलापन था और ऐसा ज़रा भी नहीं लगता था कि वे अकेले रहना चाहते हों। वे अक्सर एक-दूसरे के घर जाते थे और एक-दूसरे के परिवारों के साथ खाना खाते या महजोंग खेलते थे। मैंने उनके साथ कई बार डबल डेट की। नाओको मेरे लिए एक स्कूल फ्रेंड को लाती थी और हम चारों चिड़ियाघर, स्विमिंग पूल या सिनेमा जाते थे। वो जिन लड़कियों को लाती थी, वे हमेशा सुंदर होती थीं, लेकिन मेरे हिसाब से थोड़ी ज़्यादा ही सलीकेदार थीं। मुझे अपने सरकारी स्कूल की थोड़ी कम सलीके वाली लड़कियों से ज़्यादा अच्छी बनती थी, जिनसे बात करना आसान था। नाओको जिन सुंदर लड़कियों को लाती थी, उनके दिमाग में क्या चल रहा होता था, यह मैं कभी समझ नहीं पाता था, और शायद वे भी मुझे समझ नहीं पाती थीं।

कुछ समय बाद, किज़ुकी ने मेरे लिए डेट्स अरेंज करने की कोशिश करना छोड़ दिया, और इसके बजाय हम तीनों साथ में चीजें करने लगे। किज़ुकी, नाओको और मैं: अजीब था, लेकिन यही सबसे आरामदायक कॉम्बिनेशन था।
चौथे व्यक्ति को शामिल करने से हमेशा थोड़ी अटपटी स्थिति बन जाती थी। हम एक टीवी टॉक शो की तरह थे, जिसमें मैं मेहमान, किज़ुकी प्रतिभाशाली होस्ट और नाओको उनकी सहायक थीं। 27 साल की उम्र में वह काफी अच्छे थे।

वह हमेशा केंद्रीय स्थान पर रहता था। यह सच है कि उसका एक व्यंग्यात्मक पहलू भी था जो अक्सर लोगों को अहंकारी लगता था, लेकिन वास्तव में वह एक विचारशील और निष्पक्ष व्यक्ति था। वह अपनी टिप्पणियाँ और चुटकुले नाओको और मुझ पर समान रूप से बाँटता था, इस बात का ध्यान रखते हुए कि हममें से कोई भी उपेक्षित महसूस न करे। यदि कोई बहुत देर तक चुप रहता, तो वह बातचीत को उसी दिशा में मोड़ देता और उसे बोलने के लिए प्रेरित करता। यह शायद जितना दिखता था उससे कहीं अधिक आसान था: वह हर पल अपने आसपास के माहौल को नियंत्रित और समायोजित करना जानता था। इसके अलावा, उसमें किसी के सामान्यतः नीरस विचारों में भी रोचक पहलू ढूंढने की एक दुर्लभ प्रतिभा थी, जिससे उससे बात करते समय आपको ऐसा महसूस होता था कि आप एक असाधारण रूप से रोचक व्यक्ति हैं और आपका जीवन भी असाधारण रूप से रोचक है।
फिर भी, वह ज़रा भी मिलनसार नहीं था। स्कूल में मैं ही उसका इकलौता सच्चा दोस्त था। मुझे कभी समझ नहीं आया कि इतना बुद्धिमान और बातूनी लड़का अपनी प्रतिभा को अपने आस-पास की दुनिया में क्यों नहीं

फैलाता, बल्कि हमारे छोटे से समूह तक ही सीमित क्यों रहता है। और न ही मुझे समझ आया कि उसने मुझे ही अपना दोस्त क्यों चुना। मैं तो बस एक साधारण बच्चा था जिसे किताबें पढ़ना और संगीत सुनना पसंद था, और मुझमें ऐसा कुछ भी नहीं था जो किज़ुकी जैसे किसी व्यक्ति को मेरी ओर ध्यान देने के लिए प्रेरित करता। फिर भी, हमारी दोस्ती तुरंत गहरी हो गई। उसके पिता एक दंत चिकित्सक थे, जो अपनी पेशेवर कुशलता और अपनी ऊंची फीस के लिए जाने जाते थे।
"क्या तुम रविवार को डबल डेट पर चलना चाहोगी?" उसने मुझसे मिलते ही पूछा। "मेरी गर्लफ्रेंड एक लड़कियों के स्कूल में पढ़ती है, और वो तुम्हारे लिए एक प्यारी सी लड़की को साथ लाएगी।"
"ज़रूर," मैंने कहा, और इस तरह मेरी मुलाकात नाओको से हुई।

हम तीनों ने साथ में बहुत समय बिताया, लेकिन जब भी किज़ुकी कमरे से बाहर जाती, नाओको और मुझे आपस में बात करने में दिक्कत होती थी। हमें कभी समझ नहीं आता था कि क्या बात करें। और सच तो यह है कि हमारे बीच कोई ऐसा विषय था ही नहीं जिस पर हम दोनों की राय एक जैसी हो। बात करने के बजाय, हम पानी पीते या मेज पर रखी किसी चीज़ से खेलते रहते और किज़ुकी के वापस आने और बातचीत शुरू करने का इंतज़ार करते। नाओको ज़्यादा बातूनी नहीं थी, और मैं बोलने से ज़्यादा सुनने वाली थी, इसलिए मुझे 28

जब मैं उसके साथ अकेला होता था तो मुझे असहज महसूस होता था। ऐसा नहीं था कि हम एक-दूसरे के अनुकूल नहीं थे: बस हमारे पास बात करने के लिए कुछ नहीं था।
किज़ुकी के अंतिम संस्कार के बाद नाओको और मैं सिर्फ़ एक बार मिले।

घटना के दो हफ़्ते बाद, हम एक कैफ़े में किसी छोटे-मोटे काम के लिए मिले, और जब वह काम खत्म हुआ तो हमारे पास कहने को कुछ नहीं बचा। मैंने कई अलग-अलग विषयों पर बात करने की कोशिश की, लेकिन किसी से भी कोई नतीजा नहीं निकला। और जब नाओको ने बात की, तो उसकी आवाज़ में एक कड़वाहट थी। वह मुझसे नाराज़ लग रही थी, लेकिन मुझे समझ नहीं आया कि क्यों। उसके बाद हम फिर कभी नहीं मिले, और एक साल बाद टोक्यो की चोउ लाइन में हमारी मुलाक़ात हो गई।

नाओको मुझसे इसलिए नाराज़ हो सकती थी क्योंकि किज़ुकी को आखिरी बार मैंने देखा था, न कि उसने। शायद यह कहने का सबसे अच्छा तरीका नहीं है, लेकिन मैं उसकी भावनाओं को लगभग समझ गई थी। अगर संभव होता तो मैं उसकी जगह होती, लेकिन आखिरकार जो हुआ सो हुआ, और मैं कुछ नहीं कर सकती थी।
मई की एक सुहावनी दोपहर थी। दोपहर के भोजन के बाद, किज़ुकी ने सुझाव दिया कि हम क्लास छोड़कर पूल खेलने चलें। मुझे दोपहर की क्लासों में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी, इसलिए हम दोनों स्कूल से निकले, पहाड़ी से नीचे बंदरगाह पर बने एक पूल हॉल में गए और चार गेम खेले। जब मैंने पहला आसान गेम जीता, तो वह गंभीर हो गया और अगले तीन गेम जीत लिए।
इसका मतलब था कि हमारी प्रथा के अनुसार मैंने भुगतान किया। खेलते समय किज़ुकी ने एक भी मज़ाक नहीं किया, जो कि बहुत ही असामान्य था। खेल खत्म होने के बाद हमने सिगरेट पी।
मैंने पूछा, "इतना गंभीर क्यों हो रहे हो?"
"मैं आज हारना नहीं चाहता था," किज़ुकी ने संतुष्ट मुस्कान के साथ

कहा।
उसी रात उनकी मौत उनके गैराज में हो गई। उन्होंने अपनी एन-360 के एग्ज़ॉस्ट पाइप से एक रबर की नली खिड़की तक ले जाकर, खिड़की के गैप को टेप से बंद कर दिया और इंजन को तेज़ आवाज़ में स्टार्ट किया। मुझे नहीं पता कि उन्हें मरने में कितना समय लगा। उनके माता-पिता एक बीमार रिश्तेदार से मिलने गए हुए थे, और जब उन्होंने अपनी कार पार्क करने के लिए गैराज खोला, तो वे पहले ही मर चुके थे। उनका रेडियो चल रहा था, और एक पेट्रोल पंप की रसीद विंडस्क्रीन के नीचे रखी हुई थी।

वाइपर।
किज़ुकी ने कोई सुसाइड नोट नहीं छोड़ा था, और आत्महत्या का कोई मकसद भी नज़र नहीं आ रहा था। चूंकि मैं उसे आखिरी बार देखने वाला था, इसलिए पुलिस ने मुझे पूछताछ के लिए बुलाया। मैंने जांच अधिकारी को बताया कि किज़ुकी ने अपने इस कदम के बारे में कोई संकेत नहीं दिया था, वह हमेशा की तरह बिल्कुल सामान्य था। पुलिसवाले ने जाहिर तौर पर किज़ुकी और मेरे बारे में गलत धारणा बना ली थी, मानो क्लास बंक करने और पूल खेलने वाले व्यक्ति के लिए आत्महत्या करना बिलकुल स्वाभाविक हो। अखबार में एक छोटी सी खबर छपने से मामला शांत हो गया। किज़ुकी के माता-पिता ने उसका लाल रंग का N-360 कार्ड फेंक दिया। कुछ समय तक उसकी स्कूल डेस्क पर एक सफेद फूल रखा रहता था।
किज़ुकी की मृत्यु और मेरी परीक्षाओं के बीच के दस महीनों में, मैं अपने आस-पास की दुनिया में अपनी जगह नहीं बना पाया। मैंने स्कूल की एक लड़की के साथ संबंध बनाना शुरू किया, लेकिन यह छह महीने भी नहीं चला। मुझे उसमें कुछ भी खास आकर्षित नहीं कर पाया। मैंने टोक्यो के

एक निजी विश्वविद्यालय में दाखिला मांगा, जहाँ प्रवेश परीक्षा के लिए मुझे ज्यादा पढ़ाई नहीं करनी पड़ती, और मैं बिना किसी उत्साह के पास हो गया। उस लड़की ने मुझसे टोक्यो न जाने की गुजारिश की - "यह यहाँ से 500 मील दूर है!" उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा - लेकिन मुझे किसी भी कीमत पर कोबे से दूर जाना था। मैं एक नई जिंदगी शुरू करना चाहता था जहाँ मैं किसी को भी न जानता होऊं।

"मेरे साथ सोने के बाद अब तुम्हें मेरी कोई परवाह नहीं है," उसने रोते हुए कहा।

मैंने जोर देकर कहा, "यह सच नहीं है। मुझे बस इस शहर से दूर जाना है।"

लेकिन वह मुझे समझने को तैयार नहीं थी। और इसलिए हम अलग हो गए।

घर की बाकी लड़कियों के मुकाबले उसे इतना अच्छा बनाने वाली सारी बातों के बारे में सोचते हुए, मैं टोक्यो जाने वाली बुलेट ट्रेन में बैठी थी और अपने किए पर बहुत बुरा महसूस कर रही थी, लेकिन अब उसे सुधारना नामुमकिन था। मैं उसे भूलने की कोशिश करूंगी।

जब मैंने छात्रावास में अपना नया जीवन शुरू किया, तो मेरे लिए केवल एक ही काम था: हर चीज़ को इतनी गंभीरता से लेना बंद करना; अपने और बाकी सब चीज़ों के बीच एक उचित दूरी स्थापित करना। हरे रंग के पूल टेबल, लाल N-360 और स्कूल डेस्क पर रखे सफेद फूलों को भूल जाओ; लगभग 30

श्मशान घाटों की ऊंची चिमनियों से उठता धुआं और पुलिस के पूछताछ कक्षों में रखे मोटे-मोटे पेपरवेट। शुरू में तो यह कारगर प्रतीत हुआ।

मैंने भूलने की बहुत कोशिश की, लेकिन मेरे अंदर हवा का एक अस्पष्ट

गुच्छा बना रहा।
और जैसे-जैसे समय बीतता गया, वह उलझन एक स्पष्ट और सरल रूप लेने लगी, एक ऐसा रूप जिसे मैं शब्दों में व्यक्त कर सकता हूँ, जैसे: मृत्यु का अस्तित्व है, जीवन के विपरीत के रूप में नहीं बल्कि जीवन के एक भाग के रूप में।
यह एक घिसा-पिटा मुहावरा है जिसे शब्दों में पिरोया गया है, लेकिन उस समय मैंने इसे शब्दों के रूप में नहीं, बल्कि अपने भीतर हवा के उस गुच्छे के रूप में महसूस किया था। मृत्यु का अस्तित्व है - एक पेपरवेट में, पूल टेबल पर चार लाल और सफेद गेंदों में - और हम जीते रहते हैं और इसे बारीक धूल की तरह अपने फेफड़ों में सांस लेते रहते हैं।
उस समय तक, मैं मृत्यु को जीवन से पूरी तरह अलग और स्वतंत्र समझता था। मुझे ऐसा लगता था कि मृत्यु का हाथ हमें ले जाना तय है, लेकिन जब तक वह हम तक नहीं पहुँचती, तब तक वह हमें अकेला छोड़ देती है। यही मुझे सरल, तार्किक सत्य लगता था। जीवन यहाँ है, मृत्यु वहाँ है। मैं यहाँ हूँ, वहाँ नहीं।
लेकिन जिस रात किज़ुकी की मृत्यु हुई, उस रात से मैंने मृत्यु (और जीवन) को इतने सरल रूप में देखने की क्षमता खो दी। मृत्यु जीवन का विपरीत नहीं थी। यह पहले से ही मेरे भीतर मौजूद थी, मेरे अस्तित्व में, यह पहले से ही थी।
मैं हमेशा से यहीं रहा हूँ, और कोई भी संघर्ष मुझे यह बात भूलने नहीं देगा।
मई की उस रात जब 17 वर्षीय किजुकी की मृत्यु हुई, तो मुझे भी मृत्यु ने ही छीन लिया।
मैंने 18 साल की उम्र में अगली वसंत ऋतु को अपने सीने में उस घबराहट के साथ बिताया, लेकिन इस दौरान मैं लगातार गंभीर होने से

बचने के लिए संघर्ष करता रहा।
मुझे यह एहसास हुआ, भले ही अस्पष्ट रूप से, कि गंभीर होना और सत्य के करीब पहुंचना एक ही बात नहीं है। लेकिन मृत्यु एक सच्चाई थी, एक गंभीर सच्चाई, चाहे आप इसे किसी भी तरह से देखें। इस घुटन भरे विरोधाभास में फंसा हुआ, मैं अंतहीन रूप से गोल-गोल घूमता रहा। अब जब मैं उन दिनों को याद करता हूँ, तो वे अजीब दिन थे। जीवन के बीच, सब कुछ मृत्यु के इर्द-गिर्द घूमता था।

31

नाओको ने मुझे अगले शनिवार को फोन किया, और उस रविवार को हमारी मुलाकात तय हो गई। शायद मैं इसे मुलाकात कह सकता हूँ। इससे बेहतर शब्द मुझे सूझ नहीं रहा।
पहले की तरह, हम गलियों में घूमते रहे। कहीं रुककर कॉफ़ी पी, फिर थोड़ा और चले, शाम को खाना खाया और अलविदा कहा। फिर से, वह रुक-रुक कर ही बोल रही थी, पर इससे उसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा, और मैंने भी बातचीत जारी रखने की कोई खास कोशिश नहीं की। जो भी मन में आया, हमने उस बारे में बात की - हमारी रोज़मर्रा की दिनचर्या, हमारे कॉलेज; हर बात का एक छोटा सा अंश था जिसका कोई मतलब नहीं था। हमने अतीत के बारे में बिल्कुल भी बात नहीं की। और मुख्य रूप से, हम चलते रहे - चलते रहे, चलते रहे। सौभाग्य से, टोक्यो इतना बड़ा शहर

है कि हम इसे पूरी तरह से घूम नहीं सकते थे।
हम लगभग हर सप्ताहांत इसी तरह टहलते रहते थे। वह आगे चलती और मैं उसके ठीक पीछे-पीछे। नाओको के पास कई तरह के हेयरस्लाइड थे और वह हमेशा उन्हें इस तरह पहनती थी कि उसका दाहिना कान खुला रहता था। मुझे वह इसी तरह पीछे से सबसे ज़्यादा याद है। जब भी उसे किसी बात पर शर्म आती, वह अपने हेयरस्लाइड से खेलने लगती। और वह हमेशा अपने मुंह को रुमाल से पोंछती रहती थी। वह ऐसा तब करती थी जब उसे कुछ कहना होता था। जैसे-जैसे मैंने उसकी इन आदतों को और करीब से देखा, मुझे वह और भी प्यारी लगने लगी।
नाओको टोक्यो के ग्रामीण पश्चिमी छोर पर स्थित एक लड़कियों के कॉलेज में गई, जो अंग्रेजी पढ़ाने के लिए प्रसिद्ध एक सुंदर छोटा सा स्थान था।

पास ही एक संकरी सिंचाई नहर थी जिसमें साफ, स्वच्छ पानी बहता था, और नाओको और मैं अक्सर उसके किनारे टहलते थे। कभी-कभी वह मुझे अपने फ्लैट में बुलाती और मेरे लिए खाना बनाती। उसे कभी इस बात की चिंता नहीं होती थी कि हम दोनों इतने करीब रहते हैं। कमरा छोटा और साफ-सुथरा था और इतना सादा था कि खिड़की के कोने में सूख रही मोजों से ही पता चलता था कि वहाँ एक लड़की रहती है।

वहाँ। वह एक सादा, सरल जीवन जीती थी, उसके बहुत कम दोस्त थे। स्कूल में उसे जानने वाले किसी ने भी उसकी ऐसी छवि की कल्पना नहीं की थी। उस समय, वह बड़े ही सलीके से कपड़े पहनती थी और उसके लाखों दोस्त थे। जब मैंने उसका कमरा देखा, तो मुझे एहसास हुआ कि मेरी ही तरह वह भी कॉलेज जाकर अपने जान-पहचान वालों से दूर एक

नई जिंदगी शुरू करना चाहती थी।
"जानते हो मैंने ये जगह क्यों चुनी?" उसने मुस्कुराते हुए कहा। "क्योंकि घर से कोई यहाँ नहीं आ रहा था। हम सबको कहीं ज़्यादा आलीशान जगह जाना था। समझ रहे हो ना?"
हालांकि, नाओको के साथ मेरे रिश्ते में प्रगति भी हुई।
धीरे-धीरे, वह मुझसे और मैं उससे ज़्यादा घुलमिल गईं। जब गर्मियों की छुट्टियाँ खत्म हुईं और नया सत्र शुरू हुआ, तो नाओको मेरे बगल में ऐसे चलने लगी मानो यह दुनिया की सबसे स्वाभाविक बात हो। मैंने महसूस किया कि अब वह मुझे एक दोस्त मानती है, और इतनी खूबसूरत लड़की के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना मेरे लिए ज़रा भी कष्टदायक नहीं था। हम टोक्यो में उसी घुमावदार रास्ते पर चलते रहे, पहाड़ चढ़ते, नदियाँ और रेलवे लाइनें पार करते, बस चलते ही रहे, बिना किसी मंज़िल के। हम सीधे आगे बढ़ते रहे, मानो हमारा चलना कोई धार्मिक अनुष्ठान हो, जो हमारी घायल आत्माओं को सुकून दे। अगर बारिश होती, तो हम छाते का इस्तेमाल करते, लेकिन हर हाल में हम चलते रहे।
फिर पतझड़ का मौसम आया और छात्रावास का मैदान ज़ेलकोवा के पत्तों से ढक गया। नए मौसम की खुशबू तब आई जब मैंने अपना पहला पुलओवर पहना। एक जोड़ी जूते घिस जाने के बाद, मैंने नए स्वेड के जूते खरीदे।
मुझे याद नहीं आ रहा कि हमने तब क्या बात की थी। शायद कुछ खास नहीं। हमने अतीत की कोई बात नहीं की और किज़ुकी के बारे में तो कभी-कभार ही बात की। हम कॉफी पीते हुए भी एक-दूसरे के सामने बिल्कुल चुप रहते थे।
नाओको को स्टॉर्म ट्रूपर के बारे में मेरी कहानियां सुनना अच्छा लगता था। एक बार उसकी एक सहपाठी (भूगोल विभाग की एक लड़की) के साथ

डेट थी, लेकिन वह शाम को जल्दी ही उदास होकर लौट आया। "बताओ, व-वातानाबे, तुम लड़कियों से किस बारे में बात करते हो?" मुझे याद नहीं कि मैंने उसे क्या जवाब दिया, लेकिन उसने गलत व्यक्ति से पूछा था।
जुलाई, 33

छात्रावास में किसी ने स्टॉर्म ट्रूपर की एम्स्टर्डम नहर वाली तस्वीर हटाकर उसकी जगह गोल्डन गेट ब्रिज की तस्वीर लगा दी थी। उसने मुझसे कहा कि वह जानना चाहता है कि क्या स्टॉर्म ट्रूपर गोल्डन गेट ब्रिज को देखकर हस्तमैथुन कर सकता है। मैंने बाद में बताया, "उसे यह बहुत पसंद आया," जिसके बाद किसी और ने हिमखंड की तस्वीर लगा दी। जब भी उसकी अनुपस्थिति में तस्वीर बदलती, स्टॉर्म ट्रूपर परेशान हो जाता था।
"आखिर ये सब कौन कर रहा है?" उसने पूछा।
मैंने कहा, "मुझे आश्चर्य होता है। लेकिन फर्क क्या है? ये सभी अच्छी तस्वीरें हैं। आपको शुक्रगुजार होना चाहिए।"
"हाँ, मुझे लगता है ऐसा ही है, लेकिन यह अजीब है।"
स्टॉर्म ट्रूपर के बारे में मेरी कहानियाँ हमेशा नाओको को हँसा देती थीं। बहुत कम चीज़ें उसे हँसा पाती थीं, इसलिए मैं उसके बारे में अक्सर बात करता था, हालाँकि मुझे इस तरह उसका इस्तेमाल करने पर खुद पर गर्व नहीं था। वह बस एक साधारण परिवार का सबसे छोटा बेटा था, जो अपनी भलाई के लिए ज़रूरत से ज़्यादा गंभीर स्वभाव का हो गया था। नक्शे बनाना ही उसके छोटे से जीवन का एकमात्र छोटा सा सपना था। भला किसे हक था कि वह इस बात पर उसका मज़ाक उड़ाए?
तब तक, स्टॉर्म-ट्रूपर के चुटकुले छात्रावास की बातचीत का एक अनिवार्य हिस्सा बन चुके थे, और जो मैंने कर दिया था उसे बदलना मेरे लिए नामुमकिन था। इसके अलावा, नाओको के मुस्कुराते चेहरे को देखना मेरे

लिए खुशी का एक खास जरिया बन गया था। मैं सबको नई-नई कहानियां सुनाता रहा।

नाओको ने मुझसे एक बार पूछा - सिर्फ एक बार - कि क्या मुझे कोई लड़की पसंद है। मैंने उसे कोबे में छोड़ आई अपनी प्रेमिका के बारे में बताया। मैंने कहा, "वह अच्छी थी, उसके साथ सोना मुझे अच्छा लगता था, और मैं उसे कभी-कभी याद करता हूँ, लेकिन आखिरकार, उसने मुझे प्रभावित नहीं किया। पता नहीं, कभी-कभी मुझे लगता है कि मेरे दिल में एक कठोर भावना बैठी है, और उसमें कुछ भी समा नहीं सकता। मुझे शक है कि क्या मैं सच में किसी से प्यार कर सकता हूँ।"

"क्या तुमने कभी प्यार किया है?" नाओको ने पूछा।

मैंने कहा, "कभी नहीं।"

उसने मुझसे इससे ज्यादा कुछ नहीं पूछा।

जब शरद ऋतु समाप्त हुई और शहर में ठंडी हवाएँ चलने लगीं, 34

नाओको अक्सर मेरी बांह से सटकर चलती थी। मैं उसके मोटे डफ़ल कोट के कपड़े से उसकी सांसें महसूस कर सकता था। वह अपनी बांह मेरी बांह से लपेट लेती, या अपना हाथ मेरी जेब में डाल लेती, या जब बहुत ठंड होती, तो कांपते हुए मेरी बांह से कसकर चिपक जाती। इन सब बातों का कोई खास मतलब नहीं था। मैं बस अपनी जेबों में हाथ डाले चलता रहा। हमारे रबर के तले वाले जूते फुटपाथ पर लगभग कोई आवाज़ नहीं करते थे, सिवाय सूखे, चौड़े सिकोमोर के पत्तों पर चलने से होने वाली सूखी चटकने की आवाज़ के। जब भी मैं वह आवाज़ सुनता, मुझे नाओको पर तरस आता। मेरी बांह की उसे ज़रूरत नहीं थी, बल्कि किसी और की बांह की। मेरी गर्माहट की उसे ज़रूरत नहीं थी, बल्कि किसी और की गर्माहट की। मुझे खुद पर लगभग अपराधबोध महसूस

होता था।
जैसे-जैसे सर्दी बढ़ती गई, नाओको की आँखों की पारदर्शी चमक और भी गहरी होती चली गई। यह एक ऐसी चमक थी जिसका कोई ठिकाना नहीं था। कभी-कभी नाओको बिना किसी स्पष्ट कारण के मेरी आँखों में देखती रह जाती थी। ऐसा लगता था मानो वह कुछ खोज रही हो, और इससे मुझे एक अजीब, अकेलापन और बेबसी का एहसास होता था।
मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या वह मुझसे कुछ कहना चाह रही थी, कुछ ऐसा जिसे वह शब्दों में व्यक्त नहीं कर पा रही थी - कुछ ऐसा जो शब्दों से परे था, जिसे वह अपने भीतर समझ नहीं पा रही थी और इसलिए जिसके कभी शब्दों में बदलने की कोई उम्मीद नहीं थी। इसके बजाय, वह अपने बालों की लटों से खेलती, रुमाल से अपने होंठों के कोनों को पोंछती, या उस अर्थहीन भाव से मेरी आँखों में देखती। जब वह ऐसा करती, तो मेरा मन करता कि मैं उसे कसकर गले लगा लूँ, लेकिन मैं हिचकिचाता और खुद को रोक लेता। मुझे डर था कि कहीं मैं उसे चोट न पहुँचा दूँ। और इस तरह हम दोनों टोक्यो की सड़कों पर चलते रहे, नाओको अंतरिक्ष में शब्दों की तलाश कर रही थी।
हॉस्टल के लड़के हमेशा मुझे चिढ़ाते थे जब भी नाओको का फोन आता था या मैं रविवार की सुबह बाहर जाता था। वे स्वाभाविक रूप से यही मान लेते थे कि मुझे कोई गर्लफ्रेंड मिल गई है। उन्हें सच बताने का कोई तरीका नहीं था, और बताने की कोई ज़रूरत भी नहीं थी, इसलिए मैंने उन्हें वही सोचने दिया जो वे सोचना चाहते थे। शाम को मुझे बेवकूफी भरे सवालों की बौछार का सामना करना पड़ता था।
हमने कौन सी पोजीशन इस्तेमाल की थी? नीचे से वह कैसी थी? उस दिन उसने किस रंग की अंडरवियर पहनी थी? मैंने उन्हें 35 दिए।

उन्हें जो जवाब चाहिए थे, वे उन्हें मिल गए।

और इस तरह मैं 18 से 19 साल का हो गया। हर दिन सूरज उगता और डूबता, झंडा फहराया और उतारा जाता। हर रविवार को मैं अपने मरे हुए दोस्त की प्रेमिका से मिलने जाता। मुझे कुछ भी पता नहीं था कि मैं क्या कर रहा हूँ या आगे क्या करने वाला हूँ। पढ़ाई के लिए मैं क्लाउडेल, रेसीन और आइज़ेंस्टीन पढ़ता था, लेकिन उनका मेरे लिए कोई खास मतलब नहीं था। लेक्चर में मेरी कोई दोस्त नहीं बनी और हॉस्टल में भी मैं मुश्किल से ही किसी को जानता था। हॉस्टल के बाकी लोग सोचते थे कि मैं लेखक बनना चाहता हूँ क्योंकि मैं हमेशा किताबों के साथ अकेला रहता था, लेकिन मेरी ऐसी कोई महत्वाकांक्षा नहीं थी। मैं कुछ बनना ही नहीं चाहता था।

मैंने नाओको से इस भावना के बारे में बात करने की कोशिश की। मैंने सोचा कि कम से कम वह मेरी भावनाओं को कुछ हद तक समझ पाएगी। लेकिन मुझे अपने आप को व्यक्त करने के लिए शब्द ही नहीं मिले। अजीब बात है, लगता है मुझे भी उसकी तरह शब्दों की खोज करने की बीमारी लग गई है।

शनिवार की रातें मैं लॉबी में फोन के पास बैठकर नाओको के फोन का इंतज़ार करती थी। ज़्यादातर लोग बाहर गए होते थे, इसलिए लॉबी आमतौर पर सुनसान रहती थी। मैं उस शांत जगह में तैरती रोशनी की किरणों को निहारती रहती, अपने दिल में झाँकने की कोशिश करती। मैं क्या चाहती थी? और दूसरे मुझसे क्या चाहते थे? लेकिन मुझे कभी जवाब नहीं मिले।

कभी-कभी मैं हाथ बढ़ाकर प्रकाश के कणों को पकड़ने की कोशिश करता था, लेकिन मेरी उंगलियां किसी चीज को नहीं छू पाती थीं।

मैं बहुत पढ़ता था, लेकिन अलग-अलग तरह की किताबें नहीं: मुझे अपनी पसंदीदा किताबें बार-बार पढ़ना अच्छा लगता था। उस समय ट्रूमैन कैपोटी, जॉन अपडाइक, एफ. स्कॉट फिट्ज़गेराल्ड, रेमंड चैंडलर जैसे लेखक थे, लेकिन मैंने अपने लेक्चर में या हॉस्टल में किसी और को ऐसे लेखकों को पढ़ते नहीं देखा। उन्हें काज़ुमी ताकाहाशी, केंज़ाबुरो ओए, युकिओ मिशिमा या समकालीन फ्रांसीसी उपन्यासकार पसंद थे, यही एक और कारण था कि मैं किसी से ज्यादा बात नहीं करता था और खुद में और अपनी किताबों में खोया रहता था। आंखें बंद करके, मैं किसी जानी-पहचानी किताब को छूता और उसकी खुशबू को अपने अंदर गहराई तक महसूस करता। इतना ही मुझे खुश करने के लिए काफी था।
18 साल की उम्र में मेरी पसंदीदा किताब जॉन अपडाइक की 'द सेंटॉर' थी, लेकिन कई बार पढ़ने के बाद, इसकी शुरुआती चमक कुछ कम होने लगी।

और पहला स्थान द ग्रेट गैट्सबी को मिल गया। गैट्सबी उसके बाद लंबे समय तक पहले स्थान पर बना रहा। जब भी मेरा मन करता, मैं उसे शेल्फ से निकालता और बेतरतीब ढंग से उसका कोई भी हिस्सा पढ़ लेता। इसने मुझे कभी निराश नहीं किया। पूरी किताब में एक भी पन्ना उबाऊ नहीं था। मैं लोगों को बताना चाहता था कि यह कितना अद्भुत उपन्यास है, लेकिन मेरे आस-पास किसी ने भी द ग्रेट गैट्सबी नहीं पढ़ा था और न ही पढ़ने की संभावना थी। एफ. स्कॉट फिट्ज़गेराल्ड को पढ़ने के लिए दूसरों को प्रेरित करना, हालांकि कोई प्रतिक्रियावादी कार्य नहीं था, लेकिन 1968 में ऐसा करना संभव नहीं था।
जब आखिरकार मेरी मुलाकात उस एक व्यक्ति से हुई जिसने गैट्सबी पढ़ी थी, तो हम दोनों दोस्त बन गए। उनका नाम नागासावा था। वे मुझसे

दो साल बड़े थे और टोक्यो विश्वविद्यालय में विधि अध्ययन कर रहे थे, इसलिए राष्ट्रीय नेतृत्व की राह पर उनका नाम तेज़ी से बढ़ रहा था। हम एक ही छात्रावास में रहते थे और एक-दूसरे को सिर्फ़ देखकर ही जानते थे, जब तक कि एक दिन मैं भोजन कक्ष में धूप वाली जगह पर बैठकर गैट्सबी पढ़ रहा था। वे मेरे बगल में बैठ गए और मुझसे पूछा कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ। जब मैंने उन्हें बताया, तो उन्होंने पूछा कि क्या मुझे पढ़ने में मज़ा आ रहा है। मैंने कहा, "यह मेरा तीसरा प्रयास है, और हर बार मुझे कुछ नया मिलता है जो मुझे पिछली बार से भी ज़्यादा पसंद आता है।"
"यह आदमी कहता है कि उसने 'द ग्रेट गैट्सबी' तीन बार पढ़ी है," उसने मानो खुद से कहा। "खैर, गैट्सबी का कोई भी दोस्त मेरा दोस्त है।"
और इस तरह हम दोस्त बन गए। यह अक्टूबर में हुआ था।
जैसे-जैसे मैं नागासावा को बेहतर जानने लगा, वो मुझे और भी अजीब लगने लगे। मैंने अपने जीवन में बहुत से अजीब लोगों से मुलाकात की थी, लेकिन नागासावा जैसा अजीब कोई नहीं। वो मुझसे कहीं अधिक उत्साही पाठक थे, लेकिन उन्होंने यह नियम बना रखा था कि वे कम से कम 30 साल पहले मरे हुए किसी भी लेखक की किताब को कभी हाथ नहीं लगाएंगे।
उन्होंने कहा, "यह एकमात्र ऐसी किताब है जिस पर मैं भरोसा कर सकता हूं।"
उन्होंने आगे कहा, "ऐसा नहीं है कि मुझे समकालीन साहित्य पर विश्वास नहीं है, लेकिन मैं समय की कसौटी पर खरी न उतरी किसी भी किताब को पढ़ने में अपना कीमती समय बर्बाद नहीं करना चाहता। जीवन बहुत छोटा है।"
मैंने अपने से दो साल बड़े इस व्यक्ति से सम्मानपूर्वक पूछा, "आपको किस तरह के लेखक पसंद हैं?"

"बाल्ज़ाक, दांते, जोसेफ कॉनराड, डिकेंस," उन्होंने बिना रुके जवाब दिया।

संकोच।
"बिल्कुल भी फैशनेबल नहीं।"

"इसीलिए मैं उन्हें पढ़ता हूँ। अगर आप सिर्फ वही किताबें पढ़ेंगे जो बाकी सब पढ़ रहे हैं, तो आप भी वही सोचेंगे जो बाकी सब सोच रहे हैं। वो तो गंवारों और निकम्मों की दुनिया है। असली लोग ऐसा करते हुए खुद पर शर्म महसूस करेंगे। क्या तुमने गौर नहीं किया, वातानाबे? इस छात्रावास में सिर्फ हम दोनों ही असली हैं। बाकी सब बेकार हैं।"
यह सुनकर मैं चौंक गया। "आप ऐसा कैसे कह सकते हैं?"
"क्योंकि यह सच है। मुझे पता है। मैं इसे देख सकता हूँ। ऐसा लगता है जैसे हमारे माथे पर निशान हैं। और वैसे भी, हम दोनों ने 'द ग्रेट गैट्सबी' पढ़ी है।"
मैंने जल्दी से कुछ गणना की। "लेकिन फिट्ज़गेराल्ड को मरे हुए तो केवल 28 साल ही हुए हैं।"
"साल," मैंने कहा।
"तो क्या हुआ? दो साल? फिट्जगेराल्ड तो आगे बढ़ चुका है।"
छात्रावास में किसी को भी यह पता नहीं था कि नागासावा क्लासिक उपन्यासों का गुप्त पाठक था, और अगर पता भी होता तो कोई फर्क नहीं पड़ता। नागासावा अपनी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध था। उसने टोक्यो विश्वविद्यालय में आसानी से दाखिला ले लिया, अच्छे अंक प्राप्त किए, सिविल सेवा परीक्षा दी, विदेश मंत्रालय में शामिल हुआ और एक राजनयिक बन गया। वह एक धनी परिवार से था। उसके पिता नागोया में

एक बड़े अस्पताल के मालिक थे, और उसका भाई भी टोक्यो विश्वविद्यालय से स्नातक था, मेडिकल स्कूल गया था और एक दिन अस्पताल का उत्तराधिकारी बनेगा। नागासावा के पास हमेशा पर्याप्त धन रहता था और वह बड़े ही गरिमापूर्ण ढंग से रहता था। लोग उसका सम्मान करते थे, यहाँ तक कि छात्रावास प्रमुख भी। जब वह किसी को कुछ करने के लिए कहता, तो वह व्यक्ति बिना किसी विरोध के उसे कर देता। इस मामले में कोई विकल्प नहीं था।

नागासावा में एक ऐसी जन्मजात खूबी थी जो लोगों को उनकी ओर आकर्षित करती थी और उन्हें उनका अनुसरण करने पर मजबूर करती थी। उन्हें पता था कि समूह का नेतृत्व कैसे करना है, स्थिति का आकलन कैसे करना है, और सटीक एवं चतुराईपूर्ण निर्देश कैसे देने हैं जिनका दूसरे पालन करें। उनके सिर के ऊपर एक ऐसी आभा छाई रहती थी जो देवदूत के प्रभामंडल की तरह उनकी शक्तियों को प्रकट करती थी, जिसे मात्र देखने मात्र से ही लोग इस श्रेष्ठ व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धा से भर जाते थे। यही कारण है कि 38 ने सभी को चौंका दिया।

नागासावा ने मुझ जैसे साधारण से व्यक्ति को अपना खास दोस्त चुना। जिन लोगों को मैं मुश्किल से जानता था, वे भी इस वजह से मेरा सम्मान करते थे, लेकिन वे शायद यह नहीं समझ पाए कि मुझे चुने जाने का कारण बहुत सीधा-सादा था, और वो ये कि मैं नागासावा के प्रति वैसा स्नेह नहीं दिखाता था जैसा उन्हें दूसरों से मिलता था। मुझे उनके स्वभाव के विचित्र और जटिल पहलुओं में दिलचस्पी थी, लेकिन उनकी अच्छी अंक, उनका व्यक्तित्व, उनका रूप-रंग - इन सब बातों से मुझ पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा। यह उनके लिए कुछ नया ही रहा होगा।

नागासावा के व्यक्तित्व के कई पहलू बेहद विरोधाभासी थे। कभी-कभी

तो मैं भी उनकी दयालुता से प्रभावित हो जाता था, लेकिन वे उतने ही क्रूर और निर्दयी भी हो सकते थे। वे एक ओर अद्भुत आध्यात्मिक व्यक्तित्व से परिपूर्ण थे, तो दूसरी ओर घोर अनैतिकता से ग्रस्त व्यक्ति भी। वे एक आशावादी नेता की तरह आगे बढ़ते थे, जबकि उनका हृदय गहरे अकेलेपन से व्याकुल होता था। मैंने उनके इन विरोधाभासी गुणों को शुरू से ही देखा था, और मैं कभी समझ नहीं पाया कि ये गुण दूसरों को इतने स्पष्ट क्यों नहीं थे। वे अपने ही एक विशेष नरक में जी रहे थे।
फिर भी, मुझे लगता है कि मैंने हमेशा उसे अच्छे नज़रिए से ही देखा। उसका सबसे बड़ा गुण उसकी ईमानदारी थी। वह न केवल कभी झूठ नहीं बोलता था, बल्कि अपनी कमियों को भी हमेशा स्वीकार करता था। वह कभी भी ऐसी बातें छिपाने की कोशिश नहीं करता था जिनसे उसे शर्मिंदगी हो सकती थी। और जहाँ तक मेरी बात है, वह हमेशा दयालु और मददगार रहा। अगर वह ऐसा न होता, तो छात्रावास में मेरा जीवन इससे कहीं अधिक अप्रिय होता। फिर भी, मैंने कभी भी उसके सामने अपने दिल की बात नहीं कही, और इस मायने में नागासावा के साथ मेरा रिश्ता किज़ुकी के साथ मेरे रिश्ते से बिल्कुल अलग था। पहली बार जब मैंने नागासावा को नशे में एक लड़की को परेशान करते देखा, तो मैंने खुद से वादा किया कि मैं किसी भी हालत में उसके सामने अपने दिल की बात नहीं कहूँगी।

छात्रावास में नागासावा से जुड़ी कई किंवदंतियाँ प्रचलित थीं। एक किंवदंती के अनुसार, उन्होंने कथित तौर पर एक बार तीन घोंघे खा लिए थे।
एक अन्य महिला ने उसे एक विशाल लिंग दिया और उसे 100 से अधिक लड़कियों के साथ सोने के लिए मजबूर किया।

घोंघे वाली कहानी सच थी। उसने खुद मुझे बताया था। "तीन बड़े-बड़े।"
39

उसने कहा, "उन्हें पूरा निगल गया।"
"आखिर किसलिए?"
"खैर, यह सब मेरे यहां रहने आने के पहले साल ही हुआ था," उन्होंने कहा। "पहले और तीसरे साल के छात्रों के बीच कुछ अनबन चल रही थी। अप्रैल में शुरू हुई और सितंबर में जाकर बात हद से बढ़ गई। पहले साल के प्रतिनिधि के तौर पर मैं तीसरे साल के छात्रों से मामला सुलझाने गया। एकदम कट्टरपंथी थे। उनके पास लकड़ी की केंडो तलवारें थीं, और
शायद वे मामले को सुलझाने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं रखते थे। इसलिए मैंने कहा, 'ठीक है, चलो इसे यहीं खत्म करते हैं। मेरे साथ जो चाहो करो, लेकिन बाकी लोगों को छोड़ दो।' तो उन्होंने कहा, 'ठीक है, देखते हैं तुम दो-तीन घोंघे कैसे निगलते हो।' 'ठीक है,' मैंने कहा, 'चलो लाते हैं।' उन कमीनों ने जाकर तीन बड़े-बड़े घोंघे ले आए। और मैंने उन्हें निगल लिया।
"यह किस तरह का था?"
"कैसा लगा?" आपको इसे खुद निगलना होगा। जिस तरह से यह आपके गले से नीचे उतरकर पेट में जाता है... यह ठंडा होता है, और इसका घिनौना स्वाद मुंह में रह जाता है... छी, इसके बारे में सोचकर ही मुझे कंपकंपी आ जाती है। मुझे उल्टी करने का मन हुआ लेकिन मैंने खुद को रोका।
मतलब, अगर मैंने उन्हें उल्टी करके बाहर निकाल दिया होता, तो मुझे उन्हें निगलना पड़ता।
मैंने उन सबको फिर से मार डाला। इसलिए मैंने उन्हें दबाए रखा। तीनों

को।
"तब क्या हुआ?"
मैं अपने कमरे में वापस गया और एक बाल्टी खारा पानी पी लिया।
इसके अलावा मेरे द्वारा और क्या किया जा सकता है?"
"हां मेरा अनुमान है कि।"
"लेकिन उसके बाद, कोई मुझसे कुछ नहीं कह सका। यहाँ तक कि तीसरे वर्ष के छात्र भी नहीं। मैं इस जगह का इकलौता लड़का हूँ जो तीन गोलियाँ निगल सकता है।"

"मैं आप पर शर्त लगाता हुँ।"
उसके लिंग के आकार का पता लगाना काफी आसान था। मैं बस उसके साथ छात्रावास के साझा शॉवर में चली गई। उसका लिंग वाकई बड़ा था। लेकिन 100 लड़कियों का आंकड़ा शायद बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया था। "शायद 75," उसने कहा। "मुझे सभी याद नहीं हैं, लेकिन मुझे यकीन है कि कम से कम 70 तो होंगी ही।" जब मैंने उसे बताया कि मेरी 40 लड़कियां थीं, तो उसने जवाब दिया।

उसने कहा, "मैं सिर्फ एक के साथ सोया था, ओह, हम इसे ठीक कर सकते हैं, आसान है। अगली बार मेरे साथ आना। मैं तुम्हारे लिए एक आसानी से ढूंढ दूंगा।"
मुझे उसकी बात पर यकीन नहीं हुआ, पर वो सही निकला। ये बहुत आसान था। इतना आसान कि जैसे बासी बीयर का नशा उतर गया हो। हम शिबुया या शिंजुकु के किसी बार में गए (उसके कुछ पसंदीदा बार थे), दो लड़कियाँ ढूँढीं (दुनिया में तो लड़कियों के जोड़े ही भरे पड़े हैं), उनसे बातें कीं, शराब पी, होटल गए और उनके साथ संबंध बनाए। वो

बहुत अच्छी बातें करता था। ऐसा नहीं था कि उसके पास कहने को कुछ बहुत खास होता था, लेकिन लड़कियाँ उसकी बातें सुनकर बहक जाती थीं, ज़्यादा पी लेती थीं और आखिर में उसके साथ सो जाती थीं। मुझे लगता है कि उन्हें इतने अच्छे, सुंदर और होशियार आदमी के साथ रहना अच्छा लगता था। और सबसे कमाल की बात ये थी कि सिर्फ उसके साथ होने से ही मैं भी उन्हें उतना ही आकर्षक लगने लगता था। नागासावा मुझे बोलने के लिए उकसाता था, और लड़कियाँ मुझे भी उसी तरह की तारीफ़ भरी मुस्कान देती थीं, जैसी वो उसे देती थीं। उसका जादू चलता था, उसकी एक ऐसी प्रतिभा थी जो मुझे हर बार प्रभावित करती थी। नागासावा के मुकाबले किज़ुकी की बातचीत करने की कला तो बच्चों का खेल थी। ये तो उपलब्धि का बिल्कुल ही अलग स्तर था। हालांकि मैं नागासावा की शक्ति में पूरी तरह से डूब गया था, फिर भी मुझे किज़ुकी की कमी खल रही थी। मुझे उसकी ईमानदारी के लिए एक नया सम्मान महसूस हुआ। उसकी प्रतिभाएँ जो भी थीं, वह केवल नाओको और मेरे साथ ही साझा करता था, जबकि नागासावा अपनी असाधारण प्रतिभा को अपने आसपास के सभी लोगों में बाँटने के लिए उत्सुक था। ऐसा नहीं था कि वह जिन लड़कियों से मिलता था, उनके साथ सोने के लिए बेताब रहता था: यह उसके लिए बस एक खेल था।

मुझे अनजान लड़कियों के साथ सोने का ज़्यादा शौक नहीं था। बेशक, यह मेरी यौन इच्छा को शांत करने का एक आसान तरीका था, और मुझे गले लगाना और छूना अच्छा लगता था, लेकिन अगली सुबह मुझे बिल्कुल पसंद नहीं थी। मैं उठता और देखता कि कोई अनजान लड़की मेरे बगल में सो रही है, कमरे में शराब की बदबू आती, और बिस्तर,

रोशनी और पर्दों में एक अजीब सी महक होती।
"लव होटल" जैसी भड़कीली चीज़ों से मेरा दिमाग हैंगओवर के कारण धुंध में डूबा रहता।
फिर लड़की जाग जाती और अपनी पैंटी ढूंढने लगती।

और मोज़े पहनते समय वह कुछ इस तरह कहती थी,
"उम्मीद है तुमने कल रात इसका इस्तेमाल किया होगा। मेरे लिए तो महीने का सबसे बुरा दिन होता है।" फिर वो शीशे के सामने बैठ जाती और अपने सिरदर्द या खराब मेकअप के बारे में बड़बड़ाने लगती, कभी लिपस्टिक लगाती तो कभी नकली पलकें। मैं उनके साथ पूरी रात बिताना पसंद नहीं करता, लेकिन महिलाओं को रिझाने के चक्कर में आधी रात के कर्फ्यू की चिंता नहीं कर सकते (जो वैसे भी भौतिकी के नियमों के खिलाफ है), इसलिए मैं रात भर के लिए बाहर चला जाता। इसका मतलब था कि मुझे सुबह तक वहीं रहना पड़ता और फिर आत्म-घृणा और निराशा से भरा हुआ, आँखों में चुभती धूप, मुँह में रेत भरी हुई, और दिमाग में किसी और का साया लिए हुए हॉस्टल लौटना पड़ता।
जब मैंने इस तरह तीन-चार लड़कियों के साथ संबंध बना लिए, तो मैंने नागासावा से पूछा,
"जब आप इसे 70 बार कर चुके होते हैं, तो क्या यह कुछ हद तक निरर्थक नहीं लगने लगता?"
उन्होंने कहा, "इससे साबित होता है कि आप एक अच्छे इंसान हैं। बधाई हो।"
एक के बाद एक कई अनजान महिलाओं के साथ सोने से कुछ भी हासिल नहीं होता। इससे सिर्फ थकान होती है और खुद से घृणा होने लगती है। मेरे साथ भी ऐसा ही है।

तो फिर तुम इसे जारी क्यों रखते हो?
कहना मुश्किल है। अरे, आपको याद है दोस्तोवस्की ने जुए पर क्या लिखा था? यह कुछ वैसा ही है। जब आपके चारों ओर अनंत संभावनाएं हों, तो उन्हें ठुकराना सबसे मुश्किल कामों में से एक है। समझे?
"की तरह।"
"देखो। सूरज डूबता है। लड़कियाँ बाहर आती हैं और शराब पीती हैं। वे इधर-उधर भटकती हैं, कुछ खोजती हैं। मैं उन्हें वह चीज़ दे सकता हूँ। यह दुनिया का सबसे आसान काम है, जैसे नल से पानी पीना। देखते ही देखते, मैं उन्हें अपने वश में कर लेता हूँ। यही तो वे उम्मीद करती हैं।"
संभावना से मेरा यही मतलब है। यह आपके चारों ओर मौजूद है। आप इसे कैसे अनदेखा कर सकते हैं? आपके पास एक विशेष क्षमता है और उसे उपयोग करने का अवसर भी: क्या आप चुप रहकर इसे यूं ही बीतने दे सकते हैं?
मैंने 42 नंबर के साथ कहा, "मुझे नहीं पता, मैं कभी ऐसी स्थिति में नहीं रहा।"

मुस्कुराते हुए। "मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि यह कैसा होगा।"
नागासावा ने कहा, "अपनी खुशियों को गिनें।"
नागासावा के अमीर परिवार से होने के बावजूद, महिलाओं के प्रति उनके आकर्षण के कारण ही उन्हें छात्रावास में रहना पड़ा। उनके पिता को चिंता थी कि अगर उन्हें टोक्यो में अकेले रहने दिया गया तो वे कुछ और नहीं करेंगे, इसलिए उन्होंने उन्हें विश्वविद्यालय के चारों साल छात्रावास में ही रहने के लिए मजबूर किया था। हालांकि, नागासावा को इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता था। कुछ नियमों से उन्हें कोई परेशानी नहीं होने वाली थी।

जब भी उसका मन करता, वह रात भर के लिए छुट्टी लेकर लड़कियों से मिलने निकल जाता या अपनी प्रेमिका के फ्लैट पर रात बिताता। ये अनुमतियाँ आसानी से नहीं मिलती थीं, लेकिन उसके लिए ये किसी फ्री पास की तरह थीं - और मेरे लिए भी, बशर्ते वह पहले अनुमति मांग ले।

नागासावा की एक पक्की गर्लफ्रेंड थी, जिसके साथ वह अपने पहले साल से ही डेटिंग कर रहा था। उसका नाम हात्सुमी था और वह नागासावा की ही उम्र की थी। मैं उससे कुछ बार मिला था और मुझे वह बहुत अच्छी लगी।

उसकी सूरत ऐसी नहीं थी कि देखते ही सबका ध्यान खींच ले, और सच कहूँ तो वह इतनी साधारण थी कि जब मैं उससे पहली बार मिला तो मुझे हैरानी हुई कि नागासावा को उससे बेहतर लड़की क्यों नहीं मिल पाई, लेकिन जो भी उससे बात करता, उसे वह तुरंत पसंद आ जाती थी। शांत, समझदार, मजाकिया, ख्याल रखने वाली, वह हमेशा बेहद सलीके से कपड़े पहनती थी। मुझे वह बहुत पसंद आई और मैं जानता था कि अगर मुझे हात्सुमी जैसी गर्लफ्रेंड मिल जाए, तो मैं इधर-उधर भटकता नहीं। वह भी मुझे पसंद करती थी और उसने मुझे अपने क्लब की एक फर्स्ट ईयर की लड़की से मिलवाने की बहुत कोशिश की ताकि हम डबल डेट पर जा सकें, लेकिन मैं पिछली गलतियों को न दोहराने के लिए बहाने बना देता था। हात्सुमी देश के सबसे बेहतरीन गर्ल्स कॉलेज में पढ़ती थी, और मेरे लिए उन सुपर-रिच राजकुमारियों में से किसी से बात करना नामुमकिन था।

हात्सुमी को इस बात का काफी हद तक अंदाजा था कि नागासावा के कई अन्य लोगों के साथ संबंध हैं, लेकिन उसने कभी उससे शिकायत नहीं की। वह उससे बेहद प्यार करती थी, लेकिन उसने कभी कोई मांग नहीं रखी।

"मैं हात्सुमी जैसी लड़की के लायक नहीं हूँ," नागासावा ने एक बार मुझसे कहा था। मुझे उनकी बात से सहमत होना पड़ा।

43

उस सर्दी के मौसम में मुझे शिंजुकु में एक छोटी सी रिकॉर्ड की दुकान में अंशकालिक नौकरी मिल गई।
इसमें ज़्यादा पैसे तो नहीं मिलते थे, लेकिन काम आसान था - बस हफ्ते में तीन रातें दुकान की देखभाल करनी होती थी - और वे मुझे सस्ते में रिकॉर्ड खरीदने देते थे। क्रिसमस पर मैंने नाओको को हेनरी मैनसिनी का एक एल्बम दिया जिसमें उसका पसंदीदा गाना "डियर हार्ट" भी था। मैंने उसे खुद लपेटा और उस पर एक चमकीला लाल रिबन लगाया। उसने मुझे ऊनी दस्ताने दिए जो उसने बुने थे। अंगूठे थोड़े छोटे थे, लेकिन उनसे मेरे हाथ गर्म रहे।
"ओह, मुझे माफ़ करना," उसने शरमाते हुए कहा, "कितना बुरा काम किया!"
"चिंता मत करो, ये ठीक से फिट हो रहे हैं," मैंने अपने दस्ताने पहने हुए हाथों को उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा।
"अच्छा, कम से कम आपको अपने हाथ जेब में नहीं डालने पड़ेंगे, मुझे लगता है।"
नाओको सर्दियों की छुट्टियों में कोबे अपने घर नहीं गई। मैं भी टोक्यो में ही रहा और साल के अंत तक रिकॉर्ड शॉप में काम करता रहा। कोबे में मेरे पास करने के लिए कुछ खास नहीं था और न ही कोई ऐसा व्यक्ति था जिससे मैं मिलना चाहता था।
छात्रावास का भोजन कक्ष छुट्टी के कारण बंद था, इसलिए मैं भोजन के

लिए नाओको के फ्लैट पर गया। नए साल की पूर्व संध्या पर हमने भी बाकी सब लोगों की तरह चावल के केक और सूप खाया।
उस वर्ष, 1969 में, जनवरी के अंत और फरवरी के महीनों में बहुत कुछ घटित हुआ।
जनवरी के अंत में, स्टॉर्म ट्रूपर तेज बुखार के साथ बिस्तर पर चला गया। इसका मतलब था कि मुझे उस दिन नाओको को अकेला छोड़ना पड़ा। मैंने एक कॉन्सर्ट के लिए मुफ्त टिकट पाने के लिए बहुत मशक्कत की थी। वह खास तौर पर जाने के लिए बेताब थी क्योंकि ऑर्केस्ट्रा उसकी पसंदीदा रचनाओं में से एक, ब्रह्म्स की चौथी सिम्फनी, बजाने वाला था। लेकिन स्टॉर्म ट्रूपर बिस्तर पर तड़प रहा था और ऐसा लग रहा था जैसे वह दर्दनाक मौत के कगार पर है, मैं उसे अकेला नहीं छोड़ सकती थी, और मुझे कोई ऐसा बेवकूफ भी नहीं मिला जो मेरी जगह उसकी देखभाल कर सके। मैंने कुछ बर्फ खरीदी और उसके माथे पर रखने के लिए प्लास्टिक की कई थैलियों का इस्तेमाल किया, ठंडे तौलिये से उसका पसीना पोंछा, हर घंटे उसका तापमान लिया, और यहाँ तक कि उसकी बनियान भी बदली। बुखार एक दिन तक तेज रहा, लेकिन अगली सुबह वह बिस्तर से उछलकर ऐसे कसरत करने लगा जैसे कुछ हुआ ही न हो। उसका तापमान बिल्कुल 44 डिग्री था।

सामान्य। यह विश्वास करना मुश्किल था कि वह एक इंसान है।
"अजीब बात है," स्टॉर्म ट्रूपर ने कहा। "मुझे तो कभी बुखार हुआ ही नहीं।" ऐसा लग रहा था मानो वह मुझे ही दोष दे रहा हो।
इससे मुझे बहुत गुस्सा आया। "लेकिन आपको बुखार तो था ही," मैंने जोर देकर कहा और उसे दो बेकार टिकटें दिखाईं।
"अच्छा हुआ कि वे मुफ्त में मिले," उसने कहा। मेरा मन किया कि उसका

रेडियो छीनकर खिड़की से बाहर फेंक दूं, लेकिन इसके बजाय मैं सिरदर्द के साथ वापस बिस्तर पर चला गया।
फरवरी में कई बार बर्फबारी हुई।
महीने के अंत में, मेरे फ्लोर पर रहने वाले तीसरे वर्ष के एक छात्र से मेरी एक छोटी-सी लड़ाई हो गई और मैंने उसे घूंसा मार दिया। उसका सिर कंक्रीट की दीवार से टकरा गया, लेकिन उसे ज़्यादा चोट नहीं आई, और नागासावा ने मेरे लिए मामला सुलझा दिया। फिर भी, मुझे छात्रावास प्रमुख के कार्यालय में बुलाया गया और चेतावनी दी गई, जिसके बाद मुझे छात्रावास में रहना और भी असहज लगने लगा।
शैक्षणिक वर्ष मार्च में समाप्त हो गया, लेकिन मेरे कुछ क्रेडिट कम रह गए।
मेरे परीक्षा परिणाम औसत दर्जे के थे - ज्यादातर "सी" और "डी" ग्रेड मिले, कुछ ही ग्रेड कम थे।
नाओको को अपने दूसरे वर्ष के वसंत सत्र की शुरुआत के लिए सभी आवश्यक ग्रेड मिल गए थे। हमने ऋतुओं का एक पूरा चक्र पूरा कर लिया था।

अप्रैल के मध्य में नाओको 20 साल की हो गई। वह मुझसे सात महीने बड़ी थी, मेरा जन्मदिन तो नवंबर में होता है। उसका 20 साल का होना कुछ अजीब सा था। मुझे ऐसा लग रहा था मानो नाओको हो या मैं, 18 और 19 के बीच झूलते रहना ही एकमात्र अर्थपूर्ण बात थी। 18 के बाद 19 आएगा, और 19 के बाद 18, ज़ाहिर है। लेकिन वह 20 साल की हो गई। और पतझड़ में, मैं भी ऐसा ही करूँगी। केवल मृत ही हमेशा के लिए 17 साल के रहते हैं।
उसके जन्मदिन पर बारिश हुई। लेक्चर के बाद मैंने पास से एक केक

खरीदा और ट्राम से उसके फ्लैट पर गई। "हमें जश्न मनाना चाहिए," मैंने कहा। अगर हमारी स्थिति उलट होती तो शायद मैं भी यही चाहती। बीसवां जन्मदिन अकेले बिताना कितना मुश्किल होता होगा। ट्राम खचाखच भरी थी और इतनी बुरी तरह हिल रही थी कि जब तक मैं 45

जब मैं नाओको के कमरे में पहुँचा, तो केक किसी और चीज़ से ज़्यादा रोमन कोलोसियम जैसा लग रहा था। फिर भी, जैसे ही मैंने अपने साथ लाई 20 मोमबत्तियाँ खड़ी कीं, उन्हें जलाया, पर्दे बंद किए और बत्तियाँ बुझाईं, तो जन्मदिन की पार्टी का माहौल बन गया। नाओको ने शराब की एक बोतल खोली। हमने शराब पी, केक खाया और सादा भोजन किया।
"मुझे नहीं पता, 20 साल का होना बेवकूफी है," उसने कहा। "मैं अभी तैयार नहीं हूँ। यह अजीब लगता है। जैसे कोई मुझे पीछे से धक्का दे रहा हो।"
मैंने हंसते हुए कहा, "मेरे पास तैयारी करने के लिए सात महीने हैं।"
"तुम तो बहुत भाग्यशाली हो! अभी भी 19 साल की हो!" नाओको ने थोड़ी ईर्ष्या के साथ कहा।
खाना खाते समय मैंने उसे स्टॉर्म ट्रूपर के नए स्वेटर के बारे में बताया। तब तक उसके पास सिर्फ़ एक ही स्वेटर था, गहरे नीले रंग का पुलओवर, इसलिए दो स्वेटर पहनना उसके लिए बहुत बड़ी बात थी। स्वेटर देखने में अच्छा था, लाल और काले रंग का, जिस पर हिरण का बुना हुआ डिज़ाइन था, लेकिन उसे पहने देखकर सब हंसने लगे। उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि आखिर चल क्या रहा है।
"क्या बात है, वातानाबे?" उसने भोजन कक्ष में मेरे बगल में बैठते हुए पूछा। "क्या मेरे माथे पर कुछ चिपका हुआ है?"
मैंने चेहरे पर गंभीरता बनाए रखने की कोशिश करते हुए कहा, "कुछ

नहीं। इसमें कुछ भी मजेदार नहीं है। बढ़िया स्वेटर है।"
"धन्यवाद," उसने मुस्कुराते हुए कहा।
नाओको को कहानी बहुत पसंद आई। उसने कहा, "मुझे उनसे मिलना ही है। बस एक बार।"
"बिल्कुल नहीं," मैंने कहा। "तुम उसके मुंह पर हंसोगे।" "क्या तुम्हें ऐसा लगता है?"
"मुझे पूरा यकीन है। मैं उसे हर दिन देखता हूं, और फिर भी कभी-कभी मुझे हंसी आ जाती है।"
हमने मेज साफ की और फर्श पर बैठकर संगीत सुनते हुए बची हुई शराब पी ली। जितने समय में मैंने एक गिलास खत्म किया, उतने समय में उसने दो गिलास पी लिए।
उस रात नाओको असामान्य रूप से बातूनी थी। उसने मुझे अपने बचपन, अपने स्कूल, अपने परिवार के बारे में बताया। हर किस्सा लंबा था, जिसे उसने लघुचित्र की तरह बारीकी से सुनाया। मैं उसकी याददाश्त की शक्ति से चकित था, लेकिन जैसे-जैसे मैं सुनता गया, मुझे एहसास होने लगा कि जिस तरह से वह ये 46 किस्से सुना रही थी, उसमें कुछ गड़बड़ थी।

कहानियां: कुछ अजीबोगरीब, विकृत भी। हर कहानी का अपना एक आंतरिक तर्क था, लेकिन एक कहानी से दूसरी कहानी का जुड़ाव अटपटा था। देखते ही देखते, कहानी A कहानी B में बदल जाती, जो A में समाहित थी, और फिर B के किसी अंश से C निकल आती, और यह सिलसिला कभी खत्म नहीं होता था। पहले तो मुझे जवाब में कुछ कहने को मिला, लेकिन कुछ देर बाद मैंने कोशिश करना छोड़ दिया। मैंने एक रिकॉर्ड चलाया, और जब वह खत्म हुआ तो मैंने सुई उठाकर दूसरा लगा दिया। आखिरी रिकॉर्ड के बाद मैं वापस पहले रिकॉर्ड पर चला गया।

उसके पास सिर्फ छह रिकॉर्ड थे।
कार्यक्रम की शुरुआत सार्जेंट पेप्पर के लोनली हार्ट्स क्लब बैंड से हुई और बिल इवांस के वॉल्ट्ज फॉर डेबी के साथ समाप्त हुई। खिड़की के बाहर से बारिश की बूँदें गिर रही थीं।
समय धीरे-धीरे बीत रहा था। नाओको खुद से बातें करती रही।
आखिरकार मुझे समझ आया कि क्या गड़बड़ थी: नाओको बोलते समय कुछ खास बातों को छूने से बचने के लिए बहुत सावधानी बरत रही थी। उनमें से एक बात तो किज़ुकी थी ही, लेकिन बात सिर्फ किज़ुकी तक ही सीमित नहीं थी। और हालांकि वह कुछ विषयों से पूरी तरह बचना चाहती थी, फिर भी वह छोटी-छोटी, बेतुकी बातों पर भी अंतहीन और अविश्वसनीय विस्तार से बोलती रही। मैंने उसे पहले कभी इतनी तीव्रता से बोलते नहीं सुना था, इसलिए मैंने उसे बीच में नहीं टोका।
जैसे ही घड़ी में ग्यारह बजे, मुझे घबराहट होने लगी। वह चार घंटे से ज़्यादा समय से लगातार बोल रही थी। मुझे आखिरी ट्रेन और आधी रात के कर्फ्यू की चिंता थी। मैंने मौका देखा और बीच में बोलना शुरू कर दिया।
मैंने अपनी घड़ी देखते हुए कहा, "सैनिकों के घर जाने का समय हो गया है। आखिरी ट्रेन आ रही है।"
मेरी बातें उस तक पहुँच ही नहीं रही थीं। या फिर, अगर पहुँची भी तो वो उनका मतलब समझ नहीं पाईं। एक पल के लिए उसने अपना मुँह बंद कर लिया, फिर अपनी कहानी सुनाने लगी। मैंने हार मान ली और थोड़ा आराम से बैठकर दूसरी बोतल में बची हुई शराब पी ली।
मैंने सोचा कि बेहतर होगा कि मैं उसे अपनी बात पूरी करने दूं। कर्फ्यू और आखिरी ट्रेन का तो कोई मतलब ही नहीं रहेगा।
लेकिन वह ज्यादा देर तक बोल नहीं पाई। इससे पहले कि मुझे पता

चलता, उसने बोलना बंद कर दिया था। उसके बोले आखिरी शब्द का टूटा-फूटा हिस्सा हवा में तैरता हुआ सा लग रहा था, मानो कहीं से फट गया हो। उसने अपनी बात पूरी नहीं की थी। उसके शब्द मानो गायब हो गए थे। वह 47 साल की थी।

आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा था, पर कुछ भी हासिल नहीं हुआ। अब कुछ खो गया था, और शायद मैंने ही उसे नष्ट किया था। शायद मेरे शब्द आखिरकार उस तक पहुँच गए थे, समझने में समय लगा था, और उस सारी ऊर्जा को नष्ट कर दिया था जिसने उसे इतनी देर तक बोलने के लिए प्रेरित किया था।

होंठ हल्के से खुले हुए थे, उसने अपनी आधी-अधूरी निगाहें मेरी आँखों पर टिका दीं। वह किसी मशीन की तरह लग रही थी जो लगातार चल रही हो और फिर अचानक बंद हो गई हो। उसकी आँखें धुंधली सी लग रही थीं, मानो किसी पतली, पारदर्शी झिल्ली से ढकी हों।

मैंने कहा, "माफ़ करना, बीच में टोकने के लिए, लेकिन देर हो रही है, और..."

उसकी आंख से एक बड़ा आंसू बह निकला, गालों पर लुढ़का और एक रिकॉर्ड जैकेट पर जा गिरा। पहला आंसू बहते ही बाकी आंसू लगातार बहते चले गए। नाओको फर्श पर चारों हाथों-पैरों के बल झुक गई और हथेलियों को चटाई पर दबाकर उल्टी करने वाले व्यक्ति की तरह जोर-जोर से रोने लगी। मैंने अपने जीवन में कभी किसी को इतनी तीव्रता से रोते नहीं देखा था। मैंने हाथ बढ़ाकर उसके कांपते कंधे पर हाथ रखा।

फिर, लगभग सहज ही, मैंने उसे अपनी बाहों में भर लिया। मुझसे चिपकी हुई, उसका पूरा शरीर कांप रहा था, वह बिना आवाज किए रोती रही। मेरी कमीज उसके आंसुओं और गर्म सांसों से नम हो गई - फिर पूरी तरह

भीग गई। थोड़ी देर बाद उसकी उंगलियां मेरी पीठ पर चलने लगीं, मानो कुछ खोज रही हों, कोई महत्वपूर्ण चीज जो हमेशा से वहीं मौजूद थी।
अपने बाएं हाथ से उसका भार संभालते हुए, मैंने अपने दाहिने हाथ से उसके मुलायम, सीधे बालों को सहलाया। और मैं इंतज़ार करता रहा। उसी स्थिति में, मैं नाओको के रोने के रुकने का इंतज़ार करता रहा। और मैं इंतज़ार करता रहा। लेकिन नाओको का रोना कभी नहीं रुका।
उस रात मैंने नाओको के साथ संबंध बनाए। क्या यह सही था? मैं नहीं कह सकता।
आज भी, लगभग 20 साल बाद, मैं निश्चित नहीं कह सकता। शायद मैं कभी जान भी न पाऊँ। लेकिन उस समय, मैं बस यही कर सकता था। वह अत्यधिक तनाव और उलझन में थी, और उसने स्पष्ट कर दिया था कि वह चाहती है कि मैं उसे राहत दूँ। मैंने बत्तियाँ धीमी कर दीं और एक-एक करके, जितना कोमल स्पर्श कर सकता था, उसके कपड़े उतारने शुरू कर दिए।
फिर मैंने अपने कपड़े उतार दिए। अप्रैल की उस बरसात वाली रात में इतनी गर्मी थी कि हम ठंड महसूस किए बिना एक-दूसरे के नग्न शरीर से लिपटे रहे। हमने 48 का भ्रमण किया।

अंधेरे में, बिना कुछ बोले, हम एक-दूसरे के शरीर को छू रहे थे। मैंने उसे चूमा और उसके कोमल स्तनों को अपने हाथों में थाम लिया। उसने मेरे लिंग को कसकर पकड़ लिया। उसकी योनि गर्म और गीली थी, मानो मुझे अपनी ओर खींच रही हो।
फिर भी, जब मैं उसके अंदर गया, तो नाओको दर्द से तड़प उठी। क्या यह उसका पहला अनुभव था? मैंने पूछा, और उसने सिर हिलाया। अब उलझन में पड़ने की बारी मेरी थी। मैंने तो यही मान लिया था कि नाओको

इतने समय से किज़ुकी के साथ सो रही थी। मैं जितना अंदर जा सकता था, गया और नाओको को पकड़े हुए, बिना हिले-डुले, काफी देर तक उसी स्थिति में रहा। फिर, जब वह शांत होने लगी, तो मैंने खुद को उसके अंदर जाने दिया, धीरे-धीरे, कोमल गतियों से चरम सुख तक पहुँचने में काफी समय लगा। अंत में, जब उसने अपनी चुप्पी तोड़ी, तो उसकी बाहें मेरे चारों ओर कस गईं। उसकी चीख चरम सुख की सबसे दुखभरी आवाज़ थी जो मैंने कभी सुनी थी।

जब सब कुछ समाप्त हो गया, तो मैंने नाओको से पूछा कि उसने किज़ुकी के साथ कभी संबंध क्यों नहीं बनाए। यह एक गलती थी। जैसे ही मैंने यह सवाल पूछा, उसने मुझसे अपनी बाहें छुड़ा लीं और फिर से चुपचाप रोने लगी। मैंने अलमारी से उसका बिस्तर निकाला, उसे चटाई पर बिछाया और उसे कंबल ओढ़ा दिया। सिगरेट पीते हुए, मैं खिड़की के बाहर अप्रैल की अंतहीन बारिश को देखता रहा।

सुबह होते-होते बारिश रुक गई थी। नाओको मेरी तरफ पीठ करके सो रही थी। या शायद वह सोई ही नहीं थी। चाहे वह जाग रही हो या सो रही हो, उसके होंठों से एक भी शब्द नहीं निकला था, और उसका शरीर अब अकड़ा हुआ, मानो जम गया हो। मैंने कई बार उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन उसने न तो कोई जवाब दिया और न ही हिली। मैं काफी देर तक उसके नंगे कंधे को देखता रहा, लेकिन अंत में मुझे उससे कोई प्रतिक्रिया मिलने की उम्मीद नहीं रही और मैंने उठने का फैसला किया।

फर्श पर अभी भी रिकॉर्ड के कवर, गिलास, शराब की बोतलें और मेरी इस्तेमाल की हुई ऐशट्रे बिखरी पड़ी थी। आधा टूटा हुआ जन्मदिन का केक मेज पर ही पड़ा था। ऐसा लग रहा था मानो समय थम गया हो। मैंने फर्श से सामान उठाया और सिंक पर दो गिलास पानी पिया। नाओको की

मेज पर एक शब्दकोश और एक फ्रेंच क्रिया चार्ट पड़ा था। मेज के ऊपर दीवार पर एक कैलेंडर टंगा था, जिसमें कोई चित्र या तस्वीर नहीं थी, बस महीने के दिनों की संख्याएँ लिखी थीं। किसी भी तारीख के आगे कोई नोट या निशान नहीं था।
49

मैंने अपने कपड़े उठाए और पहन लिए। मेरी कमीज़ का सीना अभी भी गीला और ठंडा था। उसमें नाओको की महक थी। डेस्क पर पड़े नोटपैड पर मैंने लिखा: जब तुम शांत हो जाओ, तो मैं तुमसे अच्छी-खासी देर बात करना चाहूँगा। कृपया मुझे जल्दी कॉल करना। हैप्पी
जन्मदिन। मैंने नाओको के कंधे पर आखिरी नजर डाली, बाहर कदम रखा और चुपचाप दरवाजा बंद कर दिया।

एक हफ़्ता बीत जाने के बाद भी कोई फ़ोन नहीं आया। नाओको के घर में फ़ोन करने की कोई व्यवस्था नहीं थी, इसलिए रविवार सुबह मैं ट्रेन से कोकुबुंजी गया। वह वहाँ नहीं थी, और दरवाज़े से उसका नाम मिटा दिया गया था। खिड़कियाँ और बारिश से बचाव के लिए बने शटर कसकर बंद थे। मैनेजर ने मुझे बताया कि नाओको तीन दिन पहले ही घर छोड़कर चली गई थी। उसे नहीं पता था कि वह कहाँ गई है।
मैं वापस छात्रावास गया और नाओको को कोबे स्थित उसके घर के पते पर एक लंबा पत्र लिखा। वह जहाँ भी हो, कम से कम वे इसे उस तक पहुँचा देंगे।
मैंने उसे अपने दिल की सारी बातें ईमानदारी से बताईं। मैंने कहा कि बहुत सी बातें मुझे अभी भी समझ नहीं आ रही हैं, और हालांकि मैं समझने की पूरी कोशिश कर रही हूँ, इसमें समय लगेगा। उस समय के बाद मैं कहाँ

होऊँगी, यह अभी कहना मेरे लिए नामुमकिन है, इसीलिए मेरे लिए कोई वादा या माँग करना, या मीठी-मीठी बातें करना भी नामुमकिन है। एक तो हम एक-दूसरे को बहुत कम जानते थे। लेकिन अगर वह मुझे समय दे, तो मैं पूरी कोशिश करूँगी, और हम दोनों एक-दूसरे को बेहतर तरीके से जान लेंगे। वैसे भी, मैं उससे दोबारा मिलना चाहती थी और उससे खुलकर लंबी बातचीत करना चाहती थी। किज़ुकी को खोने के बाद, मैंने उस एक इंसान को खो दिया जिससे मैं अपने दिल की सारी बातें खुलकर कह सकती थी, और मुझे लगता है कि नाओको के साथ भी ऐसा ही हुआ होगा। हम दोनों को एक-दूसरे की ज़रूरत उससे कहीं ज़्यादा थी जितना हम दोनों जानते थे। शायद यही वजह थी कि हमारे रिश्ते में इतना बड़ा मोड़ आया और वह एक तरह से बिगड़ गया। शायद मुझे वो नहीं करना चाहिए था जो मैंने किया, फिर भी मुझे लगता है कि मैं बस यही कर सकती थी। उस क्षण तुम्हारे प्रति जो स्नेह और आत्मीयता मैंने महसूस की, वैसी अनुभूति मैंने पहले कभी नहीं की थी। मुझे इस 50वें प्रश्न का उत्तर चाहिए।

पत्र। जवाब चाहे जो भी हो, मुझे वह चाहिए।
कोई जवाब नहीं आया।
मेरे भीतर से कुछ गायब हो गया था, और उस खालीपन को भरने के लिए कुछ भी नहीं आ रहा था। मेरे शरीर में एक अजीब सी हल्कापन आ गया था, और आवाज़ें खोखली सी गूंजती थीं। मैं पहले से कहीं ज़्यादा नियमित रूप से व्याख्यानों में जाता था। वे उबाऊ थे, और मैं अपने सहपाठियों से कभी बात नहीं करता था, लेकिन मेरे पास करने के लिए और कुछ था ही नहीं। मैं व्याख्यान कक्ष की सबसे आगे वाली पंक्ति में अकेला बैठता, किसी से बात नहीं करता और अकेले ही खाना खाता। मैंने

सिगरेट पीना छोड़ दिया था।

छात्रों की हड़ताल मई के अंत में शुरू हुई। सब चिल्ला रहे थे, "विश्वविद्यालय को भंग कर दो!" मैंने सोचा, ठीक है, कर दो। भंग कर दो। टुकड़े-टुकड़े कर दो। मुझे कोई परवाह नहीं। यह एक राहत की सांस होगी। मैं किसी भी चीज़ के लिए तैयार हूँ। ज़रूरत पड़ने पर मैं मदद करूँगा। बस कर दो।

कैंपस बंद होने और लेक्चर स्थगित होने के कारण मैंने एक डिलीवरी कंपनी में काम करना शुरू कर दिया। ड्राइवर के साथ बैठकर ट्रकों में सामान लोड और अनलोड करना, इस तरह के काम। यह मेरी सोच से कहीं ज़्यादा मुश्किल था। शुरुआत में दर्द के मारे सुबह बिस्तर से उठना भी मुश्किल होता था। हालांकि, तनख्वाह अच्छी थी, और जब तक मेरा शरीर चलता-फिरता रहता, मैं अपने अंदर के खालीपन को भूल जाता था। मैं हफ्ते में पांच दिन ट्रकों पर काम करता था, और तीन रातें रिकॉर्ड शॉप में अपनी नौकरी करता रहता था। काम न होने वाली रातें मैं व्हिस्की और किताबों के साथ बिताता था। स्टॉर्म ट्रूपर व्हिस्की को हाथ भी नहीं लगाता था और उसकी गंध भी बर्दाश्त नहीं कर पाता था, इसलिए जब मैं बिस्तर पर लेटकर सीधे व्हिस्की पीता था, तो वह शिकायत करता था कि उसकी गंध से पढ़ाई करना नामुमकिन हो गया है और मुझसे कहता था कि मैं अपनी बोतल बाहर ले जाऊं।

मैंने गुर्राते हुए कहा, "दफा हो जाओ यहाँ से।"

"लेकिन आपको पता है कि छात्रावास में शराब पीना नियमों के खिलाफ है।"

मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। तुम यहाँ से चले जाओ।

उसने शिकायत करना बंद कर दिया, लेकिन अब मुझे गुस्सा आ रहा था। मैं छत पर गया और अकेले शराब पीने लगा।

जून में मैंने नाओको को एक और लंबा पत्र लिखा, जिसे मैंने फिर से कोबे स्थित उसके घर के पते पर भेजा। उसमें लगभग वही बातें लिखी थीं जो पहले पत्र में थीं, लेकिन 51

अंत में मैंने जोड़ा: आपके जवाब का इंतजार है
इसका जवाब देना मेरे जीवन के सबसे दर्दनाक अनुभवों में से एक है। कम से कम मुझे यह तो बता दो कि मैंने तुम्हें दुख पहुँचाया है या नहीं। जब मैंने इसे पोस्ट किया, तो मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे अंदर का खालीपन फिर से गहरा हो गया हो।
उस जून में मैं नागासावा के साथ दो बार फिर लड़कियों के साथ सोने के लिए बाहर गया। दोनों बार सब कुछ आसान रहा। पहली लड़की ने ज़बरदस्त विरोध किया जब मैंने उसे कपड़े उतारकर होटल के बिस्तर पर लेटाने की कोशिश की, लेकिन जब मैंने अकेले पढ़ना शुरू कर दिया क्योंकि यह सब करना बेकार था, तो वह मेरे पास आई और मुझे गले लगाने लगी। और दूसरी लड़की के साथ ऐसा करने के बाद, उसने मुझसे तरह-तरह के निजी सवाल पूछने शुरू कर दिए - मैंने कितनी लड़कियों के साथ संबंध बनाए हैं? मैं कहाँ से हूँ? मैं किस विश्वविद्यालय में पढ़ता हूँ? मुझे किस तरह का संगीत पसंद है? क्या मैंने कभी ओसामु दाज़ाई के उपन्यास पढ़े हैं? अगर मुझे विदेश जाने का मौका मिले तो मैं कहाँ जाना चाहूँगा? क्या मुझे लगता है कि उसके निपल्स बहुत बड़े हैं? मैंने कुछ मनगढ़ंत जवाब दिए और सो गया, लेकिन अगली सुबह उसने कहा कि वह मेरे साथ नाश्ता करना चाहती है, और उसने सवालों की झड़ी लगा दी।
उन बेस्वाद अंडों, टोस्ट और कॉफी के ऊपर। मेरे पिताजी क्या काम करते थे? क्या मुझे स्कूल में अच्छे नंबर मिलते थे? मेरा जन्म किस महीने में

हुआ था?
क्या मैंने कभी मेंढक खाए थे? वह मुझे सिरदर्द दे रही थी, इसलिए खाना खत्म होते ही मैंने कहा कि मुझे काम पर जाना है।
"क्या मैं तुम्हें फिर कभी देख पाऊंगी?" उसने उदास चेहरे से पूछा।
"ओह, मुझे यकीन है कि हम जल्द ही कहीं फिर मिलेंगे," मैंने कहा और चला गया। मैं आखिर कर क्या रहा हूँ? अकेले होते ही मैं सोचने लगा, खुद से घृणा महसूस कर रहा था। फिर भी, यही मेरे बस में था। मेरा शरीर स्त्रियों के लिए तड़प रहा था। उन लड़कियों के साथ सोते समय मैं हर पल नाओको के बारे में सोचता रहता था: अंधेरे में उसके नग्न शरीर की सफेद आकृति, उसकी आहें, बारिश की आवाज़। जितना ज़्यादा मैं इन चीज़ों के बारे में सोचता, मेरा शरीर उतना ही ज़्यादा तड़पता। मैं अपनी व्हिस्की लेकर छत पर गया और खुद से पूछा कि मैं किस ओर जा रहा हूँ।
अंततः, जुलाई की शुरुआत में, नाओको का एक पत्र आया। एक छोटा सा पत्र।

52

देर से जवाब देने के लिए मुझे क्षमा करें। लेकिन समझने की कोशिश करें। मुझे लिखने की स्थिति में आने में बहुत समय लगा, और मैंने इस पत्र को कम से कम दस बार शुरू किया है। लिखना मेरे लिए एक कष्टदायक प्रक्रिया है।
चलिए, मैं अपने निष्कर्ष से शुरुआत करता हूँ। मैंने कॉलेज से एक साल का ब्रेक लेने का फैसला किया है। आधिकारिक तौर पर, यह अनुपस्थिति की छुट्टी है, लेकिन मुझे लगता है कि मैं कभी वापस नहीं लौटूँगा। यह

बात आपको शायद चौंका देगी, लेकिन सच तो यह है कि मैं बहुत लंबे समय से इसके बारे में सोच रहा था। मैंने कई बार आपसे इस बारे में बात करने की कोशिश की, लेकिन मैं कभी हिम्मत नहीं जुटा पाया। मुझे तो ये शब्द बोलने से भी डर लगता था।

छोटी-छोटी बातों पर इतना परेशान मत होइए। जो भी हुआ हो या न हुआ हो, नतीजा तो वही होता। शायद यह कहने का सबसे अच्छा तरीका नहीं है, और अगर इससे आपको दुख हुआ हो तो मुझे माफ़ कीजिएगा। मैं आपको बस इतना बताना चाहता हूँ कि जो मेरे साथ हुआ उसके लिए आप खुद को दोषी न ठहराएँ। यह सब मुझे अकेले ही संभालना है। मैं इसे एक साल से ज़्यादा समय से टालता आ रहा था, और इसी वजह से मैंने आपके लिए चीज़ें बहुत मुश्किल कर दीं। अब इसे और टालने का शायद कोई रास्ता नहीं है।

अपना फ्लैट छोड़ने के बाद, मैं कोबे में अपने परिवार के घर वापस आ गई और कुछ समय से डॉक्टर से इलाज करवा रही थी। उन्होंने मुझे बताया कि क्योटो के बाहर पहाड़ियों में एक जगह है जो मेरे लिए बिल्कुल सही रहेगी, और मैं वहाँ कुछ समय बिताने के बारे में सोच रही हूँ। यह कोई अस्पताल तो नहीं है, लेकिन एक तरह का सैनिटोरियम है जहाँ इलाज का तरीका काफी उदार है। बाकी बातें मैं अगले पत्र में बताऊँगी। अभी मुझे बस दुनिया से दूर एक शांत जगह पर जाकर अपने मन को आराम देने की ज़रूरत है।

आपने मुझे जो एक साल का साथ दिया, उसके लिए मैं अपने तरीके से आभारी हूं। कृपया इतना तो मान लीजिए, भले ही आप और कुछ न मानें। मुझे चोट आपने नहीं पहुंचाई। यह मैंने खुद किया है। मैं सचमुच ऐसा ही महसूस करता हूं।

फिलहाल, मैं आपसे मिलने के लिए तैयार नहीं हूँ। ऐसा नहीं है कि मैं

आपसे मिलना नहीं चाहता: बस अभी इसके लिए तैयार नहीं हूँ। जैसे ही मैं तैयार महसूस करूँगा, मैं आपको लिखूँगा। शायद तब हम एक-दूसरे को जान सकें।

बेहतर। जैसा कि आपने कहा, शायद हमें यही करना चाहिए: एक-दूसरे को बेहतर तरीके से जानना चाहिए।
अलविदा।

मैंने नाओको का पत्र बार-बार पढ़ा, और हर बार मैं उसी असहनीय उदासी से भर जाती थी जो मुझे तब महसूस होती थी जब नाओको खुद मेरी आँखों में देखती थी। मेरे पास इससे निपटने का कोई तरीका नहीं था, न ही कोई ऐसी जगह जहाँ मैं इसे ले जा सकूँ या छुपा सकूँ। जैसे हवा मेरे शरीर पर से गुज़रती है, वैसे ही इसका न कोई आकार था, न कोई वज़न, और न ही मैं खुद को इसमें लपेट सकती थी। दृश्य में वस्तुएँ मेरे सामने से गुज़रती रहती थीं, लेकिन उनके शब्द कभी मेरे कानों तक नहीं पहुँचते थे। मैं शनिवार की रातें हॉल में बैठकर ही बिताता रहा। फ़ोन आने की कोई उम्मीद नहीं थी, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि समय का क्या करूँ। मैं बेसबॉल का मैच चालू कर देता और टीवी के सामने की खाली जगह को दो हिस्सों में बाँटता, फिर हर हिस्से को दोबारा दो हिस्सों में बाँटता, और यही प्रक्रिया बार-बार दोहराता रहता, जब तक कि मेरे हाथ में पकड़ने लायक छोटी सी जगह न बन जाए।
मैं दस बजे टीवी बंद कर देता, अपने कमरे में वापस जाता और सो जाता।

महीने के अंत में, स्टॉर्म ट्रूपर ने मुझे एक जुगनू दिया। वह एक इंस्टेंट कॉफी के जार में था, जिसके ढक्कन में हवा आने के लिए छेद थे और उसमें घास की कुछ पत्तियां और थोड़ा पानी था। रोशनी से जगमगाते

कमरे में जुगनू किसी तालाब के किनारे मिलने वाले साधारण काले कीड़े जैसा दिख रहा था, लेकिन स्टॉर्म ट्रूपर ने जोर देकर कहा कि यह असली जुगनू है। उसने कहा, "मैं जुगनू को देखते ही पहचान लेता हूँ," और मेरे पास उस पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं था।
"ठीक है," मैंने कहा। "यह एक जुगनू है।" उसके चेहरे पर नींद का भाव था, लेकिन वह बार-बार जार की फिसलन भरी कांच की दीवारों पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था और गिर रहा था।
उन्होंने कहा, "मुझे यह मैदान में मिला।"
"यहाँ? छात्रावास के पास?"
"हाँ। आपको पता है सड़क के उस पार वाला होटल? वे 54 में जुगनू छोड़ते हैं।"

गर्मियों में आने वाले मेहमानों के लिए उनका बगीचा। यह पौधा यहाँ तक पहुँच गया।
स्टॉर्म ट्रूपर बोलते समय अपने काले बोस्टन बैग में कपड़े और नोटबुक भरने में व्यस्त था।
गर्मी की छुट्टियां शुरू हुए कई हफ्ते बीत चुके थे और छात्रावास में लगभग हम दोनों ही बचे थे। मैं कोबे वापस जाने के बजाय अपने काम पर ही टिका रहा, और वह एक व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र के लिए रुक गया था। अब प्रशिक्षण समाप्त हो चुका था और वह यामानाशी के पहाड़ों पर वापस जा रहा था।
"तुम इसे अपनी गर्लफ्रेंड को दे सकते हो," उसने कहा। "मुझे यकीन है कि उसे यह बहुत पसंद आएगा।"
"धन्यवाद," मैंने कहा।
अंधेरा होने के बाद छात्रावास में सन्नाटा छा गया, मानो कोई खंडहर हो।

झंडा नीचे उतार दिया गया था और भोजन कक्ष की खिड़कियों में बत्तियाँ मंद जल रही थीं। बहुत कम छात्र बचे होने के कारण, उन्होंने केवल आधी बत्तियाँ जलाई थीं, दायाँ हिस्सा अँधेरा और बायाँ हिस्सा रोशन रखा था। फिर भी, खाने की खुशबू मुझ तक पहुँच रही थी - किसी तरह के क्रीम स्टू की।

मैं अपनी बोतल में बंद जुगनू लेकर छत पर गया। वहाँ कोई और नहीं था। एक सफेद बनियान कपड़े सुखाने वाली रस्सी पर लटकी थी, जिसे कोई अंदर ले जाना भूल गया था, शाम की हवा में किसी बड़े कीड़े के छोड़े हुए खोल की तरह लहरा रही थी। मैं छत के कोने में लगी स्टील की सीढ़ी चढ़कर छात्रावास के पानी के टैंक के ऊपर पहुँच गया। टैंक अभी भी दिन भर की धूप की गर्मी से गर्म था। मैं टैंक के ऊपर की संकरी जगह में रेलिंग से टेक लगाकर बैठ गया और लगभग पूरे सफेद चाँद के सामने आ गया। दाईं ओर शिंजुकु की रोशनी जगमगा रही थी, बाईं ओर इकेबुकुरो की। कारों की हेडलाइट्स एक चमकदार रोशनी के घेरे से दूसरे घेरे तक चमकीली धाराओं की तरह बह रही थीं। शहर पर बादलों की तरह मिली-जुली आवाज़ों का एक मंद शोर छाया हुआ था।

जार के तल में जुगनू की हल्की सी चमक दिखाई दी, उसकी रोशनी बहुत कमजोर थी, उसका रंग बहुत फीका था। मैंने सालों से जुगनू नहीं देखा था, लेकिन मेरी यादों में बसे जुगनू गर्मी के अंधेरे में कहीं अधिक तीव्र रोशनी बिखेरते थे, और वह चमकदार, जलती हुई छवि ही थी जो इतने समय तक मेरे मन में बसी रही।

शायद यह जुगनू मरने की कगार पर था। मैंने जार को कुछ बार हिलाया।

जुगनू कांच की दीवारों से टकराया और उड़ने की कोशिश की, लेकिन उसकी रोशनी मंद ही रही।

मैंने याद करने की कोशिश की कि मैंने आखिरी बार जुगनू कब देखे थे और कहाँ देखे होंगे। दृश्य मेरे दिमाग में था, लेकिन समय या जगह याद नहीं आ रही थी। मुझे अंधेरे में पानी की आवाज़ सुनाई दे रही थी और एक पुराने ज़माने का ईंटों का नाला दिखाई दे रहा था। उसमें एक हैंडल था जिसे घुमाकर नाला खोला और बंद किया जा सकता था। जिस छोटी सी धारा को वह नियंत्रित करता था, वह किनारों पर उगी घास में छिपी हुई थी। रात इतनी गहरी थी कि टॉर्च जलाने पर भी मुझे अपने पैर दिखाई नहीं दे रहे थे। नाले के नाले से रुके पानी के ऊपर सैकड़ों जुगनू तैर रहे थे, उनकी तेज़ रोशनी पानी में चिंगारियों की बौछार की तरह चमक रही थी।

मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और उस बीते हुए अंधकार में डूब गया। मुझे हवा की आवाज़ असाधारण स्पष्टता से सुनाई दी। एक हल्की हवा मेरे पास से गुज़री, और अंधेरे में अजीबोगरीब चमकदार लकीरें छोड़ गई। मैंने अपनी आँखें खोलीं तो पाया कि गर्मी की रात का अंधेरा पहले से कुछ ज़्यादा गहरा हो गया था।

मैंने जार का ढक्कन खोला और जुगनू को निकालकर पानी की टंकी के दो इंच चौड़े किनारे पर रख दिया। ऐसा लगा मानो उसे अपने नए परिवेश की समझ ही न हो। वह एक स्टील के बोल्ट के सिरे के चारों ओर लड़खड़ाता रहा, और पेंट की उखड़ी हुई पपड़ियों में उसके पैर फंसते रहे। वह दाईं ओर तब तक चलता रहा जब तक उसे रास्ता बंद नहीं मिला, फिर वह बाईं ओर मुड़ गया। अंत में, कुछ प्रयास के बाद, वह बोल्ट के सिरे पर चढ़ गया और कुछ देर तक वहीं बैठा रहा, बिना हिले-डुले, मानो उसने अपनी आखिरी सांस ले ली हो।

रेलिंग के सहारे झुके हुए, मैं जुगनू को निहार रहा था। न तो मैं और न ही वह काफी देर तक हिले-डुले। हवा हम दोनों के बीच से बहती रही, जबकि ज़ेलकोवा के पेड़ के अनगिनत पत्ते अंधेरे में सरसरा रहे थे।
मैंने बहुत लंबे समय तक इंतजार किया।

बहुत देर बाद जुगनू ने उड़ान भरी। मानो अचानक उसे कोई विचार आया हो, जुगनू ने अपने पंख फैलाए और पल भर में 56

यह रेलिंग के पार उड़कर धुंधले अंधेरे में तैरने लगा। पानी की टंकी के किनारे इसने एक तेज़ चाप बनाया, मानो समय के किसी खोए हुए अंतराल को वापस लाने की कोशिश कर रहा हो। और फिर, कुछ सेकंड तक वहाँ मंडराने के बाद, मानो अपनी प्रकाश की घुमावदार रेखा को हवा में घुलते हुए देख रहा हो, यह अंततः पूर्व दिशा में उड़ गया।
जुगनू के गायब हो जाने के बहुत देर बाद भी, उसकी रोशनी का निशान मेरे भीतर बना रहा, उसकी फीकी, धुंधली चमक मेरी पलकों के पीछे घने अंधेरे में एक खोई हुई आत्मा की तरह मंडराती रही।
मैंने एक से अधिक बार अंधेरे में हाथ फैलाने की कोशिश की। मेरी उंगलियों ने किसी चीज को नहीं छुआ। हल्की सी रोशनी मेरी पहुंच से ठीक परे बनी रही।
57

गर्मी की छुट्टियों के दौरान विश्वविद्यालय ने दंगा पुलिस को बुलाया। उन्होंने बैरिकेड तोड़ दिए और अंदर मौजूद छात्रों को गिरफ्तार कर लिया। यह कोई नई बात नहीं थी। उस समय सभी छात्र यही कर रहे थे। विश्वविद्यालयों को इतनी आसानी से "नष्ट" नहीं किया जा सकता था। उनमें भारी मात्रा में पूंजी निवेश की गई थी, और वे केवल कुछ छात्रों के हिंसक होने के कारण भंग होने वाले नहीं थे। और वास्तव में, जिन छात्रों ने परिसर को घेर लिया था, वे भी विश्वविद्यालय को भंग नहीं करना चाहते थे। वे वास्तव में केवल विश्वविद्यालय संरचना के भीतर सत्ता का संतुलन बदलना चाहते थे, जिसकी मुझे जरा भी परवाह नहीं थी। और इसलिए, जब अंततः हड़ताल कुचल दी गई, तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ा।

मैं सितंबर में कैंपस गया था, यह सोचकर कि वहाँ मलबा ही मलबा होगा। लेकिन जगह वैसी ही थी। लाइब्रेरी की किताबें भी नहीं हटाई गई थीं, ट्यूटरों की किताबें भी नहीं थीं।

दफ्तर नष्ट नहीं हुए थे, छात्र मामलों का कार्यालय जलकर राख नहीं हुआ था। मैं दंग रह गया। आखिर वे लोग बैरिकेड्स के पीछे क्या कर रहे थे? जब हड़ताल समाप्त हुई और पुलिस के कब्जे में कक्षाएं फिर से शुरू हुईं, तो कक्षाओं में सबसे पहले बैठने वाले वे बदमाश थे जिन्होंने हड़ताल का नेतृत्व किया था। मानो कुछ हुआ ही न हो, वे वहाँ बैठकर नोट्स ले रहे थे और हाजिरी लगने पर "उपस्थिति" का जवाब दे रहे थे। मुझे यह अविश्वसनीय लगा। आखिर, हड़ताल अभी भी जारी थी। इसे समाप्त करने की कोई घोषणा नहीं हुई थी। बस इतना हुआ था कि विश्वविद्यालय ने दंगा पुलिस को बुलाया था और बैरिकेड्स तोड़ दिए थे, लेकिन हड़ताल तो 58 दिनों तक चलने वाली थी।

जारी है। हड़ताल के समय उन बेवकूफों ने जमकर शोर मचाया था, हड़ताल का विरोध करने वाले (या सिर्फ संदेह जताने वाले) छात्रों की निंदा की थी, कभी-कभी तो उन्हें उन्हीं की मनमानी अदालतों में घसीटने की कोशिश भी की थी। मैंने उन पूर्व नेताओं से मिलने का फैसला किया और उनसे पूछा कि वे हड़ताल जारी रखने के बजाय व्याख्यानों में क्यों भाग ले रहे हैं, लेकिन वे मुझे कोई सीधा जवाब नहीं दे सके। वे क्या कह सकते थे? क्या उन्हें अनुपस्थिति के कारण अंक कटने का डर था? ये मूर्ख ही तो विश्वविद्यालय को भंग करने की मांग कर रहे थे! कितना बड़ा मजाक है। हवा का रुख थोड़ा बदल जाता है, और उनकी चीखें फुसफुसाहट में बदल जाती हैं।

अरे किज़ुकी, मुझे लगा था कि तुम कुछ भी नहीं भूल रही हो। ये दुनिया सरासर बकवास है। ये निकम्मे लोग अच्छे नंबर ला रहे हैं और अपने ही घिनौने स्वरूप में एक समाज का निर्माण कर रहे हैं।

कुछ समय तक मैं व्याख्यानों में तो उपस्थित रहती थी, लेकिन हाजिरी के समय जवाब देने से इनकार कर देती थी। मुझे पता था कि यह व्यर्थ का प्रयास है, पर मुझे इतना बुरा लग रहा था कि मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। मैं बस इतना ही कर पाई कि बाकी छात्रों से पहले से भी ज़्यादा अलग-थलग पड़ गई। जब मेरा नाम पुकारा जाता, तो चुप रहकर मैं कुछ पलों के लिए सबको असहज कर देती थी। बाकी छात्रों में से कोई भी मुझसे बात नहीं करता था, और मैं भी उनमें से किसी से बात नहीं करती थी।

सितंबर के दूसरे सप्ताह तक मैं इस निष्कर्ष पर पहुँच गया कि विश्वविद्यालय की शिक्षा अर्थहीन है। मैंने इसे ऊब से निपटने की तकनीकों

के प्रशिक्षण के रूप में देखने का निर्णय लिया। समाज में ऐसा कुछ भी खास हासिल करने की मेरी इच्छा नहीं थी जिसके लिए मुझे अपनी पढ़ाई तुरंत छोड़नी पड़े, इसलिए मैं हर दिन अपने व्याख्यानों में जाता, नोट्स बनाता और अपना खाली समय पुस्तकालय में पढ़ने या किताबें देखने में बिताता था।

चीज़ें ऊपर ले जाएं।

और सितंबर का दूसरा सप्ताह बीत चुका था, लेकिन स्टॉर्म ट्रूपर का कोई अता-पता नहीं था। यह असामान्य से कहीं अधिक चौंकाने वाली घटना थी। विश्वविद्यालय फिर से शुरू हो चुका था, और यह अकल्पनीय था कि स्टॉर्म ट्रूपर व्याख्यानों में अनुपस्थित रहेगा। 59 की एक पतली परत

उसकी मेज और रेडियो पर धूल जमी हुई थी। उसका प्लास्टिक का कप, टूथब्रश, चाय का डिब्बा, कीटनाशक स्प्रे आदि उसकी शेल्फ पर करीने से सजे हुए थे।

उनकी अनुपस्थिति में मैंने कमरा साफ रखा। पिछले डेढ़ साल में मुझे साफ-सफाई की आदत पड़ गई थी, और उनके न होने पर कमरे की देखभाल करने के लिए मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। मैं हर दिन फर्श साफ करती, हर तीसरे दिन खिड़की पोंछती और हफ्ते में एक बार गद्दे को हवा देती, इस उम्मीद में कि वह वापस आकर मुझे बताएंगे कि मैंने कितना अच्छा काम किया है।

लेकिन वह कभी वापस नहीं आया। एक दिन जब मैं लेक्चर से लौटा तो देखा कि उसका सारा सामान गायब था और दरवाजे से उसका नाम टैग भी हटा दिया गया था। मैं छात्रावास प्रमुख के कमरे में गया और पूछा कि क्या हुआ था।

उन्होंने कहा, "वह छात्रावास से चले गए हैं। फिलहाल आप कमरे में

अकेले रहेंगे।"
मैं उससे यह पता नहीं लगा सका कि स्टॉर्म ट्रूपर कहाँ गायब हो गया था। यह एक ऐसा व्यक्ति था जिसकी ज़िंदगी का सबसे बड़ा आनंद हर चीज़ को नियंत्रित करना और दूसरों को अंधेरे में रखना था।
स्टॉर्म ट्रूपर का हिमखंड वाला पोस्टर कुछ समय तक दीवार पर लगा रहा, लेकिन आखिरकार मैंने उसे हटाकर उसकी जगह जिम मॉरिसन और माइल्स डेविस के पोस्टर लगा दिए। इससे कमरा थोड़ा-थोड़ा अपना सा लगने लगा। मैंने काम से बचाए हुए पैसों से एक छोटा स्टीरियो खरीदा। रात को मैं अकेले बैठकर शराब पीता और संगीत सुनता था। बीच-बीच में स्टॉर्म ट्रूपर के बारे में सोचता था, लेकिन मुझे अकेले रहना अच्छा लगता था।

एक सोमवार को सुबह 11:30 बजे, नाटक इतिहास पर यूरिपाइड्स के व्याख्यान के बाद, मैं दस मिनट पैदल चलकर एक छोटे से रेस्तरां में गया और दोपहर के भोजन में ऑमलेट और सलाद खाया। वह जगह एक शांत गली में थी और छात्रों के भोजनालय से थोड़ी महंगी थी, लेकिन वहां आराम मिलता था और वे बढ़िया ऑमलेट बनाना जानते थे।
वे एक विवाहित जोड़ा थे जो शायद ही कभी आपस में बात करते थे, साथ ही एक अंशकालिक वेट्रेस भी थी। जब मैं खिड़की के पास बैठकर खाना खा रहा था, तभी चार छात्रों का एक समूह अंदर आया, दो पुरुष और दो महिलाएं, सभी काफी साफ-सुथरे कपड़े पहने हुए थे। उन्होंने दरवाजे के पास वाली मेज ले ली और कुछ देर तक 60

वे मेनू पर चर्चा कर रहे थे और अपने विकल्पों पर विचार-विमर्श कर रहे थे, जब तक कि उनमें से एक ने अपनी पसंद के बारे में वेट्रेस को नहीं

बता दिया।
थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि एक लड़की बार-बार मेरी तरफ देख रही थी। उसके बाल बहुत छोटे थे और उसने गहरे रंग के धूप के चश्मे और सफेद सूती मिनी-ड्रेस पहनी हुई थी। मुझे नहीं पता था कि वह कौन है, इसलिए मैं अपना लंच करता रहा, लेकिन वह जल्द ही अपनी सीट से उठी और मेरे पास आकर बैठ गई। एक हाथ मेरी मेज के किनारे पर रखकर उसने कहा,
"तुम वातानाबे हो, है ना?"
मैंने अपना सिर उठाया और उसे और करीब से देखा। फिर भी मुझे याद नहीं आ रहा था कि मैंने उसे कभी देखा भी था। वह ऐसी लड़की थी जिस पर सबकी नज़र पड़ती है, इसलिए अगर मैं उससे पहले मिली होती तो उसे तुरंत पहचान लेती, और मेरे विश्वविद्यालय में ऐसे बहुत कम लोग थे जो मुझे नाम से जानते थे।
"क्या मैं बैठ सकती हूँ?" उसने पूछा। "या आप किसी का इंतज़ार कर रहे हैं?"
फिर भी अनिश्चित होकर मैंने सिर हिलाया। "नहीं, कोई नहीं आ रहा है। कृपया।"
लकड़ी की खटखटाहट के साथ, उसने एक कुर्सी खींची और मेरे सामने बैठ गई, अपनी धूप के चश्मे से सीधे मेरी ओर घूरते हुए, फिर मेरी प्लेट पर एक नजर डाली।
"अच्छा दिख रहा है," उसने कहा।
"अच्छा है। मशरूम ऑमलेट और हरी मटर का सलाद।" "अरे यार," उसने कहा। "कोई बात नहीं, अगली बार ले लूंगी। मैंने पहले ही कुछ और ऑर्डर कर दिया है।"
"आप क्या खा रहे हैं?" "मैकरोनी और चीज़।"

मैंने कहा, "उनका मैकरोनी और चीज़ भी बुरा नहीं है। वैसे, क्या मैं आपको जानता हूँ? मुझे याद नहीं आ रहा..."
"यूरिपाइड्स," उसने कहा। "इलेक्ट्रा। 'कोई भी देवता खोई हुई इलेक्ट्रा की आवाज नहीं सुनता।' तुम्हें पता है - क्लास अभी-अभी खत्म हुई है।"
मैंने उसे घूर कर देखा। उसने अपना चश्मा उतार दिया। आखिरकार मुझे याद आया - वही प्रथम वर्ष की छात्रा जिसे मैंने नाटक इतिहास की कक्षा में देखा था। उसके बालों के स्टाइल में आए एक बड़े बदलाव के कारण मैं उसे पहचान नहीं पाया था।
"ओह," मैंने अपने कंधे से कुछ इंच नीचे एक बिंदु को छूते हुए कहा, "गर्मी की छुट्टियों से पहले तुम्हारे बाल यहाँ तक थे।" "तुम सही कह रही हो।"
61

उसने कहा, "मैंने इस गर्मी में पर्म करवाया था, और वो बहुत बुरा था। मैं खुदकुशी करने को तैयार थी। मैं समुद्र तट पर पड़ी लाश जैसी लग रही थी, मेरे सिर पर काई चिपकी हुई थी। इसलिए मैंने सोचा कि जब मैं मरने को तैयार ही हूँ, तो क्यों न सब कुछ कटवा ही लूँ। कम से कम गर्मी में तो ठंडक रहती है।" उसने अपने छोटे बालों में हाथ फेरा और मुझे देखकर मुस्कुराई।
मैंने अपना ऑमलेट खाते हुए कहा, "वैसे, यह देखने में अच्छा लग रहा है।"
मुझे आपकी प्रोफाइल देखने दीजिए।
वह मुंह फेरकर कुछ सेकंड तक उसी मुद्रा में खड़ी रही।
"हाँ, मैंने भी यही सोचा था। यह तुम पर बहुत अच्छा लग रहा है। तुम्हारा सिर बहुत सुंदर आकार का है।"
कान भी कितने सुंदर हैं, इस तरह खुले हुए।

तो आखिर मैं पागल नहीं हूँ! मुझे खुद लगा था कि बाल कटवाने के बाद मैं अच्छी लग रही थी। लेकिन किसी लड़के को पसंद नहीं आया। सब कहते हैं कि मैं किसी यातना शिविर से निकली हुई लग रही हूँ। लड़कों को लंबे बालों वाली लड़कियों से क्या दिक्कत है? सब के सब तो फासीवादी हैं! लड़के क्यों सोचते हैं कि लंबे बालों वाली लड़कियां सबसे सभ्य, सबसे प्यारी और सबसे स्त्रीत्व वाली होती हैं? मतलब, मैं खुद कम से कम 250 ऐसी लड़कियों को जानती हूँ जिनके लंबे बाल बिल्कुल भी सभ्य नहीं हैं। सच में?

“मुझे लगता है कि अब तुम पहले से ज़्यादा खूबसूरत लग रही हो,” मैंने कहा। और मेरा यही मतलब था। जहाँ तक मुझे याद है, लंबे बालों के साथ वह बस एक प्यारी सी छात्रा थी। अब मेरे सामने बैठी उस लड़की से एक नई और जीवंत ऊर्जा निकल रही थी। वह बसंत के आगमन के साथ दुनिया में आई एक छोटी सी जीव जैसी थी। उसकी आँखें खुशी, हँसी, क्रोध, आश्चर्य और निराशा से भरी हुई थीं, मानो एक स्वतंत्र जीव हों। मैंने इतने सालों में इतना जीवंत और भावपूर्ण चेहरा नहीं देखा था, और मुझे उसे जीवंत और गतिशील देखना अच्छा लग रहा था।

"क्या तुम सच कह रहे हो?" उसने पूछा।

मैंने सिर हिलाया, और अभी भी सलाद खा रहा था।

उसने अपने धूप के चश्मे पहने और उनके पीछे से मेरी तरफ देखा।

"तुम झूठ तो नहीं बोल रहे हो?"

मैंने कहा, "मैं खुद को एक ईमानदार आदमी मानता हूँ।" "बिल्कुल सही।"

"तो मुझे बताओ: तुम इतने गहरे रंग के चश्मे क्यों पहनते हो?"

"जब मेरे बाल अचानक छोटे हो गए तो मुझे असहाय महसूस हुआ।"

जैसे किसी ने मुझे नग्न अवस्था में भीड़ में फेंक दिया हो। "समझ में आता है," मैंने अपने ऑमलेट का आखिरी टुकड़ा खाते हुए कहा। वह मुझे बड़ी उत्सुकता से देख रही थी।

"तुम्हें उनके पास वापस जाने की ज़रूरत नहीं है?" मैंने उसके तीन साथियों की ओर इशारा करते हुए पूछा।

नहीं। खाना परोसते ही मैं वापस आ जाऊँगा। क्या मैं आपके खाने में बाधा डाल रहा हूँ?

"अब दखल देने के लिए कुछ बचा ही नहीं है," मैंने कहा और जब उसने जाने का कोई संकेत नहीं दिया तो मैंने कॉफ़ी का ऑर्डर दे दिया। पत्नी ने मेरे बर्तन लिए और दूध और चीनी ले आई।

"अब तुम ही बताओ," उसने कहा। "आज जब उन्होंने रजिस्टर को बुलाया तो तुमने जवाब क्यों नहीं दिया? तुम वातानाबे हो, है ना?"

तोरू वतनबे?

"वह मैं हूं।"

"तो आपने जवाब क्यों नहीं दिया?" "आज मेरा मन नहीं था।"

उसने दोबारा अपने धूप के चश्मे उतारे, उन्हें मेज पर रख दिया और मेरी तरफ ऐसे देखा जैसे वह चिड़ियाघर में किसी दुर्लभ जानवर के पिंजरे को घूर रही हो।

"आज मेरा मन ही नहीं था।" आप तो हम्फ्री बोगार्ट की तरह बात करते हैं। बढ़िया!

कठिन।"

"मजाक मत करो। मैं भी बाकी सब लोगों की तरह एक साधारण आदमी हूँ।"

मेरी पत्नी मेरे लिए कॉफी लेकर आई और उसे मेज पर रख दिया। मैंने बिना चीनी या दूध डाले एक घूंट पिया।

"देखो तो ज़रा। इसे बिना दूध और चीनी के पीते हैं।"
मैंने धैर्यपूर्वक समझाया, "इसका हम्फ्री बोगार्ट से कोई लेना-देना नहीं है।"
मुझे मीठा बिल्कुल पसंद नहीं है। मुझे लगता है कि आपने मुझे पूरी तरह गलत समझा है।
"तुम इतने टैन क्यों हो गए हो?"
मैं पिछले कुछ हफ्तों से पैदल यात्रा कर रहा हूँ। पीठ पर बैग और स्लीपिंग बैग लेकर।
तुम कहाँ गए थे?
"कनाज़ावा. नोटो प्रायद्वीप. निगाता तक।" "अकेले?"
"अकेला," मैंने कहा। "इधर-उधर कुछ लोगों का साथ मिला।" "लगभग

रोमांटिक संगति? दूर-दराज की जगहों पर नई महिलाएं।" "रोमांटिक? अब मुझे पता चल गया कि तुम मुझे गलत समझ रहे हो। पीठ पर स्लीपिंग बैग ओढ़े और चेहरे पर दाढ़ी वाले आदमी में रोमांस की क्या गुंजाइश है?"
"क्या आप हमेशा इसी तरह अकेले यात्रा करते हैं?" "जी हां।"
"क्या आपको एकांत पसंद है?" उसने अपना गाल हाथ पर टिकाते हुए पूछा।
"अकेले यात्रा करना, अकेले खाना खाना, व्याख्यान कक्षों में अकेले बैठना..."
"अकेले रहना किसी को इतना पसंद नहीं होता। मैं दोस्त बनाने के लिए कोई खास कोशिश नहीं करता, बस यही बात है। इससे सिर्फ निराशा ही मिलती है।"
एक ईयरपीस का सिरा मुंह में दबाए, धूप का चश्मा नीचे लटकते हुए, वह बुदबुदाई, "किसी को भी अकेला रहना पसंद नहीं होता। मुझे निराश होना

बिल्कुल पसंद नहीं है।"
आप अपनी आत्मकथा लिखते समय इस पंक्ति का उपयोग कर सकते हैं।
"धन्यवाद," मैंने कहा।
"क्या आपको हरा रंग पसंद है?"
"तुम क्यों पूछ रहे हो?"
"आपने हरे रंग की पोलो शर्ट पहनी हुई है।"
"खास तौर पर नहीं। मैं कुछ भी पहन लूंगी।"
"खास तौर पर नहीं। मैं कुछ भी पहन लूँगी। मुझे तुम्हारा बात करने का तरीका बहुत पसंद है। जैसे प्लास्टर फैला रही हो, एकदम चिकना और मुलायम। क्या किसी ने तुम्हें कभी ऐसा कहा है?"
मैंने कहा, "कोई नहीं।"
"मेरा नाम मिदोरी है," उसने कहा। "हरा। लेकिन हरा रंग मुझ पर बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। अजीब है ना? ऐसा लगता है जैसे मुझ पर कोई श्राप है, है ना? मेरी बहन का नाम मोमोको है: 'आड़ू वाली लड़की'।"
"क्या वो गुलाबी रंग में अच्छी लग रही है?"
"वह गुलाबी रंग में बहुत खूबसूरत लगती है! वह गुलाबी रंग पहनने के लिए ही पैदा हुई है। यह सरासर अन्याय है।"
खाना मिदोरी की मेज पर आ गया, और मद्रास जैकेट पहने एक आदमी ने उसे पुकारा, "हे मिदोरी, आओ और ले लो!" उसने उसे हाथ हिलाकर इशारा किया मानो कह रही हो, "मुझे पता है"।
"मुझे बताओ," उसने कहा। "क्या तुम नाटक की कक्षाओं में नोट्स लेते हो?" "हाँ, लेता हूँ।"
"मुझे पूछने में थोड़ी झिझक हो रही है, लेकिन क्या मैं आपकी नोटबुक उधार ले सकती हूँ? मैं दो बार क्लास से गैरहाज़िर रही हूँ, और क्लास में

मैं किसी को नहीं जानती।" "कोई बात नहीं," मैंने कहा और अपने बैग से नोटबुक निकाल ली।
64

यह सुनिश्चित करने के बाद कि मैंने इसमें कुछ भी व्यक्तिगत नहीं लिखा है, मैंने इसे मिदोरी को सौंप दिया।
"धन्यवाद," उसने कहा। "क्या आप परसों लेक्चर में आ रहे हैं?"
"हाँ।"
"दोपहर 12 बजे यहीं मिलो। मैं तुम्हें तुम्हारी नोटबुक वापस दे दूँगा और तुम्हें दोपहर का खाना खिला दूँगा। मतलब... अकेले न खाने से तुम्हारा पेट खराब तो नहीं हो जाता, है ना?"
"नहीं," मैंने कहा। "लेकिन सिर्फ इसलिए कि मैं तुम्हें अपनी नोटबुक उधार दे रहा हूँ, इसका मतलब यह नहीं है कि तुम्हें मुझे दोपहर का खाना खिलाना ही पड़ेगा।"
"चिंता मत करो," उसने कहा। "मुझे लोगों को लंच कराना अच्छा लगता है। वैसे भी, क्या तुम्हें इसे कहीं लिख नहीं लेना चाहिए? तुम भूलोगे नहीं?"
मैं नहीं भूलूंगा। परसों। बारह बजे। मिदोरी। हरा रंग।
दूसरी मेज से किसी ने आवाज लगाई, "जल्दी करो, मिदोरी, तुम्हारा खाना ठंडा हो रहा है!"
उसने कॉल को अनदेखा कर दिया और मुझसे पूछा, "क्या तुम हमेशा से ऐसे ही बात करते हो?"
"मुझे भी ऐसा ही लगता है," मैंने कहा। "मैंने पहले कभी ध्यान नहीं दिया।" और सच तो यह है कि किसी ने भी मुझे कभी नहीं बताया था कि

मेरे बोलने के तरीके में कुछ असामान्य है।
कुछ पल के लिए वह किसी बात पर विचार करती हुई प्रतीत हुई। फिर मुस्कुराते हुए उठी और अपनी मेज पर वापस चली गई। जब मैं उनकी मेज के पास से गुजरा तो उसने मुझे हाथ हिलाकर अभिवादन किया, लेकिन बाकी तीनों ने मेरी तरफ मुश्किल से ही देखा।
बुधवार दोपहर को रेस्तरां में मिदोरी का कोई अता-पता नहीं था। मैंने सोचा कि शायद मैं उसके आने का इंतज़ार एक बियर पीते हुए कर लूँ, लेकिन जैसे ही बियर आई, रेस्तरां में भीड़ बढ़ने लगी, इसलिए मैंने दोपहर का खाना ऑर्डर किया और अकेले ही खाया। मेरा खाना 12:35 बजे तक खत्म हो गया, लेकिन मिदोरी तब तक नहीं आई थी। बिल चुकाकर मैं बाहर गया और सड़क पार करके एक छोटे से मंदिर में गया, जहाँ मैं पत्थर की सीढ़ियों पर बैठकर मिदोरी के आने का इंतज़ार करने लगा। एक बजे मैंने हार मान ली और पुस्तकालय में पढ़ने चला गया। दो बजे मैं अपनी जर्मन 65 की क्लास में गया।

व्याख्यान।
जब यह सब खत्म हो गया, तो मैं विद्यार्थी कार्यालय गया और नाटक इतिहास की कक्षा सूची में मिदोरी का नाम खोजने लगा। कक्षा में इकलौती मिदोरी कोबायाशी ही थीं। फिर मैंने विद्यार्थी फाइलों के पन्ने पलटे और 1969 में विश्वविद्यालय में दाखिला लेने वाली मिदोरी कोबायाशी का पता और फोन नंबर ढूंढ लिया। वह अपने परिवार के साथ उत्तर-पश्चिमी उपनगर तोशिमा में रहती थीं। मैं चुपके से एक बूथ में गया और नंबर डायल किया।
एक आदमी ने जवाब दिया: "कोबायाशी बुकशॉप।" कोबायाशी बुकशॉप? मैंने कहा, "आपको परेशान करने के लिए क्षमा करें, लेकिन क्या मिदोरी

यहाँ होगी?"
"नहीं, वह नहीं है," उसने कहा।
"क्या आपको लगता है कि वह कैंपस में हो सकती है?"
"हम्म, नहीं, वह शायद अस्पताल में है। कौन फोन कर रहा है, कृपया?"
जवाब देने के बजाय, मैंने उसे धन्यवाद कहा और फोन काट दिया। अस्पताल? क्या उसे चोट लगी होगी या वह बीमार पड़ गई होगी? लेकिन उस आदमी ने ज़रा भी घबराहट के बिना बात की थी। "वह शायद अस्पताल में है," उसने इतनी आसानी से कहा जैसे वह कह सकता हो "वह मछली की दुकान पर है"। मैंने कुछ और संभावनाओं के बारे में सोचा, जब तक कि सोचना ही बहुत मुश्किल नहीं हो गया, फिर मैं वापस छात्रावास गया और अपने बिस्तर पर लेटकर 'लॉर्ड जिम' पढ़ने लगा, जो मैंने नागासावा से उधार ली थी। जब मैंने उसे पढ़ लिया, तो मैं उसे वापस देने के लिए उसके कमरे में गया।
नागासावा भोजन कक्ष की ओर जा रहे थे, इसलिए मैं उनके साथ रात के खाने के लिए चला गया।
मैंने पूछा, "परीक्षाएं कैसी रहीं?" विदेश मंत्रालय के लिए उच्च स्तरीय परीक्षाओं का दूसरा चरण अगस्त में आयोजित किया गया था।
"हमेशा की तरह ही," नागासावा ने ऐसे कहा जैसे कुछ हुआ ही न हो।

"तुम उन्हें ले लो, तुम पास हो जाओगे। समूह चर्चाएँ, साक्षात्कार... जैसे किसी लड़की के साथ संबंध बनाना।"
"दूसरे शब्दों में कहें तो, आसान है," मैंने कहा। "वे आपको कब बताएंगे?"
"अक्टूबर के पहले सप्ताह में। अगर मैं पास हो गया, तो मैं तुम्हें एक शानदार डिनर खिलाऊंगा।"
तो मुझे बताओ, दूसरे दौर में कौन से खिलाड़ी पहुँचते हैं? सभी सुपरस्टार

आप की तरह?"
"बेवकूफ मत बनो। वे सब मूर्ख हैं। मूर्ख या सनकी। मेरा मानना है कि नौकरशाह बनने की चाह रखने वाले 95 प्रतिशत लोग किसी काम के नहीं हैं।"
मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ। वे ठीक से पढ़ भी नहीं पाते।
"तो आप विदेश मंत्रालय में शामिल होने की कोशिश क्यों कर रहे हैं?"
"कई कारण हैं," नागासावा ने कहा। "एक तो मुझे विदेश में काम करने का विचार पसंद है। लेकिन मुख्य रूप से मैं अपनी क्षमताओं को परखना चाहता हूँ। अगर मुझे खुद को परखना ही है, तो मैं इसे सबसे बड़े क्षेत्र में करना चाहता हूँ - राष्ट्र में। मैं देखना चाहता हूँ कि मैं कितनी ऊँचाई तक पहुँच सकता हूँ, इस विशाल नौकरशाही व्यवस्था में मैं कितनी शक्ति का प्रयोग कर सकता हूँ। समझ रहे हो ना?"
"यह तो किसी खेल जैसा लग रहा है।"
"यह एक खेल है। मुझे सत्ता और पैसे की कोई परवाह नहीं है।"
सच कहूँ तो, मुझे ऐसा नहीं लगता। मैं स्वार्थी कमीना हो सकता हूँ, लेकिन ऐसी बातों को लेकर मैं बेहद शांत रहता हूँ। मैं एक ज़ेन संत भी हो सकता हूँ। लेकिन मुझमें एक चीज़ ज़रूर है, और वो है जिज्ञासा। मैं देखना चाहता हूँ कि इस विशाल, कठिन दुनिया में मैं क्या कर सकता हूँ।
"और मुझे लगता है कि आपको 'आदर्शों' की कोई ज़रूरत नहीं है?"
"कोई नहीं। जीवन में आदर्शों की आवश्यकता नहीं होती। जीवन में कर्म के मानकों की आवश्यकता होती है।"
"लेकिन जीने के और भी कई तरीके हैं, है ना?" मैंने पूछा।
"तुम्हें मेरा जीने का तरीका पसंद है, है ना?"

मैंने कहा, "ये सब बेमानी है। मैं टोक्यो विश्वविद्यालय में कभी दाखिला नहीं ले सकता; मैं जब चाहूँ, जब चाहूँ, किसी भी लड़की के साथ सो नहीं सकता; मैं कोई अच्छा वक्ता नहीं हूँ; लोग मुझे सम्मान की नज़र से नहीं देखते; मेरी कोई गर्लफ्रेंड नहीं है; और किसी मामूली निजी विश्वविद्यालय से साहित्य में बीए करने से मेरा भविष्य उज्ज्वल नहीं होने वाला। अगर मुझे तुम्हारा रहन-सहन पसंद है, तो इससे क्या फर्क पड़ता है?"
"क्या आप यह कह रहे हैं कि आपको मेरे जीने के तरीके से ईर्ष्या होती है?"
"नहीं, मुझे परवाह नहीं है," मैंने कहा। "मैं जैसा हूँ वैसा ही रहने का आदी हो चुका हूँ। और मुझे टोक्यो विश्वविद्यालय या विदेश मंत्रालय की ज़रा भी परवाह नहीं है।"
मुझे आपसे सिर्फ एक ही बात की ईर्ष्या होती है और वो ये कि आपके पास हात्सुमी जैसी शानदार गर्लफ्रेंड है।"
नागासावा चुपचाप खाने लगा। खाना खत्म होने पर उसने कहा, "तुम्हें पता है, 67

वातानाबे, मुझे ऐसा लगता है कि शायद इस जगह से निकलने के 10 या 20 साल बाद हम कहीं न कहीं फिर मिलेंगे। और किसी न किसी तरह से, मुझे लगता है कि हमारा कोई न कोई संबंध जरूर होगा।
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "यह तो डिकेंस की कहानी जैसा लगता है।"
"मुझे लगता है ऐसा ही है," उसने मुस्कुराते हुए कहा। "लेकिन मेरे अनुमान अक्सर सही होते हैं।"
हम दोनों भोजन कक्ष से निकलकर एक बार में चले गए। हम वहां नौ बजे के बाद तक शराब पीते रहे।
मैंने पूछा, "नागासावा, मुझे बताइए, आपके जीवन में 'कर्म का मानक'

क्या है?"
"अगर मैं तुम्हें बताऊँगा तो तुम हँसोगे," उसने कहा।
"नहीं, मैं ऐसा नहीं करूंगा।"
"ठीक है," उसने कहा। "एक सज्जन व्यक्ति बनने के लिए।"
मुझे हंसी तो नहीं आई, लेकिन मैं लगभग अपनी कुर्सी से गिर ही गया था। "एक सज्जन व्यक्ति होना? एक सज्जन व्यक्ति?"
"आपने मुझे सुना।"
"सज्जन होने का क्या अर्थ है? आप इसे कैसे परिभाषित करते हैं?"
"सज्जन वह होता है जो अपनी इच्छा के अनुसार नहीं, बल्कि अपनी कर्तव्यनिष्ठा के अनुसार कार्य करता है।"
मैंने कहा, "तुम अब तक मिले सबसे अजीब इंसान हो।"

"तुम अब तक मिले सबसे सीधे-सादे इंसान हो," उसने कहा। और उसने हम दोनों का बिल चुका दिया।
मैं अगले सप्ताह के नाटक के व्याख्यान में गई, लेकिन मिदोरी कोबायाशी का कोई अता-पता नहीं था। कमरे में जल्दी से नज़र घुमाने पर जब मुझे यकीन हो गया कि वह वहाँ नहीं है, तो मैं हमेशा की तरह पहली पंक्ति में अपनी सीट पर बैठ गई और व्याख्याता के आने का इंतज़ार करते हुए नाओको को एक पत्र लिखा। मैंने अपनी गर्मियों की यात्राओं के बारे में लिखा - जिन सड़कों पर मैं चली थी, जिन कस्बों से मैं गुज़री थी,
जिन लोगों से मैं मिली थी। और हर रात मैं तुम्हारे बारे में सोचती थी। अब जब मैं तुम्हें देख नहीं सकती, तो मुझे एहसास होता है कि मुझे तुम्हारी कितनी ज़रूरत है। विश्वविद्यालय बेहद उबाऊ है, लेकिन आत्म-अनुशासन के चलते मैं अपने सभी व्याख्यानों में जा रही हूँ।

और सारे असाइनमेंट पूरे कर रहा था। तुम्हारे जाने के बाद से सब कुछ व्यर्थ सा लगता है। मैं तुमसे कुछ देर आराम से बात करना चाहता हूँ। अगर मुमकिन हो तो मैं तुम्हारे सैनिटोरियम में आकर तुमसे कुछ घंटों तक मिलना चाहता हूँ। और अगर मुमकिन हो तो मैं तुम्हारे साथ वैसे ही सैर पर जाना चाहता हूँ जैसे हम पहले किया करते थे।

कृपया इस पत्र का उत्तर देने का प्रयास करें - भले ही संक्षिप्त उत्तर ही क्यों न हो। मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।

मैंने चार पन्ने भरे, उन्हें मोड़ा, एक लिफाफे में डाला और उस पर नाओको के परिवार के पते पर हस्ताक्षर कर दिए।

तब तक व्याख्याता आ चुके थे, रजिस्टर लेते हुए वे अपने माथे से पसीना पोंछ रहे थे। वे छोटे कद के, उदास से दिखने वाले व्यक्ति थे जो धातु की छड़ी लेकर चलते थे। हालाँकि उनके पाठ्यक्रम के व्याख्यान बहुत मनोरंजक नहीं होते थे, फिर भी वे हमेशा अच्छी तरह से तैयार और सार्थक होते थे। मौसम के हमेशा की तरह गर्म होने की बात कहने के बाद, उन्होंने यूरिपिड्स में डेउस एक्स माकिना के प्रयोग के बारे में बात करना शुरू किया और समझाया कि यूरिपिड्स में "ईश्वर" की अवधारणा एशिलस या सोफोक्लीज से कैसे भिन्न है। वे लगभग 15 मिनट से बोल रहे थे कि व्याख्यान कक्ष का दरवाजा खुला और मिदोरी अंदर आईं। उन्होंने गहरे नीले रंग की स्पोर्ट्स शर्ट, क्रीम रंग की सूती पतलून और अपने हमेशा वाले धूप के चश्मे पहने हुए थे।

प्रोफेसर को "देर से आने के लिए क्षमा करें" जैसी मुस्कान देते हुए, वह मेरे बगल में बैठ गईं। फिर उन्होंने अपने कंधे के बैग से एक नोटबुक - मेरी नोटबुक - निकाली और मुझे दे दी। अंदर मुझे एक नोट मिला: बुधवार के लिए क्षमा करें।

आप नाराज हो गए क्या?

व्याख्यान लगभग आधा समाप्त हो चुका था और प्रोफेसर ब्लैकबोर्ड पर एक ग्रीक मंच का रेखाचित्र बना रहे थे, तभी दरवाजा फिर से खुला और हेलमेट पहने दो छात्र अंदर आए। वे किसी कॉमेडी जोड़ी जैसे लग रहे थे, एक लंबा, पतला और पीला, दूसरा छोटा, गोल और सांवला, जिसकी लंबी दाढ़ी उस पर जंच नहीं रही थी। लंबे वाले के हाथों में राजनीतिक प्रचार के पर्चों का एक गुच्छा था। छोटा वाला प्रोफेसर के पास गया और विनम्रता से कहा कि वे उनके व्याख्यान के दूसरे भाग का उपयोग राजनीतिक बहस के लिए करना चाहेंगे और आशा करते हैं कि वे सहयोग करेंगे, साथ ही यह भी कहा, "दुनिया में ग्रीक त्रासदी से कहीं अधिक जरूरी और प्रासंगिक समस्याएं हैं।" यह एक अनुरोध से अधिक एक घोषणा थी। प्रोफेसर ने उत्तर दिया, "मुझे इस बात पर संदेह है कि दुनिया में 69

ग्रीक त्रासदी से कहीं अधिक गंभीर और प्रासंगिक समस्याएं हैं, लेकिन आप मेरी कोई बात नहीं सुनने वाले हैं, इसलिए जो चाहें करें।"
टेबल के किनारे को पकड़कर, उसने अपने पैर फर्श पर रखे, अपनी छड़ी उठाई और लंगड़ाते हुए कक्षा से बाहर निकल गया।
जब लंबा छात्र अपने पर्चे बाँट रहा था, तभी गोल-मटोल छात्र पोडियम पर गया और भाषण देने लगा। पर्चों में वही घिसे-पिटे नारे लिखे थे: "स्मैश"
विश्वविद्यालय अध्यक्ष पद के लिए फर्जी चुनाव!
"पूरे कैंपस में नई हड़ताल के लिए सभी बलों को जुटाओ!"
साम्राज्यवादी-शैक्षिक-औद्योगिक व्यवस्था को कुचल दो
जटिल!"
मुझे उनकी बातों से कोई आपत्ति नहीं थी, लेकिन लेखन बेहद घटिया था। उसमें न तो विश्वास जगाने वाली कोई बात थी और न ही भावनाओं को

उत्तेजित करने वाली। और उस गोल-मटोल आदमी का भाषण भी उतना ही बुरा था - वही घिसी-पिटी बात, बस शब्दों का नया रूप। इस समूह का असली दुश्मन सत्ता नहीं, बल्कि कल्पनाशीलता की कमी थी।
"चलो यहाँ से चलते हैं," मिदोरी ने कहा।
मैंने सिर हिलाया और खड़ी हो गई, और हम दोनों दरवाजे की ओर चल पड़े। उस गोल-मटोल आदमी ने उसी समय मुझसे कुछ कहा, लेकिन मैं उसे समझ नहीं पाई। मिदोरी ने उसे हाथ हिलाकर कहा, "फिर मिलेंगे।"
"अरे, क्या हम प्रति-क्रांतिकारी हैं?" मिदोरी ने बाहर आकर मुझसे पूछा। "अगर क्रांति सफल हो गई तो क्या हमें टेलीफोन के खंभों पर लटका दिया जाएगा?"
"पहले लंच कर लेते हैं, एहतियात के तौर पर।"
"अच्छा। मैं तुम्हें एक जगह ले जाना चाहता हूँ। वैसे वो थोड़ी दूर है। क्या तुम समय निकाल पाओगे?"
"हां, मैं अपनी दो बजे की क्लास तक फ्री हूं।"
मिडोरी मुझे बस से योत्सुया ले गई और स्टेशन के ठीक पीछे एक सुरक्षित जगह पर स्थित एक शानदार लंच बॉक्स वाली दुकान में ले गई। बैठते ही उन्होंने हमें सूप और उस दिन का लंच चौकोर, लाल रंग के डिब्बों में परोसा। यह जगह खाने के लिए बस की यात्रा करने लायक थी।

मैंने कहा, "खाना बहुत बढ़िया था।"
"और सस्ता भी। मैं स्कूल के दिनों से यहाँ आ रहा हूँ। मेरा पुराना स्कूल यहीं पास में है। वहाँ के नियम इतने सख्त थे कि हमें छुपकर यहाँ खाना पड़ता था। अगर वे हमें बाहर खाना खाते हुए पकड़ लेते तो सस्पेंड कर देते।"

धूप का चश्मा न पहनने पर मिदोरी की आँखें पिछली बार की तुलना में कुछ ज़्यादा नींद से भरी लग रही थीं। जब वह अपनी बाईं कलाई पर बंधी पतली चांदी की चूड़ी से नहीं खेल रही होती थी, तो वह अपनी छोटी उंगली के सिरे से अपनी आँखों के कोनों को रगड़ रही होती थी।

"थके हुए हो?" मैंने पूछा।

"कुछ-कुछ। मुझे पर्याप्त नींद नहीं मिल रही है। लेकिन मैं ठीक हूँ, चिंता मत करो," उसने कहा। "उस दिन के लिए माफ़ करना। कोई ज़रूरी काम आ गया था और मैं उससे निकल नहीं पाई। अचानक सुबह-सुबह। मैंने सोचा था कि आपको रेस्टोरेंट में फ़ोन करूँ, लेकिन मुझे नाम याद नहीं आ रहा था और आपका घर का नंबर भी नहीं पता था। क्या आपने बहुत देर तक इंतज़ार किया?"

"कोई बड़ी बात नहीं। मेरे पास बहुत समय है।"

बहुत?"

"मुझे जितनी ज़रूरत है उससे कहीं ज़्यादा है। काश मैं तुम्हें थोड़ा दे पाती ताकि तुम्हें नींद आ जाए।"

मिडोरी ने अपना गाल हाथ पर टिकाया और मेरी तरफ देखकर मुस्कुराई। "तुम कितने अच्छे इंसान हो।"

"अच्छा नहीं लगा। मेरे पास बस समय बिताने के लिए कुछ समय है," मैंने कहा। "वैसे, मैंने उस दिन आपके घर फोन किया था और किसी ने मुझे बताया कि आप अस्पताल में हैं।"

कुछ गड़बड़ है क्या?"

"आपने मेरे घर पर फोन किया था?" उसने भौंहों के बीच हल्की सी शिकन के साथ पूछा। "आपको मेरा नंबर कैसे मिला?"

मैंने छात्र मामलों के कार्यालय में इसकी जानकारी ली। कोई भी ऐसा कर सकता है।

उसने एक-दो बार सिर हिलाया और फिर से कंगन से खेलने लगी।
मैंने तो कभी सोचा भी नहीं था। मुझे लगता है मैं आपका नंबर ढूंढ सकती थी। खैर, अस्पताल के बारे में अगली बार बताऊंगी। अभी मेरा मन नहीं है। माफ कीजिएगा।
"कोई बात नहीं। मेरा इरादा दखलंदाजी करने का नहीं था।"
नहीं, आप दखलंदाजी नहीं कर रहे हैं। मैं बस थोड़ा थका हुआ हूँ। 71वें नंबर पर बैठे बंदर की तरह।

बारिश।"
"क्या तुम्हें घर जाकर थोड़ी नींद नहीं ले लेनी चाहिए?" "अभी नहीं। चलो यहाँ से चलते हैं।"

वह मुझे अपने पुराने स्कूल ले गई, जो योत्सुया से थोड़ी ही दूरी पर था। स्टेशन से गुज़रते हुए, मैं नाओको और हमारी अंतहीन सैर के बारे में सोचने लगा। सब कुछ वहीं से शुरू हुआ था। मुझे एहसास हुआ कि अगर मई के उस रविवार को ट्रेन में मेरी मुलाकात नाओको से न हुई होती, तो मेरी ज़िंदगी आज जैसी है उससे बहुत अलग होती। लेकिन फिर मैंने अपना विचार बदल दिया: नहीं, अगर हम उस दिन न भी मिले होते, तो भी मेरी ज़िंदगी में शायद कोई फर्क नहीं पड़ता। हमारा मिलना तय था। अगर तब नहीं, तो किसी और दिन। मेरे इस विचार का कोई ठोस आधार नहीं था: यह बस एक एहसास था।
मिडोरी कोबायाशी और मैं एक पार्क की बेंच पर साथ बैठे, उसके पुराने स्कूल को देख रहे थे। दीवारों पर लताएँ लिपटी हुई थीं और कबूतर छज्जों के नीचे दुबके हुए अपने पंख फैलाए आराम कर रहे थे। यह एक सुंदर, पुरानी इमारत थी, जिसमें एक अलग ही आकर्षण था।

खेल के मैदान में एक विशाल बलूत का पेड़ खड़ा था, और उसके बगल में सफेद धुएं का एक स्तंभ सीधा ऊपर उठ रहा था। ढलती गर्मी की रोशनी ने धुएं को एक नरम और धुंधले रूप में प्रस्तुत किया था।
"क्या तुम जानते हो कि यह धुआं क्या है?" मिदोरी ने अचानक मुझसे पूछा।
मैंने कहा, "मुझे कोई जानकारी नहीं है।"
"वे सैनिटरी पैड जला रहे हैं।"
"सचमुच?" मुझे और कुछ कहने को सूझा ही नहीं।
"सैनिटरी पैड, टैम्पोन, इस तरह की चीजें," उसने मुस्कुराते हुए कहा। "यह लड़कियों का स्कूल है। बूढ़ी केयरटेकर सभी कूड़ेदानों से इन्हें इकट्ठा करती है और भट्टी में जला देती है। यही धुआं है।"
वाह!
"हाँ, जब भी मैं क्लास में होती और खिड़की के बाहर धुआँ देखती, तो मैं खुद से यही कहती थी, 'अरे बाप रे!' ज़रा सोचो: स्कूल में लगभग एक हज़ार लड़कियाँ थीं। मान लो उनमें से 900 को मासिक धर्म शुरू हो गया है, और शायद उनमें से पाँचवाँ हिस्सा एक ही समय में मासिक धर्म से गुज़र रहा होता है: 180 लड़कियाँ। यानी हर दिन कूड़ेदान में 180 लड़कियों के बराबर तौलिए जमा होते होंगे।"

"मुझे पूरा यकीन है कि आप सही हैं - हालांकि मुझे गणित के बारे में पक्का यकीन नहीं है।"
"खैर, ये तो बहुत ज्यादा है। 180 लड़कियां। आपको क्या लगता है, इतनी सारी चीज़ें इकट्ठा करके जलाने में कैसा लगता होगा?"
"कल्पना भी नहीं कर सकती," मैंने कहा। मैं कैसे कल्पना कर सकती थी

कि वह बूढ़ा आदमी किस पीड़ा से गुजर रहा होगा? मिदोरी और मैं धुएँ को देखते रहे।

"सच में, मैं इस स्कूल में नहीं जाना चाहती थी," मिदोरी ने कहा। उसने अपना सिर थोड़ा हिलाया। "मैं एक साधारण से सरकारी स्कूल में जाना चाहती थी, जहाँ आम लोग हों और मैं एक आम किशोरी की तरह आराम कर सकूँ और मौज-मस्ती कर सकूँ। लेकिन मेरे माता-पिता को लगा कि इस शानदार जगह पर जाना मेरे लिए अच्छा रहेगा। उन्होंने ही मुझे यहाँ दाखिला दिलाया। आप जानते हैं: प्राथमिक स्कूल में अच्छा प्रदर्शन करने पर यही होता है। शिक्षक आपके माता-पिता से कहते हैं, 'इसके जैसे अंकों के साथ, इसे वहीं जाना चाहिए।' तो मैं वहीं पहुँच गई। मैं छह साल तक वहाँ गई और मुझे यह कभी पसंद नहीं आया। मैं बस वहाँ से निकलने के बारे में सोचती रहती थी। और आप जानते हैं, मेरे पास कभी देर से न आने या स्कूल का एक भी दिन अनुपस्थित न रहने के लिए मेरिट सर्टिफिकेट हैं। इससे पता चलता है कि मुझे उस जगह से कितनी नफरत थी। समझे?"

"नहीं, मुझे समझ नहीं आया।"

"ऐसा इसलिए था क्योंकि मुझे वह जगह बहुत नापसंद थी। मैं उसे खुद पर हावी नहीं होने देने वाला था।"

अगर मैंने इसे अपने ऊपर हावी होने दिया होता तो मेरा करियर खत्म हो जाता। मुझे डर था कि मैं बस नीचे ही नीचे गिरता चला जाऊँगा। मैं 103 डिग्री बुखार में रेंगते हुए स्कूल जाता था। टीचर मुझसे पूछतीं कि क्या मैं बीमार हूँ, लेकिन मैं मना कर देता था। जब मैंने स्कूल छोड़ा तो उन्होंने मुझे पूरी उपस्थिति और समय की पाबंदी के प्रमाण पत्र दिए, साथ ही एक फ्रेंच डिक्शनरी भी। इसीलिए मैं अब जर्मन सीख रहा हूँ। मैं इस स्कूल का कोई एहसानमंद नहीं रहना चाहता था। मैं सच कह रहा हूँ।

"तुम्हें इससे इतनी नफरत क्यों थी?"
"क्या आपको अपना स्कूल पसंद आया?"
"नहीं, लेकिन मुझे इससे खास नफरत भी नहीं थी। मैं एक साधारण सरकारी स्कूल में पढ़ता था, लेकिन मैंने इसके बारे में कभी कुछ सोचा ही नहीं।"
"खैर, इस स्कूल में," मिदोरी ने अपनी छोटी उंगली से आंख के कोने को खुजाते हुए कहा, "सिर्फ़ अमीर वर्ग की लड़कियाँ थीं - लगभग एक हज़ार लड़कियाँ जिनका बैकग्राउंड अच्छा था और परीक्षा परिणाम भी बढ़िया थे। अमीर लड़कियाँ। उन्हें जीवित रहने के लिए अमीर होना ही था। ऊँची ट्यूशन फीस, अंतहीन चंदा, 73

महंगे स्कूल ट्रिप। उदाहरण के लिए, अगर हम क्योटो जाते, तो वे हमें एक शानदार सराय में ठहराते और लाख की मेजों पर चाय समारोह का भोजन परोसते, और साल में एक बार हमें टोक्यो के सबसे महंगे होटल में ले जाते ताकि हम खाने के तौर-तरीके सीख सकें। मतलब, यह कोई साधारण स्कूल नहीं था।
मेरी कक्षा में 160 लड़कियाँ थीं, जिनमें से मैं तोशिमा जैसे मध्यमवर्गीय इलाके से आने वाली इकलौती लड़की थी। मैंने एक बार स्कूल रजिस्टर में देखा कि बाकी लड़कियाँ कहाँ रहती हैं, और उनमें से हर एक अमीर इलाके से थी। खैर, एक लड़की चिबा के दूरदराज के इलाके में किसानों के बीच रहती थी, इसलिए मेरी उससे थोड़ी-बहुत दोस्ती हो गई। और वह सच में बहुत अच्छी थी।
उसने मुझे अपने घर बुलाया, हालाँकि उसने मुझे वहाँ तक पहुँचने के लिए लंबी यात्रा के लिए माफ़ी भी माँगी। मैं गया और वह जगह अद्भुत थी, ज़मीन का एक विशाल टुकड़ा जिसके चारों ओर घूमने के लिए 15 मिनट

पैदल चलना पड़ता था। उसमें एक शानदार बगीचा था और दो कुत्ते थे जो छोटी कारों जैसे दिखते थे और जिन्हें वे मांस खिलाते थे।
लेकिन फिर भी, इस लड़की को चिबा में रहने में शर्म आती थी। यह वही लड़की है जिसे देर होने पर मर्सिडीज बेंज में स्कूल ले जाया जाता था! वो भी ड्राइवर के साथ! बिल्कुल ग्रीन हॉर्नेट फिल्म की तरह: टोपी, सफेद दस्ताने, सब कुछ। और फिर भी उसमें हीन भावना थी। क्या आप यकीन कर सकते हैं?
मैंने अपना सिर हिलाया।
"पूरे स्कूल में मैं इकलौती थी जो किता-ओत्सुका तोशिमा जैसी जगह पर रहती थी। और 'माता-पिता का पेशा' के नीचे 'किताबों की दुकान का मालिक' लिखा था। मेरी क्लास में सभी को यह बहुत अच्छा लगा: 'अरे, तुम कितनी भाग्यशाली हो, तुम जो चाहो पढ़ सकती हो' वगैरह। बेशक, वे किनोकुनिया जैसी किसी बड़ी किताबों की दुकान के बारे में सोच रहे थे। उन्होंने बेचारे छोटे से कोबायाशी किताबों की दुकान की कल्पना भी नहीं की होगी। दरवाजा चरमराते हुए खुलता है और अंदर सिर्फ पत्रिकाएँ ही दिखाई देती हैं। सबसे ज्यादा बिकने वाली पत्रिकाएँ महिलाओं की चमकदार पत्रिकाएँ हैं जिनमें नवीनतम यौन तकनीकों पर सचित्र अनुभाग होते हैं। स्थानीय गृहिणियाँ उन्हें खरीदती हैं और रसोई की मेज पर बैठकर उन्हें शुरू से अंत तक पढ़ती हैं, और जब उनके पति घर आते हैं तो उन्हें आजमाती हैं। और उनमें सबसे अद्भुत यौन मुद्राएँ होती हैं! क्या गृहिणियों के दिमाग में दिन भर यही चलता रहता है? कॉमिक्स दूसरी सबसे ज्यादा बिकने वाली वस्तु हैं: मैगज़ीन, संडे, जंप। और 74

बेशक, साप्ताहिक पत्रिकाएँ। तो यह "किताबों की दुकान" लगभग पूरी तरह से पत्रिकाओं से भरी है। हाँ, कुछ किताबें भी हैं, पेपरबैक, रहस्य

कथाएँ, रोमांचक कहानियाँ और प्रेम कहानियाँ। बस यही बिकता है। और हाउ-टू किताबें भी: गो में कैसे जीतें, बोनसाई कैसे उगाएँ, शादी में भाषण कैसे दें, सेक्स कैसे करें, धूम्रपान कैसे छोड़ें, और भी बहुत कुछ। हम लेखन सामग्री भी बेचते हैं।

कैश काउंटर के बगल में बॉलपॉइंट पेन, पेंसिल और नोटबुक के ढेर लगे थे। बस इतना ही। न तो 'वॉर एंड पीस', न 'केंज़ाबुरो ओए', न 'कैचर इन द राई'।

ये कोबायाशी बुकशॉप है। मैं कितना "भाग्यशाली" हूँ, ये देखिए। क्या आपको लगता है कि मैं भाग्यशाली हूँ?

मुझे वह जगह साफ दिखाई दे रही है।

"आप समझ रहे हैं ना मेरा मतलब। मोहल्ले के सभी लोग वहाँ जाते हैं, कुछ तो सालों से जाते आ रहे हैं, और हम डिलीवरी करते हैं। अच्छा धंधा है, चार लोगों के परिवार का गुज़ारा आराम से हो जाता है; कोई कर्ज़ नहीं, दो बेटियाँ कॉलेज में पढ़ रही हैं, बस इतना ही। फालतू खर्चों के लिए कुछ बचता ही नहीं। मुझे ऐसे स्कूल में भेजना ही नहीं चाहिए था। ये तो दिल टूटने का नुस्खा था। जब भी स्कूल पैसे माँगता, मुझे उनकी बड़बड़ाहट सुननी पड़ती थी, और मुझे हमेशा डर लगता था कि अगर मैं अपने स्कूल के दोस्तों के साथ बाहर जाऊँ और वे किसी महँगे रेस्टोरेंट में खाना खाना चाहें, तो मेरे पास पैसे खत्म न हो जाएँ। ये जीने का बहुत ही दयनीय तरीका है। क्या आपका परिवार अमीर है?"

"मेरा परिवार? नहीं, मेरे माता-पिता बिल्कुल साधारण कामकाजी लोग हैं, न अमीर, न गरीब। मुझे पता है कि उनके लिए मुझे टोक्यो के एक निजी विश्वविद्यालय में भेजना आसान नहीं है, लेकिन मैं अकेली ही हूँ, इसलिए यह कोई बड़ी बात नहीं है।"

मुझे गुजारा करने के लिए ज्यादा पैसे नहीं मिलते, इसलिए मैं पार्ट-टाइम

काम करता हूँ। हम एक साधारण से घर में रहते हैं, जिसमें एक छोटा सा बगीचा है और हमारी कार टोयोटा कोरोला है।
आपका काम कैसा है?
"मैं शिंजुकु की एक रिकॉर्ड की दुकान में हफ्ते में तीन रात काम करता हूँ। यह आसान है। मैं बस वहाँ बैठता हूँ और दुकान संभालता हूँ।"
"मज़ाक कर रहे हो?" मिदोरी ने कहा। "पता नहीं, तुम्हें देखकर तो मुझे लगा था कि तुमने कभी पैसों की तंगी नहीं झेली होगी।"
"यह सच है। मुझे कभी पैसों की तंगी नहीं हुई। ऐसा भी नहीं है कि मेरे पास बहुत पैसा हो। मैं भी ज्यादातर लोगों जैसा ही हूं।"
"खैर, मेरे स्कूल में 'ज़्यादातर लोग' अमीर थे," मिदोरी ने कहा, (हथेलियाँ 75)।

उसकी गोद में आराम कर रहा था। "यही तो समस्या थी।"
"तो अब आपको उस समस्या के बिना दुनिया देखने के भरपूर मौके मिलेंगे। शायद आपकी इच्छा से भी ज्यादा।"
"अरे, मुझे बताओ, तुम्हारे हिसाब से अमीर होने की सबसे अच्छी बात क्या है?"
"मुझें नहीं पता।"
"पैसे न होने की बात कह पाना। जैसे, अगर मैं अपनी किसी स्कूल की दोस्त को कुछ करने का सुझाव दूं, तो वो कह सकती है, 'माफ़ करना, मेरे पास पैसे नहीं हैं।' जबकि अगर स्थिति उलट होती, तो मैं ऐसा कभी नहीं कह सकती थी। अगर मैं कहूँ 'मेरे पास पैसे नहीं हैं', तो इसका सचमुच मतलब होगा 'मेरे पास पैसे नहीं हैं'। ये दुखद है। जैसे, अगर कोई खूबसूरत लड़की कहे 'आज मैं बहुत बुरी लग रही हूँ, बाहर नहीं जाना चाहती', तो ठीक है, लेकिन अगर कोई बदसूरत लड़की यही बात कहे तो

लोग उस पर हंसते हैं। मेरे लिए दुनिया ऐसी ही थी। छह साल तक, पिछले साल तक।"

आप इससे उबर जाएंगे।

"मुझे उम्मीद है। विश्वविद्यालय में जाकर बहुत राहत मिलती है! वहां तो आम लोग ही होते हैं।"

उसके होंठों पर हल्की सी मुस्कान थी और उसने अपनी हथेली से अपने छोटे बालों को संवारा।

मैंने पूछा, "क्या आपके पास नौकरी है?"

"हाँ, मैं नक्शों के लिए नोट्स लिखती हूँ। आपको पता है, नक्शों के साथ आने वाले वो छोटे-छोटे पर्चे? जिनमें अलग-अलग इलाकों का विवरण, जनसंख्या के आंकड़े और दर्शनीय स्थलों की जानकारी होती है। जैसे, यहाँ फलाँ-फलाँ हाइकिंग ट्रेल है, या फलाँ-फलाँ किंवदंती है, या कोई खास फूल या पक्षी है। मैं इन सबके लिए नोट्स लिखती हूँ। ये बहुत आसान है! बिल्कुल समय नहीं लगता। मैं पुस्तकालय में जानकारी ढूंढते-ढूंढते एक दिन में पूरी पुस्तिका लिख सकती हूँ। बस कुछ खास बातें जाननी होती हैं और फिर हर तरह का काम अपने आप मिल जाता है।"

"किस तरह के रहस्य?"

"जैसे मान लीजिए आपने कुछ ऐसा लिख दिया जो किसी और ने नहीं लिखा हो, और नक्शा बनाने वाली कंपनी के लोग आपको साहित्यिक प्रतिभा का धनी समझकर आपको और काम भेज देते हैं। ज़रूरी नहीं कि कुछ भी हो, बस कोई छोटी सी चीज़। जैसे, मान लीजिए, जब उन्होंने इस घाटी में बांध बनाया, तो पानी ने एक गाँव को डुबो दिया, लेकिन फिर भी हर वसंत में पक्षी आते हैं।"

दक्षिण से ऊपर की ओर, आप उन्हें झील के ऊपर से उड़ते हुए देख सकते

हैं। इस तरह का एक छोटा सा दृश्य डाल दीजिए और लोगों को यह बहुत पसंद आएगा, यह इतना सजीव और भावुक कर देने वाला है। आम तौर पर अंशकालिक लेखक इस तरह की चीजों में दिलचस्पी नहीं लेते, लेकिन मैं जो लिखता हूं उससे अच्छी कमाई कर लेता हूं।

"हां, लेकिन आपको उन 'एपिसोड' को ढूंढना होगा।"

"सच है," मिदोरी ने सिर झुकाते हुए कहा। "लेकिन अगर आप उन्हें ढूंढ रहे हैं, तो आमतौर पर वे मिल ही जाते हैं। और अगर नहीं मिलते, तो आप हमेशा कोई हानिरहित बहाना बना सकते हैं।"

"आहा!"

"शांति," मिदोरी ने कहा।

उसने कहा कि वह मेरे छात्रावास के बारे में सुनना चाहती है, इसलिए मैंने उसे झंडा फहराने और स्टॉर्म ट्रूपर के रेडियो अभ्यास के बारे में वही पुरानी कहानियाँ सुनाईं। स्टॉर्म ट्रूपर की बातें सुनकर मिदोरी को बहुत हंसी आती थी, जैसा कि वह हर किसी को हंसाता था। उसने कहा कि उसे छात्रावास देखना अच्छा लगेगा। मैंने उससे कहा कि उस जगह में कुछ भी मजेदार नहीं था: "गंदे कमरों में बस कुछ सौ लड़के शराब पीते और हस्तमैथुन करते रहते हैं।"

"क्या इसमें आप भी शामिल हैं?"

मैंने समझाया, "इसमें धरती पर मौजूद हर इंसान शामिल है।"

"लड़कियों को मासिक धर्म होता है और लड़के हस्तमैथुन करते हैं। हर कोई।"

"जिनके पास गर्लफ्रेंड भी हैं? मेरा मतलब है, सेक्स पार्टनर।"

"इसका उससे कोई लेना-देना नहीं है। मेरे बगल में रहने वाला केइओ का छात्र हर डेट से पहले हस्तमैथुन करता है। उसका कहना है कि इससे उसे आराम मिलता है।"

"मुझे इन सब चीजों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। मैं काफी लंबे समय तक लड़कियों के स्कूल में पढ़ी हूं।"
"मुझे लगता है कि चमकदार महिला पत्रिकाएँ इस बारे में बात नहीं करतीं।"
"बिल्कुल नहीं!" उसने हंसते हुए कहा। "खैर, वातानाबे, क्या आपके पास इस रविवार को थोड़ा समय होगा? क्या आप खाली हैं?"
"मैं हर रविवार को खाली रहता हूँ। कम से कम छह बजे तक। उसके बाद मैं काम पर जाता हूँ।"
"आप मुझसे मिलने क्यों नहीं आते? कोबायाशी बुकशॉप पर। दुकान तो बंद रहेगी, लेकिन मुझे वहाँ पूरे दिन अकेले ही रहना है। शायद मुझे कोई ज़रूरी फ़ोन आ जाए। दोपहर के खाने पर चलें? मैं 77 लोगों के लिए खाना बना दूँगा।"

आप।"
मैंने कहा, "मुझे यह अच्छा लगेगा।"
मिडोरी ने नोटबुक से एक पन्ना फाड़ा और अपने घर तक जाने का विस्तृत नक्शा बनाया। उसने लाल पेन से उस जगह पर एक बड़ा X का निशान बनाया जहाँ उसका घर था।
"आप इसे मिस नहीं कर सकते। वहां एक बड़ा सा बोर्ड लगा है: 'कोबायाशी बुकशॉप'। दोपहर 12 बजे आइएगा। दोपहर का खाना तैयार मिलेगा।"
मैंने उसे धन्यवाद दिया और नक्शा अपनी जेब में रख लिया। "मुझे अब कैंपस वापस जाना चाहिए," मैंने कहा। "मेरी जर्मन की क्लास दो बजे शुरू होती है।" मिदोरी ने कहा कि उसे कहीं जाना है और वह योत्सुया से

ट्रेन लेकर चली गई।

रविवार की सुबह मैं नौ बजे उठा, दाढ़ी बनाई, कपड़े धोए और छत पर टांग दिए। मौसम बहुत सुहावना था। शरद ऋतु की पहली खुशबू हवा में फैली हुई थी। लाल तितलियाँ आंगन में उड़ रही थीं, जिन्हें पड़ोस के बच्चे जाल घुमाकर पकड़ रहे थे। हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी, इसलिए उगते सूरज का झंडा खंभे पर ढीला लटका हुआ था। मैंने एक इस्त्री की हुई कमीज़ पहनी और छात्रावास से ट्राम स्टॉप तक पैदल चला। रविवार की सुबह छात्रों का इलाका: सड़कें सुनसान थीं, लगभग खाली, ज़्यादातर दुकानें बंद थीं। जो थोड़ी-बहुत आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, वे भी बहुत साफ़ सुनाई दे रही थीं।

सैबोट पहने एक लड़की खट-खट की आवाज़ करते हुए डामर की सड़क पर चल रही थी, और ट्राम शेल्टर के पास चार-पाँच बच्चे खाली डिब्बों की कतार पर पत्थर फेंक रहे थे। एक फूलवाले की दुकान खुली थी, इसलिए मैं अंदर गया और कुछ डैफ़ोडिल खरीदे। पतझड़ में डैफ़ोडिल: यह अजीब था। लेकिन मुझे यह खास फूल हमेशा से पसंद था।

रविवार की सुबह ट्राम में तीन बूढ़ी औरतें ही सवार थीं। वे सब मुझे और मेरे फूलों को देख रही थीं। उनमें से एक ने मुझे देखकर मुस्कुराया। मैंने भी मुस्कुरा दिया। मैं आखिरी सीट पर बैठ गई और खिड़की के पास से गुजरते पुराने घरों को देखने लगी। ट्राम लगभग छत के किनारों को छू रही थी। एक घर के कपड़े धोने वाले डेक पर दस गमलों में टमाटर के पौधे थे, जिनके पास एक बड़ी काली बिल्ली धूप में लेटी हुई थी। दूसरे घर के बगीचे में एक छोटी लड़की साबुन के बुलबुले उड़ा रही थी। मुझे कहीं से अयुमी इशिदा का एक गाना सुनाई दिया, और 78

करी पकने की खुशबू भी महसूस हो रही थी। ट्राम इस सुनसान, तंग गली से होकर धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। रास्ते में पड़ने वाले पड़ावों पर कुछ और यात्री चढ़े, लेकिन तीनों बूढ़ी औरतें आमने-सामने सटकर किसी विषय पर गहन चर्चा करती रहीं।

मैं ओत्सुका स्टेशन के पास उतरा और मिदोरी के नक्शे का अनुसरण करते हुए एक चौड़ी सड़क पर चलने लगा, जहाँ देखने लायक कुछ खास नहीं था। रास्ते में कोई भी दुकान अच्छी स्थिति में नहीं लग रही थी, क्योंकि वे पुरानी इमारतों में थीं जिनके अंदरूनी हिस्से उदास दिखते थे और कुछ साइनबोर्ड पर लिखे अक्षर धुंधले पड़ गए थे।

इमारतों की उम्र और शैली को देखते हुए, यह इलाका युद्धकालीन हवाई हमलों से बचा रहा, जिससे पूरे ब्लॉक सुरक्षित बच गए। कुछ इमारतों का पूरी तरह से पुनर्निर्माण किया गया था, लेकिन लगभग सभी का विस्तार या मरम्मत की गई थी, और यही अतिरिक्त निर्माण पुरानी इमारतों की तुलना में अधिक जर्जर दिखाई देते थे।

उस जगह का पूरा माहौल देखकर ऐसा लगता था कि ज़्यादातर मूल निवासी गाड़ियों की भीड़, गंदी हवा, शोर और ऊँचे किराए से तंग आकर उपनगरों में चले गए थे, और वहाँ सिर्फ़ सस्ते फ्लैट और कंपनियों के अपार्टमेंट ही बचे थे।

और ऐसी दुकानें जिन्हें बेचना मुश्किल था, और कुछ जिद्दी लोग जो पुरानी पारिवारिक संपत्तियों से चिपके हुए थे। सब कुछ धुंधला और मैला-कुचैला लग रहा था, मानो धुएं के गुबार में लिपटा हुआ हो।

इस गली में दस मिनट चलने के बाद मैं एक कोने पर स्थित पेट्रोल पंप पर पहुँचा, जहाँ से मैंने दाईं ओर मुड़कर दुकानों की एक छोटी सी कतार में प्रवेश किया, जिसके बीचोंबीच कोबायाशी बुकशॉप का बोर्ड लगा हुआ था। सच है, यह कोई बड़ी दुकान नहीं थी, लेकिन उतनी छोटी भी नहीं थी

जितनी मिदोरी के वर्णन से मुझे लगा था। यह एक आम मोहल्ले की किताबों की दुकान थी, ठीक वैसी ही जैसी मैं लड़कों की कॉमिक्स के प्रकाशन के दिन जाया करता था। दुकान के सामने खड़े होते ही मुझ पर उदासी छा गई।

दुकान के पूरे सामने के हिस्से को एक बड़े, नीचे की ओर खुलने वाले धातु के शटर से सील कर दिया गया था, जिस पर एक पत्रिका का विज्ञापन छपा हुआ था:

"यहाँ हर गुरुवार को साप्ताहिक बंशुन बिकता है"। मेरे पास अभी भी 15 बचे हैं।

दोपहर होने में कुछ ही मिनट बचे थे, लेकिन मैं कुछ डैफ़ोडिल फूल लेकर गली में इधर-उधर भटककर समय बर्बाद नहीं करना चाहता था, इसलिए मैंने 79 नंबर के बगल वाले दरवाजे की घंटी दबा दी।

मैंने शटर बंद किया और कुछ कदम पीछे हटकर इंतज़ार करने लगा। पंद्रह सेकंड बीत गए, कोई जवाब नहीं आया, और मैं सोच ही रहा था कि दोबारा घंटी बजाऊं या नहीं, तभी मुझे ऊपर एक खिड़की के खुलने की आवाज़ सुनाई दी। मैंने ऊपर देखा तो मिदोरी बाहर झुककर हाथ हिला रही थी।

"अंदर आओ," वह चिल्लाई। "शटर उठाओ।"

"क्या यह ठीक है? मैं थोड़ा जल्दी आ गया हूँ," मैंने चिल्लाकर जवाब दिया।

"कोई बात नहीं। ऊपर आ जाओ। मैं रसोई में व्यस्त हूँ।" उसने खिड़की बंद कर दी।

जैसे ही मैंने शटर को ज़मीन से तीन फीट ऊपर उठाया, उसमें से एक भयानक घिसने की आवाज़ आई। मैं झुककर उसके नीचे से निकला और

उसे फिर से नीचे कर दिया। दुकान के अंदर घना अंधेरा था। मैं किसी तरह टटोलते हुए पीछे की सीढ़ियों तक पहुँचा, बंधी हुई पत्रिकाओं के ढेरों से टकराता हुआ। मैंने अपने जूते के फीते खोले और सीढ़ियाँ चढ़कर बैठक में पहुँचा। घर का अंदरूनी हिस्सा अंधेरा और उदास था। सीढ़ियाँ एक साधारण बैठक में जाती थीं जहाँ एक सोफा और आरामकुर्सियाँ रखी थीं।

यह एक छोटा सा कमरा था जिसमें खिड़की से हल्की रोशनी आ रही थी, जो पुरानी पोलिश फिल्मों की याद दिला रही थी। बाईं ओर एक तरह का स्टोररूम था और एक बाथरूम का दरवाजा जैसा कुछ दिखाई दे रहा था। दूसरी मंजिल तक पहुँचने के लिए मुझे बड़ी सावधानी से सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ीं, लेकिन वहाँ पहुँचते ही पहली मंजिल की तुलना में इतनी रोशनी थी कि मुझे बहुत राहत मिली।

"इधर आओ," मिदोरी की आवाज़ आई। सीढ़ियों के ऊपर दाईं ओर एक भोजन कक्ष जैसा कमरा था, और उसके आगे एक रसोईघर। घर पुराना था, लेकिन रसोईघर को हाल ही में नए कैबिनेट और चमकदार सिंक व नलों से सजाया गया था। मिदोरी खाना बना रही थी। एक बर्तन उबल रहा था, और हवा में भुनी हुई मछली की खुशबू फैली हुई थी।

"फ्रिज में बीयर है," उसने मेरी तरफ देखते हुए कहा।

"जब तक मैं इसे पूरा कर लेता हूँ, आप बैठ जाइए।" मैंने एक कैन लिया और रसोई की मेज पर बैठ गया। बीयर इतनी ठंडी थी कि मानो एक साल से फ्रिज में रखी हो। मेज पर एक छोटी, सफेद ऐशट्रे, एक अखबार और सोया सॉस का डिब्बा रखा था। वहाँ एक नोटपैड और पेन भी था, जिस पर एक फोन नंबर और कुछ आंकड़े लिखे थे जो खरीदारी से संबंधित गणनाएँ लग रही थीं।

"मैं इसे दस मिनट में कर दूंगी," उसने कहा। "क्या आप इंतज़ार कर सकते हैं?"
"बिल्कुल कर सकता हूँ," मैंने कहा।
"तो फिर खूब भूख लगा लो। मैं बहुत कमा रहा हूँ।"
मैंने अपनी बियर की चुस्की ली और मिदोरी को खाना बनाते हुए ध्यान से देखा, उसकी पीठ मेरी तरफ थी। वह फुर्तीली और चुस्त-दुरुस्त हरकतों से एक साथ कम से कम चार काम कर रही थी। इधर उसने उबले हुए व्यंजन का स्वाद चखा, और अगले ही पल वह काटने वाले तख्ते पर थी, चटखती हुई कटिंग कर रही थी, फिर उसने फ्रिज से कुछ निकाला और कटोरे में डाल दिया, और देखते ही देखते उसने अपना इस्तेमाल किया हुआ बर्तन धो दिया। पीछे से वह किसी भारतीय ढोल वादक जैसी लग रही थी - घंटी बजाना, पत्थर पर थपथपाना, भैंस की हड्डी पर प्रहार करना, हर हरकत सटीक और सधी हुई, एकदम संतुलित। मैं विस्मय से देखता रहा।
मैंने एहतियात के तौर पर कहा, "अगर मैं कुछ कर सकूँ तो मुझे बता देना।"
"कोई बात नहीं," मिदोरी ने मेरी तरफ मुस्कुराते हुए कहा। "मुझे अकेले सब कुछ करने की आदत है।" उसने स्लिम फिट नीली जींस और नेवी ब्लू टी-शर्ट पहनी हुई थी।
एप्पल रिकॉर्ड्स का लोगो लगभग पूरी शर्ट के पिछले हिस्से को ढके हुए था। उसकी कमर बेहद पतली थी, मानो उसने यौवन अवस्था को छोड़ दिया हो, जिसमें कमर का आकार बढ़ता है। इसी वजह से वह स्लिम जींस पहने ज़्यादातर लड़कियों की तुलना में कहीं ज़्यादा मर्दाना-स्त्री जैसी दिखती थी। रसोई की खिड़की से आती रोशनी से उसकी आकृति धुंधली सी दिखाई दे रही थी।

मैंने कहा, "आपको इतनी बड़ी दावत का आयोजन करने की बिल्कुल जरूरत नहीं थी।"
"कोई दावत नहीं है," मिदोरी ने मेरी तरफ देखे बिना जवाब दिया। "कल मैं इतनी व्यस्त थी कि ठीक से खरीदारी नहीं कर पाई। बस फ्रिज में जो कुछ था, उसी से काम चला रही हूँ। सच में, चिंता मत करो। वैसे भी, मेहमानों का अच्छे से सत्कार करना कोबायाशी परिवार की परंपरा है। पता नहीं क्या बात है, लेकिन हमें मेहमाननवाज़ी करना अच्छा लगता है। ये जन्मजात है; एक तरह की बीमारी। ऐसा नहीं है कि हम बहुत अच्छे हैं या लोग हमें पसंद करते हैं, लेकिन अगर कोई आ जाए तो हमें उसका हर हाल में अच्छे से सत्कार करना ही पड़ता है। हम सब में ये एक ही तरह की कमी है, चाहे अच्छी हो या बुरी। मेरे पिताजी को ही ले लीजिए। वो मुश्किल से ही पीते हैं, लेकिन घर में शराब भरी रहती है। किसलिए? मेहमानों की सेवा के लिए! तो संकोच मत करो: जितनी चाहो उतनी बीयर पी लो।"

"धन्यवाद," मैंने कहा।
अचानक मुझे याद आया कि मैं डैफ़ोडिल के फूल नीचे ही छोड़ आई थी। जूते के फीते खोलते समय मैंने उन्हें एक तरफ रख दिया था। मैं चुपके से नीचे गई और देखा कि दस चमकीले फूल अंधेरे में पड़े हुए थे। मिदोरी ने अलमारी से एक लंबा, पतला गिलास निकाला और उसमें फूलों को सजाया।

"मुझे डैफ़ोडिल बहुत पसंद हैं," मिदोरी ने कहा। "मैंने एक बार स्कूल के टैलेंट कॉम्पिटिशन में 'सेवन डैफ़ोडिल्स' गाना गाया था। क्या आप इसे

जानते हैं?" "बिल्कुल।"
"हमारा एक लोक संगीत समूह था। मैं गिटार बजाता था।"
खाना परोसते समय वह "सेवन डैफोडिल्स" गाना गा रही थी।

मिडोरी का खाना मेरी उम्मीद से कहीं बेहतर था: अंडे, मैकेरल मछली, ताजी हरी सब्जियां, बैंगन, मशरूम, मूली और तिल के बीजों का उपयोग करके तले हुए, अचार वाले, उबले हुए और भुने हुए व्यंजनों का एक अद्भुत संग्रह, सभी को नाजुक क्योटो शैली में पकाया गया था।
"यह तो बहुत बढ़िया है," मैंने मुंह भरकर कहा।
"ठीक है, अब मुझे सच बताओ," मिदोरी ने कहा। "मेरी शक्ल देखकर तो तुम्हें मेरी खाना पकाने की कला से बहुत अच्छी उम्मीद नहीं थी, है ना?"
मैंने ईमानदारी से कहा, "सच में नहीं।"
"आप कंसाई क्षेत्र से हैं, इसलिए आपको इस तरह के नाजुक स्वाद पसंद होंगे, है ना?"
"कहीं तुमने मेरे लिए अपना स्टाइल तो नहीं बदल लिया?"
"मज़ाक मत करो! मैं इतनी मेहनत नहीं करूँगा। नहीं, हम हमेशा इसी तरह खाते हैं।"
"तो क्या आपकी मां - या आपके पिता - कंसाई से हैं?"
नहीं। मेरे पिता का जन्म टोक्यो में हुआ था और मेरी माँ फुकुशिमा से हैं। मेरे रिश्तेदारों में एक भी कंसाई मूल का व्यक्ति नहीं है।
हम सभी टोक्यो या उत्तरी कांटो से हैं।"
मैंने कहा, "मुझे समझ नहीं आ रहा। आप इस तरह का खाना 100 प्रतिशत असली कंसाई शैली में कैसे बना सकते हैं? क्या किसी ने आपको सिखाया है?"
"खैर, यह थोड़ी लंबी कहानी है," उसने तले हुए अंडे का एक टुकड़ा खाते

हुए कहा।
मेरी माँ को किसी भी तरह का घरेलू काम नापसंद था, और वह लगभग कभी भी 82

मैं कुछ भी पकाती थी। और हमें अपने व्यवसाय के बारे में भी सोचना पड़ता था, इसलिए हमेशा यही होता था, "आज हम बहुत व्यस्त हैं, चलो बाहर से खाना मंगवा लेते हैं" या "चलो कसाई की दुकान से कुछ क्रोकेट्स खरीद लेते हैं" वगैरह। मुझे यह बात बचपन से ही नापसंद थी, मतलब, एक बड़ा बर्तन भरकर करी बनाना और लगातार तीन दिन वही खाना। फिर एक दिन - जब मैं स्कूल के पाँचवें साल में थी - मैंने फैसला किया कि मैं परिवार के लिए खाना बनाऊंगी और सही तरीके से बनाऊंगी। मैं शिंजुकु के बड़े किनोकुनिया स्टोर गई और वहाँ से सबसे बड़ी और सबसे सुंदर कुकबुक खरीदी, और मैंने उसे शुरू से अंत तक पढ़ा: कटिंग बोर्ड कैसे चुनें, चाकू कैसे तेज करें, मछली से हड्डियाँ कैसे निकालें, ताज़ी बोनिटो मछली के टुकड़े कैसे काटें, सब कुछ। पता चला कि किताब के लेखक कंसाई के थे, इसलिए मेरा सारा खाना कंसाई शैली का है।
"क्या मतलब, तुमने ये सब चीजें बनाना एक किताब से सीखा?!"
मैंने पैसे बचाए और असली चीज़ खाने चला गया। इसी तरह मैंने स्वादों के बारे में सीखा। मेरी अंतर्ज्ञान शक्ति काफी अच्छी है। हालांकि, तार्किक रूप से सोचने में मैं बिल्कुल बेकार हूँ।
"यह आश्चर्यजनक है कि आप बिना किसी के सिखाए खुद ही इतनी अच्छी तरह से खाना बनाना सीख सकते हैं।"
मिडोरी ने आह भरते हुए कहा, "ऐसे घर में पलना-बढ़ना आसान नहीं था जहाँ खाने-पीने की कोई परवाह नहीं थी। मैं उनसे कहती कि मुझे अच्छे

चाकू और बर्तन खरीदने हैं, लेकिन वे मुझे पैसे नहीं देते थे। वे कहते, 'हमारे पास जो है, वही काफी है।' लेकिन मैं कहती कि यह तो पागलपन है, हमारे घर में जो पतले-दुबले चाकू हैं, उनसे तो मछली की हड्डियाँ भी नहीं निकाली जा सकतीं। तो वे कहते, 'तुम्हें मछली की हड्डियाँ निकालने की क्या ज़रूरत है?'"
उनसे बात करने की कोशिश करना बेकार था। मैंने अपने पॉकेट मनी से असली पेशेवर चाकू, बर्तन, छलनी और ऐसी ही चीज़ें खरीदीं। यकीन मानिए? एक 15 साल की लड़की छलनी, धार तेज करने वाले पत्थर और टेम्पुरा के बर्तन खरीदने के लिए पैसे बचा रही है, जबकि स्कूल की बाकी लड़कियाँ खूब पॉकेट मनी पा रही हैं और खूबसूरत कपड़े और जूते खरीद रही हैं। क्या आपको बुरा नहीं लगता?
मेरे लिए?

83

मैंने सिर हिलाया और ताजी जुन्साई साग से बने साफ सूप का एक घूंट निगल लिया।
"जब मैं छठी कक्षा में थी, तो मुझे एक अंडा तलने वाला बर्तन चाहिए था - एक लंबा, पतला पैन जिसमें हम जो डैशिमाकी स्टाइल का तला हुआ अंडा खा रहे हैं, वो बनाते हैं। मैंने उसे उन पैसों से खरीदा था जो मुझे नई ब्रा खरीदने के लिए रखने थे। तीन महीने तक मुझे एक ही ब्रा पहनकर गुजारा करना पड़ा। यकीन मानिए? मैं रात को ब्रा धोती, उसे सुखाने में पागल हो जाती और अगले दिन फिर पहन लेती। और अगर वो ठीक से नहीं सूखती, तो फिर क्या मुसीबत हो जाती। गीली ब्रा पहनना दुनिया की सबसे दुखद बात है। मैं आंखों से आंसू बहाते हुए घूमती रहती थी।

सोचिए, मैं एक अंडा तलने वाले बर्तन के लिए इतना सब सह रही थी!"
मैंने हंसते हुए कहा, "मैं समझ गया कि आप क्या कहना चाहते हैं।"
"मुझे पता है कि मुझे यह नहीं कहना चाहिए, लेकिन सच कहूँ तो मेरी माँ के निधन से मुझे एक तरह की राहत मिली। मैं परिवार का बजट अपने हिसाब से चला सकती थी। मैं अपनी पसंद की चीजें खरीद सकती थी। अब मेरे पास खाना पकाने के बर्तनों का लगभग पूरा सेट है। मेरे पिता को बजट के बारे में कुछ भी नहीं पता।"
"आपकी मां का निधन कब हुआ?"
"दो साल पहले। कैंसर। ब्रेन ट्यूमर। वह डेढ़ साल तक अस्पताल में रही। यह बहुत भयानक था। उसने शुरू से अंत तक कष्ट सहा। आखिरकार उसकी मानसिक स्थिति बिगड़ गई; उसे हर समय दवाइयाँ दी जाती थीं, फिर भी वह मर नहीं सकी, हालाँकि जब उसकी मृत्यु हुई तो वह एक तरह से दया मृत्यु ही थी। यह सबसे बुरी तरह की मौत होती है - व्यक्ति पीड़ा में होता है, परिवार नरक से गुजरता है। हमारे पास जो कुछ भी था, सब खर्च हो गया। मेरा मतलब है, वे उसे ये इंजेक्शन देते थे -
धड़ाधड़, धड़ाधड़, एक बार में 20,000 डॉलर, और उसे चौबीसों घंटे देखभाल की जरूरत थी।
मैं उसके साथ इतनी व्यस्त थी कि पढ़ाई नहीं कर पाई, विश्वविद्यालय में दाखिला एक साल के लिए टालना पड़ा। और मानो इतना ही काफी नहीं था - " वह बीच वाक्य में ही रुक गई, अपनी चॉपस्टिक नीचे रखी और आह भरी। "यह बातचीत अचानक इतनी निराशाजनक कैसे हो गई?"
मैंने कहा, "यह ब्रा के कारोबार से शुरू हुआ था।"
"तो खैर, अपने अंडे खाओ और मैंने अभी जो कहा उस पर विचार करो," मिदोरी ने गंभीर भाव से कहा।
मेरा हिस्सा खाकर मेरा पेट भर गया, लेकिन मिदोरी ने बहुत कम खाया।

"खाना बनाने से मेरी भूख मर जाती है," उसने कहा। उसने मेज साफ की, टुकड़ों को पोंछा, 84

उसने मार्लबोरो सिगरेट का एक डिब्बा निकाला, एक सिगरेट मुंह में डाली और माचिस से जला ली। फिर उसने डैफोडिल के फूलों से भरा गिलास पकड़ा और कुछ देर तक उन फूलों को निहारा।
"मुझे नहीं लगता कि मैं इन्हें फूलदान में रखूंगी," उसने कहा। "अगर मैं इन्हें ऐसे ही छोड़ दूं, तो ऐसा लगेगा जैसे मैंने इन्हें कहीं तालाब के किनारे से उठाया और जो भी चीज़ हाथ लगी उसमें फेंक दिया।"
मैंने कहा, "मैंने उन्हें ओत्सुका स्टेशन पर तालाब के किनारे से ही चुना था।"
वह खिलखिलाकर हंस पड़ी। "तुम बड़े अजीब हो। एकदम सीधे चेहरे से मजाक करते हो।"
ठुड्डी को हाथ में थामे हुए उसने आधी सिगरेट पी और फिर उसे ऐशट्रे में बुझा दिया। उसने अपनी आँखों को ऐसे मला जैसे उनमें धुआँ चला गया हो।
"लड़कियों को सिगरेट बुझाते समय थोड़ा और शालीन होना चाहिए। तुमने तो लकड़हारे की तरह बुझाया। तुम्हें उसे ऐशट्रे में ठूंसना नहीं चाहिए, बल्कि राख के किनारों पर हल्के से दबाना चाहिए।"
फिर वो मुड़ता नहीं है। और लड़कियों को कभी भी नाक से धुआं नहीं निकालना चाहिए। और ज्यादातर लड़कियां किसी पुरुष के साथ अकेले खाना खाते समय इस बारे में बात नहीं करेंगी कि उन्होंने तीन महीने तक एक ही ब्रा पहनी थी।
"मैं एक लकड़हारा हूँ," मिदोरी ने अपनी नाक के पास खुजली करते हुए कहा। "मैं कभी भी स्टाइलिश नहीं बन पाती। कभी-कभी मज़ाक में

कोशिश करती हूँ, पर कभी कामयाब नहीं होती। क्या मेरे लिए और कोई आलोचना है?"
मैंने कहा, "लड़कियां मार्लबोरो नहीं पीतीं।"
"क्या फर्क है? दोनों का स्वाद एक जैसा ही है।" उसने अपने हाथ में मार्लबोरो का लाल पैकेट बार-बार पलटा। "मैंने पिछले महीने सिगरेट पीना शुरू किया। ऐसा नहीं है कि मुझे तंबाकू की बहुत तलब थी। बस मन किया।" "ऐसा क्यों?" मैंने पूछा।
उसने मेज पर अपने हाथ जोड़े और कुछ देर तक इस बारे में सोचा। "क्या फर्क है? तुम सिगरेट नहीं पीते?" "जून में छोड़ दिया," मैंने कहा।
"ऐसा कैसे?"
"यह बहुत तकलीफदेह था। मुझे आधी रात को सिगरेट खत्म हो जाना बिल्कुल पसंद नहीं था। मुझे यह अच्छा नहीं लगता कि कोई चीज मुझे इस तरह नियंत्रित करे।"

"आपको क्या पसंद है और क्या नहीं, इस बारे में आप बहुत स्पष्ट हैं," उसने कहा।
"शायद ऐसा ही हो," मैंने कहा। "शायद इसीलिए लोग मुझे पसंद नहीं करते। कभी नहीं किया।"
"ऐसा इसलिए है क्योंकि आप इसे दिखाते हैं," उसने कहा। "आप यह स्पष्ट कर देते हैं कि आपको इस बात की परवाह नहीं है कि लोग आपको पसंद करते हैं या नहीं। इससे कुछ लोग नाराज हो जाते हैं।"
उसने ठुड्डी पर हाथ रखकर लगभग बुदबुदाते हुए कहा, "लेकिन मुझे आपसे बात करना अच्छा लगता है।"
आपके बात करने का तरीका बहुत ही असामान्य है। "मुझे इस तरह से

किसी चीज का मुझ पर नियंत्रण रखना पसंद नहीं है।"

मैंने बर्तन धोने में उसकी मदद की। उसके बगल में खड़े होकर, मैं उसके बर्तन धोते समय पोंछता रहा और सारे बर्तन वर्कटॉप पर रखता गया।
"तो," मैंने कहा, "आज आपका परिवार बाहर गया है?"
"मेरी मां कब्र में हैं। उनकी मृत्यु दो साल पहले हुई थी।" "हां, मैंने यह बात सुनी थी।"
"मेरी बहन अपने मंगेतर के साथ डेट पर है। शायद ड्राइव पर जा रही है। उसका बॉयफ्रेंड किसी कार कंपनी में काम करता है। उसे कारें बहुत पसंद हैं। मुझे कारें पसंद नहीं हैं।"
मिडोरी ने बोलना बंद कर दिया और हाथ धोने लगी। मैंने बोलना बंद कर दिया और पोंछने लगी।
कुछ समय बीत जाने के बाद उसने कहा, "और फिर मेरे पिता हैं।"
"ठीक है," मैंने कहा।

"वह पिछले साल जून में उरुग्वे चले गए थे और तब से वहीं हैं।"
"उरुग्वे?! उरुग्वे ही क्यों?"
"मानो या ना मानो, वो वहाँ बसने की सोच रहा था। उसका एक पुराना फौजी दोस्त वहाँ एक खेत में रहता है। अचानक मेरे पिताजी ने भी ऐलान कर दिया कि वो भी जा रहे हैं, उरुग्वे में वो जो कुछ भी कर सकते हैं उसकी कोई सीमा नहीं है, और वो हवाई जहाज में बैठ गए और बस बात खत्म। हमने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की, जैसे..."
"तुम ऐसी जगह क्यों जाना चाहते हो? तुम्हें वहां की भाषा नहीं आती, तुम टोक्यो से बाहर शायद ही कभी निकले हो।" लेकिन वह सुनने को तैयार नहीं था।

मेरी माँ को खोना उनके लिए एक बहुत बड़ा सदमा था। मतलब, इससे उनकी उम्र 86 साल हो गई।

नन्ही कोयल। वह उससे इतना प्यार करता था। सचमुच।
मैं जवाब में कुछ कह नहीं सका। मैं मुंह खुला रखकर मिदोरी को देखता रहा।
"जब हमारी माँ का निधन हुआ, तो उन्होंने मुझसे और मेरी बहन से क्या कहा होगा? 'मैं तुम दोनों को खोना ज़्यादा पसंद करता, बजाय उनके।' यह सुनकर मेरी साँसें थम गईं। मैं एक शब्द भी नहीं बोल पाई। आप समझ रहे हैं ना? आप ऐसी बात कह ही नहीं सकते। ठीक है, उन्होंने अपनी प्रेमिका, अपनी जीवनसंगिनी को खो दिया। मैं उनके दर्द, उनकी उदासी, उनके दिल टूटने को समझती हूँ। मुझे उन पर तरस आता है। लेकिन आप अपनी बेटियों से, जिन्हें आपने जन्म दिया है, ऐसा नहीं कहते।"
"तुम्हें उसकी जगह मर जाना चाहिए था। मेरा मतलब है, यह बहुत ही भयानक है।"
क्या आप सहमत नहीं हैं?
"हां, मैं आपकी बात समझ गया।"
"ये एक ऐसा घाव है जो कभी नहीं भरेगा," उसने सिर हिलाते हुए कहा। "लेकिन खैर, मेरे परिवार में हर कोई थोड़ा अलग है। हम सब में कुछ न कुछ थोड़ा अजीब है।"
"ऐसा ही लगता है," मैंने कहा।
फिर भी, दो लोगों का एक-दूसरे से प्यार करना कितना अद्भुत है, है ना? मेरा मतलब है, एक आदमी अपनी पत्नी से इतना प्यार करता है कि वह अपनी बेटियों से कह सकता है कि उनकी जगह उन्हें मर जाना चाहिए

था।
"शायद ऐसा हो, अब जब आपने इसे इस तरह से कहा है।"
"और फिर वह हम दोनों को छोड़कर उरुग्वे भाग जाता है।"
मैंने बिना कुछ कहे एक और बर्तन पोंछ दिया। आखिरी बर्तन पोंछने के बाद, मिदोरी ने सब कुछ वापस अलमारियों में रख दिया।
"तो, क्या तुमने अपने पिता से कोई खबर सुनी है?" मैंने पूछा।
"एक पोस्टकार्ड। मार्च में। लेकिन वह क्या लिखता है? 'यहाँ गर्मी है' या "फल मेरी उम्मीद के मुताबिक अच्छे नहीं हैं।" ऐसी ही बातें। मतलब, हद हो गई! गधे की एक बेवकूफी भरी तस्वीर! लगता है उसका दिमाग खराब हो गया है! उसने यह भी नहीं बताया कि वह उस आदमी से मिला था या नहीं – उसका वह दोस्त या जो भी था। आखिर में उसने बस इतना कहा कि जब सब ठीक हो जाएगा तो वह मुझे और मेरी बहन को बुला लेगा, लेकिन उसके बाद से एक शब्द भी नहीं बोला। और वह हमारे पत्रों का कभी जवाब भी नहीं देता।"
"अगर आपके पिता आपसे कहें कि 'उरुग्वे आ जाओ', तो आप क्या करेंगे?"

"मैं कम से कम जाकर एक बार देख तो लूंगी। शायद मज़ा आ जाए। मेरी बहन कहती है कि वह बिल्कुल मना कर देगी। उसे गंदी चीजें और गंदी जगहें बिल्कुल पसंद नहीं हैं।"
"क्या उरुग्वे गंदा है?"
"कौन जाने? उसे लगता है कि ऐसा ही है। जैसे सड़कें गधों के गोबर से भरी हों, मक्खियाँ भिनभिना रही हों, शौचालय काम न कर रहे हों, और हर जगह छिपकलियाँ और बिच्छू रेंग रहे हों। शायद उसने ऐसी कोई

फिल्म देखी हो। उसे मक्खियाँ भी बिल्कुल पसंद नहीं हैं। वह बस खूबसूरत जगहों पर शानदार कारों में घूमना चाहती है।"
"बिलकुल नहीं।"
"मेरा मतलब है, उरुग्वे में क्या खराबी है? मैं तो चला जाऊंगा।" "तो फिर दुकान कौन चला रहा है?"
"मेरी बहन यह काम करती है, लेकिन उसे यह बिल्कुल पसंद नहीं है। पड़ोस में हमारे एक चाचा हैं जो मदद करते हैं और सामान पहुँचाते हैं। और मैं भी जब समय मिलता है, मदद करता हूँ। किताबों की दुकान चलाना कोई बहुत मेहनत का काम नहीं है, इसलिए हम इसे संभाल लेते हैं। अगर बहुत ज्यादा बोझ हो गया, तो हम इसे बेच देंगे।"
"क्या आपको अपने पिता पसंद हैं?"
मिडोरी ने सिर हिलाया। "खास तौर पर नहीं।" "तो तुम उसका पीछा करते हुए उरुग्वे कैसे जा सकती हो?"
मुझे उन पर भरोसा है।
"क्या आप उस पर विश्वास करते हैं?"
"हां, मैं उन्हें उतना पसंद नहीं करता, लेकिन मुझे अपने पिता पर भरोसा है।"
मैं उस आदमी पर कैसे अविश्वास कर सकता हूँ जो अपनी पत्नी को खोने के सदमे से उबरकर अपना घर, अपने बच्चे, अपनी नौकरी छोड़कर उरुग्वे भाग जाता है? क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं?
मैंने आह भरी। "कुछ हद तक, लेकिन पूरी तरह नहीं।"
मिडोरी हँसी और मेरी पीठ थपथपाई। "कोई बात नहीं," उसने कहा। "इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।"
उस रविवार की दोपहर एक के बाद एक अजीबोगरीब घटनाएँ घटीं। मिदोरी के घर के पास आग लग गई और जब हम उसे देखने के लिए

तीसरी मंज़िल पर बने कपड़े धोने के डेक पर गए, तो हम दोनों ने एक-दूसरे को चूम लिया। इस तरह कहने पर यह बेवकूफी भरा लगता है, लेकिन असल में ऐसा ही हुआ।
खाना खाने के बाद हम कॉफी पी रहे थे और 88 के बारे में बातें कर रहे थे।

विश्वविद्यालय में ही हमें सायरन की आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ तेज़ होती जा रही थी और ऐसा लग रहा था कि उनकी संख्या बढ़ती जा रही है। कई लोग दुकान के पास से भागे, कुछ चिल्ला रहे थे। मिदोरी सड़क की ओर वाले एक कमरे में गई, खिड़की खोली और नीचे देखा। "एक मिनट यहीं रुको," उसने कहा और गायब हो गई; जिसके बाद मुझे सीढ़ियों पर कदमों की तेज़ आवाज़ सुनाई दी।
मैं वहाँ अकेले बैठकर कॉफ़ी पी रहा था और यह याद करने की कोशिश कर रहा था कि उरुग्वे कहाँ है। खैर, ब्राज़ील इधर था, वेनेज़ुएला वहाँ, और कोलंबिया कहीं इधर, लेकिन मुझे उरुग्वे का पता नहीं चल रहा था। कुछ मिनट बाद मिदोरी नीचे आई और मुझे अपने साथ कहीं चलने के लिए कहा। मैं उसके पीछे-पीछे हॉल के अंत तक गया और बाँस के कपड़े सुखाने वाले डंडों वाली एक लकड़ी की सीढ़ी पर चढ़ गया। यह सीढ़ी आसपास की ज़्यादातर छतों से ऊँची थी और वहाँ से मोहल्ले का अच्छा नज़ारा दिखता था। तीन-चार घरों की दूरी पर कहीं से काले धुएँ के बड़े-बड़े बादल उठ रहे थे और हवा के साथ बहकर मुख्य सड़क की ओर जा रहे थे। हवा में जलने की गंध फैली हुई थी।
"यह साकामोटो की जगह है," मिदोरी ने रेलिंग पर झुकते हुए कहा। "वे पारंपरिक दरवाज़े के फिटिंग वगैरह बनाते थे। हालांकि, कुछ समय पहले उनका कारोबार बंद हो गया।"

मैं उसके साथ रेलिंग पर झुक गई और देखने की कोशिश करने लगी कि क्या हो रहा है। एक तीन मंजिला इमारत ने आग को देखने से रोक रखा था, लेकिन ऐसा लग रहा था कि वहाँ तीन-चार दमकल गाड़ियाँ आग बुझाने में लगी हुई थीं। उनमें से दो से ज़्यादा गाड़ियाँ उस संकरी गली में नहीं घुस पा रही थीं जहाँ घर जल रहा था, बाकी सब मुख्य सड़क पर खड़ी थीं।

वहां हमेशा की तरह तमाशबीनों की भीड़ जमा थी।

"अरे, शायद तुम्हें अपना कीमती सामान इकट्ठा करके यहाँ से निकलने की तैयारी कर लेनी चाहिए," मैंने मिदोरी से कहा। "हवा अभी दूसरी दिशा में बह रही है, लेकिन कभी भी बदल सकती है, और यहीं पास में पेट्रोल पंप भी है। मैं सामान पैक करने में तुम्हारी मदद करूँगा।"

"कौन सी कीमती चीजें?" मिदोरी ने कहा।

"अच्छा, आपके पास कुछ तो होगा जिसे आप सहेज कर रखना चाहेंगे - बैंक की किताबें, मुहरें, कानूनी कागजात, इस तरह की चीजें। आपातकालीन नकदी।" "छोड़ो भी। मैं 89 साल का नहीं हूँ।"

भाग जाना।"

"अगर यह जगह जल जाए तो भी?"

"तुमने सही सुना। मुझे मरने से कोई आपत्ति नहीं है।"

मैंने उसकी आँखों में देखा, और उसने भी सीधे मेरी आँखों में देखा। मुझे समझ नहीं आया कि वह गंभीर थी या मज़ाक कर रही थी। हम कुछ देर तक उसी स्थिति में रहे, और जल्द ही मेरी चिंता दूर हो गई।

"ठीक है," मैंने कहा। "मैं समझ गया। मैं तुम्हारे साथ ही रहूंगा।"

"क्या तुम मेरे साथ मरोगे?" मिदोरी ने चमकती आँखों से पूछा।

मैंने कहा, "बिल्कुल नहीं। अगर खतरा हुआ तो मैं भाग जाऊंगी। अगर

तुम्हें मरना है तो अकेले ही मर जाओ।"
"निर्दयी कमीना!"
"सिर्फ इसलिए कि तुमने मेरे लिए दोपहर का खाना बनाया है, मैं तुम्हारे साथ नहीं मरने वाला। बेशक, अगर रात का खाना होता तो..."
"अच्छा, चलो... खैर, थोड़ी देर यहीं रुककर देखते हैं। हम गाने गा सकते हैं। और अगर कुछ बुरा होता है, तो हम उसके बारे में तब सोचेंगे।"
"गीत गाते?"
मिडोरी नीचे से दो तकिए, चार बीयर के डिब्बे और एक गिटार लेकर आई। हम पीते हुए उठते हुए काले धुएं को देखते रहे। वह गिटार बजाती और गाती रही। मैंने उससे पूछा कि क्या उसे नहीं लगता कि इससे पड़ोसियों को गुस्सा आ सकता है। कपड़े धोने की जगह से आग देखते हुए बीयर पीना और गाना मुझे कोई प्रशंसनीय व्यवहार नहीं लगा।
"छोड़ो इसे," उसने कहा। "हम कभी इस बात की परवाह नहीं करते कि पड़ोसी क्या सोचेंगे।"
उसने अपने समूह के साथ गाए कुछ लोकगीत गाए। मैं यह तो नहीं कह सकता कि वह अच्छी थी, लेकिन ऐसा लग रहा था कि उसे अपना संगीत पसंद था। उसने सभी पुराने लोकप्रिय गाने गाए।
"लेमन ट्री", "पफ (द मैजिक ड्रैगन)", "फाइव हंड्रेड माइल्स",
"वेयर हैव ऑल द फ्लावर्स गॉन?", "माइकल, रो द बोट अशोर"। पहले तो उन्होंने मुझे बेस हारमनी गाने के लिए कहा, लेकिन मैं इतना बुरा गाता था कि उन्होंने हार मान ली और अकेले ही मन भरकर गाने लगीं। मैंने अपने 90वें गाने पर काम किया।

मैंने बीयर पीते हुए उसके गाने सुने और आग पर नज़र रखी। आग कई बार भड़की और बुझी। लोग चिल्ला रहे थे और आदेश दे रहे थे। एक

अखबार का हेलीकॉप्टर ऊपर से गुजरा, तस्वीरें लीं और उड़ गया। मुझे चिंता हुई कि कहीं हम भी तस्वीर में न आ जाएं। एक पुलिसकर्मी ने लाउडस्पीकर से आसपास खड़े लोगों को पीछे हटने के लिए चिल्लाया। एक छोटा बच्चा अपनी माँ के लिए रो रहा था। कहीं कांच बिखर गया। थोड़ी देर में हवा अप्रत्याशित रूप से बदलने लगी और हमारे आसपास सफेद राख के टुकड़े गिरने लगे, लेकिन मिदोरी पीती रही और गाती रही। अपने जाने-पहचाने ज़्यादातर गाने गाने के बाद, उसने एक अजीब सा गाना गाया जो उसने कहा कि उसने खुद लिखा है:
मुझे आपके लिए स्टू बनाना अच्छा लगेगा।
लेकिन मेरे पास गांजा नहीं है।
मुझे आपके लिए एक स्कार्फ बुनना अच्छा लगेगा।
लेकिन मेरे पास ऊन नहीं है।
मुझे आपके लिए एक कविता लिखना अच्छा लगेगा।
लेकिन मेरे पास कलम नहीं है।

"इसका नाम 'मेरे पास कुछ नहीं' है," मिदोरी ने घोषणा की। यह सचमुच एक बेहद खराब गाना था, न सिर्फ बोल और न ही संगीत।
मैं इस बेतरतीब संगीत को सुनते हुए सोच रहा था कि अगर पेट्रोल पंप में आग लग गई तो धमाका होगा और पूरा घर उड़ जाएगा। गाते-गाते थककर मिदोरी ने अपना गिटार नीचे रख दिया और धूप में बैठी बिल्ली की तरह मेरे कंधे पर सिर रखकर बैठ गई।
"आपको मेरा गाना कैसा लगा?" उसने पूछा।
मैंने सावधानीपूर्वक उत्तर दिया, "यह अनोखा और मौलिक था और आपके व्यक्तित्व को बहुत अच्छी तरह से व्यक्त करता था।"
"धन्यवाद," उसने कहा। "विषय यह है कि मेरे पास कुछ नहीं है।" "हाँ,

मुझे भी कुछ ऐसा ही लगा था।"
"तुम्हें पता है," उसने कहा, "जब मेरी माँ की मृत्यु हुई थी..." "हाँ?"
मुझे जरा भी दुख नहीं हुआ।
"ओह।"
"और मेरे पिता के जाने पर भी मुझे दुख नहीं हुआ।" "सच में?"

"यह सच है। क्या आपको नहीं लगता कि मैं बहुत बुरा हूँ? बेरहम?" "मुझे यकीन है कि आपके पास इसके कारण होंगे।"
"मेरे अपने कारण। हम्म। इस घर में हालात काफी उलझे हुए थे। लेकिन मैं हमेशा सोचती थी, आखिर वे मेरे माता-पिता हैं, अगर वे मर जाएं या मैं उन्हें फिर कभी न देख पाऊं तो मुझे दुख तो होगा ही। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। मुझे कुछ महसूस नहीं हुआ। न दुख, न अकेलापन। मैं उनके बारे में मुश्किल से ही सोचती हूं। हालांकि, कभी-कभी सपने आते हैं। कभी-कभी मेरी मां अंधेरे में से मुझे घूरती हुई दिखती हैं और मुझ पर आरोप लगाती हैं कि मैं उनकी मौत से खुश हूं। लेकिन मैं उनकी मौत से खुश नहीं हूं। मैं बस ज्यादा दुखी नहीं हूं। और सच कहूं तो, मैंने कभी एक आंसू भी नहीं बहाया। हालांकि, जब मैं छोटी थी, तब मेरी बिल्ली की मौत पर मैं पूरी रात रोई थी।"
इतना धुआँ क्यों? मैंने सोचा। मुझे आग की लपटें तो नहीं दिख रही थीं, और जलने वाला इलाका भी फैलता हुआ नहीं लग रहा था। बस धुएँ का एक गुबार आसमान में ऊपर की ओर उठता जा रहा था। आखिर इतनी देर तक क्या जलता रहा होगा?
"लेकिन इसके लिए सिर्फ मैं ही दोषी नहीं हूं," मिदोरी ने आगे कहा। "यह सच है कि मुझमें एक तरह की कठोरता है। मैं इसे मानती हूं। लेकिन

अगर मेरे माता-पिता ने मुझे थोड़ा और प्यार किया होता, तो मैं और भी ज्यादा महसूस कर पाती - उदाहरण के लिए, सच्ची उदासी को महसूस कर पाती।"
"क्या आपको लगता है कि आपको पर्याप्त प्यार नहीं मिला?"
उसने अपना सिर झुकाया और मेरी तरफ देखा। फिर उसने हल्के से सिर हिलाकर सहमति जताई।
"कहीं 'काफी नहीं' और 'बिल्कुल नहीं' के बीच में। मैं हमेशा प्यार के लिए तरसती रही। बस एक बार, मैं यह जानना चाहती थी कि भरपूर प्यार पाना कैसा होता है - इतना प्यार पाना कि और न सह सकूँ। बस एक बार। लेकिन उन्होंने मुझे वह कभी नहीं दिया। कभी नहीं, एक बार भी नहीं। अगर मैं उनसे लिपटकर कुछ माँगने की कोशिश करती, तो वे मुझे धक्का देकर दूर कर देते और मुझ पर चिल्लाते। 'नहीं! यह बहुत महंगा है!' बस यही मैंने हमेशा सुना। इसलिए मैंने ठान लिया कि मैं किसी ऐसे व्यक्ति को ढूँढूँगी जो मुझे साल के 365 दिन बिना शर्त प्यार करे। उस समय मैं प्राथमिक विद्यालय में थी, लेकिन मैंने अपना मन पक्का कर लिया था।"
"वाह," मैंने कहा। "और क्या आपकी खोज सफल रही?"
"यही तो मुश्किल हिस्सा है," मिदोरी ने कहा। वह 92 सेकंड तक उठते हुए धुएं को देखती रही।

सोचते हुए उसने कहा, "मुझे लगता है कि मैं इतने लंबे समय से इंतजार कर रही हूँ कि अब मैं पूर्णता की तलाश कर रही हूँ। इसी वजह से यह मुश्किल हो जाता है।"
"क्या आप परिपूर्ण प्रेम की प्रतीक्षा कर रहे हैं?"
"नहीं, मुझे भी इससे बेहतर पता है। मैं स्वार्थ की तलाश में हूँ। पूर्ण

स्वार्थ। जैसे, मान लो मैं तुमसे कहूँ कि मुझे स्ट्रॉबेरी शॉर्टब्रेड खानी है।" और तुम अपना सारा काम छोड़कर दौड़कर मेरे लिए वह चीज़ खरीद लाते हो।

और तुम हांफते हुए वापस आते हो, घुटनों के बल बैठते हो और मुझे ये स्ट्रॉबेरी शॉर्टब्रेड देते हो। और मैं कहता हूं कि मुझे ये अब नहीं चाहिए और इसे खिड़की से बाहर फेंक देता हूं। मैं यही तो ढूंढ रहा हूं।

मैंने कुछ हैरानी से कहा, "मुझे यकीन नहीं है कि इसका प्यार से कोई लेना-देना है।"

"हाँ, ऐसा होता है," उसने कहा। "बस आपको इसका एहसास नहीं होता। एक लड़की के जीवन में ऐसे क्षण आते हैं जब इस तरह की चीजें बेहद महत्वपूर्ण होती हैं।"

"स्ट्रॉबेरी शॉर्टब्रेड को खिड़की से बाहर फेंकने जैसी चीजें?"

"बिल्कुल सही। और जब मैं ऐसा करूँगी, तो मैं चाहती हूँ कि वो आदमी मुझसे माफ़ी मांगे।" "अब समझ में आया, मिदोरी। मैं कितनी बड़ी बेवकूफ़ थी! मुझे पता होना चाहिए था कि स्ट्रॉबेरी शॉर्टब्रेड खाने की तुम्हारी इच्छा खत्म हो जाएगी। मुझमें गधे के गोबर जितनी अक्ल और संवेदनशीलता है। इसकी भरपाई के लिए, मैं बाहर जाकर तुम्हारे लिए कुछ और खरीद लाऊँगी। तुम्हें क्या चाहिए?"

चॉकलेट मूस? चीज़केक?"

"तो फिर क्या?"

"तो फिर मैं उसे उसके किए गए कार्यों के लिए वह सारा प्यार दूंगा जिसका वह हकदार है।"

"मुझे तो यह बिल्कुल अजीब लगता है।"

"खैर, मेरे लिए तो यही प्यार है। वैसे, मुझे समझना तो किसी के बस की बात नहीं है।" मिदोरी ने अपना सिर मेरे कंधे पर हल्का सा हिलाया। "कुछ

खास तरह के लोगों के लिए, प्यार किसी छोटी या नासमझी भरी बात से शुरू होता है।"
या तो ऐसा ही कुछ हो या फिर इसकी शुरुआत ही न हो।"
"मैंने आज तक ऐसी कोई लड़की नहीं देखी जो तुम्हारी तरह सोचती हो।"
"बहुत से लोग मुझसे ऐसा कहते हैं," उसने अपने नाखून के बाहरी हिस्से को कुरेदते हुए कहा। "लेकिन यही एक तरीका है जिससे मैं सोचती हूँ। सच में। मैं बस आपको वही बता रही हूँ जो मैं मानती हूँ। मेरे मन में कभी यह ख्याल नहीं आया कि मेरे सोचने का तरीका 93 है।"

मैं दूसरों से अलग हूं। मैं अलग दिखने की कोशिश नहीं कर रहा हूं। लेकिन जब मैं ईमानदारी से बोलता हूं, तो हर कोई सोचता है कि मैं मजाक कर रहा हूं या नाटक कर रहा हूं।
जब ऐसा होता है, तो मुझे लगता है कि सब कुछ बहुत कष्टदायक है!
"और तुम खुद को आग में जलकर मरना चाहते हो?"
"अरे नहीं, यह अलग बात है। यह तो बस जिज्ञासा का मामला है।"
"क्या? आग में जलकर मरना?"
"नहीं, मैं तो बस देखना चाहती थी कि तुम कैसी प्रतिक्रिया दोगी," मिदोरी ने कहा। "पर, मुझे मरने से डर नहीं लगता। सच में। जैसे यहाँ, मैं धुएँ से घिर जाऊँगी और बेहोश होकर मर जाऊँगी, पता भी नहीं चलेगा। मेरी माँ और कुछ रिश्तेदारों को मरते देखने के मुकाबले यह मुझे ज़रा भी नहीं डराता। मेरे सभी रिश्तेदार किसी भयानक बीमारी से पीड़ित होकर मरते हैं। लगता है ये खून में है। यह हमेशा एक लंबी प्रक्रिया होती है, और अंत में आप लगभग बता ही नहीं सकते कि व्यक्ति जीवित है या मृत। बस दर्द और पीड़ा ही बचती है।"
मिडोरी ने अपने होठों के बीच एक मार्लबोरो सिगरेट रखी और उसे

जलाया।
"मुझे इस तरह की मौत से डर लगता है। मौत की छाया धीरे-धीरे जीवन को खा जाती है, और देखते ही देखते सब कुछ अंधेरा हो जाता है, कुछ दिखाई नहीं देता, और आसपास के लोग आपको जीवित से भी ज़्यादा मृत समझने लगते हैं। मुझे इससे नफ़रत है। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

आधे घंटे में आग बुझ गई। जाहिर तौर पर उन्होंने आग को फैलने से रोक दिया और किसी को घायल होने से बचा लिया। एक को छोड़कर बाकी सभी दमकल गाड़ियां अपने ठिकाने पर लौट गईं और भीड़ आपस में बातचीत करते हुए तितर-बितर हो गई। एक पुलिस कार यातायात को नियंत्रित करने के लिए वहीं रुकी रही, उसकी नीली बत्ती लगातार जलती-बुझती रही। दो कौवे पास के लैंपपोस्ट पर बैठकर नीचे हो रही गतिविधियों को देख रहे थे।
मिडोरी एकदम बेजान सी लग रही थी। सुस्त सी होकर वह आसमान को घूर रही थी और मुश्किल से ही कुछ बोल पा रही थी।
"थके हुए हो?" मैंने पूछा।
"नहीं, ऐसा नहीं है," उसने कहा। "मैं बस खुद को ढीला और खोया-खोया सा छोड़ देती हूँ।"
बहुत समय बाद पहली बार।

94

उसने मेरी आँखों में देखा, और मैंने उसकी आँखों में। मैंने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा और उसे चूमा। उसके कंधों में हल्की सी सिहरन दौड़ गई, फिर वह शांत हो गई और कुछ पलों के लिए अपनी आँखें बंद कर

लीं। शरद ऋतु की शुरुआत की धूप उसकी पलकों की छाया उसके गाल पर डाल रही थी, और मैं उसके गाल की हल्की सी आकृति को कांपते हुए देख सकता था।

यह एक कोमल और सौम्य चुंबन था, जिसका उद्देश्य इससे आगे बढ़ना नहीं था। अगर हमने दोपहर कपड़े धोने की जगह पर धूप में बैठकर, बीयर पीते हुए और आग देखते हुए न बिताई होती, तो शायद मैं उस दिन मिदोरी को न चूमता, और उसे भी शायद ऐसा ही महसूस हुआ होगा। जगमगाती छतों, धुएं, लाल ड्रैगनफ्लाई और अन्य चीजों को लंबे समय तक देखने के बाद, हमने एक गर्मजोशी और निकटता का अनुभव किया था, और हम दोनों शायद अचेतन रूप से उस भावना को किसी न किसी रूप में बनाए रखना चाहते थे। यह उसी तरह का चुंबन था। लेकिन सभी चुंबनों की तरह, इसमें भी खतरे का एक निश्चित तत्व था।

सबसे पहले मिदोरी बोली। उसने मेरा हाथ पकड़ा और बड़ी मुश्किल से मुझे बताया कि वह किसी के साथ रिलेशनशिप में है। मैंने कहा कि मुझे भी इसका अंदाजा हो गया था।

"क्या कोई लड़की है जिसे तुम पसंद करते हो?" उसने पूछा।

मैंने कहा, "हाँ, मैं करता हूँ।"

"लेकिन आप रविवार को हमेशा खाली रहते हैं, है ना?" "यह बहुत पेचीदा है," मैंने कहा।

और फिर मुझे एहसास हुआ कि शरद ऋतु की शुरुआत की दोपहर का वह संक्षिप्त क्षण गायब हो चुका था।

पांच बजे मैंने कहा कि मुझे काम पर जाना है और मिदोरी को नाश्ता करने के लिए मेरे साथ चलने का सुझाव दिया। उसने कहा कि फोन बजने की आशंका में उसे घर पर ही रहना होगा।

"मुझे सारा दिन घर पर फोन का इंतज़ार करना बिल्कुल पसंद नहीं। जब मैं पूरा दिन अकेला बिताता हूँ, तो ऐसा लगता है जैसे मेरा शरीर धीरे-धीरे सड़ रहा हो - सड़ता और पिघलता हुआ, जब तक कि कुछ भी न बचे सिवाय एक हरे पोखर के जो धरती में समा जाता है। और बस मेरे कपड़े ही पीछे रह जाते हैं। सारा दिन घर के अंदर इंतज़ार करते हुए मुझे ऐसा ही महसूस होता है।" "अगली बार जब तुम्हें फोन का इंतज़ार करना पड़े, तो मैं तुम्हारा साथ दूँगा।"
95

मैंने कहा, "कॉल करो। बशर्ते लंच शामिल हो।"
"बहुत बढ़िया," उसने कहा। "मैं मिठाई के लिए एक और आग का इंतजाम कर दूंगी।"

मिडोरी अगले दिन के नाटक इतिहास के व्याख्यान में नहीं आई। उसके बाद मैं कैंटीन गया और अकेले ही ठंडा, बेस्वाद दोपहर का भोजन किया। फिर मैं धूप में बैठ गया और कैंपस का नज़ारा देखने लगा। मेरे बगल में बैठी दो छात्राएँ लगातार खड़ी होकर लंबी बातचीत कर रही थीं। एक ने टेनिस रैकेट को बड़े प्यार से अपने सीने से लगा रखा था, जैसे किसी बच्चे को रखती हो, जबकि दूसरी के हाथ में कुछ किताबें और लियोनार्ड बर्नस्टीन की एक एलपी थी। दोनों सुंदर थीं और अपनी बातचीत का भरपूर आनंद ले रही थीं। छात्र क्लब की इमारत की ओर से किसी भारी आवाज़ में सुरों का अभ्यास करने की आवाज़ आ रही थी। इधर-उधर चार-पाँच छात्रों के समूह खड़े होकर अपने-अपने विचार व्यक्त कर रहे थे, हँस रहे थे और एक-दूसरे पर चिल्ला रहे थे। पार्किंग में स्केटबोर्डर्स थे। चमड़े का ब्रीफकेस लिए एक प्रोफेसर पार्किंग पार कर रहे थे, उनसे बचते

हुए। चौक में हेलमेट पहने एक छात्रा घुटनों के बल बैठी एक तख्ती पर बड़े अक्षरों में कुछ लिख रही थी, जिस पर एशिया पर अमेरिकी साम्राज्यवाद के आक्रमण का ज़िक्र था। दोपहर के समय विश्वविद्यालय का वही सामान्य दृश्य था, लेकिन जब मैंने नए सिरे से ध्यान लगाकर इसे देखा, तो मुझे एक बात का एहसास हुआ। मेरे सामने बैठे हर व्यक्ति को देखकर लग रहा था कि वे अपने-अपने तरीके से खुश हैं। वे सचमुच खुश थे या सिर्फ खुश दिख रहे थे, यह मैं नहीं कह सकता था। लेकिन सितंबर के अंत की इस सुहावनी दोपहर में वे सभी खुश दिख रहे थे, और इसी वजह से मुझे एक तरह का नया अकेलापन महसूस हुआ, मानो मैं ही यहाँ अकेला ऐसा व्यक्ति हूँ जो सचमुच इस दृश्य का हिस्सा नहीं है।
अब अगर इस बारे में सोचें तो, हाल के वर्षों में मैं किस दृश्य का हिस्सा रहा हूँ?
मुझे आखिरी बार याद है कि मैं बंदरगाह के पास एक पूल हॉल में गया था, जहाँ किज़ुकी और मैं पूरी दोस्ती के साथ पूल खेलते थे। उसी रात किज़ुकी की मौत हो गई, और तब से मेरे और दुनिया के बीच एक ठंडी, कड़ाके की ठंडक छा गई। यह लड़का किज़ुकी: मेरे लिए उसके अस्तित्व का क्या मतलब था? इस सवाल का मुझे कोई जवाब नहीं मिला। मैं बस इतना जानता था -
मुझे पूर्ण निश्चितता के साथ यह कहना था कि किज़ुकी की मृत्यु ने मुझसे 96 छीन लिए थे।

मुझे किशोरावस्था के किसी न किसी हिस्से में यह बात हमेशा याद रहती थी। लेकिन इसका क्या मतलब था, और इसके क्या परिणाम होंगे, यह मेरी समझ से परे था।
मैं काफी देर तक वहीं बैठा रहा, कैंपस और वहां से गुजरने वाले लोगों को

देखता रहा, और उम्मीद करता रहा कि शायद मुझे मिदोरी दिख जाए। लेकिन वह कभी नहीं दिखी, और दोपहर का ब्रेक खत्म होते ही मैं जर्मन क्लास की तैयारी के लिए लाइब्रेरी चला गया।

उस शनिवार दोपहर को नागासावा मेरे कमरे में आया और उसने सुझाव दिया कि हम एक रात शहर में घूमने चलें। वह मेरे लिए एक रात का पास बुक करवा देगा। मैंने हाँ कर दी। पिछले एक हफ्ते से मैं बहुत उलझन में था और किसी के भी साथ सोने को तैयार था, चाहे कोई भी हो।
दोपहर बाद मैंने स्नान किया, दाढ़ी बनाई और नए कपड़े पहने।
पोलो शर्ट और सूती जैकेट पहने हुए, हमने नागासावा के साथ भोजनालय में रात का खाना खाया और हम दोनों शिंजुकु के लिए बस पकड़ ली। हम थोड़ी देर एक चहल-पहल वाले इलाके में घूमे, फिर अपने पसंदीदा बार में गए और वहाँ बैठकर लड़कियों के एक जोड़े का इंतज़ार करने लगे। इस बार में लड़कियाँ अक्सर जोड़े में ही आती थीं - सिवाय उस खास शाम के। हम वहाँ लगभग दो घंटे तक बैठे रहे, व्हिस्की और सोडा पीते रहे ताकि हम होश में रहें। आखिरकार, दो मिलनसार दिखने वाली लड़कियाँ बार में आकर बैठ गईं और उन्होंने एक गिम्लेट और एक मार्गरिटा ऑर्डर की। नागासावा तुरंत उनके पास गए, लेकिन उन्होंने कहा कि वे अपने बॉयफ्रेंड का इंतज़ार कर रही हैं। फिर भी, हम चारों ने उनके आने तक उनसे मज़ेदार बातचीत की।
नागासावा मुझे एक और बार में ले गया, जहाँ हमने अपनी किस्मत आजमाने की कोशिश की। वह एक छोटी सी गली थी, जहाँ ज्यादातर लोग नशे में धुत और शोर मचा रहे थे। पीछे की तरफ एक मेज पर तीन लड़कियाँ बैठी थीं। हम भी उनके साथ बैठ गए और थोड़ी बातचीत का आनंद लिया। हम पाँचों का मूड अच्छा हो गया, लेकिन जब नागासावा ने

सुझाव दिया कि हम कहीं और जाकर ड्रिंक करें, तो लड़कियों ने कहा कि कर्फ्यू का समय हो गया है और उन्हें अपने हॉस्टल वापस जाना है। हमारी किस्मत का यही हाल था। हमने एक और जगह कोशिश की, लेकिन नतीजा वही रहा। पता नहीं क्यों, लड़कियाँ हमारी तरफ नहीं आ रही थीं।
97

11:30 बजे नागासावा हार मानने को तैयार थे। उन्होंने कहा, "माफ़ कीजिए, मैंने आपको बेवजह इधर-उधर घसीटा।"
"कोई बात नहीं," मैंने कहा। "मुझे तो बस यह देखकर अच्छा लगा कि कभी-कभी तुम्हारे भी बुरे दिन आते हैं।"
"शायद साल में एक बार," उन्होंने स्वीकार किया।
सच कहूँ तो, मुझे अब शारीरिक संबंध बनाने की कोई परवाह नहीं थी। शनिवार की शोरगुल भरी रात में शिंजुकु में घूमते हुए, सेक्स और शराब के मिश्रण से पैदा हुई रहस्यमय ऊर्जा को महसूस करते हुए, मुझे लगने लगा कि मेरी अपनी इच्छा एक तुच्छ चीज़ है।
"अब तुम क्या करने वाले हो, वातानाबे?"
मैंने कहा, "शायद रात भर जागकर फिल्म देखने चलें। मैंने बहुत दिनों से कोई फिल्म नहीं देखी है।"
"तो मैं हात्सुमी के यहाँ जा रहा हूँ," नागासावा ने कहा। "क्या आपको कोई आपत्ति है?"
मैंने कहा, "बिल्कुल नहीं। मुझे क्यों बुरा लगेगा?"
"अगर आप चाहें, तो मैं आपको एक ऐसी लड़की से मिलवा सकता हूँ जो आपको रात बिताने देगी।"
"नहीं, मुझे सच में फिल्म देखने का मन कर रहा है।"
"माफ़ करना," नागासावा ने कहा। "कभी न कभी इसकी भरपाई कर

दूंगा।" और वह भीड़ में गायब हो गया। मैंने एक फास्ट फूड रेस्टोरेंट में जाकर चीज़बर्गर और कॉफ़ी पी, ताकि थोड़ी थकान दूर हो जाए, फिर एक पुराने थिएटर में 'द ग्रेजुएट' देखने चला गया। मुझे वो फिल्म उतनी अच्छी नहीं लगी, लेकिन मेरे पास करने के लिए कुछ और नहीं था, इसलिए मैं वहीं रुका और उसे दोबारा देखा।

सुबह चार बजे सिनेमा से बाहर निकलकर, मैं शिंजुकु की ठंडी सड़कों पर घूमता हुआ सोच रहा था।

चलते-चलते थककर मैं एक रात भर खुले रहने वाले कैफ़े में गया और एक किताब और एक कप कॉफ़ी लेकर सुबह की ट्रेनों के शुरू होने का इंतज़ार करने लगा। थोड़ी ही देर में वह जगह उन लोगों से भर गई जो मेरी तरह ही पहली ट्रेन का इंतज़ार कर रहे थे। एक वेटर ने मुझसे माफ़ी मांगते हुए पूछा कि क्या मुझे अपनी टेबल किसी और के साथ साझा करने में कोई आपत्ति होगी। मैंने कहा, कोई बात नहीं। मुझे इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता था कि मेरे सामने कौन बैठा है: मैं तो बस एक किताब पढ़ रहा था।

मेरे साथ टेबल पर बैठी दो लड़कियां थीं। वे लगभग मेरी ही उम्र की लग रही थीं। उनमें से कोई भी बेहद खूबसूरत नहीं थी, लेकिन बुरी भी नहीं थीं।

दोनों के पहनावे और मेकअप का तरीका काफी संयमित था: उनकी उम्र 98 वर्ष थी।

ये लोग सुबह पांच बजे शिंजुकु में घूमने वाले लोग तो बिलकुल नहीं थे। मुझे लगा कि शायद उनकी आखिरी ट्रेन छूट गई थी। मेरे साथ बैठने पर उन्हें राहत मिली: मैं साफ-सुथरा कपड़े पहने था, शाम को शेव कर ली थी, और सबसे बड़ी बात, मैं थॉमस मान की किताब 'द मैजिक माउंटेन' में

मग्न था।
उनमें से एक लड़की थोड़ी मोटी थी। उसने ग्रे रंग का जैकेट और सफेद जींस पहनी थी, उसके पास एक बड़ा विनाइल पर्स था और उसने बड़े-बड़े शंख के आकार के झुमके पहने थे। उसकी सहेली छोटी थी और चश्मा पहनती थी। उसने चेक वाली शर्ट के ऊपर नीला कार्डिगन पहना था और उसके हाथ में फ़िरोज़ी रंग की अंगूठी थी। छोटी वाली लड़की को चश्मा उतारकर अपनी उंगलियों से आंखें दबाने की आदत थी।
दोनों लड़कियों ने कैफ़े औ लेट और केक मंगवाया, जिसे खाने में उन्हें कुछ समय लगा क्योंकि वे दबी आवाज़ में किसी गंभीर चर्चा में लगी हुई थीं। लंबी लड़की ने कई बार अपना सिर झुकाया, जबकि छोटी लड़की ने भी उतनी ही बार हिलाया। तेज़ स्टीरियो पर मार्विन गे या बी गीज़ या कुछ और बज रहा था, इसलिए मैं उनकी बातें ठीक से समझ नहीं पा रहा था, लेकिन ऐसा लग रहा था कि छोटी लड़की नाराज़ या परेशान थी और लंबी लड़की उसे दिलासा देने की कोशिश कर रही थी। मैं अपनी किताब के पन्ने पलटते हुए उनकी तरफ़ देख रहा था।
अपने कंधे के बैग को सीने से चिपकाए हुए, छोटी लड़की महिलाओं के शौचालय में गई, उसी समय उसकी सहेली ने मुझसे बात की।
मुझे आपको परेशान करने के लिए खेद है, लेकिन क्या आप आस-पड़ोस में ऐसी किसी गली-मोहल्ले की बार के बारे में जानते हैं जो अभी भी पेय पदार्थ परोस रही हो?
अचानक पूछे गए इस सवाल से मैं चौंक गया, मैंने अपनी किताब एक तरफ रख दी और पूछा, "सुबह पांच बजे के बाद?"
"हां... अगर आप मुझसे पूछें तो सुबह 5:20 बजे ज्यादातर लोग होश में आने और सोने के लिए घर जा रहे होते हैं।"
"हां, मुझे पता है," उसने थोड़ी शर्मिंदगी के साथ कहा, "लेकिन मेरी दोस्त

कहती है कि उसे एक ड्रिंक चाहिए। यह एक तरह से ज़रूरी है।"
"शायद आप घर जाकर एक ड्रिंक लेने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते।"
"लेकिन मुझे नागानो जाने वाली 7:30 बजे की ट्रेन पकड़नी है।"
99

"इसलिए एक वेंडिंग मशीन और बैठने के लिए एक अच्छी जगह ढूंढ लें। आप बस इतना ही कर सकते हैं।"
"मुझे पता है कि यह बहुत बड़ी गुजारिश है, लेकिन क्या आप हमारे साथ आ सकती हैं? दो लड़कियां अकेले ऐसा कुछ नहीं कर सकतीं।"
शिंजुकु में मुझे कई असामान्य अनुभव हुए थे, लेकिन इससे पहले मुझे कभी भी शाम 5:20 बजे दो अजनबी लड़कियों के साथ ड्रिंक करने का निमंत्रण नहीं मिला था।
सुबह-सुबह। मना करना फायदे से ज्यादा झंझट का काम होता, और समय की कोई कमी नहीं थी, इसलिए मैंने पास की एक मशीन से ढेर सारी साके और स्नैक्स खरीदे, और हम तीनों स्टेशन के पश्चिमी निकास के पास एक खाली पार्किंग में जाकर अचानक से एक ड्रिंक पार्टी करने लगे।
लड़कियों ने मुझे बताया कि वे एक ट्रैवल एजेंसी में काम करते हुए दोस्त बन गई थीं।
दोनों ने इसी साल कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी और अपनी पहली नौकरी शुरू की थी। छोटी वाली का एक साल से बॉयफ्रेंड था, लेकिन हाल ही में उसे पता चला कि वह किसी और लड़की के साथ संबंध रख रहा है और उसे इस बात से बहुत दुख हुआ था। बड़ी वाली को कल रात अपने भाई की शादी के लिए नागानो के पहाड़ों के लिए रवाना

होना था, लेकिन उसने अपनी उदास दोस्त के साथ रात बिताने और रविवार सुबह पहली एक्सप्रेस ट्रेन पकड़ने का फैसला किया था।
मैंने उस छोटी बच्ची से कहा, "तुम्हारे साथ जो हो रहा है वह बहुत बुरा है, लेकिन तुम्हें कैसे पता चला कि तुम्हारा बॉयफ्रेंड किसी और के साथ सो रहा था?"
खातिरदारी के छोटे-छोटे घूंट लेते हुए, लड़की अपने पैरों के नीचे उगी कुछ घास को नोच रही थी। उसने कहा, "मुझे कुछ भी सोचने की ज़रूरत नहीं पड़ी। मैंने उसका दरवाज़ा खोला, और वह वहीं पर वही कर रहा था।"
"वह कब था?"
"परसों रात।"
"असंभव। दरवाजा खुला हुआ था?"
"सही।"
मुझे आश्चर्य है कि उसने इसे ताला क्यों नहीं लगाया?
"कैसे है नर्क मुझे पता होना चाहिए?"
"हाँ, उसे कैसा महसूस होना चाहिए?" सौ साल के दिखने वाले बड़े वाले ने कहा।

वह अपनी दोस्त के लिए सचमुच चिंतित थी। "उसके लिए यह कितना बड़ा सदमा रहा होगा। क्या आपको नहीं लगता कि यह भयानक है?"
मैंने जवाब दिया, "मैं सच में कुछ नहीं कह सकती। तुम्हें अपने प्रेमी से खुलकर बात करनी चाहिए। फिर सवाल यह उठता है कि तुम उसे माफ करती हो या नहीं।"
घास नोचते हुए उस छोटे बच्चे ने गुस्से से कहा, "कोई नहीं जानता कि मुझे कैसा महसूस हो रहा है।"
पश्चिम से कौवों का एक झुंड आया और एक बड़े डिपार्टमेंट स्टोर के ऊपर

से उड़ गया। अब दिन हो चुका था। नागानो जाने वाली ट्रेन का समय नज़दीक आ रहा था, इसलिए हमने बची हुई साके (शराब) पश्चिम निकास द्वार के नीचे एक बेघर आदमी को दे दी, प्लेटफार्म के टिकट खरीदे और उस बड़ी लड़की को छोड़ने अंदर चले गए। ट्रेन के नज़रों से ओझल होने के बाद, मैं और वह छोटी लड़की किसी तरह पास के एक होटल में चले गए। हम दोनों में से किसी को भी एक-दूसरे के साथ सोने की कोई खास इच्छा नहीं थी, लेकिन शायद इस रिश्ते को खत्म करने के लिए ऐसा करना ज़रूरी था।

मैंने पहले अपने कपड़े उतारे और बाथटब में बैठकर जमकर बीयर पी।

वह मेरे साथ अंदर आई और उसने भी वही किया, हम दोनों आराम से लेट गए और चुपचाप बीयर पीते रहे। हालाँकि, हम दोनों को नशा नहीं हुआ और न ही हमें नींद आ रही थी। उसकी त्वचा बहुत गोरी और चिकनी थी, और उसके पैर बहुत सुंदर थे। मैंने उसके पैरों की तारीफ की, लेकिन उसने "धन्यवाद" कहा।

यह महज एक हल्की सी गुर्राहट थी।

लेकिन बिस्तर पर जाते ही वो बिल्कुल अलग इंसान बन गई। मेरे हाथों के हल्के से स्पर्श पर भी वो तड़पने और कराहने लगी।

जब मैं उसके अंदर गया, तो उसने अपने नाखून मेरी पीठ में गड़ा दिए, और जैसे ही उसका चरम सुख निकट आया, उसने ठीक 16वें मिनट में किसी दूसरे आदमी का नाम पुकारा।

कई बार। मैंने अपने चरम सुख को विलंबित करने के लिए उन्हें गिनने पर ध्यान केंद्रित किया। फिर हम दोनों सो गए।

जब मैं 12:30 बजे उठा तो वह जा चुकी थी। मुझे किसी तरह का कोई नोट नहीं मिला। अजीब समय पर शराब पीने के कारण मेरे सिर का एक हिस्सा अजीब तरह से भारी लग रहा था। मैंने खुद को जगाने के लिए

स्नान किया, दाढ़ी बनाई और नग्न अवस्था में कुर्सी पर बैठ गया, फ्रिज से जूस की बोतल निकालकर पीता रहा और पिछली रात की घटनाओं को क्रम से याद करता रहा। हर दृश्य अवास्तविक और अजीब तरह से दूर का लग रहा था, मानो मैं उसे कांच की दो या तीन परतों के पार से देख रहा हूँ, लेकिन 101

ये घटनाएँ निस्संदेह मेरे साथ ही घटी थीं। बीयर के गिलास अभी भी मेज पर रखे थे, और सिंक के पास एक इस्तेमाल किया हुआ टूथब्रश पड़ा था। मैंने शिंजुकु में हल्का दोपहर का भोजन किया और टेलीफोन बूथ पर मिदोरी कोबायाशी को फोन करने गया, शायद आज फिर वो घर पर अकेली फोन का इंतजार कर रही हो। मैंने 15 बार घंटी बजने दी, लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया। 20 मिनट बाद फिर कोशिश की, नतीजा वही रहा। फिर मैं बस से वापस छात्रावास आ गया। प्रवेश द्वार के पास वाले लेटरबॉक्स में मेरे लिए एक विशेष पत्र रखा था। ये नाओको का पत्र था।

नाओको ने लिखा, "आपके पत्र के लिए धन्यवाद।" उसने बताया कि उसके परिवार ने इसे यहाँ भेजा था। पत्र मिलने से उसे बिल्कुल भी निराशा नहीं हुई, बल्कि वह बहुत खुश हुई और वास्तव में वह खुद मुझे पत्र लिखने ही वाली थी।

इतना पढ़ने के बाद, मैंने खिड़की खोली, जैकेट उतारी और बिस्तर पर बैठ गई। पास ही एक कबूतरखाने में कबूतरों की गुटरगू सुनाई दे रही थी। हवा

से पर्दे हिल रहे थे। नाओको द्वारा दिए गए सात पन्नों के लेखन पत्र को हाथ में लिए, मैं भावनाओं के एक अंतहीन प्रवाह में बह गई। ऐसा लग रहा था मानो मेरे आस-पास की वास्तविक दुनिया के रंग मिटने लगे हों, जबकि मैंने नाओको की लिखी कुछ पंक्तियाँ पढ़ने के अलावा कुछ नहीं किया था। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और काफी देर तक अपने विचारों को इकट्ठा किया। अंत में, एक गहरी साँस लेने के बाद, मैंने पढ़ना जारी रखा।
मुझे यहां आए लगभग चार महीने हो गए हैं, उसने आगे कहा।

इस दौरान मैंने तुम्हारे बारे में बहुत सोचा है। जितना ज्यादा मैंने सोचा है, उतना ही मुझे यह एहसास हुआ है कि मैंने तुम्हारे साथ अन्याय किया। शायद मुझे तुम्हारे साथ व्यवहार करने के मामले में एक बेहतर और अधिक निष्पक्ष व्यक्ति होना चाहिए था।
हालाँकि, चीजों को देखने का यह सबसे सामान्य तरीका नहीं हो सकता है। मेरी उम्र की लड़कियाँ कभी "निष्पक्ष" शब्द का इस्तेमाल नहीं करतीं। मेरी उम्र की आम लड़कियाँ इस बात से लगभग बेपरवाह होती हैं कि चीजें निष्पक्ष हैं या नहीं। केंद्रीय 102

उनके लिए सवाल यह नहीं है कि कोई चीज़ उचित है या नहीं, बल्कि यह है कि वह सुंदर है या नहीं, या क्या वह उन्हें खुशी देगी। "उचित" शब्द पुरुषों द्वारा इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन मुझे लगता है कि यह शब्द मेरे लिए भी बिल्कुल सही है। और चूंकि सुंदरता और खुशी के सवाल अब मेरे लिए इतने जटिल और उलझे हुए हो गए हैं, इसलिए मुझे लगता है कि मैं दूसरे मानकों का सहारा ले रही हूँ - जैसे कि कोई चीज़ उचित है या नहीं, ईमानदार है या सार्वभौमिक रूप से सत्य है।

फिर भी, मेरा मानना है कि मैंने आपके साथ निष्पक्ष व्यवहार नहीं किया है और परिणामस्वरूप, मैंने आपको गुमराह किया होगा और आपको बहुत गहरा दुख पहुंचाया होगा।

ऐसा करने में, मैंने खुद को ही उलझाए रखा है और खुद को उतना ही गहरा दुख पहुँचाया है। मैं यह बात बहाने के तौर पर या आत्म-समर्थन के लिए नहीं कह रहा हूँ, बल्कि इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि यह सच है। अगर मैंने आपके दिल में कोई घाव छोड़ा है, तो वह सिर्फ आपका घाव नहीं, बल्कि मेरा भी है। इसलिए कृपया मुझसे नफरत न करें। मैं एक त्रुटिपूर्ण इंसान हूँ - जितना आप समझते हैं उससे कहीं अधिक त्रुटिपूर्ण। यही कारण है कि मैं नहीं चाहता कि आप मुझसे नफरत करें। क्योंकि अगर आप ऐसा करेंगे, तो मैं सचमुच टूट जाऊँगा। मैं वह नहीं कर सकता जो आप कर सकते हैं: मैं अपने खोल में सिमटकर चीजों के बीतने का इंतजार नहीं कर सकता। मुझे पक्का नहीं पता कि आप सचमुच ऐसे ही हैं, लेकिन कभी-कभी आप मुझे ऐसा ही एहसास दिलाते हैं। मैं अक्सर आपकी इस बात से ईर्ष्या करता हूँ, शायद इसीलिए मैंने आपको इतना उलझाया है।

चीजों को देखने का यह तरीका कुछ ज़्यादा ही विश्लेषणात्मक हो सकता है। क्या आप सहमत नहीं हैं? यहाँ जो थेरेपी दी जाती है, वह निश्चित रूप से ज़्यादा विश्लेषणात्मक नहीं है, लेकिन जब आप कई महीनों तक इलाज करवाते हैं, जैसा कि मैं यहाँ करवा रहा हूँ, तो चाहे आपको पसंद हो या न हो, आप कमोबेश विश्लेषणात्मक हो जाते हैं। "यह उस वजह से हुआ, और इसका मतलब यह है, जिसके कारण ऐसा-वैसा हुआ।"

ऐसा ही। मैं यह नहीं बता सकता कि इस तरह का विश्लेषण दुनिया को सरल बनाने की कोशिश कर रहा है या उसे जटिल बनाने की।

बहरहाल, मुझे खुद लगता है कि मैं पहले की तुलना में ठीक होने के

काफी करीब हूँ, और यहाँ के लोग भी यही कहते हैं। बहुत समय बाद ऐसा हुआ है कि मैं बैठकर शांति से चिट्ठी लिख पा रहा हूँ। जुलाई में मैंने आपको जो चिट्ठी लिखी थी, वो तो मैंने बड़ी मुश्किल से लिखी थी (हालाँकि सच कहूँ तो मुझे याद नहीं कि मैंने क्या लिखा था - क्या वो बहुत खराब थी?), लेकिन 103

इस बार मैं बहुत शांत हूँ। स्वच्छ हवा, बाहरी दुनिया से कटा हुआ एक शांत संसार, जीवन की एक नियमित दिनचर्या, नियमित व्यायाम: लगता है, मुझे इन्हीं सब चीज़ों की ज़रूरत थी। किसी को पत्र लिख पाना कितना अद्भुत है! अपने विचारों को किसी तक पहुँचाने का मन करना, अपनी मेज़ पर बैठकर कलम उठाना, अपने विचारों को इस तरह शब्दों में पिरोना सचमुच अद्भुत है। बेशक, जब मैं उन्हें शब्दों में पिरोती हूँ, तो पाती हूँ कि मैं अपने दिल की बात का एक छोटा सा हिस्सा ही व्यक्त कर पाती हूँ, लेकिन कोई बात नहीं। मैं बस इतना महसूस कर पाने से ही खुश हूँ कि मैं किसी को पत्र लिखना चाहती हूँ। और इसलिए मैं आपको लिख रही हूँ। शाम के 7:30 बज रहे हैं, मैंने खाना खा लिया है और अभी-अभी नहाकर निकली हूँ। यहाँ सन्नाटा पसरा है, और बाहर घना अंधेरा है। खिड़की से मुझे एक भी रोशनी नहीं दिख रही। आमतौर पर मुझे यहाँ से तारे साफ़ दिखाई देते हैं, लेकिन आज बादलों की वजह से नहीं।
यहां हर कोई सितारों के बारे में बहुत कुछ जानता है, और वे मुझे बताते हैं, "यह कन्या राशि है" या "यह धनु राशि है"। वे शायद सीखना चाहें या न चाहें, क्योंकि सूरज डूबने के बाद यहां करने को कुछ नहीं होता।
इसी वजह से उन्हें पक्षियों, फूलों और कीड़ों के बारे में इतनी जानकारी है। उनसे बात करके मुझे एहसास हुआ कि मैं इन चीजों के बारे में कितना अनजान था, जो एक तरह से अच्छा भी है।

यहां करीब 70 लोग रहते हैं। इसके अलावा, स्टाफ (डॉक्टर, नर्स, ऑफिस स्टाफ आदि) की संख्या 20 से कुछ अधिक है। यह इतनी खुली जगह है कि ये संख्याएँ बिल्कुल भी बड़ी नहीं लगतीं। बल्कि इसके विपरीत, यह कहना अधिक सटीक होगा कि यह जगह काफी खाली-खाली सी है। यह विशाल है, प्रकृति से भरपूर है और हर कोई शांति से रहता है - इतनी शांति से कि कभी-कभी आपको लगता है कि यही सामान्य, वास्तविक दुनिया है, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है। हम इस तरह इसलिए रह सकते हैं क्योंकि हम कुछ पूर्व शर्तों के तहत यहां रहते हैं।

मैं टेनिस और बास्केटबॉल खेलता हूँ। बास्केटबॉल टीमों में स्टाफ और (मुझे यह शब्द पसंद नहीं, लेकिन कोई चारा नहीं) मरीज़, दोनों ही होते हैं। लेकिन जब मैं खेल में मग्न होता हूँ, तो मुझे यह पता ही नहीं चलता कि कौन मरीज़ है और कौन स्टाफ। यह थोड़ा अजीब है। मुझे पता है यह बात अजीब लगेगी, लेकिन जब मैं खेल के दौरान अपने आस-पास के लोगों को देखता हूँ, तो वे सभी मुझे एक जैसे ही विकृत लगते हैं।

मैंने एक दिन अपने मामले के प्रभारी डॉक्टर से यह बात कही, और उन्होंने मुझे बताया 104

एक तरह से, जो मैं महसूस कर रहा था वह सही था, कि हम यहाँ विकृति को सुधारने नहीं बल्कि उससे अभ्यस्त होने के लिए आए हैं: हमारी एक समस्या अपनी विकृतियों को पहचानने और स्वीकार करने में हमारी असमर्थता थी। जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति के चलने का अपना एक विशेष तरीका होता है, उसी प्रकार लोगों के सोचने, महसूस करने और चीजों को देखने का भी अपना एक विशेष तरीका होता है, और भले ही आप उन्हें सुधारना चाहें, यह रातोंरात नहीं होता, और यदि आप एक

मामले में जबरदस्ती करने की कोशिश करते हैं, तो दूसरा मामला गड़बड़ हो सकता है। उन्होंने मुझे बहुत ही सरल शब्दों में समझाया, और यह हमारी समस्याओं का एक छोटा सा हिस्सा मात्र है, लेकिन मुझे लगता है कि मैं समझ गया हूँ कि वे क्या कहना चाह रहे थे। यह संभव है कि हम अपनी विकृतियों के साथ कभी भी पूरी तरह से तालमेल न बिठा पाएं। इन विकृतियों से होने वाले वास्तविक दर्द और पीड़ा के लिए अपने भीतर जगह न ढूंढ पाने के कारण, हम ऐसी चीजों से दूर रहने के लिए यहाँ आते हैं।

जब तक हम यहाँ हैं, हम दूसरों को चोट पहुँचाए बिना या उनसे चोट खाए बिना अपना जीवन व्यतीत कर सकते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि हम "विकृत" हैं। यही बात हमें बाहरी दुनिया से अलग करती है: अधिकांश लोग अपनी विकृतियों से बेखबर अपना जीवन जीते हैं, जबकि हमारी इस छोटी सी दुनिया में विकृतियाँ ही एक अनिवार्य शर्त हैं। जैसे भारतीय अपने कबीले को दर्शाने के लिए अपने सिर पर पंख लगाते हैं, वैसे ही हम अपनी विकृतियों को खुलेआम प्रदर्शित करते हैं। और हम चुपचाप रहते हैं ताकि एक-दूसरे को चोट न पहुँचाएँ।

खेलकूद के अलावा, हम सभी सब्जियां उगाने में भी हिस्सा लेते हैं: टमाटर, बैंगन, खीरा, तरबूज, स्ट्रॉबेरी, हरी प्याज, पत्ता गोभी, मूली, और भी बहुत कुछ। हम लगभग सब कुछ उगाते हैं। हम ग्रीनहाउस का भी इस्तेमाल करते हैं। यहाँ के लोग सब्जी की खेती के बारे में बहुत कुछ जानते हैं और इसमें बहुत मेहनत करते हैं। वे इस विषय पर किताबें पढ़ते हैं, विशेषज्ञों को बुलाते हैं और सुबह से शाम तक इस बारे में चर्चा करते हैं कि कौन सा उर्वरक इस्तेमाल करना है, मिट्टी की स्थिति कैसी है, और ऐसी ही अन्य बातों पर भी। मुझे सब्जियां उगाना बहुत पसंद आने लगा है। अलग-अलग फलों और सब्जियों को हर दिन बड़ा होते देखना बहुत

अच्छा लगता है। क्या आपने कभी तरबूज उगाए हैं? वे फूल जाते हैं, बिल्कुल किसी छोटे जानवर की तरह।
105

हम हर दिन ताजे तोड़े हुए फल और सब्जियां खाते हैं। यहाँ मांस और मछली भी मिलती है, लेकिन यहाँ रहने के दौरान आपको इन्हें खाने की इच्छा कम होती जाती है क्योंकि सब्जियां इतनी ताजी और स्वादिष्ट होती हैं। कभी-कभी हम बाहर जाकर जंगली पौधे और मशरूम इकट्ठा करते हैं। हमारे पास इस तरह के कामों के विशेषज्ञ हैं (सोचें तो सही, यहाँ तो विशेषज्ञों की भरमार है) जो हमें बताते हैं कि कौन से पौधे तोड़ने चाहिए और कौन से नहीं। इन सब के चलते, यहाँ आने के बाद से मेरा वजन छह पाउंड से ज्यादा बढ़ गया है। व्यायाम और नियमित रूप से अच्छा खान-पान रखने की वजह से मेरा वजन लगभग ठीक है।
जब हम खेती नहीं कर रहे होते हैं, तो हम पढ़ते हैं, संगीत सुनते हैं या बुनाई करते हैं। हमारे पास टीवी या रेडियो नहीं है, लेकिन हमारे पास किताबों और रिकॉर्ड्स से भरी एक बहुत अच्छी लाइब्रेरी है। रिकॉर्ड्स के संग्रह में महलर की सिम्फनी से लेकर बीटल्स तक सब कुछ है, और मैं अपने कमरे में सुनने के लिए हमेशा रिकॉर्ड्स उधार लेती रहती हूँ।
इस जगह की असली समस्या यही है कि एक बार यहाँ आ जाने के बाद आप यहाँ से जाना नहीं चाहते - या फिर जाने से डरते हैं। जब तक हम यहाँ रहते हैं, हमें शांति और सुकून मिलता है। हमारी शारीरिक विकृतियाँ स्वाभाविक लगती हैं। हमें लगता है कि हम ठीक हो गए हैं। लेकिन हम कभी भी इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं हो सकते कि बाहरी दुनिया हमें उसी तरह स्वीकार करेगी।
मेरे डॉक्टर का कहना है कि अब मुझे "बाहरी लोगों" से संपर्क करना शुरू

कर देना चाहिए।
मतलब, आम दुनिया में आम लोग। जब वो ऐसा कहता है, तो मुझे सिर्फ तुम्हारा चेहरा ही दिखाई देता है। सच कहूँ तो, मैं अपने माता-पिता से मिलना नहीं चाहती। वे मेरे लिए बहुत परेशान हैं, और उन्हें देखकर मेरा मूड खराब हो जाता है। साथ ही, मुझे तुम्हें कुछ बातें समझानी हैं। मुझे नहीं पता कि मैं उन्हें अच्छे से समझा पाऊँगी या नहीं, लेकिन ये ज़रूरी बातें हैं जिन्हें मैं अब और नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती।
फिर भी, आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि मैं आप पर बोझ हूँ। मैं किसी पर भी बोझ नहीं बनना चाहता। मैं आपके मेरे प्रति स्नेह को महसूस कर सकता हूँ। इससे मुझे बहुत खुशी मिलती है। इस पत्र में मैं बस यही खुशी आप तक पहुँचाने की कोशिश कर रहा हूँ। आपके ये स्नेह ही शायद इस समय मेरे जीवन में मेरी सबसे बड़ी ज़रूरत हैं। अगर मेरी किसी बात से आपको बुरा लगे तो मुझे क्षमा कर दीजिएगा। जैसा कि मैंने पहले भी कहा, मैं 106 से बहुत दूर हूँ।

आप जितना सोचते हैं, उससे कहीं अधिक त्रुटिपूर्ण इंसान।
मैं कभी-कभी सोचता हूँ: अगर हम दोनों बिल्कुल सामान्य परिस्थितियों में मिले होते, और अगर हम एक-दूसरे को पसंद करते, तो क्या होता? अगर मैं सामान्य होता और तुम भी सामान्य होते (जो कि तुम हो ही) और किज़ुकी न होती, तो क्या होता? बेशक, यह "अगर" बहुत बड़ा सवाल है। मैं कम से कम निष्पक्ष और ईमानदार रहने की पूरी कोशिश कर रहा हूँ। इस समय मैं बस इतना ही कर सकता हूँ। मुझे उम्मीद है कि इस तरह मैं अपनी भावनाओं का कुछ अंश तुम तक पहुँचा पाऊँगा।
आम अस्पतालों के विपरीत, यहाँ मिलने का समय निःशुल्क है। बस एक दिन पहले फोन कर दें, आप कभी भी आ सकते हैं। आप मेरे साथ भोजन

भी कर सकते हैं, और आपके ठहरने की व्यवस्था भी है। जब भी आपको सुविधा हो, कृपया मुझसे मिलने आइए। मुझे आपसे मिलने की प्रतीक्षा रहेगी।
मैं साथ में एक नक्शा भेज रहा हूँ। क्षमा करें, यह पत्र इतना लंबा हो गया।

मैंने नाओको का पत्र पूरा पढ़ा, और फिर उसे दोबारा पढ़ा।
उसके बाद मैं नीचे गई, वेंडिंग मशीन से एक कोक खरीदी और चिट्ठी को एक बार फिर पढ़ते हुए उसे पी लिया। मैंने लिखने वाले सात पन्ने वापस लिफाफे में डाले और उसे अपनी मेज पर रख दिया। गुलाबी लिफाफे पर मेरा नाम और पता एकदम साफ, छोटे अक्षरों में लिखा था, जो एक लड़की के हिसाब से थोड़ा ज्यादा ही सटीक था। मैं अपनी मेज पर बैठी लिफाफे को ध्यान से देखने लगी। पीछे की तरफ भेजने वाले का पता 'अमी हॉस्टल' था। एक अजीब नाम। मैंने एक पल के लिए इसके बारे में सोचा।
कुछ मिनटों के बाद, उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि "अमी" शब्द फ्रेंच भाषा के "मित्र" शब्द से आया होगा।
पत्र को डेस्क की दराज में रखने के बाद, मैंने कपड़े बदले और बाहर चली गई। मुझे डर था कि अगर मैं पत्र के पास ही रही तो उसे 10, 20, न जाने कितनी बार पढ़ लूँगी। रविवार को मैं टोक्यो की सड़कों पर बिना किसी मंजिल के घूमती रही, जैसा कि मैं हमेशा नाओको के साथ करती थी। मैं एक गली से दूसरी गली भटकती रही, उसके पत्र की हर पंक्ति को याद करती रही और हर वाक्य पर जितना हो सके मनन करती रही। सूरज ढलने पर, मैं छात्रावास लौटी और 107 पर एक लंबी दूरी की कॉल की।

मैं अमी हॉस्टल पहुंचा। एक महिला रिसेप्शनिस्ट ने दरवाजा खोला और मुझसे मेरा काम पूछा। मैंने पूछा कि क्या अगले दिन दोपहर को नाओको से मिलना संभव हो सकता है। मैंने अपना नाम बताया और उसने कहा कि मैं आधे घंटे बाद वापस फोन करूं।

रात के खाने के बाद जब मैंने दोबारा फोन किया तो उसी महिला ने जवाब दिया। उसने कहा कि मैं नाओको से मिल सकती हूँ। मैंने उसे धन्यवाद दिया, फोन काट दिया और अपने बैग में कपड़े और कुछ ज़रूरी सामान रख लिया।

फिर मैंने दोबारा 'द मैजिक माउंटेन' किताब उठाई, पढ़ते हुए ब्रांडी की चुस्कियां लीं और नींद आने का इंतजार करने लगा। फिर भी, मुझे सुबह एक बजे के बाद ही नींद आई।

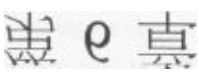

सोमवार की सुबह सात बजे उठते ही मैंने चेहरा धोया, शेव की और नाश्ता किए बिना सीधे छात्रावास प्रमुख के कमरे में जाकर उन्हें बताया कि मैं दो दिन के लिए पहाड़ों में ट्रेकिंग के लिए जा रहा हूँ। उन्हें मेरी इस तरह की छोटी यात्राओं की आदत थी, इसलिए उन्होंने कोई हैरानी नहीं जताई। मैं एक भीड़ भरी कम्यूटर ट्रेन से टोक्यो स्टेशन गया और वहाँ से क्योटो के लिए बुलेट ट्रेन का टिकट खरीदा और जैसे ही पहली हिकारी एक्सप्रेस निकली, मैं उसमें चढ़ गया। मैंने नाश्ते में कॉफी और सैंडविच खाकर काम चलाया और एक घंटे सो गया।

मैं ग्यारह बजने से कुछ मिनट पहले क्योटो पहुँचा। नाओको के निर्देशों का पालन करते हुए, मैंने उत्तरी उपनगरों की ओर जाने वाले एक छोटे से टर्मिनल तक शहर की बस ली। मुझे बताया गया कि मेरे गंतव्य के लिए अगली बस 11:35 बजे तक नहीं निकलेगी और यात्रा में एक घंटे से थोड़ा अधिक समय लगेगा। मैंने टिकट खरीदा और नक्शा लेने के लिए सड़क के उस पार एक किताबों की दुकान पर गया।

प्रतीक्षा कक्ष में वापस आकर, मैंने नक्शे का अध्ययन किया ताकि पता लगा सकूँ कि अमी हॉस्टल कहाँ स्थित है। यह मेरी कल्पना से कहीं अधिक पहाड़ों में निकला। बस को उत्तर की ओर अपनी यात्रा में कई पहाड़ियों को पार करना होगा, फिर घाटी की सड़क के अंत में मुड़कर शहर वापस लौटना होगा। मेरा स्टॉप लाइन के अंत से ठीक पहले होगा। नाओको के अनुसार, बस स्टॉप के पास एक पैदल मार्ग था, और अगर मैं उस पर 20 मिनट तक चलूँ तो मैं अमी हॉस्टल पहुँच जाऊँगा। नहीं

मुझे आश्चर्य है कि पहाड़ों में इतनी गहराई में होने के बावजूद यह इतनी शांत जगह कैसे हो सकती है!

लगभग 20 यात्रियों को लेकर बस क्योटो के उत्तरी छोर से होते हुए कामो नदी के किनारे-किनारे चल पड़ी। घनी आबादी वाली शहर की सड़कें धीरे-धीरे कम घनी आबादी वाले घरों में तब्दील हो गईं, फिर खेत और खाली ज़मीनें नज़र आने लगीं।

काली टाइलों की छतें और विनाइल से बने ग्रीनहाउस शरद ऋतु की शुरुआत की धूप को सोखकर उसे चकाचौंध के साथ वापस भेज रहे थे। जब बस घाटी में दाखिल हुई, तो ड्राइवर सड़क के मोड़ों और घुमावों का अनुसरण करने के लिए स्टीयरिंग व्हील को इधर-उधर घुमाने लगा, और मुझे चक्कर आने लगा। मैं 109

मुझे अभी भी अपनी सुबह की कॉफी का स्वाद याद है। जब मोड़ों की संख्या कम होने लगी और मुझे थोड़ी राहत महसूस हुई, तभी बस एक ठंडे देवदार के जंगल में जा घुसी। पेड़ इतने ऊंचे थे कि ऐसा लग रहा था मानो वे बहुत पुराने हों, वे सड़क पर सूरज की रोशनी को रोक रहे थे और हर चीज़ को घने अंधेरे में ढक रहे थे। बस की खुली खिड़कियों से आती हवा अचानक ठंडी हो गई, उसकी नमी त्वचा पर चुभने लगी।

घाटी की सड़क नदी के किनारे-किनारे चलती रही, पेड़ों के बीच से इतनी दूर तक जाती रही कि ऐसा लगने लगा मानो पूरी दुनिया हमेशा के लिए देवदार के जंगल में समा गई हो - तभी जंगल खत्म हुआ और हम पहाड़ों की चोटियों से घिरे एक खुले मैदान में पहुँच गए। चारों ओर हरे-भरे खेत फैले हुए थे और सड़क के किनारे बहती नदी चमकीली और साफ दिख रही थी। दूर से सफेद धुएँ की एक पतली लकीर उठ रही थी। कुछ घरों में धूप में कपड़े सूख रहे थे और कुत्ते भौंक रहे थे। हर फार्महाउस के सामने छत तक लकड़ियों का ढेर लगा था, और अक्सर उस ढेर पर कहीं न कहीं एक बिल्ली बैठी होती थी। सड़क के किनारे दूर तक ऐसे ही घर थे, लेकिन मुझे एक भी इंसान नहीं दिखा।

दृश्य बार-बार यही दोहराता रहा। बस देवदार के जंगल में प्रवेश करती, किसी गाँव में निकलती, फिर वापस जंगल में चली जाती। वह लोगों को उतारने के लिए किसी गाँव पर रुकती, लेकिन कोई भी बस में नहीं चढ़ता। शहर से निकलने के चालीस मिनट बाद, बस एक पहाड़ी दर्रे पर पहुँची जहाँ से खुला और विशाल दृश्य दिखाई देता था। ड्राइवर ने बस रोक दी और घोषणा की कि हमें यहाँ पाँच-छह मिनट इंतज़ार करना होगा: अगर कोई चाहे तो बस से उतर सकता है। अब बस में मेरे समेत केवल चार यात्री बचे थे। हम सब उतर गए और अंगड़ाई ली, सिगरेट पी और नीचे दूर तक फैले क्योटो के नज़ारे को निहारा। ड्राइवर पेशाब करने के

लिए एक तरफ चला गया। पचास साल की उम्र के आसपास का एक सांवला आदमी, जो एक बड़े, रस्सी से बंधे गत्ते के डिब्बे के साथ बस में चढ़ा था, ने मुझसे पूछा कि क्या मैं पहाड़ों में ट्रेकिंग के लिए जा रहा हूँ। मैंने बात को सरल रखने के लिए हाँ कह दिया।
कुछ देर बाद, दर्रे के दूसरी तरफ से एक और बस ऊपर चढ़ती हुई आई और हमारी बस के बगल में रुक गई। ड्राइवर बाहर निकला, हमारे ड्राइवर से थोड़ी देर बात की, और दोनों आदमी अपनी-अपनी बसों में वापस चढ़ गए। हम चारों अपनी-अपनी सीटों पर वापस बैठ गए, और बसें विपरीत दिशा में 110 नंबर पर चल पड़ीं।

दिशा-निर्देश। मुझे तुरंत समझ नहीं आया कि हमारी बस को दूसरी बस का इंतज़ार क्यों करना पड़ा, लेकिन पहाड़ के दूसरी तरफ़ थोड़ी दूर जाने पर सड़क अचानक संकरी हो गई। दो बड़ी बसें उस सड़क पर एक-दूसरे को पार नहीं कर सकती थीं, और वास्तव में दूसरी दिशा से आ रही सामान्य कारों को पार करने के लिए काफ़ी मशक्कत करनी पड़ती थी, जिसमें एक या दूसरी गाड़ी को पीछे हटकर मोड़ के किनारे से निकलने के लिए जगह बनानी पड़ती थी।
सड़क के किनारे बसे गाँव अब पहले से कहीं छोटे हो गए थे, और खेती योग्य समतल क्षेत्र और भी संकरे हो गए थे। पहाड़ पहले से कहीं अधिक ढलान वाला था, और उसकी दीवारें बस की खिड़कियों से सटी हुई थीं। हालाँकि, ऐसा लगता था कि वहाँ भी अन्य स्थानों की तरह ही कुत्तों की संख्या थी, और बस के आते ही वे भौंकने की होड़ में लग जाते थे।
जिस स्टॉप पर मैं उतरा, वहाँ कुछ भी नहीं था - न घर, न खेत, बस बस स्टॉप का साइनबोर्ड, एक छोटी सी धारा और पगडंडी का मुहाना। मैंने अपना बैग कंधे पर टांगा और पगडंडी पर चलना शुरू कर दिया। धारा

पगडंडी के बाईं ओर बह रही थी, और दाईं ओर पतझड़ी पेड़ों का जंगल था। मैं चढ़ाई कर रहा था।

लगभग 15 मिनट तक हल्की ढलान पर चलने के बाद, मैं दाईं ओर जंगल की ओर जाने वाली एक सड़क पर पहुँचा, जिसका मुहाना मुश्किल से एक कार के निकलने लायक चौड़ा था। एमी हॉस्टल निजी है। प्रवेश वर्जित है।

सड़क किनारे लगे बोर्ड को पढ़ें।

पेड़ों के बीच से सड़क पर टायरों के निशान साफ दिखाई दे रहे थे। कभी-कभार पंखों के फड़फड़ाने की आवाज़ जंगल में गूंज रही थी। यह आवाज़ अजीब सी स्पष्टता के साथ सुनाई दे रही थी, मानो जंगल की दूसरी आवाज़ों से कहीं ज़्यादा तेज़ हो। एक बार, दूर से, मुझे राइफल की गोली चलने जैसी आवाज़ सुनाई दी, लेकिन वह बहुत धीमी और अस्पष्ट थी, मानो कई फिल्टर से गुज़री हो।

जंगल के उस पार मुझे एक सफेद पत्थर की दीवार दिखाई दी। यह मेरी ऊंचाई से ज़्यादा ऊंची नहीं थी और ऊपर कोई अतिरिक्त अवरोध न होने के कारण मेरे लिए इसे पार करना आसान होता। काले लोहे का फाटक देखने में तो मज़बूत लग रहा था, लेकिन वह खुला हुआ था और पहरेदार भी मौजूद नहीं था।

गेट के पास पिछले वाले जैसा ही एक और साइनबोर्ड लगा था: एएमआई हॉस्टल

निजी परिसर, प्रवेश निषेध। कुछ संकेतों से पता चला कि गार्ड कुछ क्षण पहले तक वहीं था: ऐशट्रे में सिगरेट के तीन टुकड़े पड़े थे, एक चाय का कप आधा खाली पड़ा था, एक ट्रांजिस्टर रेडियो शेल्फ पर रखा था, और

दीवार पर लगी घड़ी सूखी आवाज़ में समय बता रही थी। मैंने कुछ देर उस व्यक्ति के वापस आने का इंतज़ार किया, लेकिन जब उसके आने का कोई आसार नहीं दिखा, तो मैंने किसी ऐसी चीज़ को दो-तीन बार धक्का दिया जो घंटी जैसी लग रही थी। गेट के ठीक अंदर का इलाका एक कार पार्किंग था। उसमें एक मिनी-बस, एक फोर-व्हील ड्राइव लैंड क्रूज़र और एक गहरे नीले रंग की वॉल्वो खड़ी थी।

उस पार्किंग स्थल में 30 कारें खड़ी हो सकती थीं, लेकिन फिलहाल वहां केवल वे तीन कारें ही खड़ी थीं।

दो-तीन मिनट बीत गए, फिर गहरे नीले रंग की वर्दी पहने एक चौकीदार पीले रंग की साइकिल पर जंगल के रास्ते से नीचे आया। वह साठ वर्ष की आयु के आसपास का लंबा आदमी था, जिसके बाल झड़ रहे थे। उसने पीली साइकिल चौकी के पास खड़ी की और कहा, "आपको इंतज़ार कराने के लिए मुझे बहुत खेद है," हालाँकि उसकी आवाज़ में ज़रा भी खेद नहीं था। साइकिल के मडगार्ड पर सफ़ेद रंग से 32 लिखा हुआ था। जब मैंने उसे अपना नाम बताया, तो उसने फ़ोन उठाया और दूसरे छोर पर मौजूद किसी व्यक्ति को अपना नाम दो बार दोहराया, फिर दूसरे व्यक्ति को "हाँ, ठीक है, मैं समझ गया" कहकर जवाब दिया और फ़ोन रख दिया।

"कृपया मुख्य भवन में जाइए और डॉक्टर इशिदा से मिलिए," उन्होंने मुझसे कहा। "आप पेड़ों के बीच से होकर इस सड़क से एक गोलचक्कर तक जाइए। फिर गोलचक्कर से दूसरी बाईं ओर मुड़िए - समझे? दूसरी बाईं ओर। आपको एक पुराना घर दिखाई देगा। दाईं ओर मुड़िए और पेड़ों के एक और समूह से होते हुए एक कंक्रीट की इमारत तक जाइए। वही मुख्य भवन है।"

यह आसान है, बस संकेतों पर ध्यान दें।"

निर्देशानुसार मैंने गोलचक्कर से दूसरा बायां मोड़ लिया, और जहां वह रास्ता समाप्त हुआ, वहां मुझे एक दिलचस्प पुरानी इमारत दिखाई दी जो स्पष्ट रूप से कभी किसी का देहाती घर रही होगी। इसमें सुव्यवस्थित बगीचा था जिसमें सुंदर पत्थर और एक पत्थर का लालटेन था। यह एक बड़ा ग्रामीण इलाका रहा होगा। पेड़ों के बीच से दायां मुड़ते हुए, मैंने एक तीन मंजिला कंक्रीट की इमारत देखी। यह एक खोखले क्षेत्र में बनी थी, इसलिए इसकी तीन मंजिलें भव्य नहीं थीं। इसका डिज़ाइन सरल था और स्वच्छता का मजबूत आभास देता था।

112

प्रवेश द्वार दूसरी मंजिल पर था। मैं सीढ़ियाँ चढ़कर एक बड़े कांच के दरवाजे से अंदर गया, जहाँ रिसेप्शन डेस्क पर लाल रंग की पोशाक पहने एक युवती खड़ी थी। मैंने उसे अपना नाम बताया और कहा कि मुझे डॉक्टर इशिदा से मिलने के लिए कहा गया है। वह मुस्कुराई और एक भूरे सोफे की ओर इशारा करते हुए धीमी आवाज़ में बोली कि मैं डॉक्टर के आने तक वहीं इंतज़ार करूँ। फिर उसने एक नंबर डायल किया। मैंने अपना बैग पीठ से उतारा, सोफे के गद्देदार कुशन पर बैठ गया और चारों ओर देखा। यह एक साफ-सुथरी, सुखद लॉबी थी, जिसमें सजावटी गमले लगे थे, सुंदर अमूर्त चित्र थे और फर्श चमकीला था। इंतज़ार करते हुए, मेरी नज़र फर्श पर अपने जूतों के प्रतिबिंब पर टिकी रही।

एक समय रिसेप्शनिस्ट ने मुझे आश्वस्त करते हुए कहा, "डॉक्टर जल्द ही आ जाएँगे।" मैंने सिर हिलाकर सहमति जताई। कितनी अविश्वसनीय रूप से शांत जगह थी! वहाँ किसी भी तरह की कोई आवाज़ नहीं थी। ऐसा लग रहा था मानो सब लोग दोपहर की नींद ले रहे हों।

मैंने सोचा, लोग, जानवर, कीड़े-मकोड़े, पौधे सब गहरी नींद में सो रहे

होंगे, इतनी शांत दोपहर थी।
कुछ ही देर में, मुझे रबर के जूतों की हल्की आहट सुनाई दी और एक अधेड़ उम्र की, घने बालों वाली महिला प्रकट हुई। वह लॉबी में तेज़ी से आई, मेरे बगल में बैठ गई, अपने पैर मोड़े और मेरा हाथ पकड़ लिया। उसने सिर्फ हाथ मिलाने के बजाय, मेरे हाथ को पलटकर आगे-पीछे से देखा।
"तुमने कोई वाद्य यंत्र नहीं बजाया है, कम से कम कुछ सालों से तो नहीं, है ना?" ये उसके मुंह से निकले पहले शब्द थे।
"नहीं," मैंने अचंभित होकर कहा। "आप सही कह रहे हैं।"
"मैं तुम्हारे हाथों से बता सकती हूँ," उसने मुस्कुराते हुए कहा।
इस महिला में कुछ रहस्यमयी बात थी। उसके चेहरे पर झुर्रियाँ बहुत थीं। ये झुर्रियाँ सबसे पहले नज़र में आती थीं, लेकिन इनसे वह बूढ़ी नहीं लगती थी। बल्कि, ये झुर्रियाँ उसकी उम्र से परे एक खास तरह की जवानी को उभारती थीं। झुर्रियाँ मानो जन्म से ही उसके चेहरे का हिस्सा रही हों। जब वह मुस्कुराती, तो झुर्रियाँ भी उसके साथ मुस्कुरातीं; जब वह भौंहें चढ़ाती, तो झुर्रियाँ भी भौंहें चढ़ातीं। और जब वह न मुस्कुरा रही होती और न भौंहें चढ़ा रही होती, तो झुर्रियाँ उसके चेहरे पर एक अजीब तरह से गर्मजोशी और व्यंग्यात्मक ढंग से बिखरी होतीं। तीस के दशक के अंत में पहुँच चुकी यह महिला 113 साल की नहीं लगती थी।

वह महज एक अच्छी इंसान थी, लेकिन उसकी अच्छाई ने ही आपको उसकी ओर आकर्षित किया। मुझे उसे देखते ही पसंद आ गई थी।
उसके बाल बेतरतीब ढंग से कटे हुए थे, जगह-जगह से बाहर निकले हुए थे और माथे पर लटें टेढ़ी-मेढ़ी पड़ी थीं, लेकिन यह स्टाइल उस पर खूब जंच रहा था। उसने सफेद टी-शर्ट के ऊपर नीली काम वाली कमीज,

ढीली-ढाली क्रीम रंग की सूती पतलून और टेनिस के जूते पहने थे। लंबी और पतली, उसके स्तन लगभग न के बराबर थे। उसके होंठ व्यंग्यात्मक ढंग से एक तरफ मुड़ते रहते थे, और उसकी आंखों के कोनों की झुर्रियां हल्की-हल्की फड़कती रहती थीं। वह एक दयालु, कुशल, लेकिन कुछ हद तक दुनिया से थकी हुई महिला बढ़ई जैसी लग रही थी।

ठुड्डी अंदर की ओर धंसी हुई और होंठ सिकुड़े हुए, उसने मुझे सिर से पैर तक ध्यान से देखा। मुझे लगा कि अब किसी भी पल वह अपना नापने वाला टेप निकालेगी और मुझे हर जगह नापना शुरू कर देगी।

"क्या आप कोई वाद्य यंत्र बजा सकते हैं?" उसने पूछा। "माफ़ कीजिए, नहीं," मैंने कहा।

"बहुत बुरा हुआ," उसने कहा। "मज़ेदार होता।"

"मुझे लगता है ऐसा ही है," मैंने कहा। संगीत वाद्ययंत्रों के बारे में इतनी बातें क्यों हो रही हैं?

उसने अपनी जेब से सेवन स्टार्स सिगरेट का एक पैकेट निकाला, एक सिगरेट अपने होठों के बीच रखी, उसे लाइटर से जलाया और स्पष्ट आनंद के साथ कश लगाने लगी।

"मेरे मन में यह विचार आया कि मुझे आपको इस जगह के बारे में बताना चाहिए, श्रीमान..."

वातानाबे, है ना? - नाओको से मिलने से पहले। तो मैंने हम दोनों के लिए यह छोटी सी बातचीत तय की। अमी हॉस्टल थोड़ा अनोखा है - बिना किसी पूर्व जानकारी के आपको शायद थोड़ा उलझन हो सकती है।

मैं सही हूँ ना, अगर मैं यह मान लूँ कि आपको इस जगह के बारे में कुछ भी नहीं पता है?

"लगभग कुछ भी नहीं है।"

"अच्छा, तो सबसे पहले..." उसने कहना शुरू किया और फिर उंगलियां

चटकाते हुए बोली, "वैसे, क्या आपने दोपहर का खाना खा लिया है? मुझे यकीन है कि आपको भूख लगी होगी।"
"आप सही कह रहे हैं, मैं हूँ।"
"तो मेरे साथ आइए। हम भोजन कक्ष में खाना खाते हुए बात कर सकते हैं।"
दोपहर के भोजन का समय समाप्त हो गया है, लेकिन अगर हम अभी जाएं तो वे हमारे लिए कुछ बना सकते हैं।"

वह आगे-आगे चली और गलियारे से होते हुए सीढ़ियों से पहली मंजिल पर बने भोजन कक्ष में पहुँच गई। वह एक बड़ा कमरा था, जिसमें शायद 200 लोगों के बैठने की जगह थी, लेकिन उसका आधा हिस्सा ही इस्तेमाल में था, बाकी आधा हिस्सा अलग कर दिया गया था, जैसे किसी रिसॉर्ट होटल में ऑफ-सीज़न में होता है। आज के मेनू में आलू का स्टू, नूडल्स, सलाद, संतरे का रस और ब्रेड शामिल थे। सब्जियां वाकई उतनी ही स्वादिष्ट निकलीं जितनी नाओको ने अपने पत्र में लिखी थीं, और मैंने अपनी प्लेट में सब कुछ चट कर दिया।
"आप तो खाने का भरपूर आनंद लेते हैं!" मेरी महिला साथी ने कहा।
मैंने कहा, "यह बहुत बढ़िया है। साथ ही, मैंने पूरे दिन में मुश्किल से कुछ खाया है।"
"अगर आपको पसंद हो तो आप मेरे यहाँ आ सकते हैं। मेरा पेट भरा हुआ है। लीजिए, आप आ जाइए।"
"अगर आप सचमुच ऐसा नहीं चाहते हैं, तो मैं कर दूंगा।"
"मेरा पेट छोटा है। उसमें ज्यादा कुछ नहीं समाता। इसलिए मैं सिगरेट पीकर इसकी कमी पूरी करती हूँ।" उसने एक और सेवन स्टार सिगरेट

जलाई। "वैसे, आप मुझे रेइको कह सकते हैं। सब मुझे रेइको ही कहते हैं।"
रेइको को मुझे आलू का स्टू खाते हुए देखना बहुत अच्छा लग रहा था, जिसे उसने मुश्किल से छुआ था और साथ ही अपनी रोटी चबा रही थी।
मैंने पूछा, "क्या आप नाओको के डॉक्टर हैं?"
"मैं?! नाओको की डॉक्टर?!" उसने मुंह बनाते हुए कहा। "आपको ऐसा क्यों लगता है कि मैं डॉक्टर हूँ?"
"उन्होंने मुझे डॉक्टर इशिदा से मिलने के लिए कहा।"
"ओह, मैं समझ गया। नहीं नहीं नहीं, मैं यहाँ संगीत सिखाता हूँ। कुछ मरीज़ों के लिए यह एक तरह की थेरेपी है, इसलिए मज़ाक में वे मुझे 'संगीत डॉक्टर' और कभी-कभी 'डॉक्टर इशिदा' कहते हैं। लेकिन मैं भी तो बस एक मरीज़ हूँ। मैं यहाँ सात साल से हूँ। मैं संगीत शिक्षक के रूप में काम करता हूँ और दफ्तर में भी मदद करता हूँ, इसलिए अब यह बताना मुश्किल है कि मैं मरीज़ हूँ या कर्मचारी। क्या नाओको ने मेरे बारे में आपको नहीं बताया था?"
मैंने अपना सिर हिलाया।
"यह अजीब है," रेइको ने कहा। "मैं नाओको की रूममेट हूँ। मुझे उसके साथ रहना अच्छा लगता है। हम हर तरह की बातें करते हैं। तुम्हारे बारे में भी।"
"मेरा क्या?"

"अच्छा, पहले मुझे आपको इस जगह के बारे में बताना होगा," रेइको ने 115 को अनदेखा करते हुए कहा।

मेरा सवाल यह है: "सबसे पहले तो आपको यह जानना चाहिए कि यह

कोई साधारण 'अस्पताल' नहीं है। यह इलाज से ज़्यादा स्वास्थ्य लाभ के लिए है। हमारे पास कुछ डॉक्टर हैं, और वे घंटेवार सेवाएं देते हैं, लेकिन वे केवल लोगों की स्थिति की जांच करते हैं, उनका तापमान लेते हैं और इसी तरह की चीजें करते हैं, न कि कोई 'इलाज' करते हैं।"

जैसे किसी आम अस्पताल में होता है। यहाँ खिड़कियों पर सलाखें नहीं हैं, और गेट हमेशा खुला रहता है। लोग अपनी मर्जी से आते-जाते हैं। यहाँ भर्ती होने के लिए आपको इस तरह की स्वास्थ्य लाभ प्रक्रिया के लिए उपयुक्त होना चाहिए। कुछ मामलों में, जिन लोगों को विशेष चिकित्सा की आवश्यकता होती है, उन्हें विशेष अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है। अब तक सब ठीक है?

मैंने कहा, "मुझे ऐसा लगता है। लेकिन इस 'स्वास्थ्य लाभ' में क्या शामिल है?"

क्या आप मुझे कोई ठोस उदाहरण दे सकते हैं?

रेइको ने धुएं का एक गुबार छोड़ा और अपने संतरे के रस का बचा हुआ हिस्सा पी लिया। उसने कहा, "यहाँ रहना ही मेरे लिए स्वास्थ्य लाभ है। एक नियमित दिनचर्या, व्यायाम, बाहरी दुनिया से अलगाव, स्वच्छ हवा, शांति।"

हमारी कृषि भूमि हमें लगभग आत्मनिर्भर बनाती है; यहाँ टीवी या रेडियो नहीं है। हम उन कम्यून स्थलों की तरह हैं जिनके बारे में आप बहुत सुनते हैं। बेशक, कम्यून से एक अंतर यह है कि यहाँ प्रवेश पाने के लिए बहुत पैसा खर्च करना पड़ता है।

पोटली?"

"खैर, यह बहुत महंगा तो नहीं है, लेकिन सस्ता भी नहीं है। ज़रा इन सुविधाओं को देखिए। हमारे पास यहाँ बहुत सारी ज़मीन है, कुछ मरीज़ हैं, बड़ा स्टाफ है, और मैं तो यहाँ काफी समय से हूँ। सच है, मैं खुद भी

लगभग स्टाफ ही हूँ, इसलिए मुझे कुछ छूट मिलती हैं, लेकिन फिर भी... अब, एक कप कॉफ़ी कैसी रहेगी?"
मैंने कहा, मुझे भी चाहिए। उसने अपनी सिगरेट बुझाई और काउंटर की तरफ गई, जहाँ उसने गर्म केतली से दो कप कॉफी डाली और हमारे पास ले आई। उसने अपने कप में चीनी डाली, उसे मिलाया, भौंहें चढ़ाईं और फिर एक कप ले आई।
घूंट-घूंट करके पीना।
"आपको पता है," उसने कहा, "यह सैनिटोरियम लाभ कमाने वाला उद्यम नहीं है, इसलिए यह उतना शुल्क लिए बिना भी चलता रह सकता है जितना कि यह ले सकता था।"

अन्यथा करना ही पड़ेगा। ज़मीन दान में मिली थी। उन्होंने इसके लिए एक निगम बनाया। लगभग 20 साल पहले यह पूरी जगह दानकर्ता का ग्रीष्मकालीन निवास हुआ करती थी। मुझे यकीन है कि आपने वह पुराना घर देखा होगा।
मैंने कहा कि मैंने किया था।
"पहले उस ज़मीन पर यही इकलौती इमारत हुआ करती थी। यहीं पर सामूहिक चिकित्सा होती थी। यहीं से सब कुछ शुरू हुआ। दानकर्ता के बेटे में मानसिक बीमारी के लक्षण थे और एक विशेषज्ञ ने उसके लिए सामूहिक चिकित्सा की सलाह दी। डॉक्टर का मानना था कि अगर मरीज़ों का एक समूह ग्रामीण इलाके में रहे, शारीरिक श्रम में एक-दूसरे की मदद करे और सलाह व जाँच के लिए एक डॉक्टर मौजूद हो, तो कुछ खास तरह की बीमारियों का इलाज हो सकता है। उन्होंने इसे आजमाया, और यह काम बढ़ता गया और इसे एक संस्था के रूप में पंजीकृत किया गया, उन्होंने और ज़मीन पर खेती शुरू की और पाँच साल पहले मुख्य इमारत

का निर्माण किया।"
"मतलब, थेरेपी कारगर रही।"
"खैर, हर चीज़ के लिए नहीं। बहुत से लोग ठीक नहीं हो पाते। लेकिन बहुत से ऐसे लोग भी हैं जिनकी मदद कहीं और नहीं हो सकी और वे यहाँ पूरी तरह से ठीक हो गए। इस जगह की सबसे अच्छी बात यह है कि यहाँ हर कोई एक-दूसरे की मदद करता है। हर कोई जानता है कि उनमें कुछ न कुछ खामियाँ हैं, इसलिए वे एक-दूसरे की मदद करने की कोशिश करते हैं। दुर्भाग्य से, दूसरी जगहों पर ऐसा नहीं होता। डॉक्टर डॉक्टर होते हैं और मरीज़ मरीज़: मरीज़ डॉक्टर से मदद मांगता है और डॉक्टर मरीज़ की मदद करता है। लेकिन यहाँ, हम सब एक-दूसरे की मदद करते हैं। हम सब एक-दूसरे के आईने हैं, और डॉक्टर हमारे ही हिस्से हैं। वे हमें दूर से देखते हैं और अगर उन्हें लगता है कि हमें किसी चीज़ की ज़रूरत है, तो वे हमारी मदद करने के लिए आगे आते हैं, लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है कि हम उनकी मदद करते हैं। कभी-कभी हम किसी चीज़ में उनसे बेहतर होते हैं। उदाहरण के लिए, मैं एक डॉक्टर को पियानो बजाना सिखा रहा हूँ और एक मरीज़ एक नर्स को फ्रेंच सिखा रहा है। इस तरह की बातें। हमारे जैसी समस्याओं वाले मरीज़ों में अक्सर विशेष क्षमताएँ होती हैं। इसलिए यहाँ हर कोई बराबर है - मरीज़, कर्मचारी - और आप भी। जब तक आप यहाँ हैं, आप हमारे ही एक सदस्य हैं।" तो मैं तुम्हारी मदद करती हूँ और तुम मेरी मदद करो।" रीको मुस्कुराई, अपने चेहरे की हर झुर्री को धीरे से हिलाते हुए। "तुम नाओको की मदद करो और नाओको तुम्हारी मदद करेगी।"

"तो फिर मुझे क्या करना चाहिए? मुझे एक उदाहरण दीजिए।"

सबसे पहले, आप यह तय करें कि आप मदद करना चाहते हैं और आपको दूसरे व्यक्ति से मदद की ज़रूरत है। फिर आप पूरी तरह ईमानदार रहें। आप झूठ नहीं बोलेंगे, किसी भी बात को छिपाएंगे नहीं, ऐसी कोई भी बात नहीं छुपाएंगे जिससे आपको शर्मिंदगी हो सकती है। बस इतना ही है।

मैंने कहा, "मैं कोशिश करूंगा। लेकिन मुझे बताओ, रेइको, तुम सात साल से यहाँ क्यों हो? तुमसे इस तरह बात करने के बाद, मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि तुम्हें कोई परेशानी है।"

"जब तक सूरज निकला रहता है, तब तक नहीं," उसने उदास चेहरे से कहा। "लेकिन रात होते ही, मेरे मुंह से लार टपकने लगती है और मैं ज़मीन पर लोटने लगती हूँ।" "सच में?"

"मज़ाक मत करो, मैं मज़ाक कर रही थी," उसने घृणा से सिर हिलाते हुए कहा। "मैं बिल्कुल ठीक हूँ - कम से कम अभी तो। मैं यहाँ इसलिए रहती हूँ क्योंकि मुझे दूसरों को ठीक होने में मदद करना, संगीत सिखाना और सब्जियाँ उगाना अच्छा लगता है। मुझे यहाँ अच्छा लगता है। हम सब लगभग दोस्त हैं।"

इसके मुकाबले, बाहरी दुनिया में मेरे पास क्या है? मैं 38 साल की हूँ, 40 की होने वाली हूँ। मैं नाओको जैसी नहीं हूँ। मेरा इंतज़ार करने वाला कोई नहीं है, कोई परिवार नहीं है जो मुझे वापस ले जाए। मेरे पास कहने लायक कोई काम नहीं है, और लगभग कोई दोस्त भी नहीं हैं। और सात साल बाद भी, मुझे नहीं पता कि बाहर क्या चल रहा है। हाँ, मैं कभी-कभार लाइब्रेरी में कोई अखबार पढ़ लेती हूँ, लेकिन इतने समय में मैंने इस घर से बाहर कदम नहीं रखा है। अगर मैं चली गई तो मुझे पता नहीं चलेगा कि मैं क्या करूँगी।

"लेकिन शायद आपके लिए एक नई दुनिया खुल जाए," मैंने कहा।

"कोशिश करने में क्या हर्ज है, है ना?"
"हम्म, शायद आप सही कह रहे हैं," उसने अपने हाथ में सिगरेट लाइटर को बार-बार घुमाते हुए कहा। "लेकिन मेरी अपनी भी कुछ परेशानियाँ हैं। अगर आप चाहें तो मैं कभी आपको उनके बारे में सब कुछ बता सकती हूँ।"
मैंने सिर हिलाकर जवाब दिया। "और नाओको," मैंने कहा, "क्या वह पहले से बेहतर है?"
"हम्म, हमें ऐसा लगता है। शुरू में वह काफी उलझन में थी और हमें कुछ समय तक संदेह रहा, लेकिन अब वह शांत हो गई है और उसकी हालत में इतना सुधार हो गया है कि वह बोलकर अपनी बात कह सकती है। वह निश्चित रूप से सही दिशा में आगे बढ़ रही है। लेकिन उसे बहुत पहले ही इलाज मिल जाना चाहिए था। उसके लक्षण 118 के समय से ही स्पष्ट थे।

उसके प्रेमी किज़ुकी ने आत्महत्या कर ली। उसके परिवार को यह देखना चाहिए था, और उसे खुद भी यह एहसास हो जाना चाहिए था कि कुछ गड़बड़ है। ज़ाहिर है, घर पर भी हालात ठीक नहीं थे...
"क्या वे नहीं थे?" मैंने पलटकर जवाब दिया।
"तुम्हें नहीं पता था?" रीको मुझसे भी ज्यादा हैरान लग रही थी।
मैंने अपना सिर हिलाया।
"बेहतर होगा कि नाओको खुद आपको इसके बारे में बताए। वह आपसे खुलकर बात करने के लिए तैयार है।" रीको ने अपनी कॉफी को एक बार फिर हिलाया और एक घूंट लिया। "एक और बात है जो आपको जाननी चाहिए," उसने कहा। "यहां के नियमों के अनुसार, आपको और नाओको को अकेले रहने की अनुमति नहीं है। आगंतुक मरीजों के साथ अकेले नहीं

रह सकते। एक पर्यवेक्षक का हमेशा मौजूद रहना जरूरी है - जिसका मतलब इस मामले में मैं हूं। मुझे माफ करना, लेकिन आपको मेरी बात माननी ही पड़ेगी। ठीक है?"
"ठीक है," मैंने मुस्कुराते हुए कहा।
"लेकिन फिर भी," उसने कहा, "आप दोनों जो चाहें बात कर सकते हैं। भूल जाइए कि मैं वहां हूं। मैं आप और नाओको के बारे में लगभग सब कुछ जानती हूं।"
"सब कुछ?"
"लगभग ऐसा ही है। हम ग्रुप सेशन करते हैं, जानते ही हैं ना। इसलिए हम एक-दूसरे के बारे में बहुत कुछ सीखते हैं। साथ ही, नाओको और मैं हर बात पर चर्चा करते हैं। हमारे बीच ज्यादा राज़ नहीं हैं।"
मैंने कॉफी पीते हुए रेइको की तरफ देखा। "सच कहूँ तो," मैंने कहा,
"मैं असमंजस में हूँ। मुझे अभी भी नहीं पता कि मैंने टोक्यो में नाओको के साथ जो किया वह सही था या नहीं। मैं इस पूरे समय इसके बारे में सोचता रहा हूँ, लेकिन फिर भी मुझे नहीं पता।"
"और मैं भी नहीं," रेइको ने कहा। "और नाओको भी नहीं। यह फैसला तुम दोनों को खुद ही करना होगा। समझे? चाहे कुछ भी हुआ हो, तुम दोनों इसे सही दिशा में मोड़ सकते हो - अगर तुम दोनों किसी तरह की आपसी समझ तक पहुँच सको।"
शायद, जब आप उस मामले को सुलझा लेंगे, तब आप वापस जाकर सोच सकते हैं कि जो हुआ वो सही था या नहीं। आपका क्या कहना है?

मेंने सिर हिलाया।
"मुझे लगता है कि हम तीनों - आप, नाओको और मैं - एक-दूसरे की

मदद कर सकते हैं, अगर हम सचमुच चाहें और ईमानदारी से काम करें। जब तीन लोग इस तरह मिलकर काम करते हैं तो यह बेहद कारगर साबित हो सकता है। आप कब तक रुक सकते हैं?"

"ठीक है, मैं परसों शाम तक टोक्यो वापस आना चाहूंगा। मुझे काम करना है, और गुरुवार को मेरी जर्मन की परीक्षा है।"

"अच्छा," उसने कहा। "तो आप हमारे साथ रह सकते हैं। इससे आपको कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ेगा और आप समय की चिंता किए बिना बात कर सकते हैं।"

"हमारे साथ?" मैंने पूछा।

"नाओको और मैं, बिल्कुल," रेइको ने कहा। "हमारे पास एक अलग बेडरूम है, और लिविंग रूम में एक सोफा बेड है, इसलिए आप आराम से सो पाएंगे। चिंता मत करो।"

“क्या वे इसकी अनुमति देते हैं?” मैंने पूछा। “क्या कोई पुरुष आगंतुक महिला के कमरे में ठहर सकता है?”

"मुझे नहीं लगता कि तुम आधी रात को आकर हमारा बलात्कार करोगे?"

"मूर्खता मत करो।"

"तो फिर कोई समस्या नहीं है। हमारे घर पर रुकिए और हम आराम से लंबी बातें कर सकते हैं। यही सबसे अच्छा रहेगा। इससे हम एक-दूसरे को अच्छे से समझ पाएंगे। और मैं आपके लिए गिटार बजा सकता हूँ। वैसे, मैं गिटार अच्छा बजाता हूँ।"

"क्या आपको यकीन है कि मैं रास्ते में नहीं आऊंगा?"

रेइको ने अपना तीसरा सेवन स्टार अपने होठों के बीच रखा और अपने मुंह के कोने को सिकोड़ते हुए उसे जलाया।

"नाओको और मैंने इस बारे में पहले ही चर्चा कर ली है। हम दोनों मिलकर आपको अपने साथ रहने का व्यक्तिगत निमंत्रण दे रहे हैं। क्या

आपको विनम्रतापूर्वक इसे स्वीकार नहीं कर लेना चाहिए?"
"बिल्कुल, मुझे खुशी होगी।"
रेइको ने अपनी आंखों के कोनों पर झुर्रियां और गहरी कर लीं और कुछ देर तक मेरी तरफ देखती रही। "तुम्हारे बात करने का तरीका अजीब है," उसने कहा। "कहीं तुम 'कैचर इन द राई' के उस लड़के की नकल तो नहीं कर रहे हो?"

"बिल्कुल नहीं!" मैंने मुस्कुराते हुए कहा।
रेइको भी मुस्कुराई, उसके मुंह में सिगरेट थी। "वैसे तुम अच्छे इंसान हो।"
मैं तुम्हें देखकर इतना तो समझ ही सकता हूँ। यहाँ सात साल से लोगों को आते-जाते देखने के बाद मैं ये बातें समझ पाया हूँ: कुछ लोग दिल खोलकर बात कर सकते हैं और कुछ नहीं। तुम उन लोगों में से हो जो दिल खोलकर बात कर सकते हो। या यूँ कहूँ कि अगर तुम चाहो तो कर सकते हो।
"जब लोग अपने दिल की बात कहते हैं तो क्या होता है?"
रेइको ने मेज पर अपने हाथ जोड़ लिए, सिगरेट उसके होठों से लटक रही थी। उसे इसमें मज़ा आ रहा था। "ये बेहतर हो जाते हैं," उसने कहा। राख मेज पर गिरी, लेकिन उसने मानो ध्यान ही नहीं दिया।
मैं और रेइको मुख्य इमारत से निकले, एक पहाड़ी पार की और एक स्विमिंग पूल, कुछ टेनिस कोर्ट और एक बास्केटबॉल कोर्ट के पास से गुज़रे। दो आदमी - एक दुबला-पतला और अधेड़ उम्र का, दूसरा जवान और मोटा - टेनिस कोर्ट पर खेल रहे थे। दोनों अपने रैकेट का बखूबी इस्तेमाल कर रहे थे, लेकिन मुझे लगा कि वे जो खेल रहे थे, वह टेनिस नहीं हो सकता था। ऐसा लग रहा था मानो उन्हें टेनिस गेंदों के उछाल में

विशेष रुचि हो और वे उस क्षेत्र में शोध कर रहे हों। वे एक अजीब एकाग्रता के साथ गेंद को इधर-उधर मार रहे थे। दोनों पसीने से भीगे हुए थे। कोर्ट के उस छोर पर, जो हमारे करीब था, उस युवक ने रेइको को देखा और हम उसके पास आ गए। उन्होंने मुस्कुराते हुए कुछ बातें कीं। कोर्ट के पास, एक आदमी बिना किसी भाव के एक बड़ी घास काटने वाली मशीन से घास काट रहा था।

आगे बढ़ते हुए हम जंगल के एक हिस्से में पहुँचे जहाँ लगभग 15 या 20 छोटे-छोटे साफ-सुथरे घर एक-दूसरे से कुछ दूरी पर बने हुए थे। लगभग हर घर के प्रवेश द्वार पर उसी तरह की पीली साइकिल खड़ी थी जिस पर चौकीदार सवार था। रेइको ने कहा, "यहाँ कर्मचारी और उनके परिवार रहते हैं।"

"शहर जाए बिना ही हमारे पास लगभग वह सब कुछ है जिसकी हमें जरूरत है।"

चलते-चलते उसने कहा, "खाने-पीने की बात करें तो, जैसा कि मैंने पहले भी कहा, हम लगभग आत्मनिर्भर हैं। हमें अपने मुर्गीखाने से अंडे मिलते हैं। हमारे पास किताबें, रिकॉर्ड, व्यायाम की सुविधाएँ, अपना खुद का किराना स्टोर है, और हर हफ्ते नाई और ब्यूटीशियन आते हैं। यहाँ तक कि सप्ताहांत में हम फिल्में भी देखते हैं। अगर हमें किसी विशेष चीज़ की ज़रूरत होती है तो..."

हम किसी कर्मचारी से शहर से हमारे लिए सामान खरीदने को कह सकते हैं। कपड़े हम कैटलॉग से मंगवाते हैं। यहां रहना कोई समस्या नहीं है।"

"लेकिन आप शहर में नहीं जा सकते?"

नहीं, हम ऐसा नहीं कर सकते। अगर कोई खास बात हो, जैसे कि हमें डेंटिस्ट के पास जाना हो, तो ठीक है, लेकिन आम तौर पर हम शहर नहीं

जा सकते। हर व्यक्ति को यहाँ से जाने की पूरी आज़ादी है, लेकिन एक बार चले जाने के बाद वापस नहीं आ सकते। आप अपने सारे रास्ते बंद कर देते हैं। आप कुछ दिनों के लिए शहर जाकर वापस आने की उम्मीद नहीं कर सकते। वैसे भी, यह तो स्वाभाविक ही है। हर कोई आता-जाता रहेगा।

पेड़ों के पार हम एक हल्की ढलान पर पहुँचे, जिस पर अनियमित अंतरालों पर दो मंजिला लकड़ी के मकानों की कतारें थीं, जिनमें कुछ विचित्रता थी। उन्हें विचित्र क्या बनाता था, यह कहना कठिन है, लेकिन उन्हें देखते ही मेरे मन में यही पहली भावना आई। मेरी प्रतिक्रिया कुछ वैसी ही थी जैसी हमें किसी अवास्तविक चीज़ को मनभावन ढंग से चित्रित देखकर होती है। मुझे लगा कि शायद वॉल्ट डिज़्नी ने मंच की किसी पेंटिंग का एनिमेटेड संस्करण बनाया होता तो ऐसा ही होता। सभी मकान बिल्कुल एक ही आकार और रंग के थे, लगभग घनाकार, एकदम सीधी रेखा में, बड़े-बड़े दरवाजों और ढेर सारी खिड़कियों के साथ। सड़क उनके बीच से ऐसे मुड़ती हुई जा रही थी जैसे किसी ड्राइविंग स्कूल का कृत्रिम अभ्यास कोर्स हो। हर मकान के सामने करीने से सजाई गई फूलों की झाड़ियाँ थीं। जगह सुनसान थी और सभी खिड़कियों पर पर्दे लगे थे।

इसे एरिया सी कहते हैं। यहाँ महिलाएँ रहती हैं। हम! यहाँ दस घर हैं, प्रत्येक में चार यूनिट हैं, प्रति यूनिट दो लोग। यानी 80।

हम सब लोग एक साथ हैं, लेकिन फिलहाल हम सिर्फ 32 लोग ही हैं।"

"कितना शांत है, है ना?"

“खैर, अब यहाँ कोई नहीं है,” रेइको ने कहा। “मुझे इस तरह आज़ादी से घूमने की विशेष अनुमति दी गई है, लेकिन बाकी सब अपने-अपने कामों में व्यस्त हैं। कुछ व्यायाम कर रहे हैं, कुछ बागवानी कर रहे हैं, कुछ समूह चिकित्सा में हैं, कुछ जंगली पौधे इकट्ठा कर रहे हैं। हर कोई अपना

कार्यक्रम खुद बनाता है। चलो देखते हैं, 122

नाओको अब क्या कर रही है? मुझे लगता है कि उसे नए पेंट और वॉलपेपर पर काम करना था। मैं भूल गई। कुछ काम ऐसे होते हैं जो पाँच बजे तक खत्म नहीं होते।

रेइको "सी-7" नंबर वाली इमारत में दाखिल हुई, गलियारे के आखिरी छोर पर बनी सीढ़ियाँ चढ़ी और दाहिनी ओर का खुला दरवाज़ा खोला। उसने मुझे फ्लैट दिखाया, जो एक साधारण सा चार कमरों वाला सुखद फ्लैट था: बैठक, शयनकक्ष, रसोई और स्नानघर। इसमें कोई अतिरिक्त फर्नीचर या अनावश्यक सजावट नहीं थी, लेकिन जगह भी नीरस नहीं थी। इसमें कुछ खास नहीं था, लेकिन वहां होना कुछ हद तक रेइको के साथ होने जैसा था: आप आराम कर सकते थे और अपने शरीर से तनाव को दूर होने दे सकते थे।

बैठक में एक सोफा, एक मेज और एक झूला कुर्सी थी। रसोई में एक और मेज थी। दोनों मेजों पर बड़ी-बड़ी ऐशट्रे रखी थीं। शयनकक्ष में दो पलंग, दो डेस्क और एक अलमारी थी। पलंगों के बीच एक छोटी सी नाइट टेबल थी, जिस पर पढ़ने का लैंप और एक किताब उल्टी रखी थी। रसोई में एक छोटा सा इलेक्ट्रिक कुकर था जो फ्रिज से मेल खाता था और साधारण खाना पकाने के लिए सभी आवश्यक उपकरण मौजूद थे।

"बाथटब नहीं है, सिर्फ शॉवर है, लेकिन यह काफी प्रभावशाली है, क्या आप सहमत नहीं हैं?"

स्नान और कपड़े धोने की सुविधाएँ साझा हैं।"

"यह तो हद से ज़्यादा प्रभावशाली है। मेरे छात्रावास के कमरे में छत और खिड़की है।"

"अरे, तुमने यहाँ की सर्दियाँ देखी ही नहीं हैं," रेइको ने मेरी पीठ पर हाथ

रखकर मुझे सोफे तक ले जाते हुए कहा और मेरे बगल में बैठ गई। "ये लंबी और कठोर होती हैं। देखो तो हर जगह बर्फ ही बर्फ होती है। नमी इतनी बढ़ जाती है कि हड्डियाँ तक जम जाती हैं। हम पूरी सर्दी बर्फ हटाने में बिताते हैं। ज़्यादातर तुम अंदर ही रहती हो जहाँ गर्मी होती है और संगीत सुनती हो, बातें करती हो या बुनाई करती हो। अगर इतनी जगह न होती तो तुम्हारा दम घुट जाता। अगर तुम सर्दियों में यहाँ आओगी तो तुम्हें पता चल जाएगा।"

रेइको ने एक गहरी आह भरी, मानो वह सर्दियों के मौसम की कल्पना कर रही हो, फिर अपने हाथों को अपने घुटनों पर रख लिया।

"यह तुम्हारा बिस्तर होगा," उसने सोफे पर थपथपाते हुए कहा। "हम बेडरूम में सोएंगे, और तुम यहाँ सोओगे। तुम्हें कोई दिक्कत नहीं होगी, है ना?"

मुझे पूरा यकीन है कि मैं ठीक रहूंगा।

“तो, बात पक्की हो गई,” रेइको ने कहा। “हम करीब पाँच बजे वापस आ जाएँगे। नाओको और मुझे तब तक कुछ काम हैं। क्या आपको यहाँ अकेले रहने में कोई आपत्ति है?”

"बिल्कुल नहीं। मैं जर्मन भाषा का अध्ययन करूँगा।"

जब रेइको चली गई, तो मैं सोफे पर लेट गई और अपनी आँखें बंद कर लीं। मैं वहाँ लेटी हुई खामोशी में डूबी हुई थी, तभी अचानक मुझे वो समय याद आया जब मैं और किज़ुकी मोटरसाइकिल पर घूमने गए थे। मुझे याद आया कि वो भी पतझड़ का मौसम था। कितने साल पहले का पतझड़? हाँ, चार साल। मुझे किज़ुकी की चमड़े की जैकेट की महक और उस लाल यामाहा 125cc बाइक की तेज़ आवाज़ याद आ गई। हम समुद्र

तट के किनारे एक दूर जगह पर गए थे और उसी शाम थककर वापस आ गए थे। रास्ते में कुछ खास नहीं हुआ, लेकिन मुझे वो सब अच्छी तरह याद है। पतझड़ की तेज़ हवा मेरे कानों में गूंज रही थी और आसमान की ओर देखते हुए, किज़ुकी की जैकेट को हाथों से पकड़े हुए, मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं अंतरिक्ष में उड़ जाऊँगी।

मैं काफी देर तक वहीं लेटा रहा, मेरा मन एक याद से दूसरी याद में खोया रहता रहा। पता नहीं क्यों, इस कमरे में लेटने से मुझे वो पुरानी यादें ताजा हो रही थीं जिन्हें मैंने पहले शायद ही कभी याद किया था।

उनमें से कुछ सुखद थे, लेकिन कुछ में उदासी की झलक थी।

यह सिलसिला कब तक चलता रहा? मैं यादों के उस सैलाब में इतना डूबा हुआ था (और वह सचमुच एक सैलाब था, जैसे चट्टानों से झरना फूट रहा हो) कि मुझे पता ही नहीं चला कि नाओको ने चुपके से दरवाजा खोला और अंदर आ गई। मैंने आँखें खोलीं, और वह वहीं थी। मैंने अपना सिर उठाया और कुछ देर तक उसकी आँखों में देखा। वह सोफे के आर्मरेस्ट पर बैठी मुझे देख रही थी। पहले तो मुझे लगा कि शायद वह मेरी यादों की कोई काल्पनिक छवि है। लेकिन वह असली नाओको थी।

"सो रहे हो?" उसने फुसफुसाते हुए पूछा।

"नहीं," मैंने कहा, "बस सोच रहा था।" मैं उठकर बैठ गया और पूछा, "आप कैसे हैं?"

"मैं ठीक हूँ," उसने एक धुंधली, दूर की सी मुस्कान के साथ कहा। "लेकिन मेरे पास ज़्यादा समय नहीं है। मुझे अभी यहाँ नहीं होना चाहिए। मैं बस एक मिनट के लिए आई थी और मुझे तुरंत वापस जाना है। क्या आपको मेरे बाल पसंद नहीं हैं?"

"बिल्कुल नहीं," मैंने कहा। "यह प्यारा है।" उसके बाल एक साधारण स्कूली छात्रा की तरह 124 नंबर पर थे।

उसका हेयरस्टाइल ऐसा था कि एक तरफ के बाल हेयरस्लाइड से बंधे हुए थे, ठीक वैसे ही जैसे वो पुराने दिनों में रखती थी। ये उस पर बहुत जंच रहा था, मानो वो हमेशा से ऐसे ही बाल रखती आई हो। वो मध्य युग की वुडब्लॉक प्रिंट्स में दिखने वाली खूबसूरत छोटी बच्चियों जैसी लग रही थी।

"ये तो बहुत झंझट का काम है, इसलिए मैं रेइको से कटवाती हूँ। क्या तुम्हें सच में लगता है कि ये प्यारा है?"

"वास्तव में।"

"मेरी माँ को यह बिल्कुल पसंद नहीं है।" उसने हेयरस्लाइड खोला, बालों को नीचे लटकाया, उंगलियों से उन्हें संवारा और फिर बंद कर दिया। यह तितली के आकार का था।

"हम तीनों के मिलने से पहले मैं तुमसे अकेले में मिलना चाहता था। ऐसा नहीं था कि मुझे कुछ खास कहना था। मैं बस तुम्हारा चेहरा देखना चाहता था और तुम्हारी मौजूदगी की आदत डालना चाहता था। वरना, मुझे तुम्हें दोबारा जानने में दिक्कत होगी। मैं लोगों के साथ बहुत बुरा बर्ताव करता हूँ।"

"तो?" मैंने पूछा। "क्या यह काम कर रहा है?"

"थोड़ा सा," उसने अपने बालों की लट को फिर से छूते हुए कहा। "लेकिन समय खत्म हो गया है। मुझे जाना होगा।"

मेंने सिर हिलाया।

"टोरू," उसने कहना शुरू किया, "मैं आपसे मिलने आने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करती हूँ। इससे मुझे बहुत खुशी हुई है। लेकिन अगर यहाँ रहना आपको किसी भी तरह से बोझ लग रहा है, तो मुझे बताने में बिल्कुल भी संकोच न करें। यह एक खास जगह है, यहाँ का अपना एक

खास सिस्टम है, और कुछ लोग इसमें शामिल नहीं हो पाते। इसलिए अगर आपको ऐसा लगता है, तो कृपया ईमानदारी से मुझे बता दें। मुझे बुरा नहीं लगेगा। हम यहाँ एक-दूसरे के प्रति ईमानदार हैं। हम एक-दूसरे से हर तरह की बातें पूरी ईमानदारी से बताते हैं।"
मैंने कहा, "मैं तुम्हें बताऊंगा। मैं ईमानदार रहूंगा।"
नाओको सोफे पर बैठ गई और मेरे कंधे से टिक गई। जब मैंने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा, तो उसने अपना सिर मेरे कंधे पर टिका दिया और अपना चेहरा मेरी गर्दन से लगा लिया। वह कुछ देर तक उसी तरह रही, मानो मेरा तापमान नाप रही हो। उसे थामे हुए मुझे सीने में गर्माहट महसूस हुई। थोड़ी देर बाद, वह बिना कुछ कहे खड़ी हो गई और उतनी ही खामोशी से दरवाजे से बाहर चली गई, जितनी खामोशी से वह अंदर आई थी।
125

नाओको के चले जाने के बाद, मैं सोफे पर सो गया। मैंने ऐसा करने का इरादा नहीं किया था, लेकिन मुझे वैसी गहरी नींद आ गई जैसी मुझे लंबे समय से नहीं आई थी, और मुझे नाओको की मौजूदगी का एहसास हो रहा था। रसोई में नाओको के इस्तेमाल किए हुए बर्तन थे, बाथरूम में नाओको का टूथब्रश था, और बेडरूम में वह पलंग था जिस पर नाओको सोती थी। उसके इस फ्लैट में चैन से सोते हुए, मैंने अपने शरीर की हर कोशिका से थकान को बूंद-बूंद करके निचोड़ लिया। मैंने सपने में धुंधली रोशनी में एक तितली को नाचते हुए देखा।
जब मैं दोबारा जागा, तो मेरी घड़ी की सुइयां 4.35 बज रही थीं।
रोशनी बदल गई थी, हवा थम गई थी, बादलों का आकार अलग था। नींद में मुझे पसीना आ गया था, इसलिए मैंने अपने बैग से एक छोटा तौलिया

निकालकर चेहरा पोंछा और एक नई बनियान पहन ली। रसोई में जाकर मैंने थोड़ा पानी पिया और सिंक के ऊपर वाली खिड़की से बाहर देखने लगा। मेरी नज़र सामने वाली इमारत की खिड़की पर थी, जिसके अंदर कागज़ से बनी कई आकृतियाँ लटकी हुई थीं - एक चिड़िया, एक बादल, एक गाय, एक बिल्ली, सभी को कुशलता से छायांकित करके एक साथ जोड़ा गया था। पहले की तरह, आसपास किसी के होने का कोई आभास नहीं था, और किसी भी तरह की कोई आवाज़ नहीं थी। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी बेहद अच्छी तरह से संरक्षित खंडहर में अकेला रह रहा हूँ।

शाम पांच बजे के कुछ देर बाद लोग एरिया सी में वापस आने लगे। रसोई की खिड़की से बाहर देखते हुए मैंने तीन महिलाओं को नीचे से गुजरते देखा। तीनों ने टोपी पहन रखी थी जिससे उनकी उम्र का अंदाजा नहीं लग पा रहा था, लेकिन उनकी आवाज़ से लग रहा था कि वे बहुत जवान नहीं थीं। उनके एक कोने से ओझल होने के कुछ ही देर बाद उसी दिशा से चार और महिलाएं दिखाई दीं और पहले समूह की तरह ही उसी कोने से ओझल हो गईं। चारों ओर शाम का उदास माहौल छाया हुआ था। बैठक की खिड़की से मुझे पेड़ और पहाड़ियों की एक श्रृंखला दिखाई दे रही थी। पहाड़ी की चोटी के ऊपर हल्की धूप की एक पतली सी लकीर तैर रही थी।

नाओको और रेइको शाम 5:30 बजे फिर से मिले। नाओको और मैंने औपचारिक अभिवादन किया, मानो हम पहली बार मिल रहे हों। वह सचमुच थोड़ी शर्मिंदा लग रही थी। रेइको ने मेरी पढ़ी हुई किताब पर ध्यान दिया और पूछा कि यह कौन सी किताब है। मैंने उसे बताया, थॉमस मान की 'द मैजिक माउंटेन'।

"आप इस तरह की किताब को इस जगह पर कैसे ला सकते हैं?" उसने

पूछा।

उसने मांग की। बेशक, वह सही थी।
फिर रेइको ने हम तीनों के लिए कॉफी बनाई। मैंने नाओको को स्टॉर्म ट्रूपर के अचानक गायब होने और आखिरी बार उसे देखने के बारे में बताया, जब उसने मुझे जुगनू दिया था।
“मुझे बहुत दुख है कि वह चला गया,” उसने कहा। “मैं उसके बारे में और भी कहानियां सुनना चाहती थी।” रीको ने पूछा कि स्टॉर्म ट्रूपर कौन था, तो मैंने उसे उसकी शरारतों के बारे में बताया और वह खूब हंसी। जब तक स्टॉर्म ट्रूपर की कहानियां सुनाई जाती रहीं, दुनिया में शांति छाई रही और हंसी गूंजती रही।
शाम छह बजे हम मुख्य भवन के भोजन कक्ष में रात का भोजन करने गए।
नाओको और मैंने तली हुई मछली, हरी सलाद, उबली हुई सब्जियां, चावल और मिसो सूप खाया। रीको ने पास्ता सलाद और कॉफी से ही काम चलाया और फिर एक और सिगरेट पी ली।
उन्होंने स्पष्टीकरण देते हुए कहा, "उम्र बढ़ने के साथ आपको इतना अधिक खाने की जरूरत नहीं होती है।"
भोजन कक्ष में लगभग 20 अन्य लोग मौजूद थे। जब हम खाना खा रहे थे, कुछ नए लोग आए, और कुछ लोग चले गए। लोगों की उम्र में विविधता को छोड़कर, यह दृश्य काफी हद तक मेरे छात्रावास के भोजन कक्ष जैसा ही था। फर्क सिर्फ इतना था कि लोग एक समान स्वर में बात कर रहे थे। न कोई तेज़ आवाज़ में बोल रहा था, न कोई फुसफुसा रहा था, न कोई ज़ोर से हंस रहा था, न कोई सदमे में चिल्ला रहा था, न कोई बढ़ा-चढ़ाकर इशारे कर रहा था, बस शांत बातचीत हो रही थी, सब एक

ही स्तर पर। लोग तीन से पांच के समूहों में खाना खा रहे थे, हर समूह में एक ही व्यक्ति बोल रहा था, जिसे बाकी लोग सिर हिलाकर और रुचि से कुछ बुदबुदाकर सुन रहे थे, और जब वह व्यक्ति बोलना समाप्त कर लेता, तो दूसरा व्यक्ति बातचीत शुरू कर देता। मैं समझ नहीं पा रहा था कि वे क्या कह रहे थे, लेकिन उनके बोलने का तरीका मुझे दोपहर में देखे गए उस अजीब टेनिस खेल की याद दिला रहा था। मैंने सोचा कि क्या नाओको भी उनके साथ होते हुए इसी तरह बोलती होगी और अजीब बात यह है कि मुझे अकेलेपन और ईर्ष्या का मिला-जुला एहसास हुआ।
मेरे पीछे वाली मेज पर, सफेद कपड़ों में एक गंजा आदमी, जो बिल्कुल डॉक्टर जैसा लग रहा था, चश्मे पहने एक घबराए हुए युवक और गिलहरी जैसे चेहरे वाली अधेड़ उम्र की महिला को 127 के प्रभावों के बारे में बता रहा था।

पेट के रसों के स्राव से भारहीनता उत्पन्न होती है। दोनों बीच-बीच में "हे भगवान!" या "सचमुच?" कहते हुए सुनते रहे, लेकिन जैसे-जैसे मैं उस गंजे आदमी के बोलने के अंदाज़ को सुनता गया, मेरा यह विश्वास कम होता गया कि, भले ही उसने सफेद कोट पहना हो, वह सचमुच एक डॉक्टर था।
भोजन कक्ष में किसी ने भी मुझ पर विशेष ध्यान नहीं दिया। किसी ने घूरा नहीं, यहाँ तक कि किसी को यह भी नहीं लगा कि मैं वहाँ मौजूद हूँ। मेरी उपस्थिति पूरी तरह से स्वाभाविक घटना रही होगी।
हालांकि, एक बार सफेद कपड़े पहने उस व्यक्ति ने घूमकर मुझसे पूछा, "आप यहां कितने दिन रुकेंगे?"
मैंने कहा, "दो रातें। मैं बुधवार को रवाना हो जाऊंगा।"
"साल के इस समय यहाँ का मौसम अच्छा होता है, है ना? लेकिन सर्दियों

में फिर आना। जब चारों ओर बर्फ ही बर्फ होती है, तब तो और भी खूबसूरत लगता है।"
"जब तक बर्फ गिरेगी, तब तक नाओको शायद यहां से चली जाएगी," रेइको ने उस आदमी से कहा।
"सच है, लेकिन फिर भी, सर्दियाँ वाकई बहुत अच्छी होती हैं," उसने गंभीर भाव से दोहराया। मुझे इस बात पर संदेह होने लगा कि वह डॉक्टर है या नहीं।
"आप लोग किस बारे में बात करते हैं?" मैंने रेइको से पूछा, जिसे मेरी बात पूरी तरह समझ नहीं आई।
हम किस बारे में बात करते हैं? बस आम बातें। उस दिन क्या हुआ, या हमने कौन सी किताबें पढ़ीं, या कल का मौसम कैसा रहेगा, वगैरह। मुझे यह मत बताना कि तुम सोच रहे हो कि लोग खड़े होकर चिल्लाने लगते हैं जैसे:
"अगर आज रात कोई ध्रुवीय भालू तारे खा जाए तो कल बारिश होगी!"
"नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं," मैंने कहा। "मैं तो बस यह सोच रहा था कि ये सारी धीमी आवाज़ में हो रही बातचीत किस बारे में है।"
"यह एक शांत जगह है, इसलिए लोग धीरे-धीरे बात करते हैं," नाओको ने कहा। उसने अपनी प्लेट के किनारे मछली की हड्डियों का एक साफ-सुथरा ढेर बनाया और रुमाल से अपना मुंह पोंछा। "यहाँ ज़ोर से बोलने की कोई ज़रूरत नहीं है।"
आपको किसी को कुछ भी समझाने की जरूरत नहीं है, और न ही आपको किसी का ध्यान आकर्षित करने की जरूरत है।"
"मुझे नहीं लगता," मैंने कहा, लेकिन जब मैंने उस शांत वातावरण में अपना भोजन किया, तो मुझे लोगों की चहल-पहल की कमी महसूस होने पर आश्चर्य हुआ। मैं

मुझे हंसी और बेवजह चिल्लाने और बढ़ा-चढ़ाकर बातें करने की आवाजें सुनाई दे रही थीं। पिछले कुछ महीनों में मैं इसी तरह के शोर से ऊब चुका था, लेकिन इस असामान्य रूप से शांत कमरे में बैठकर मछली खाते हुए भी मैं आराम नहीं कर पा रहा था। भोजन कक्ष में किसी विशेष मशीन-टूल व्यापार मेले जैसा माहौल था। किसी विशेष क्षेत्र में गहरी रुचि रखने वाले लोग एक खास जगह पर इकट्ठा होते थे और ऐसी जानकारी का आदान-प्रदान करते थे जिसे केवल वे ही समझ पाते थे।

रात के खाने के बाद कमरे में वापस आकर नाओको और रेइको ने बताया कि वे एरिया सी के सार्वजनिक स्नानघर जा रही हैं और अगर मुझे सिर्फ़ शॉवर लेने में कोई आपत्ति न हो, तो मैं उनके बाथरूम का इस्तेमाल कर सकता हूँ। मैंने कहा, ठीक है, और उनके जाने के बाद मैंने कपड़े उतारे, शॉवर लिया और बाल धोए। मुझे किताबों की अलमारी में बिल इवांस का एक एल्बम मिला और मैं बाल सुखाते हुए उसे सुन रहा था, तभी मुझे याद आया कि यही वो रिकॉर्ड था जो मैंने नाओको के जन्मदिन की रात उसके कमरे में बजाया था, जिस रात वो रोई थी और मैंने उसे अपनी बाहों में भर लिया था। ये सब सिर्फ़ छह महीने पहले की बात थी, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे बहुत पुराने समय की कोई घटना हो।

शायद मुझे ऐसा इसलिए लगा क्योंकि मैंने इसके बारे में बहुत बार सोचा था - इतनी बार कि इसने समय के प्रति मेरी समझ को ही बिगाड़ दिया था।

चाँद इतना चमकीला था कि मैंने बत्तियाँ बुझा दीं और बिल इवांस के पियानो वादन को सुनने के लिए सोफे पर लेट गया। खिड़की से आती चाँदनी लंबी परछाइयाँ बना रही थी और दीवारों पर हल्की स्याही के छींटे पड़ रहे थे। मैंने अपने बैग से एक पतली धातु की बोतल निकाली, उसमें

भरी ब्रांडी को मुँह में भर लिया, उसकी गर्माहट को धीरे-धीरे गले से पेट तक जाने दिया, और वहाँ से उसे शरीर के हर अंग में फैलते हुए महसूस किया। आखिरी घूंट के बाद, मैंने बोतल बंद की और उसे वापस अपने बैग में रख लिया। अब चाँदनी संगीत के साथ झूमती हुई प्रतीत हो रही थी।
बीस मिनट बाद नाओको और रेइको नहाकर वापस आईं।
"अरे! यहाँ तो इतना अंधेरा था कि हमें लगा कि तुम अपना सामान पैक करके टोक्यो वापस चली गई हो!" रेइको ने हैरानी से कहा।
मैंने कहा, "बिल्कुल नहीं। मैंने इतने सालों में इतना चमकीला चाँद नहीं देखा था। मैं इसे बिना बत्ती जलाए देखना चाहता था।"

"वैसे ये बहुत प्यारा है," नाओको ने कहा। "रेइको, क्या हमारे पास पिछली बार बिजली कटने के बाद बची हुई मोमबत्तियाँ अभी भी हैं?"
"शायद, रसोई के किसी दराज में।"

नाओको रसोई से एक बड़ी, सफेद मोमबत्ती ले आई। मैंने उसे जलाया, थोड़ा सा मोम एक प्लेट में टपकाया और उसे सीधा खड़ा कर दिया। रेइको ने लौ से सिगरेट जलाई। हम तीनों इस शांत वातावरण में मोमबत्ती के सामने बैठे थे, मानो हम ही दुनिया के किसी दूर कोने में बचे हों। चांदनी की स्थिर परछाइयाँ और मोमबत्ती की रोशनी की लहराती परछाइयाँ फ्लैट की सफेद दीवारों पर मिल गईं और आपस में घुलमिल गईं। नाओको और मैं सोफे पर एक-दूसरे के बगल में बैठे थे, और रेइको हमारे सामने रखी झूला कुर्सी पर आराम से बैठ गई।
"थोड़ी वाइन कैसी रहेगी?" रेइको ने मुझसे पूछा।
"क्या आपको शराब पीने की अनुमति है?" मैंने कुछ आश्चर्य के साथ

पूछा।
"वैसे, सच में नहीं," रेइको ने थोड़ी शर्मिंदगी के साथ कान की लोब खुजाते हुए कहा। "लेकिन वे इसे ज़्यादा अहमियत नहीं देते। अगर सिर्फ़ वाइन या बीयर हो और आप ज़्यादा न पीते हों। मेरे स्टाफ में एक दोस्त है जो कभी-कभार मुझे थोड़ी सी पिला देता है।"
"हम लोग ड्रिंक पार्टी करते हैं," नाओको ने शरारती अंदाज में कहा।
"केवल हम दोनों।"
मैंने कहा, "यह अच्छा है।"
रेइको ने फ्रिज से सफेद वाइन की एक बोतल निकाली, उसे कॉर्कस्क्रू से खोला और तीन गिलास निकाले। वाइन का स्वाद साफ और स्वादिष्ट था, मानो घर का बना हो। रिकॉर्ड खत्म होने पर, रेइको ने अपने बिस्तर के नीचे से गिटार निकाला और उसे बड़े प्यार से ट्यून करने के बाद बाख की एक धीमी धुन बजानी शुरू कर दी।
वह कभी-कभी अपनी उंगलियों की लय खो देती थी, लेकिन यह असली बाख का संगीत था, सच्ची भावना के साथ - गर्मजोशी से भरा, आत्मीय और प्रदर्शन के आनंद से परिपूर्ण।
"मैंने यहीं गिटार बजाना शुरू किया," रेइको ने कहा। "कमरों में पियानो तो हैं ही नहीं। मैंने खुद ही सीखा है, और मेरे हाथ गिटार बजाने के लिए उतने अच्छे नहीं हैं, इसलिए 130

मैं शायद कभी इसमें माहिर न हो पाऊं, लेकिन मुझे यह वाद्य यंत्र बहुत पसंद है। यह छोटा, सरल और आसान है, बिल्कुल एक आरामदायक छोटे कमरे जैसा।
उसने बाख का एक और छोटा सा टुकड़ा बजाया, जो किसी संगीत श्रृंखला का हिस्सा था। मोमबत्ती की लौ पर नज़रें गड़ाए, शराब की

चुस्कियाँ लेते हुए, रेइको का बाख संगीत सुनते हुए, मुझे अपने अंदर का तनाव धीरे-धीरे कम होता हुआ महसूस हुआ। जब रेइको ने बाख बजाना समाप्त किया, तो नाओको ने उससे बीटल्स का एक गाना बजाने को कहा।

"अनुरोध करने का समय आ गया है," रेइको ने मेरी ओर आँख मारते हुए कहा। "वह मुझसे हर दिन बीटल्स बजवाती है, जैसे मैं उसका संगीत का गुलाम हूँ।"

उनके विरोध के बावजूद, रीको ने एक शानदार "मिशेल" की भूमिका निभाई।

“वाह, बहुत अच्छा गाना है,” उसने कहा। “मुझे ये गाना बहुत पसंद है।” उसने वाइन का एक घूंट लिया और सिगरेट का कश खींचा। “इसे सुनकर ऐसा लगता है जैसे मैं किसी बड़े से मैदान में हल्की बारिश में खड़ी हूँ।”

फिर उसने "नोव्हेयर मैन" और "जूलिया" बजाया। बजाते-बजाते वह बीच-बीच में अपनी आँखें बंद कर लेती और सिर हिलाती रहती। इसके बाद वह फिर से शराब और सिगरेट पीने लगती।

नाओको ने कहा, "नॉर्वेजियन वुड बजाओ।"

रेइको रसोई से चीनी मिट्टी की बनी एक बिल्ली का खिलौना लाई। यह एक सिक्का गठरी थी, और नाओको ने अपने पर्स से 100 यूरो का सिक्का निकालकर उसके खाने में डाल दिया।

मैंने पूछा, "यह सब क्या है?"

नाओको ने कहा, "यह एक नियम है। जब मैं 'नॉर्वेजियन वुड' गाने की फरमाइश करती हूँ, तो मुझे बैंक में 100 यूरो जमा करने पड़ते हैं। यह मेरा पसंदीदा गाना है, इसलिए मैं इसके लिए भुगतान करना जरूरी समझती हूँ। मैं तभी फरमाइश करती हूँ जब मैं सच में इसे सुनना चाहती हूँ।"

"और इस तरह मुझे सिगरेट के पैसे मिल जाते हैं!" रेइको ने कहा।
रेइको ने अपनी उंगलियों को अच्छे से हिलाया और फिर "नॉर्वेजियन वुड" बजाया। उसने फिर से पूरे भाव से बजाया, लेकिन कभी भी भावुकता को हावी नहीं होने दिया। मैंने अपनी जेब से 100 पाउंड का सिक्का निकाला और बैंक में जमा कर दिया।
"धन्यवाद," रेइको ने प्यारी सी मुस्कान के साथ कहा।
"वह गाना मुझे बहुत उदास कर देता है," नाओको ने कहा। "पता नहीं, शायद मैं खुद को एक घने जंगल में भटकते हुए कल्पना करती हूँ। मैं बिल्कुल अकेली हूँ, ठंड और अंधेरा है, और मुझे बचाने कोई नहीं आता। इसीलिए रेइको 131

जब तक मैं अनुरोध न करूं, वह इसे कभी नहीं बजाता।"
132

"यह तो कैसाब्लांका जैसा लगता है!" रीको ने हंसते हुए कहा।
"नॉर्वेजियन वुड" के बाद उसने कुछ बोसा नोवा संगीत सुना, जबकि मेरी नज़रें नाओको पर टिकी रहीं। जैसा कि उसने अपने पत्र में लिखा था, वह पहले से ज़्यादा स्वस्थ लग रही थी, धूप में तनी हुई, कसरत और बाहरी काम से उसका शरीर सुडौल हो गया था। उसकी आँखें हमेशा की तरह गहरी और निर्मल थीं, और उसके छोटे होंठ अब भी शर्म से काँप रहे थे, लेकिन कुल मिलाकर उसकी सुंदरता एक परिपक्व महिला की तरह बदलने लगी थी। उसकी सुंदरता की छाया में झलकने वाली वह तीखी धार - एक पतले ब्लेड की तरह ठंडक पहुँचाने वाली तेज़ी - अब लगभग गायब हो चुकी थी, और उसकी जगह अब एक अनोखी, शांत और सौम्यता छाई हुई थी। मैं उसकी इस नई, कोमल सुंदरता से प्रभावित

हुआ, और यह सोचकर हैरान रह गया कि एक महिला आधे साल में इतना बदल सकती है। मैं उसकी ओर पहले की तरह ही आकर्षित था, शायद पहले से भी ज़्यादा, लेकिन इस बीच उसने जो खोया था, उस विचार ने मुझे अफ़सोस भी दिलाया। अब उसमें वह आत्मकेंद्रित सुंदरता फिर कभी नहीं होगी जो किशोर लड़कियों में ही अपने आप में एक अलग रूप ले लेती है, और किसी और में नहीं।

नाओको ने कहा कि वह जानना चाहती है कि मैं अपना दिन कैसे बिता रहा हूँ। मैंने छात्र हड़ताल और नागासावा के बारे में बात की। यह पहली बार था जब मैंने उसके बारे में उससे कुछ कहा था। मुझे उसकी विचित्र मानवता, उसके अनूठे दर्शन और उसकी असंतुलित नैतिकता का सटीक वर्णन करना चुनौतीपूर्ण लगा, लेकिन नाओको को अंततः समझ में आ गया कि मैं उसे क्या बताने की कोशिश कर रहा था। मैंने यह बात छुपा दी कि मैं उसके साथ लड़कियों से मिलने जाता था, बस इतना बताया कि छात्रावास में एकमात्र व्यक्ति जिसके साथ मैं वास्तव में समय बिताता था, वह यह अजीब आदमी था। इस बीच, रेइको बाख के उस फ्यूग का अभ्यास कर रही थी जिसे उसने पहले बजाया था, बीच-बीच में शराब और सिगरेट के लिए रुकती रही।

"वह तो अजीब सा इंसान लगता है," नाओको ने कहा। "वह अजीब है," मैंने कहा। "लेकिन तुम उसे पसंद करती हो?"

मैंने कहा, "मुझे पक्का नहीं पता। शायद मैं यह नहीं कह सकता कि मैं उन्हें पसंद करता हूँ। नागासावा पसंद या नापसंद की सीमाओं से परे हैं। वे लोगों को पसंद आने की कोशिश नहीं करते। इस लिहाज से, वे बहुत ईमानदार और गंभीर व्यक्ति हैं। वे किसी को धोखा देने की कोशिश नहीं करते।"

“स्टोइक उन सभी लड़कियों के साथ सो रहा था? ये तो बहुत अजीब बात

है,” 133 वर्षीय नाओको ने कहा।

हंसते हुए। "उसने कितनी लड़कियों के साथ संबंध बनाए हैं?"
मैंने कहा, "शायद अब यह संख्या 80 तक पहुंच गई है। लेकिन उसके मामले में, संख्या जितनी बढ़ती जाती है, प्रत्येक व्यक्तिगत कार्य का महत्व उतना ही कम होता जाता है। और मुझे लगता है कि वह यही हासिल करने की कोशिश कर रहा है।"
और आप इसे 'संयमित' कहते हैं?
"उसके लिए तो यही है।"
नाओको ने मेरी बातों पर एक मिनट तक सोचा। उसने कहा, "मुझे लगता है कि वह मुझसे कहीं ज्यादा मानसिक रूप से बीमार है।"
"मैं भी यही सोचता हूँ," मैंने कहा। "लेकिन वह अपनी सारी विकृतियों को एक तार्किक प्रणाली में ढाल सकता है। वह बहुत बुद्धिमान है। अगर आप उसे यहाँ लाते, तो वह दो दिन में ही बाहर आ जाता। 'ओह, ज़रूर, मुझे सब पता है,' वह कहता। 'मैं यहाँ आप जो कुछ भी कर रहे हैं, सब समझता हूँ।' वह ऐसा ही आदमी है। ऐसा आदमी जिसका लोग सम्मान करते हैं।"
"मुझे लगता है कि मैं प्रतिभाशाली होने के बिल्कुल विपरीत हूं," नाओको ने कहा। "मुझे यहां जो कुछ भी वे कर रहे हैं, वह समझ में नहीं आता - ठीक वैसे ही जैसे मुझे खुद भी समझ में नहीं आता।"
मैंने कहा, "ऐसा इसलिए नहीं है कि तुम बुद्धिमान नहीं हो। तुम सामान्य हो। मुझे अपने बारे में बहुत सी बातें समझ नहीं आतीं। हम दोनों सामान्य हैं: साधारण।"
नाओको ने अपने पैर सोफे के किनारे पर रखे और अपनी ठुड्डी घुटनों पर टिका दी। उसने कहा, "मैं आपके बारे में और जानना चाहती हूँ।"

"मैं बस एक साधारण आदमी हूँ - साधारण परिवार, साधारण शिक्षा, साधारण चेहरा, साधारण परीक्षा परिणाम, साधारण विचार।"
"तुम तो स्कॉट फिट्जगेराल्ड के बहुत बड़े प्रशंसक हो... क्या उन्होंने ही यह नहीं कहा था कि किसी ऐसे व्यक्ति पर भरोसा नहीं करना चाहिए जो खुद को साधारण आदमी कहता हो? तुमने ही तो मुझे वह किताब उधार दी थी!" नाओको ने शरारती मुस्कान के साथ कहा।
"सच है," मैंने कहा। "लेकिन यह कोई दिखावा नहीं है। मैं सचमुच, दिल से मानता हूँ कि मैं एक साधारण इंसान हूँ। क्या आप मुझमें कुछ ऐसा ढूंढ सकते हैं जो साधारण न हो?"
"बिल्कुल कर सकती हूँ!" नाओको ने थोड़ी अधीरता दिखाते हुए कहा। "क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा? तुम्हें क्या लगता है मैंने तुम्हारे साथ क्यों संबंध बनाए? क्या इसलिए कि मैं इतनी नशे में थी कि किसी के भी साथ संबंध बना लेती?"
"नहीं, बिल्कुल नहीं," मैंने कहा।

नाओको काफी देर तक चुप रही और अपने पैरों की उंगलियों को देखती रही। मैं कुछ कह नहीं पा रही थी, इसलिए मैंने शराब का एक और घूंट लिया।
"टोरू, तुमने कितनी लड़कियों के साथ संबंध बनाए हैं?" नाओको ने धीमी आवाज़ में पूछा, मानो यह विचार अभी-अभी उसके मन में आया हो।
मैंने सच-सच जवाब दिया, "आठ या नौ।"
रेइको ने गिटार को अपनी गोद में पटक दिया। "तुम अभी 20 साल की भी नहीं हो!"
उसने कहा, "आप किस तरह का जीवन जी रहे हैं?"

नाओको चुपचाप अपनी उन निर्मल आँखों से मुझे देखती रही। मैंने रेइको को उस पहली लड़की के बारे में बताया जिसके साथ मैंने संबंध बनाए थे और कैसे हमारा ब्रेकअप हुआ था। मैंने समझाया कि मेरे लिए उससे प्यार करना नामुमकिन था। फिर मैंने उसे नागासावा के मार्गदर्शन में एक के बाद एक कई लड़कियों के साथ संबंध बनाने के बारे में बताया।

मैंने नाओको से कहा, "मैं बहाने बनाने की कोशिश नहीं कर रही हूँ, लेकिन मुझे दर्द हो रहा था।"

"मैं तुम्हें लगभग हर हफ्ते देखता था, तुमसे बातें करता था, और यह जानता था कि तुम्हारे दिल में सिर्फ किज़ुकी ही थी। इससे मुझे बहुत दुख हुआ। सच में बहुत दुख हुआ। और मुझे लगता है कि इसीलिए मैंने उन लड़कियों के साथ संबंध बनाए जिन्हें मैं नहीं जानता था।"

नाओको ने कुछ पल तक अपना सिर हिलाया, फिर उसने अपना चेहरा उठाकर मेरी तरफ देखा। "तुमने उस समय मुझसे पूछा था कि मैंने किज़ुकी के साथ कभी संबंध क्यों नहीं बनाए, है ना? क्या तुम अब भी जानना चाहते हो?"

मैंने कहा, "मुझे लगता है कि यह ऐसी चीज है जिसके बारे में मुझे वाकई पता होना चाहिए।"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है," नाओको ने कहा। "मृत लोग हमेशा के लिए मृत ही रहेंगे, लेकिन हमें जीना जारी रखना होगा।"

मैंने सिर हिलाया। रीको ने उसी कठिन अंश को बार-बार बजाया, उसे सही करने की कोशिश में।

"मैं उसके साथ सोने के लिए तैयार थी," नाओको ने अपने बालों की पट्टी खोलते हुए कहा। वह अपने हाथों में तितली के आकार की पट्टी से खेलने लगी। "और ज़ाहिर है, वह भी मेरे साथ सोना चाहता था। इसलिए हमने कोशिश की। हमने बहुत कोशिश की। लेकिन बात नहीं बनी। हम ऐसा

नहीं कर पाए। मुझे तब भी नहीं पता था, और अब भी नहीं पता। मैं उससे प्यार करती थी, और मुझे अपनी वर्जिनिटी खोने की कोई चिंता नहीं थी। वह जो भी चाहता, मैं खुशी-खुशी कर लेती। लेकिन बात नहीं बनी।"
नाओको ने अपने खुले बालों को ऊपर उठाया और उसे स्लिपर से बांध दिया।
135

"मैं गीली नहीं हो सकती थी," उसने धीमी आवाज़ में कहा। "मैंने कभी उसके सामने अपने दिल की बात नहीं कही।"
तो हमेशा दर्द होता था। मेरी त्वचा बहुत रूखी थी, बहुत दर्द होता था। हमने हर मुमकिन कोशिश की - क्रीम वगैरह - लेकिन फिर भी दर्द होता रहा।
तो मैं अपनी उंगलियों या होंठों का इस्तेमाल करती थी। मैं हमेशा उसके लिए ऐसा ही करती थी। आप समझ रहे हैं ना मेरा मतलब।
मैंने चुपचाप सिर हिलाया।
नाओको ने खिड़की से चांद की ओर देखा, जो अब पहले से कहीं ज्यादा बड़ा और चमकीला लग रहा था। "मैं इस सब के बारे में कभी बात नहीं करना चाहती थी," उसने कहा। "मैं इसे अपने दिल में दबा लेना चाहती थी। काश मैं अब भी ऐसा कर पाती। लेकिन मुझे इसके बारे में बात करनी ही होगी। मुझे जवाब नहीं पता। मेरा मतलब है, जब मैं तुम्हारे साथ सोई थी, तब मैं काफी उत्तेजित थी, है ना?"
"हम्म," मैंने कहा।
"मेरे बीसवें जन्मदिन की रात जब तुम मेरे फ्लैट में आए, तभी से मैं उत्तेजित हो गई थी। मैं चाहती थी कि तुम मुझे गले लगाओ। मैं चाहती थी कि तुम मेरे कपड़े उतार दो, मुझे हर जगह छुओ और मेरे अंदर प्रवेश

करो। मैंने पहले कभी ऐसा महसूस नहीं किया था। ऐसा क्यों होता है? ऐसा क्यों होता है? मेरा मतलब है, मैं उससे बहुत प्यार करती थी।"
"और मैं नहीं," मैंने कहा। "तुम जानना चाहते हो कि तुमने मेरे बारे में ऐसा क्यों महसूस किया, जबकि तुम मुझसे प्यार नहीं करते थे?"
"मुझे माफ़ करना," नाओको ने कहा। "मेरा इरादा तुम्हें दुख पहुँचाने का नहीं था, लेकिन तुम्हें इतना समझना होगा: किज़ुकी और मेरा रिश्ता सचमुच बहुत खास था। हम तीन साल की उम्र से साथ थे। हमारा बचपन साथ-साथ बीता: हमेशा साथ, हमेशा बातें करते हुए, एक-दूसरे को पूरी तरह समझते हुए।"
हमने पहली बार जूनियर स्कूल के पहले साल में एक-दूसरे को चूमा था - वो पल बहुत ही प्यारा था। जब मुझे पहली बार मासिक धर्म हुआ, तो मैं दौड़कर उसके पास गई और बच्चों की तरह रोई। हम इतने करीब थे। इसलिए उसके जाने के बाद, मुझे समझ नहीं आया कि दूसरे लोगों से कैसे पेश आऊं। मुझे नहीं पता था कि किसी दूसरे इंसान से प्यार करने का क्या मतलब होता है।
उसने मेज पर रखे अपने वाइन ग्लास को उठाने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन वह उसे गिराकर कालीन पर वाइन फैला दी। मैं नीचे झुका और ग्लास उठाकर मेज पर रख दिया। क्या वह और पीना चाहती है? मैंने पूछा। नाओको थोड़ी देर चुप रही, फिर अचानक ज़ोर से बोलने लगी।

आँखों में आँसू थे, पूरा शरीर काँप रहा था। आगे की ओर झुककर, उसने अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया और उसी घुटन भरी पीड़ा के साथ रोने लगी, जैसे उस रात मेरे साथ रोई थी। रेइको ने अपना गिटार नीचे रख दिया और नाओको के पास बैठकर उसकी पीठ सहलाने लगी। जब उसने नाओको के कंधों पर हाथ रखा, तो नाओको ने अपना चेहरा रेइको की

छाती से ऐसे सटा लिया जैसे कोई बच्चा हो।
रेइको ने मुझसे कहा, "जानती हो, तुम्हारे लिए थोड़ी देर टहलने जाना अच्छा रहेगा। लगभग 20 मिनट। माफ करना, लेकिन मुझे लगता है इससे तुम्हें फायदा होगा।"
मैंने सिर हिलाया और खड़ा हो गया, अपनी शर्ट के ऊपर एक स्वेटर पहन लिया। "मदद करने के लिए धन्यवाद," मैंने रेइको से कहा।
"कोई बात नहीं," उसने आँख मारते हुए कहा। "इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है। चिंता मत करो, जब तक तुम वापस आओगे, वह ठीक हो जाएगी।"
मेरे पैर मुझे सड़क पर ले गए, जो चंद्रमा की विचित्र रूप से अवास्तविक रोशनी से जगमगा रही थी, और जंगल की ओर ले गए।
चांदनी रात में हर आवाज़ में एक अजीब सी गूंज सुनाई दे रही थी। मेरे कदमों की खोखली आवाज़ भी मानो किसी दूसरी दिशा से आ रही हो, जैसे मैं समुद्र की तलहटी में किसी के चलने की आवाज़ सुन रहा हूँ। मेरे पीछे, कभी-कभार, मुझे चटकने या सरसराहट की आवाज़ सुनाई देती थी। जंगल पर एक गहरा सन्नाटा छाया हुआ था, मानो रात के जानवर अपनी सांस रोककर मेरे गुजरने का इंतज़ार कर रहे हों।
पेड़ों के पार जहाँ सड़क ऊपर की ओर ढलान पर जाती थी, मैं बैठ गया और उस इमारत की ओर देखने लगा जहाँ नाओको रहती थी। उसका कमरा पहचानना आसान था।
मुझे बस पीछे की ओर उस एक खिड़की को ढूंढना था जहाँ एक हल्की सी रोशनी टिमटिमा रही थी। मैंने उस रोशनी के बिंदु पर बहुत देर तक ध्यान केंद्रित किया। इसने मुझे किसी आत्मा की बुझती हुई लौ की अंतिम धड़कन जैसा एहसास दिलाया। मैं अपने हाथों से उस बची हुई रोशनी को थाम कर उसे जीवित रखना चाहता था। मैं उसे उसी तरह देखता रहा जैसे

जे गैट्सबी रात-रात भर सामने वाले किनारे पर उस छोटी सी रोशनी को देखता रहता था।

आधे घंटे बाद जब मैं इमारत के मुख्य द्वार पर वापस आया, तो मुझे रेइको के गिटार बजाने की आवाज़ सुनाई दी। मैं सीढ़ियों से ऊपर चढ़ा और फ्लैट के दरवाजे पर दस्तक दी। अंदर नाओको का कोई निशान नहीं था।
137

रेइको कालीन पर अकेली बैठी गिटार बजा रही थी। उसने बेडरूम के दरवाजे की ओर इशारा करके मुझे बताया कि नाओको अंदर है। फिर उसने गिटार को फर्श पर रख दिया और सोफे पर बैठ गई, मुझे भी अपने पास बैठने के लिए कहा और बची हुई शराब को हम दोनों के गिलासों में बाँट लिया।
"नाओको ठीक है," उसने मेरे घुटने को छूते हुए कहा। "चिंता मत करो, उसे बस थोड़ी देर आराम करना है। वह शांत हो जाएगी। वह बस थोड़ी परेशान थी। इस बीच मेरे साथ टहलने चलें?"
"अच्छा," मैंने कहा।
मैं और रेइको स्ट्रीट लैंप से जगमगाती सड़क पर टहलते हुए आगे बढ़े। टेनिस और बास्केटबॉल कोर्ट के पास पहुँचकर हम एक बेंच पर बैठ गए। उसने बेंच के नीचे से एक बास्केटबॉल उठाई और उसे हाथों में घुमाया। फिर उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं टेनिस खेलता हूँ। मैंने कहा, मुझे खेलना आता है, लेकिन मैं इसमें अच्छा नहीं हूँ।
"बास्केटबॉल के बारे में क्या ख्याल है?"
मैंने कहा, "यह मेरा सबसे पसंदीदा खेल नहीं है।"
"तुम्हारा सबसे पसंदीदा खेल कौन सा है?" रेइको ने मुस्कुराते हुए अपनी

आंखों के कोनों को सिकोड़ते हुए पूछा। "लड़कियों के साथ सोने के अलावा।"
"मैं उसमें भी उतनी अच्छी नहीं हूँ," मैंने उसकी बातों से आहत होकर कहा। "मज़ाक कर रही थी," उसने कहा। "गुस्सा मत हो। लेकिन सच में, तुम किस चीज़ में अच्छी हो?"
"कुछ खास नहीं। मुझे कुछ चीजें करना पसंद है।" "उदाहरण के लिए?"
पैदल यात्रा। तैराकी। पढ़ना।
तो फिर आपको अकेले काम करना पसंद है?
"मुझे लगता है ऐसा ही है। मुझे कभी भी ऐसे खेलों में दिलचस्पी नहीं होती जो दूसरों के साथ खेले जाते हैं। मैं उनमें रुचि नहीं ले पाता। मेरी दिलचस्पी खत्म हो जाती है।"
"तो फिर आपको सर्दियों में यहाँ आना होगा। हम क्रॉसकंट्री स्कीइंग करते हैं। मुझे यकीन है कि आपको यह पसंद आएगा, दिन भर बर्फ में घूमना और खूब पसीना बहाना।" स्ट्रीट लैंप के नीचे, रेइको अपने दाहिने हाथ को ऐसे घूर रही थी मानो वह किसी प्राचीन वाद्य यंत्र का निरीक्षण कर रही हो।
मैंने पूछा, "क्या नाओको अक्सर ऐसी हो जाती है?"

"कभी-कभी," रेइको ने अपने बाएं हाथ की ओर देखते हुए कहा।
"कभी-कभी वो उत्तेजित हो जाती है और ऐसे रोने लगती है। लेकिन ये ठीक है। वो अपनी भावनाओं को व्यक्त कर रही है। डरावनी बात तो ये है कि आप ऐसा नहीं कर पाते। जब आपकी भावनाएं अंदर ही अंदर जमा होकर कठोर हो जाती हैं और दब जाती हैं, तब आप बड़ी मुसीबत में पड़ जाते हैं।"

"क्या मैंने कुछ ऐसा कह दिया जो मुझे नहीं कहना चाहिए था?"
"कोई बात नहीं। चिंता मत करो। बस ईमानदारी से अपने मन की बात कहो। यही सबसे अच्छा है। कभी-कभी थोड़ा दुख हो सकता है, और कोई नाओको की तरह नाराज़ भी हो सकता है, लेकिन अंततः सब ठीक ही होगा। अगर तुम नाओको को फिर से ठीक करने के बारे में गंभीर हो, तो तुम्हें यही करना चाहिए। जैसा कि मैंने तुम्हें शुरुआत में बताया था, तुम्हें उसकी मदद करने के बजाय खुद को ठीक करने के बारे में ज़्यादा सोचना चाहिए। यहाँ ऐसा ही होता है। इसलिए तुम्हें ईमानदार रहना होगा और अपने मन में आने वाली हर बात कहनी होगी, कम से कम जब तक तुम यहाँ हो। बाहर की दुनिया में कोई ऐसा नहीं करता, है ना?"
मैंने कहा, "मुझे नहीं लगता।"
उन्होंने कहा, "मैंने यहां अपने समय में हर तरह के लोगों को आते-जाते देखा है।"
"शायद बहुत ज़्यादा लोग हैं। इसलिए मैं आमतौर पर किसी व्यक्ति को देखकर ही बता सकता हूँ कि वह ठीक होगा या नहीं, लगभग सहज ज्ञान से। लेकिन नाओको के मामले में, मैं निश्चित नहीं हूँ। मुझे बिल्कुल भी नहीं पता कि उसके साथ क्या होगा। हो सकता है कि वह अगले महीने पूरी तरह से ठीक हो जाए, या हो सकता है कि वह सालों तक इसी हालत में रहे। इसलिए मैं आपको सबसे सामान्य सलाह के अलावा और कुछ नहीं बता सकता: ईमानदार रहें और एक-दूसरे की मदद करें।"
"नाओको का मामला आपके लिए इतना जटिल क्यों है?"
"शायद इसलिए कि मैं उसे बहुत पसंद करता हूँ। मुझे लगता है कि मेरी भावनाएँ आड़े आ जाती हैं और मैं उसे ठीक से समझ नहीं पाता। मतलब, मैं उसे सच में पसंद करता हूँ। लेकिन इसके अलावा, उसकी कई अलग-अलग समस्याएँ हैं जो आपस में इस तरह उलझी हुई हैं कि उनमें से

किसी एक को सुलझाना मुश्किल है। उन सबको सुलझाने में बहुत लंबा समय लग सकता है, या कोई घटना उन सबको एक साथ उजागर कर सकती है। कुछ ऐसा ही है। इसीलिए मैं उसके बारे में पक्का नहीं कह सकता।"

139

उसने दोबारा बास्केटबॉल उठाई, उसे अपने हाथों में घुमाया और जमीन पर उछाला।

"सबसे ज़रूरी बात यह है कि आप अधीर न हों," रेइको ने कहा। "मेरी एक और सलाह है: अधीर मत होइए। चाहे मामला इतना उलझ जाए कि आप कुछ न कर पाएं, फिर भी हताश मत होइए और अपना आपा खोकर किसी एक धागे को तब तक मत खींचिए जब तक वह खुलने के लिए तैयार न हो। आपको यह समझना होगा कि यह एक लंबी प्रक्रिया होगी और आप धीरे-धीरे, एक-एक करके काम करेंगे। क्या आपको लगता है कि आप ऐसा कर सकते हैं?"

मैंने कहा, "मैं कोशिश कर सकता हूँ।"

"इसमें बहुत लंबा समय लग सकता है, और तब भी शायद वह पूरी तरह से ठीक न हो पाए। क्या आपने इस बारे में सोचा है?" मैंने सिर हिलाया।

"इंतजार करना मुश्किल है," उसने गेंद उछालते हुए कहा। "खासकर तुम्हारी उम्र के किसी व्यक्ति के लिए। तुम बस बैठकर उसके ठीक होने का इंतजार करते हो। बिना किसी समय सीमा या गारंटी के। क्या तुम्हें लगता है कि तुम ऐसा कर सकते हो? क्या तुम नाओको से इतना प्यार करते हो?"

मैंने ईमानदारी से कहा, "मुझे पक्का नहीं पता। नाओको की तरह, मुझे भी ठीक से नहीं पता कि किसी दूसरे व्यक्ति से प्यार करने का क्या

मतलब होता है। हालाँकि उसका मतलब थोड़ा अलग था।"
मैं अपनी पूरी कोशिश करना चाहती हूँ। मुझे करना ही होगा, नहीं तो मुझे पता नहीं चलेगा कि कहाँ जाना है। जैसा कि तुमने पहले कहा था, नाओको और मुझे एक-दूसरे को बचाना होगा। यही हम दोनों के बचने का एकमात्र तरीका है।
"और क्या तुम इसी तरह से उन लड़कियों के साथ सोते रहोगे जिन्हें तुम उठाते हो?"
मैंने कहा, "मुझे भी समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं। तुम्हारा क्या ख्याल है? क्या मुझे बस इंतजार करते रहना चाहिए और हस्तमैथुन करते रहना चाहिए? उस पर भी मेरा पूरा नियंत्रण नहीं है।"
रेइको ने गेंद को जमीन पर रखा और मेरे घुटने पर थपथपाया। "देखो," उसने कहा,
"मैं आपसे यह नहीं कह रहा हूं कि आप लड़कियों के साथ सोना बंद कर दें। अगर आपको इससे कोई दिक्कत नहीं है, तो ठीक है। आखिरकार यह आपकी जिंदगी है, यह ऐसा फैसला है जो आपको लेना है।"
मेरा कहने का मतलब सिर्फ इतना है कि आपको खुद को किसी अप्राकृतिक तरीके से बर्बाद नहीं करना चाहिए। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं? यह बहुत बड़ी बर्बादी होगी। 19 और 20 की उम्र चरित्र के विकास का एक महत्वपूर्ण चरण है, और अगर आप 140 साल की उम्र में खुद को विकृत होने देते हैं, तो यह बहुत बड़ी बर्बादी होगी।

उम्र बढ़ने पर आपको तकलीफ होगी। यह सच है। इसलिए इस बारे में ध्यान से सोचें। अगर आप नाओको का ख्याल रखना चाहते हैं, तो अपना भी ख्याल रखें।
मैंने कहा कि मैं इस बारे में सोचूंगा।

"मैं भी कभी 20 साल का था। एक ज़माने की बात है। क्या आप यकीन करेंगे?"
मुझे इस पर पूरा विश्वास है। बिल्कुल।
"असलियत में?"
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "दिल ही दिल में।"
"और मैं भी प्यारी थी। नाओको जितनी प्यारी तो नहीं, लेकिन काफी प्यारी थी। मेरे चेहरे पर ये झुर्रियां नहीं थीं।"
मैंने कहा कि मुझे उसकी झुर्रियां बहुत पसंद हैं। उसने मुझे धन्यवाद दिया।
"लेकिन किसी दूसरी महिला से कभी यह मत कहना कि तुम्हें उसकी झुर्रियां आकर्षक लगती हैं," उसने आगे कहा। "मुझे यह सुनना अच्छा लगता है, लेकिन मैं अपवाद हूं।"
मैंने कहा, "मैं सावधान रहूंगा।"
उसने अपनी पतलून की जेब से बटुआ निकाला और कार्ड होल्डर से एक तस्वीर मुझे थमा दी। यह लगभग दस साल की एक प्यारी सी लड़की की रंगीन तस्वीर थी, जिसने स्की और चमकीले रंग का स्की सूट पहना हुआ था और वह बर्फ पर खड़ी होकर कैमरे के लिए मीठी मुस्कान दे रही थी।
"कितनी प्यारी है ना? मेरी बेटी," रेइको ने कहा। "उसने मुझे यह जनवरी में भेजा था। वह - क्या? - अब नौ साल की है।"
मैंने तस्वीर लौटाते हुए कहा, "उसकी मुस्कान बिल्कुल तुम्हारी जैसी है।"
रीको ने बटुआ जेब में रख लिया और एक गहरी सांस लेते हुए सिगरेट को होठों के बीच दबाकर जला लिया।
उन्होंने कहा, "मैं एक कॉन्सर्ट पियानोवादक बनने वाली थी। मुझमें प्रतिभा थी, और लोगों ने इसे पहचाना और मेरे बड़े होने के दौरान मेरे लिए बहुत कुछ किया।"
मैंने प्रतियोगिताओं में जीत हासिल की और संगीत विद्यालय में सर्वोच्च

अंक प्राप्त किए, और स्नातक होने के बाद जर्मनी में पढ़ाई करने के लिए मैं पूरी तरह तैयार थी। भविष्य में कोई समस्या नहीं थी। सब कुछ ठीक चल रहा था, और जब कभी कोई गड़बड़ होती तो उसे ठीक करने के लिए हमेशा कोई न कोई मौजूद रहता था। लेकिन फिर एक दिन कुछ ऐसा हुआ, और सब कुछ बिखर गया। मैं संगीत विद्यालय में अपने अंतिम वर्ष में थी और एक काफी महत्वपूर्ण प्रतियोगिता आने वाली थी। मैं उसके लिए लगातार अभ्यास कर रही थी, लेकिन अचानक मेरे बाएं हाथ की छोटी उंगली हिलना बंद हो गई। मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन बस हो गया। मैंने उसे मालिश करने की कोशिश की, 141

मैंने उसे गर्म पानी में डुबो दिया, अभ्यास से कुछ दिन का अवकाश लिया: कुछ भी काम नहीं आया।

तो फिर मैं डर गया और डॉक्टर के पास गया। उन्होंने कई तरह के टेस्ट किए, लेकिन उन्हें कुछ पता नहीं चला। उन्होंने कहा कि उंगली में कोई खराबी नहीं है और नसें भी ठीक हैं: उंगली के हिलना बंद होने का कोई कारण नहीं है। समस्या मनोवैज्ञानिक ही होगी। इसलिए मैं एक मनोचिकित्सक के पास गया, लेकिन उन्हें भी ठीक से समझ नहीं आया कि क्या हो रहा है। उन्होंने कहा, शायद प्रतियोगिता से पहले का तनाव है, और मुझे कुछ समय के लिए पियानो से दूर रहने की सलाह दी।

रेइको ने गहरी सांस ली और धुआं बाहर निकाला। फिर उसने अपनी गर्दन को कुछ बार एक तरफ झुकाया।

"इसलिए मैं आराम करने के लिए इज़ू के तटीय इलाके में अपनी दादी के घर चला गया।"

मैंने सोचा था कि मैं उस प्रतियोगिता को भूल जाऊंगी और आराम करूंगी, कुछ हफ़्ते पियानो से दूर रहकर जो चाहूँ वो करूंगी। लेकिन यह

नामुमकिन था। पियानो ही मेरे दिमाग में बसा हुआ था। शायद मेरी उंगली फिर कभी हिल ही न पाए। अगर ऐसा हुआ तो मैं कैसे जीऊंगी? यही विचार बार-बार मेरे दिमाग में घूम रहे थे। और इसमें कोई हैरानी की बात नहीं: उस समय तक पियानो ही मेरी पूरी ज़िंदगी थी। मैंने चार साल की उम्र में पियानो बजाना शुरू किया था और पियानो के बारे में सोचते हुए ही बड़ी हुई थी। मैंने कभी घर का काम नहीं किया ताकि मेरी उंगलियों को चोट न लगे। लोग मेरी इसी एक चीज़ पर ध्यान देते थे: पियानो बजाने की मेरी प्रतिभा पर। ऐसी लड़की से पियानो छीन लो जो इस तरह पली-बढ़ी हो, तो फिर क्या बचेगा? फिर अचानक! मेरा दिमाग पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो गया। घोर अंधकार छा गया।
उसने अपनी सिगरेट जमीन पर गिरा दी और उसे पैर से बुझा दिया, फिर अपनी गर्दन को कुछ बार और झुकाया।
"कॉन्सर्ट पियानिस्ट बनने का मेरा सपना यहीं टूट गया। मैंने दो महीने अस्पताल में बिताए। अस्पताल पहुँचने के कुछ समय बाद ही मेरी उंगली हिलने लगी, इसलिए मैं संगीत विद्यालय में वापस जा सका और स्नातक की उपाधि प्राप्त कर सका, लेकिन मेरे अंदर कुछ खो गया था। ऊर्जा का कोई रत्न या कुछ और मेरे शरीर से गायब हो गया था - वाष्पित हो गया था। डॉक्टर ने कहा कि मुझमें पेशेवर पियानिस्ट बनने की मानसिक शक्ति नहीं है और मुझे यह विचार छोड़ने की सलाह दी। इसलिए स्नातक होने के बाद मैंने 142

मैं विद्यार्थियों को घर पर पढ़ाती थी। लेकिन मुझे असहनीय पीड़ा हो रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे मेरा जीवन समाप्त हो गया हो। मैं अपनी बीसियों की शुरुआत में थी और मेरे जीवन का सबसे अच्छा हिस्सा बीत चुका था। क्या आप समझ सकते हैं कि यह कितना भयानक होता?

मुझमें इतनी प्रतिभा थी, फिर एक दिन सुबह उठी और सब कुछ खत्म हो गया था। अब कोई प्रशंसा नहीं, कोई मेरी सराहना नहीं करता था, कोई मुझे यह नहीं बताता था कि मैं कितनी अद्भुत थी। मैं दिन-रात घर में पड़ोस के बच्चों को बेयर अभ्यास और सोनाटिना सिखाती रही। मैं इतनी दुखी थी कि हर समय रोती रहती थी। सोचो मैंने क्या खो दिया! मैं उन लोगों के बारे में सुनती जो मुझसे कहीं कम प्रतिभाशाली थे, फिर भी किसी प्रतियोगिता में दूसरा स्थान प्राप्त कर रहे थे या फलां-फलां हॉल में प्रस्तुति दे रहे थे, और मेरी आँखों से आँसू बहने लगते थे।

मेरे माता-पिता दबे पांव चलते थे, कहीं मुझे चोट न लग जाए। लेकिन मैं जानती थी कि वे कितने निराश थे। जिस बेटी पर उन्हें इतना गर्व था, वह अचानक एक पूर्व मानसिक रोगी बन गई थी। वे मेरी शादी भी नहीं करवा पाए। जब आप लोगों के साथ रहते हैं, तो आप उनकी भावनाओं को भांप लेते हैं, और मुझे यह बात बिल्कुल पसंद नहीं थी। मुझे बाहर जाने से डर लगता था, डर लगता था कि पड़ोसी मेरे बारे में बातें कर रहे होंगे। फिर अचानक! वही सब फिर से हुआ - उथल-पुथल, वही अंधेरा। यह तब हुआ जब मैं 24 साल की थी, और इस बार मैंने सात महीने एक पागलखाने में बिताए। यह कोई आम पागलखाना नहीं था, ऊंची दीवारों और बंद दरवाजों वाला। एक गंदी जगह, जहां पियानो भी नहीं थे। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं। मैं बस इतना जानती थी कि मैं जितनी जल्दी हो सके वहां से निकलना चाहती थी, इसलिए मैंने ठीक होने के लिए जी-जान से कोशिश की। सात महीने: बहुत लंबे सात महीने। तभी से मेरे चेहरे पर झुर्रियां पड़नी शुरू हुईं।

रेइको मुस्कुराई, उसके होंठ अगल-बगल फैल गए।

अस्पताल से छुट्टी मिले अभी कुछ ही दिन हुए थे कि मेरी मुलाकात एक आदमी से हुई और मैंने उससे शादी कर ली। वह मुझसे एक साल छोटा

था, एक इंजीनियर था जो हवाई जहाज बनाने वाली कंपनी में काम करता था और मेरा शिष्य था। एक अच्छा आदमी। वह ज्यादा बोलता नहीं था, लेकिन उसका स्वभाव स्नेहपूर्ण और सच्चा था। वह मुझसे छह महीने से सबक ले रहा था कि अचानक उसने मुझसे शादी का प्रस्ताव रख दिया। बस यूं ही - एक दिन जब हम उसके सबक के बाद चाय पी रहे थे। क्या आप विश्वास कर सकते हैं? हमने कभी डेटिंग नहीं की थी, न ही कभी हाथ पकड़े थे। उसने मुझे पूरी तरह से चौंका दिया। मैंने उससे कहा कि मैं शादी नहीं कर सकती।

मैंने कहा कि मैं उसे पसंद करती हूँ और वह एक अच्छा इंसान है, लेकिन कुछ कारणों से मैं उससे शादी नहीं कर सकती। वह जानना चाहता था कि वे कारण क्या हैं, इसलिए मैंने उसे पूरी ईमानदारी से सब कुछ बता दिया - कि मुझे मानसिक परेशानी के कारण दो बार अस्पताल में भर्ती होना पड़ा था। मैंने उसे सब कुछ बताया - कारण क्या था, मेरी हालत कैसी थी, और यह संभावना कि ऐसा दोबारा हो सकता है। उसने कहा कि उसे सोचने के लिए समय चाहिए, और मैंने उसे जितना समय चाहिए उतना लेने के लिए प्रोत्साहित किया। लेकिन जब वह एक हफ्ते बाद अपने पाठ के लिए आया, तो उसने कहा कि वह अब भी मुझसे शादी करना चाहता है। मैंने उससे तीन महीने इंतजार करने को कहा। मैंने कहा कि हम तीन महीने तक एक-दूसरे से मिलेंगे, और अगर उस समय भी वह मुझसे शादी करना चाहेगा, तो हम इस बारे में फिर से बात करेंगे।

हम तीन महीने तक हफ्ते में एक बार मिलते थे। हम हर जगह जाते थे, हर बात करते थे, और मुझे वो बहुत पसंद आने लगा था। जब मैं उसके साथ होती थी, तो मुझे ऐसा लगता था जैसे मेरी ज़िंदगी मुझे वापस मिल

गई हो। उसके साथ अकेले रहने से मुझे अद्भुत राहत मिलती थी: मैं उन सभी भयानक बातों को भूल सकती थी जो घटी थीं। तो क्या हुआ अगर मैं कॉन्सर्ट पियानिस्ट नहीं बन पाई? तो क्या हुआ अगर मैंने मानसिक अस्पतालों में समय बिताया? मेरी ज़िंदगी खत्म नहीं हुई थी। ज़िंदगी अभी भी उन अद्भुत चीजों से भरी थी जिनका मैंने अनुभव नहीं किया था। सिर्फ मुझे ऐसा महसूस कराने के लिए ही मैं उसकी बहुत आभारी थी। तीन महीने बीतने के बाद, उसने मुझसे फिर से शादी का प्रस्ताव रखा। और मैंने उससे ये कहा: "अगर तुम मेरे साथ सोना चाहते हो, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मैं कभी किसी के साथ नहीं सोई हूँ, और मैं तुम्हें बहुत पसंद करती हूँ, इसलिए अगर तुम मुझसे प्यार करना चाहते हो, तो मुझे बिल्कुल भी बुरा नहीं लगेगा। लेकिन मुझसे शादी करना बिल्कुल अलग बात है।" अगर तुम मुझसे शादी करोगी, तो मेरी सारी परेशानियां तुम पर आ जाएंगी, और वे तुम्हारी कल्पना से कहीं ज्यादा बुरी होंगी।

"उसने कहा कि उसे कोई परवाह नहीं, वह सिर्फ मेरे साथ सोना नहीं चाहता था, वह मुझसे शादी करना चाहता था, मेरे अंदर की हर चीज को साझा करना चाहता था। और उसका यही इरादा था। वह ऐसा व्यक्ति था जो केवल वही कहता था जो उसका मन करता था, और जो कहता था वही करता था। इसलिए मैं उससे शादी करने के लिए राजी हो गई। मेरे पास और कोई चारा नहीं था। हमारी शादी हुई, शायद चार महीने बाद। उसने मेरे कारण अपने माता-पिता से झगड़ा किया, और उन्होंने उसे बेदखल कर दिया।"

वह शिकोकू के ग्रामीण इलाके में रहने वाले एक पुराने परिवार से थे। वे

मेरी पृष्ठभूमि की जाँच की गई और पता चला कि मैं दो बार अस्पताल में

भर्ती हो चुकी थी। इसीलिए उन्होंने शादी का विरोध किया। खैर, हमने शादी की रस्म नहीं की। हम सीधे रजिस्ट्री कार्यालय गए और अपना विवाह पंजीकृत करवाया और दो रातों के लिए हाकोन की यात्रा पर चले गए। हमारे लिए इतना ही काफी था: हम खुश थे। और अंत में, मैं शादी के दिन तक कुंवारी रही। मैं 25 साल की थी! क्या आप विश्वास कर सकते हैं?

रेइको ने आह भरी और दोबारा बास्केटबॉल उठा ली।

"मैंने सोचा था कि जब तक मैं उसके साथ हूं, मैं ठीक रहूंगी," उसने आगे कहा। "जब तक मैं उसके साथ हूं, मेरी परेशानियां दूर रहेंगी।"

हमारे जैसी बीमारी के लिए सबसे ज़रूरी चीज़ है भरोसा। अगर मैं खुद को इस व्यक्ति के हाथों में सौंप दूं, तो मैं ठीक रहूंगी। अगर मेरी हालत ज़रा सी भी बिगड़ने लगे—अगर कोई पेंच ढीला हो जाए—तो वह तुरंत ध्यान देगा, और बड़ी सावधानी और धैर्य से उसे ठीक करेगा, पेंच को फिर से कस देगा, सारे उलझे हुए धागों को वापस अपनी जगह पर लगा देगा। अगर हमारे पास यह भरोसा है, तो हमारी बीमारी दूर रहती है। अब कोई दर्द नहीं! मैं बहुत खुश थी! ज़िंदगी बहुत अच्छी थी! मुझे ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने मुझे ठंडे, उग्र समुद्र से निकालकर कंबल में लपेटकर गर्म बिस्तर पर लिटा दिया हो। शादी के दो साल बाद मेरा बच्चा हुआ, और फिर तो मैं सचमुच बहुत व्यस्त हो गई! मैं अपनी बीमारी के बारे में लगभग भूल ही गई थी। मैं सुबह उठती, घर का काम करती, बच्चे की देखभाल करती और जब मेरे पति काम से घर आते तो उन्हें खाना खिलाती। रोज़ाना यही चलता रहता था, लेकिन मैं खुश थी। शायद यह मेरे जीवन का सबसे खुशी का समय था। मुझे आश्चर्य है कि यह कितने साल तक चला? कम से कम 31 साल की उम्र तक तो सब ठीक था। और फिर, अचानक ही, सब कुछ बदल गया! वही सब फिर से हो गया।

मैं पूरी तरह बिखर गई।
रेइको ने सिगरेट जलाई। हवा थम चुकी थी। धुआँ सीधा ऊपर उठा और रात के अंधेरे में गायब हो गया। तभी मुझे एहसास हुआ कि आकाश तारों से भरा हुआ है।
"कुछ हुआ क्या?" मैंने पूछा।
"हाँ," उसने कहा, "कुछ बहुत ही अजीब, जैसे मेरे लिए कोई जाल बिछाया गया हो। अभी भी, इसके बारे में सोचकर ही मुझे कंपकंपी आ जाती है।" रीको ने अपने खाली हाथ से कनपटी को रगड़ा। "मुझे माफ़ करना, आपको 145 सुनना पड़ा।"

ये सब बातें मेरे बारे में हो रही हैं। आप लोग नाओको को देखने आए थे, मेरी कहानी सुनने नहीं।
मैंने कहा, "मैं इसे सुनना ज़रूर चाहूँगा। अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं बाकी का हिस्सा भी सुनना चाहूँगा।"
“खैर,” रेइको ने बात शुरू करते हुए कहा, “जब हमारी बेटी ने किंडरगार्टन में दाखिला लिया, तो मैंने धीरे-धीरे फिर से पियानो बजाना शुरू किया। किसी और के लिए नहीं, बल्कि अपने लिए। मैंने बाख, मोजार्ट और स्कारलाटी की छोटी-छोटी रचनाओं से शुरुआत की। इतने लंबे अंतराल के बाद, ज़ाहिर है, संगीत के प्रति मेरी समझ तुरंत वापस नहीं आई। और मेरी उंगलियां भी पहले की तरह नहीं चल रही थीं। लेकिन पियानो फिर से बजाने में मुझे बहुत खुशी हुई। चाबियों पर हाथ रखते ही मुझे एहसास हुआ कि मुझे संगीत से कितना प्यार था - और मैं इसके लिए कितनी तरसती थी। अपने लिए संगीत प्रस्तुत कर पाना एक अद्भुत अनुभव है।”
जैसा कि मैंने पहले कहा, मैं चार साल की उम्र से ही वाद्य यंत्र बजा रहा था, लेकिन मुझे यह एहसास हुआ कि मैंने कभी भी अपने लिए नहीं

बजाया। मैं हमेशा किसी परीक्षा को पास करने, किसी असाइनमेंट का अभ्यास करने या किसी को प्रभावित करने की कोशिश में लगा रहता था। बेशक, ये सभी महत्वपूर्ण बातें हैं, अगर आप किसी वाद्य यंत्र में महारत हासिल करना चाहते हैं। लेकिन एक निश्चित उम्र के बाद आपको अपने लिए बजाना शुरू करना पड़ता है। संगीत यही है। मुझे प्रतिष्ठित कोर्स छोड़ना पड़ा और 31वां जन्मदिन पार करने के बाद ही मैं आखिरकार यह समझ पाया। मैं अपने बच्चे को किंडरगार्टन भेजता और घर के काम जल्दी-जल्दी निपटाता, फिर एक-दो घंटे अपनी पसंद का संगीत बजाता। अब तक तो सब ठीक था, है ना?
मेंने सिर हिलाया।
"फिर एक दिन पड़ोस की एक महिला मुझसे मिलने आई, जिसे मैं कम से कम सड़क पर नमस्ते करने लायक तो जानती ही थी। उसने मुझसे अपनी बेटी को पियानो सिखाने के लिए कहा। मैं उसकी बेटी को जानती तो नहीं थी - हालाँकि हम एक ही मोहल्ले में रहते थे, फिर भी हमारे घर काफी दूर थे - लेकिन उस महिला के अनुसार, उसकी बेटी मेरे घर के पास से गुजरती थी और मुझे पियानो बजाते सुनना उसे बहुत पसंद था। उसने मुझे कहीं देखा भी था, और अब वह अपनी माँ से मुझे सिखाने देने के लिए ज़िद कर रही थी। वह स्कूल के चौथे साल में थी।"

और उसने कई लोगों से सबक लिया था, लेकिन किसी न किसी कारण से चीजें ठीक नहीं रहीं और अब उसके पास कोई शिक्षक नहीं था।
मैंने उसे मना कर दिया। कई सालों से मुझे कोई प्रशिक्षण नहीं मिला था, और भले ही किसी बिल्कुल नए शिक्षक को पढ़ाना मेरे लिए समझदारी भरा कदम हो सकता था, लेकिन कई सालों से प्रशिक्षण ले रहे किसी व्यक्ति से सीखना मेरे लिए नामुमकिन था। इसके अलावा, मैं अपने बच्चे

की देखभाल में बहुत व्यस्त थी, और हालांकि मैंने उस महिला से यह नहीं कहा, लेकिन कोई भी ऐसे बच्चे को संभाल नहीं सकता जो लगातार शिक्षक बदलता रहता है। तब उस महिला ने मुझसे कम से कम अपनी बेटी से एक बार मिलने की गुजारिश की। वह काफी दृढ़ निश्चयी महिला थी और मैं समझ गई थी कि वह मुझे इतनी आसानी से नहीं छोड़ने वाली, इसलिए मैं उस लड़की से मिलने के लिए राजी हो गई।

लेकिन ज़रा उससे मिलिए। तीन दिन बाद वो लड़की अकेले ही घर आई। वो बिलकुल एक फरिश्ते जैसी थी, उसकी खूबसूरती बेदाग, मीठी और पारदर्शी थी। मैंने ऐसी खूबसूरत बच्ची पहले कभी नहीं देखी थी और आज भी नहीं देखता। उसके लंबे, चमकदार बाल थे, बिल्कुल ताज़ी पिसी हुई स्याही जैसे काले, पतली, सुडौल भुजाएँ और टांगें, चमकीली आँखें और एक छोटा सा कोमल मुँह, मानो अभी-अभी बनाया हो। जब मैंने उसे पहली बार देखा, तो मैं कुछ बोल ही नहीं पाया, वो इतनी खूबसूरत थी। मेरे सोफे पर बैठी उसने मेरे लिविंग रूम को एक शानदार बैठक कक्ष में बदल दिया। उसकी आँखों में सीधे देखना मुश्किल था: मुझे आँखें सिकोड़नी पड़ीं। खैर, वो ऐसी ही थी। मुझे आज भी उसकी तस्वीर साफ-साफ याद है।

रेइको ने अपनी आंखें इस तरह सिकोड़ीं मानो वह सचमुच उस लड़की की कल्पना कर रही हो।

कॉफ़ी पर हम पूरे एक घंटे तक बातें करते रहे - हर तरह की बातें: संगीत, उसका स्कूल, बस सब कुछ। मैं तुरंत समझ गया कि वह बहुत बुद्धिमान है। उसे बातचीत करने का तरीका आता था: उसके विचार स्पष्ट और तीक्ष्ण थे और उसमें सामने वाले की बात निकलवाने की स्वाभाविक प्रतिभा थी। यह लगभग डरावना था। ठीक-ठीक क्या बात थी जो उसे डरावना बनाती थी, मैं उस समय नहीं बता सका। बस मुझे उसकी

बुद्धिमत्ता की भयावहता का एहसास हुआ। लेकिन उसकी उपस्थिति में मैंने अपने विवेक और निर्णय लेने की क्षमता खो दी। वह इतनी युवा और सुंदर थी कि मैं इतना अभिभूत हो गया कि मैंने खुद को एक हीन नमूना, एक अनाड़ी इंसान समझा जो केवल 147

मेरे विकृत और गंदे दिमाग की वजह से मेरे मन में उसके बारे में नकारात्मक विचार आते हैं।"
रेइको ने कई बार अपना सिर हिलाया।
"अगर मैं भी उसकी तरह सुंदर और बुद्धिमान होती, तो मैं एक सामान्य इंसान होती। अगर आप इतनी बुद्धिमान और खूबसूरत हों तो और क्या चाह सकते हैं? अगर हर कोई आपसे इतना प्यार करता है तो आपको अपने से कमजोर लोगों को सताने और उन पर अत्याचार करने की क्या ज़रूरत है? इस तरह व्यवहार करने का भला क्या कारण हो सकता है?"
"क्या उसने तुम्हारे साथ कुछ भयानक किया?"
खैर, मैं बस इतना कहना चाहूँगी कि वह लड़की झूठी थी। वह बीमार थी, बस इतना ही। वह हर बात मनगढ़ंत बनाती थी। और जब वह अपनी कहानियाँ गढ़ रही होती थी, तो उसे खुद भी उन पर यकीन हो जाता था। फिर वह अपने आसपास की चीजों को अपनी कहानी के हिसाब से बदल देती थी। उसका दिमाग इतना तेज़ था कि वह हमेशा आपसे एक कदम आगे रहती थी और उन चीजों का भी ध्यान रख लेती थी जो आम तौर पर आपको अजीब लगतीं, इसलिए आपके मन में कभी यह ख्याल ही नहीं आता था कि वह झूठ बोल रही है। सबसे पहले तो, कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि इतनी प्यारी सी छोटी लड़की आम-सी बातों पर झूठ बोलेगी। मैंने तो बिल्कुल नहीं सोचा था।
उसने छह महीने तक मुझसे ढेरों झूठ बोले, तब जाकर मुझे जरा भी शक

हुआ कि कुछ गड़बड़ है। उसने हर बात पर झूठ बोला, और मुझे कभी शक नहीं हुआ। मुझे पता है यह सुनने में अजीब लगता है।
उसने किस बारे में झूठ बोला?
"जब मैं 'सब कुछ' कहती हूँ, तो मेरा मतलब 'सब कुछ' होता है।" रेइको ने व्यंग्यात्मक हंसी हंसते हुए कहा। "जब लोग किसी बात पर झूठ बोलते हैं, तो उन्हें पहले झूठ के साथ कई और झूठ गढ़ने पड़ते हैं। इसे 'मिथकवाद' कहते हैं।"
जब कोई झूठा व्यक्ति झूठ बोलता है, तो आमतौर पर वह मासूमियत भरा झूठ होता है और ज़्यादातर लोग इसे पहचान लेते हैं। लेकिन उस लड़की के साथ ऐसा नहीं था। खुद को बचाने के लिए, वह बिना पलक झपकाए लोगों को दुख पहुँचाने वाले झूठ बोलती थी। वह हर संभव कोशिश करती थी। और वह जिससे बात कर रही होती थी, उसके हिसाब से कम या ज़्यादा झूठ बोलती थी। अपनी माँ या करीबी दोस्तों से, जो तुरंत झूठ जान जाते थे, वह शायद ही कभी झूठ बोलती थी, या अगर उसे झूठ बोलना ही पड़ता था, तो वह बहुत सावधानी से ऐसे झूठ बोलती थी जो किसी को पता न चले। या अगर झूठ पता भी चल जाता था, तो वह कोई बहाना ढूंढ लेती थी या उसी दौरान माफ़ी मांग लेती थी।

उसकी कोमल आवाज और उसकी खूबसूरत आंखों से बहते आंसू। उस समय कोई भी उससे नाराज नहीं रह सकता था।
"मुझे अब भी नहीं पता कि उसने मुझे क्यों चुना। क्या मैं उसका एक और शिकार था, या मुक्ति का स्रोत? मुझे बस नहीं पता। वैसे, अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अब जब सब कुछ खत्म हो चुका है। अब जब मैं इस हालत में हूँ।"
कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा।

"उसने वही दोहराया जो उसकी माँ ने मुझे बताया था, कि जब वह घर के पास से गुज़र रही थी और मुझे बजाते हुए सुना तो वह भावुक हो गई थी। उसने मुझे गली में भी कई बार देखा था और मुझे पूजने लगी थी। उसने सचमुच यही शब्द इस्तेमाल किया: 'पूजा'। यह सुनकर मैं शर्म से लाल हो गई। मतलब, इतनी सुंदर गुड़िया जैसी बच्ची द्वारा 'पूजा' जाना! हालाँकि, मुझे नहीं लगता कि यह पूरी तरह झूठ था। मैं तीस साल की हो चुकी थी, और मैं कभी भी उसके जितनी सुंदर और प्रतिभाशाली नहीं हो सकती थी, और मुझमें कोई विशेष प्रतिभा भी नहीं थी, लेकिन मुझमें कुछ तो ऐसा रहा होगा जिसने उसे मेरी ओर आकर्षित किया, कुछ ऐसा जो उसमें नहीं था, शायद। यही वजह रही होगी जिसने उसे मुझमें दिलचस्पी दिलाई। अब पीछे मुड़कर देखने पर मुझे यही लगता है। और मैं शेखी नहीं मार रही हूँ।"

"नहीं, मुझे लगता है कि मैं समझ गया हूँ कि आपका क्या मतलब है।"

"वह अपने साथ कुछ संगीत लेकर आई थी और मुझसे पूछा कि क्या वह मेरे लिए बजा सकती है। तो मैंने उसे अनुमति दे दी। यह बाख की रचना थी। उसका प्रदर्शन..."

दिलचस्प। या कहूँ अजीब? यह बिल्कुल भी साधारण नहीं था। ज़ाहिर है, यह निपुणता से तैयार नहीं था। वह किसी पेशेवर संगीत विद्यालय में नहीं गई थी, और जो भी सबक उसने लिए थे, वे अनियमित थे; वह पूरी तरह से स्व-शिक्षित थी। उसकी आवाज़ में कोई प्रशिक्षण नहीं था। संगीत विद्यालय के ऑडिशन में उसे तुरंत अस्वीकार कर दिया जाता। लेकिन उसने इसे बखूबी निभाया। हालाँकि 90 प्रतिशत प्रस्तुति बेहद खराब थी, लेकिन बाकी 10 प्रतिशत में वह मौजूद थी: उसने इसे मधुर बना दिया: यह संगीत था। और यह बाख की रचना थी!

इसलिए मुझे उसमें दिलचस्पी हो गई। मैं जानना चाहता था कि वह कैसी

इंसान है।
"कहने की ज़रूरत नहीं, दुनिया में ऐसे बहुत से बच्चे हैं जो उससे कहीं बेहतर बाख बजा सकते हैं। बीस गुना बेहतर। लेकिन उनके ज़्यादातर प्रदर्शनों में कोई दम नहीं होता। वे खोखले और बेजान होते। इस लड़की की तकनीक खराब थी, लेकिन उसमें कुछ ऐसा खास था जो उसे 149

वह लोगों को - या कम से कम मुझे - अपने प्रदर्शन की ओर आकर्षित करना चाहती थी। इसलिए मैंने सोचा कि उसे सिखाना शायद फ़ायदेमंद हो। बेशक, उस समय उसे पेशेवर पियानोवादक बनाने के लिए प्रशिक्षित करना संभव नहीं था। लेकिन मुझे लगा कि शायद उसे उस तरह की खुशमिजाज पियानोवादक बनाया जा सकता है जैसी मैं तब थी - और आज भी हूँ - एक ऐसी पियानोवादक जो अपने लिए संगीत बनाने का आनंद ले सके। हालाँकि, यह एक खोखली उम्मीद साबित हुई। वह चुपचाप अपने लिए काम करने वाली बच्ची नहीं थी। वह एक ऐसी बच्ची थी जो दूसरों को प्रभावित करने के लिए हर संभव प्रयास करती थी। वह जानती थी कि लोगों को अपनी प्रशंसा और सराहना पाने के लिए उसे क्या करना है। और वह यह भी जानती थी कि मुझे आकर्षित करने के लिए उसे किस तरह का प्रदर्शन करना होगा। मुझे यकीन है कि उसने हर चीज़ का हिसाब लगाया था और मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण अंशों का बार-बार अभ्यास करने में अपनी पूरी जान लगा दी थी। मैं उसे ऐसा करते हुए देख सकती हूँ।
"फिर भी, अब भी, जब मुझे ये सब स्पष्ट हो गया है, मुझे विश्वास है कि यह एक शानदार प्रदर्शन था और अगर मैं इसे दोबारा सुन सकूँ तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाएँगे। उसकी कमियों, उसकी चालाकी और झूठ के बारे में सब कुछ जानने के बावजूद, मुझे अब भी वही महसूस होगा। मैं आपको

बता रहा हूँ, इस दुनिया में ऐसी चीजें भी होती हैं।"
रेइको ने रूखी सी आवाज़ में गला साफ किया और बोलना बंद कर दिया।
"तो क्या आपने उसे अपनी छात्रा के रूप में लिया था?" मैंने पूछा।
"हाँ। हफ्ते में एक क्लास। शनिवार की सुबह। शनिवार को उसके स्कूल में छुट्टी होती थी। वह कभी क्लास मिस नहीं करती थी, कभी देर से नहीं आती थी, वह एक आदर्श छात्रा थी। वह हमेशा अपनी क्लास के लिए अभ्यास करती थी। हर क्लास के बाद, हम केक खाते और बातें करते थे।"
उसी क्षण, रीको ने अपनी घड़ी की ओर देखा, मानो उसे अचानक कुछ याद आ गया हो।
"क्या आपको नहीं लगता कि हमें कमरे में वापस जाना चाहिए? मुझे नाओको की थोड़ी चिंता हो रही है। मुझे यकीन है कि आप उसे भूले नहीं होंगे, है ना?"
"बिल्कुल नहीं," मैं हंसते हुए बोली। "बस बात ये है कि मैं आपकी कहानी में खो गई थी।"
"अगर आप बाकी सुनना चाहें तो मैं आपको कल सुनाऊंगा। यह 150 मिनट का लंबा किस्सा है।"

कहानी - एक बार में सुनने के लिए बहुत लंबी है।" "तुम तो बिलकुल शेहेरज़ादे हो।"
"मुझे पता है," उसने मेरी हंसी में शामिल होते हुए कहा। "तुम कभी टोक्यो वापस नहीं जा पाओगे।"
हम जंगल के रास्ते से वापस लौटे और फ्लैट में आ गए। मोमबत्तियाँ बुझ चुकी थीं और बैठक के कमरे की बत्तियाँ बंद थीं। शयनकक्ष का दरवाजा खुला था और नाइट टेबल पर रखा लैंप जल रहा था, जिसकी हल्की

रोशनी बैठक के कमरे में फैल रही थी। नाओको अंधेरे में सोफे पर अकेली बैठी थी। उसने ढीले-ढाले नीले रंग का गाउन पहन रखा था, जिसका कॉलर उसकी गर्दन पर कसकर लिपटा हुआ था, और उसके पैर सोफे पर मुड़े हुए थे। रेइको उसके पास आई और उसके सिर पर हाथ रख दिया।
"क्या अब आप ठीक हैं?"
"मैं ठीक हूँ। माफ़ करना," नाओको ने धीमी आवाज़ में जवाब दिया। फिर वह मेरी तरफ मुड़ी और दोबारा माफ़ी माँगी। "मैंने तुम्हें डरा दिया होगा।"
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "थोड़ा सा।"
"इधर आओ," उसने कहा। जब मैं उसके बगल में बैठा, तो नाओको, अपने पैर अभी भी मोड़े हुए, मेरी ओर झुकी और उसका चेहरा लगभग मेरे कान से छू गया, मानो वह मुझसे कोई राज़ साझा करने वाली हो। फिर उसने मेरे कान के पास एक कोमल चुंबन दिया।
"माफ़ करना," उसने एक बार फिर कहा, इस बार सीधे मेरे कान में, उसकी आवाज़ दबी हुई थी। फिर वह मुझसे दूर चली गई।
"कभी-कभी," उसने कहा, "मैं इतनी भ्रमित हो जाती हूँ कि मुझे समझ ही नहीं आता कि क्या हो रहा है।"
मैंने कहा, "मेरे साथ तो ऐसा अक्सर होता रहता है।"
नाओको मुस्कुराई और मेरी तरफ देखा।
मैंने कहा, "अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं आपके बारे में और जानना चाहूंगा। यहां आपके जीवन के बारे में। आप हर दिन क्या करते हैं। आप किन लोगों से मिलते हैं।"
नाओको ने इस जगह पर अपनी दिनचर्या के बारे में संक्षिप्त लेकिन स्पष्ट शब्दों में बताया। सुबह छह बजे उठना। फ्लैट में नाश्ता करना। पक्षीशाला की सफाई करना। फिर आमतौर पर खेत का काम। वह सब्जियों की देखभाल करती थी। दोपहर के भोजन से पहले या बाद में, वह या तो

अपने डॉक्टर के साथ एक घंटे का सत्र करती थी या किसी समूह चर्चा में भाग लेती थी। दोपहर में वह उन पाठ्यक्रमों में से चुन सकती थी जिनमें उसकी रुचि हो।

काम या खेल के अलावा, उसे कई चीज़ों में रुचि थी। उसने कई पाठ्यक्रम लिए थे: फ्रेंच, बुनाई, पियानो, प्राचीन इतिहास।
"रेइको मुझे पियानो सिखा रही है," उसने कहा। "वह गिटार भी सिखाती है। हम सभी बारी-बारी से छात्र या शिक्षक बनते हैं। एक व्यक्ति जो धाराप्रवाह फ्रेंच बोलता है, वह फ्रेंच सिखाता है, एक व्यक्ति जो पहले सामाजिक अध्ययन में था, वह इतिहास पढ़ाता है, एक अन्य व्यक्ति जो बुनाई में माहिर है, वह बुनाई सिखाता है: यह वाकई एक शानदार स्कूल है। दुर्भाग्य से, मेरे पास ऐसा कुछ भी नहीं है जो मैं किसी को सिखा सकूं।"
मैंने कहा, "मैं भी नहीं।"
"मैंने यहां अपनी पढ़ाई में विश्वविद्यालय की तुलना में कहीं अधिक ऊर्जा लगाई है। मैं कड़ी मेहनत करता हूं और इसका भरपूर आनंद लेता हूं।"
"रात के खाने के बाद आप क्या करते हैं?"
"रेइको से बात करो, पढ़ो, रिकॉर्ड सुनो, दूसरे लोगों के फ्लैट में जाओ और गेम खेलो, इस तरह की चीजें करो।"
"मैं गिटार का अभ्यास करती हूं और अपनी आत्मकथा लिखती हूं," रेइको ने कहा।
"आत्मकथा?"
"मज़ाक कर रही थी," रेइको हंसते हुए बोली। "हम रात को लगभग दस बजे सोते हैं। है ना बढ़िया जीवनशैली? हम तो बच्चों की तरह सोते हैं।"
मैंने अपनी घड़ी देखी। नौ बजने में कुछ ही मिनट बाकी थे। "लगता है अब

तुम्हें नींद आने लगेगी।"
"कोई बात नहीं। आज हम देर तक जाग सकते हैं," नाओको ने कहा। "मैंने तुम्हें बहुत दिनों से नहीं देखा है, मैं और बातें करना चाहती हूँ। तो चलो बातें करते हैं।"
"जब मैं पहले अकेला था, अचानक मुझे पुराने दिन याद आने लगे," मैंने कहा। "क्या आपको याद है जब किज़ुकी और मैं आपसे अस्पताल में मिलने आए थे? समुद्र किनारे वाले अस्पताल में। मुझे लगता है कि यह कक्षा के पहले साल की बात है।"
"जब मेरी छाती की सर्जरी हुई थी," नाओको ने मुस्कुराते हुए कहा। "हाँ, मुझे याद है। तुम और किज़ुकी मोटरसाइकिल पर आए थे। तुम मेरे लिए चॉकलेट का एक डिब्बा लाए थे और वो सारी चॉकलेट पिघलकर एक साथ चिपक गई थीं। उन्हें खाना बहुत मुश्किल था! पता नहीं, ऐसा लगता है जैसे बहुत समय बीत गया हो।"
"हां, सचमुच। मुझे लगता है कि आप उस समय एक कविता लिख रहे थे, एक लंबी कविता।"
"उस उम्र में सभी लड़कियां कविताएं लिखती हैं," नाओको खिलखिलाकर हंस पड़ी। "152 की याद कैसे आई?"

आपको यह सब अचानक से कैसे पता चला?
मुझे आश्चर्य होता है। समुद्री हवा की खुशबू, ओलियंडर के फूल: पता ही नहीं चला और ये सब मेरे दिमाग में आ गए। क्या किज़ुकी अक्सर आपसे अस्पताल में मिलने आती थी?
"बिल्कुल नहीं! इसके बाद हमारी इस बात पर बहुत बड़ी लड़ाई हुई थी। वह एक बार आया था, फिर तुम्हारे साथ आया, और बस उसके लिए इतना ही था। वह बहुत बुरा था।"

और पहली बार जब वह वहां आया तो एक जगह बैठ नहीं सका और मुश्किल से दस मिनट ही रुका। वह मेरे लिए कुछ संतरे लाया और कुछ बुदबुदाया जो मुझे समझ नहीं आया, फिर उसने मेरे लिए एक संतरा छीला और कुछ और बुदबुदाया और चला गया। उसने कहा कि उसे अस्पतालों से कुछ खास लगाव है।

नाओको हंस पड़ी। "वह हमेशा से ही इन सब बातों को लेकर बच्चों जैसा व्यवहार करता था। मेरा मतलब है, किसी को भी अस्पताल पसंद नहीं होते, है ना? इसीलिए लोग अस्पतालों में भर्ती लोगों से मिलने जाते हैं ताकि उन्हें अच्छा महसूस करा सकें, उनका मनोबल बढ़ा सकें और उन्हें तरोताज़ा कर सकें।"

लेकिन किज़ुकी को यह बात समझ नहीं आई।

"जब हम दोनों आपसे मिलने आए थे, तब वह इतना बुरा नहीं था। वह बिल्कुल अपने सामान्य स्वभाव में था।"

"क्योंकि तुम वहाँ थी," नाओको ने कहा। "तुम्हारे आस-पास वो हमेशा ऐसा ही रहता था। वो अपनी कमज़ोरियों को छुपाने के लिए संघर्ष करता था। मुझे यकीन है कि वो तुम्हें बहुत पसंद करता था। उसने तुम्हें हमेशा अपना सबसे अच्छा पक्ष ही दिखाया। मेरे साथ वो ऐसा नहीं था। मेरे साथ वो बेफिक्र रहता था। उसका मिजाज बहुत बदलता रहता था। एक पल वो खूब बातें करता था, और अगले ही पल उदास हो जाता था। ऐसा अक्सर होता था। बचपन से ही वो ऐसा था। फिर भी उसने खुद को बदलने और सुधारने की कोशिश जारी रखी।"

नाओको ने सोफे पर दोबारा अपने पैर मोड़ लिए।

उसने बहुत कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, और इससे वह बहुत गुस्सा और उदास हो जाता था। उसमें बहुत सी खूबियाँ थीं, लेकिन उसे कभी वह आत्मविश्वास नहीं मिला जिसकी उसे ज़रूरत थी। 'मुझे यह

करना ही होगा, मुझे इसे बदलना ही होगा,' वह अंत तक यही सोचता रहता था। बेचारा किज़ुकी!
"फिर भी," मैंने कहा, "अगर यह सच है कि वह मुझे अपना 153 दिखाने के लिए हमेशा संघर्ष करता रहता था।"

मेरे ख्याल से, वह अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में सफल रहा। उसका सर्वश्रेष्ठ रूप ही मुझे दिखाई दिया।
नाओको मुस्कुराई। "अगर वह तुम्हें यह कहते हुए सुन पाता तो बहुत खुश होता। तुम ही उसके इकलौते दोस्त थे।"
मैंने कहा, "किज़ुकी ही मेरा इकलौता दोस्त था। उससे पहले या उसके बाद, ऐसा कोई नहीं था जिसे मैं सचमुच दोस्त कह सकूँ।"
"इसीलिए मुझे आप दोनों के साथ रहना बहुत अच्छा लगता था। उस समय मुझे उनका सबसे अच्छा रूप ही दिखाई देता था। जब हम तीनों साथ होते थे, तो मैं निश्चिंत हो जाती थी और चिंता करना छोड़ देती थी। वो मेरे सबसे प्यारे पल थे। मुझे नहीं पता आपको कैसा लगता था।"

मैंने सिर हिलाते हुए कहा, "मैं पहले इस बात को लेकर चिंतित रहती थी कि तुम क्या सोच रहे हो।"
"समस्या यह थी कि इस तरह की चीज़ें हमेशा के लिए नहीं चल सकती थीं," नाओको ने कहा। "इतने छोटे-छोटे गोल घेरे बनाए रखना असंभव है। किज़ुकी यह जानती थी, मैं जानती थी, और तुम भी। क्या मैं सही कह रही हूँ?"
मेंने सिर हिलाया।
"सच कहूँ तो," नाओको ने आगे कहा, "मुझे उसकी कमज़ोरी भी उतनी ही पसंद थी जितनी उसकी अच्छाई। उसमें ज़रा भी बुराई या छल नहीं

था। वह कमज़ोर था, बस इतना ही। मैंने उसे यह समझाने की कोशिश की, लेकिन उसने मेरी बात नहीं मानी। वह हमेशा कहता था कि ऐसा इसलिए है क्योंकि हम तीन साल की उम्र से साथ थे। वह कहता था कि मैं उसे बहुत अच्छी तरह जानती हूँ: मैं उसकी खूबियों और कमियों में फर्क नहीं कर सकती, मेरे लिए सब एक जैसे थे। फिर भी, वह मेरे विचार नहीं बदल सका। मैं उससे उतना ही प्यार करती रही, और मुझे कभी किसी और में दिलचस्पी नहीं हुई।"

नाओको ने उदास मुस्कान के साथ मेरी ओर देखा।

"हमारा लड़का-लड़की का रिश्ता भी वाकई बहुत अनोखा था। ऐसा लगता था जैसे हम कहीं शारीरिक रूप से जुड़े हुए हों। अगर हम कभी अलग हो जाते, तो कोई विशेष गुरुत्वाकर्षण बल हमें फिर से एक साथ खींच लाता। जब हम प्रेमी-प्रेमिका बने, तो यह दुनिया की सबसे स्वाभाविक बात थी। इसके बारे में हमें कुछ सोचना या कोई फैसला लेना नहीं पड़ा। हमने 12 साल की उम्र में चुंबन और 13 साल की उम्र में एक-दूसरे को छूना शुरू कर दिया था। मैं उसके कमरे में जाती थी या 154

वो मेरे कमरे में आता और मैं अपने हाथों से उसे संतुष्ट कर देती। मुझे कभी ये ख्याल नहीं आया कि हम हद से ज़्यादा आगे बढ़ रहे हैं। ये तो बस स्वाभाविक रूप से होता था। अगर वो मेरे स्तनों या योनि से खेलना चाहता, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होती, या अगर उसके वीर्य को निकालना चाहता, तो मुझे उसकी मदद करने में भी कोई आपत्ति नहीं होती। मुझे यकीन है कि अगर किसी ने हम पर कुछ गलत करने का आरोप लगाया होता, तो हम दोनों को बहुत बड़ा झटका लगता। क्योंकि हम कुछ गलत नहीं कर रहे थे।

हम वही कर रहे थे जो हमें करना चाहिए था। हमने हमेशा एक-दूसरे को

अपने शरीर के हर अंग दिखाए थे। ऐसा लगता था मानो हम एक-दूसरे के शरीर के मालिक हों। हालांकि, कुछ समय के लिए, हमने यह सुनिश्चित किया कि हम इससे आगे न बढ़ें। हमें मेरे गर्भवती होने का डर था, और उस समय हमें इसे रोकने के तरीके के बारे में लगभग कोई जानकारी नहीं थी... खैर, इसी तरह किज़ुकी और मैं एक साथ बड़े हुए, हाथ में हाथ डाले, एक अटूट जोड़ी। हमें यौन संबंध के दमनकारी प्रभाव या किशोरावस्था में पहुँचने पर आम बच्चों को होने वाले अहंकार के अचानक उभार से होने वाली पीड़ा का लगभग कोई एहसास नहीं था। हम यौन संबंध के बारे में पूरी तरह खुले थे, और जहाँ तक हमारे अहंकार की बात थी, जिस तरह से हम एक-दूसरे के अहंकार को ग्रहण और साझा करते थे, हमें उसका कोई गहरा एहसास नहीं था। क्या आप समझ रहे हैं मेरा मतलब?

मैंने कहा, "मुझे ऐसा ही लगता है।"

"हम एक-दूसरे से अलग नहीं रह सकते थे। इसलिए अगर किज़ुकी जीवित होती, तो मुझे यकीन है कि हम साथ होते, एक-दूसरे से प्यार करते और धीरे-धीरे दुखी होते जाते।"

"नाखुश हो? ऐसा क्यों?"

नाओको ने अपनी उंगलियों से अपने बालों को कई बार पीछे की ओर संवारा। उसने हेयरस्लाइड हटा दी थी, जिसकी वजह से जब वह अपना सिर आगे झुकाती थी तो बाल उसके चेहरे पर आ जाते थे।

"क्योंकि हमें दुनिया को वह चुकाना पड़ता जो हम पर उसका कर्ज था।" उसने मेरी आँखों में देखते हुए कहा, "बड़े होने का दर्द। हमने समय रहते भुगतान नहीं किया, इसलिए अब बिल चुकाने का समय आ गया है। इसीलिए किज़ुकी ने ऐसा किया, और इसीलिए मैं यहाँ हूँ। हम उन बच्चों की तरह थे जो किसी रेगिस्तानी द्वीप पर नंगे बदन बड़े हुए हों। अगर हमें

भूख लगती, तो हम बस 155 उठा लेते।"

केला; अगर हमें अकेलापन महसूस होता, तो हम एक-दूसरे की बाहों में सो जाते। लेकिन ऐसा हमेशा नहीं रहता। हम जल्दी बड़े हो गए और समाज में शामिल होना पड़ा। इसीलिए तुम हमारे लिए इतने महत्वपूर्ण थे। तुम ही थे जो हमें बाहरी दुनिया से जोड़ते थे। हम तुम्हारे सहारे ही बाहरी दुनिया में घुलने-मिलने की पूरी कोशिश कर रहे थे। आखिरकार, यह कामयाब नहीं हुआ, ज़ाहिर है।
मेंने सिर हिलाया।
"मैं नहीं चाहती कि तुम यह सोचो कि हम तुम्हारा इस्तेमाल कर रहे थे। किज़ुकी तुमसे बहुत प्यार करती थी। बस संयोग से, किसी और से हमारा पहला रिश्ता तुमसे ही था। और आज भी है। किज़ुकी भले ही मर गई हो, लेकिन तुम ही हो जो मुझे बाहरी दुनिया से जोड़ती हो। और जैसे किज़ुकी तुमसे प्यार करती थी, वैसे ही मैं भी तुमसे प्यार करती हूँ। हमारा तुम्हें चोट पहुँचाने का कोई इरादा नहीं था, लेकिन शायद हमने पहुँचा दिया; शायद हमने तुम्हारे दिल में गहरा घाव कर दिया। हमने कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसा कुछ हो सकता है।"
नाओको ने अपना सिर फिर से नीचे कर लिया और चुप हो गई।
"अरे, एक कप कोको कैसा रहेगा?" रेइको ने सुझाव दिया।
"अच्छा। मुझे सच में कुछ चाहिए," नाओको ने कहा।
मैंने कहा, "अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं अपने साथ लाई हुई उस ब्रांडी में से थोड़ी सी लेना चाहूंगा।"
"ओह, बिल्कुल," रेइको ने कहा। "क्या मैं एक घूंट ले सकती हूँ?"
"ज़रूर," मैंने हंसते हुए कहा।
रेइको दो गिलास लेकर आई और हमने एक-दूसरे को टोस्ट किया। फिर

वह कोको बनाने के लिए रसोई में चली गई।
"क्या हम किसी खुशनुमा विषय पर बात कर सकते हैं?" नाओको ने पूछा।
मेरे पास बात करने के लिए कुछ भी मज़ेदार नहीं था। मैंने सोचा, काश स्टॉर्म ट्रूपर अभी भी होता! वो तो कहानियों की एक पूरी श्रृंखला को प्रेरित कर सकता था। उनमें से कुछ कहानियाँ सबको खुश कर देतीं। मैं बस इतना ही कर सका कि छात्रावास के लड़कों की गंदी आदतों के बारे में लंबी-चौड़ी बातें करता रहा। मुझे तो इतनी घिनौनी बात करते हुए ही घिन आ रही थी, लेकिन नाओको और रेइको तो हँसते-हँसते लोटपोट हो गईं, क्योंकि ये सब उनके लिए बिल्कुल नया था।
इसके बाद रीको ने मानसिक रोगियों की नकल की। इसमें भी उसे बहुत मज़ा आया। ग्यारह बजे के बाद नाओको को नींद आने लगी, इसलिए रीको ने उसे 156 बजे जाने दिया।

वह सोफे के पीछे झुकी और मुझे एक तकिया, चादर और कंबल पकड़ा दिए।
"अगर आधी रात को किसी का बलात्कार करने का मन करे, तो किसी गलत औरत को मत चुन लेना," उसने कहा। "बाईं ओर के बिस्तर पर पड़ी झुर्रियों रहित लाश नाओको की है।"
"झूठे! मेरा बिस्तर सही है," नाओको ने कहा।
रेइको ने आगे कहा, "वैसे, मैंने दोपहर के कुछ समय के लिए छुट्टी का इंतजाम कर लिया है। क्यों न हम तीनों एक छोटी सी पिकनिक पर चलें? मुझे पास में ही एक बहुत अच्छी जगह पता है।"
मैंने कहा, "अच्छा विचार है।"
महिलाओं ने बारी-बारी से अपने दांत साफ किए और बेडरूम में चली गईं।

मैंने अपने लिए थोड़ी ब्रांडी डाली और सोफे पर लेटकर सुबह से रात तक की सारी घटनाओं पर विचार करने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे दिन बहुत लंबा था। चांदनी में कमरा अभी भी सफेद चमक रहा था।

कभी-कभार बिस्तर की हल्की चरमराहट के अलावा, नाओको और रेइको के सोने वाले शयनकक्ष से शायद ही कोई आवाज़ आ रही थी। जब मैंने अपनी आँखें बंद कीं, तो अँधेरे में छोटी-छोटी आकृतियाँ तैरती हुई प्रतीत हुईं, और मेरे कानों में रेइको के गिटार की गूंज सुनाई दी, लेकिन ये दोनों ही क्षणिक थीं। नींद ने मुझे घेर लिया और गर्म मिट्टी के ढेर में समा लिया। मैंने विलो के पेड़ों का सपना देखा। एक पहाड़ी सड़क के दोनों ओर विलो के पेड़ लगे हुए थे। अनगिनत विलो के पेड़। तेज़ हवा चल रही थी, लेकिन विलो के पेड़ों की शाखाएँ ज़रा भी नहीं हिल रही थीं। ऐसा क्यों? मैंने सोचा, और फिर मैंने देखा कि हर पेड़ की हर शाखा पर छोटे-छोटे पक्षी चिपके हुए थे।

उनके वजन से डालियाँ हिलना बंद हो गईं। मैंने एक छड़ी उठाई और पास की एक डाली पर उससे मारा, ताकि पक्षी भाग जाएँ और डाली हिलने लगे। लेकिन वे नहीं गए। उड़ने के बजाय, वे पक्षी के आकार के धातु के टुकड़ों में बदल गए जो ज़मीन पर गिर पड़े।

जब मैंने अपनी आँखें खोलीं, तो मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अपने सपने का ही अगला भाग देख रही हूँ। चाँदनी से कमरा उसी कोमल सफेद चमक से भरा हुआ था। सहज ही, मैं बिस्तर पर उठ बैठी और धातु के पक्षियों को खोजने लगी, जो ज़ाहिर है वहाँ नहीं थे। इसके बजाय मैंने नाओको को बिस्तर के नीचे, शांत और अकेली बैठी, बाहर की ओर देखती हुई देखा।

खिड़की के पास। उसने अपने घुटने ऊपर खींच रखे थे और ठुड्डी उन पर टिका रखी थी, मानो कोई भूखी अनाथ हो। मैंने अपनी घड़ी ढूंढी जो मैंने

तकिए के पास छोड़ी थी, लेकिन वह वहाँ नहीं थी जहाँ मुझे पता था कि होनी चाहिए। चाँदनी के कोण से मैंने अनुमान लगाया कि सुबह के दो या तीन बजे होंगे। मुझे बहुत प्यास लग रही थी, लेकिन मैंने चुपचाप खड़े रहने और नाओको को देखते रहने का फैसला किया। उसने वही नीली नाइटड्रेस पहनी हुई थी जो मैंने उसे पहले पहने देखा था, और एक तरफ उसके बाल तितलीनुमा हेयरस्टाइल से बंधे हुए थे, जिससे चाँदनी में उसके चेहरे की सुंदरता झलक रही थी। अजीब बात है, मैंने सोचा, उसने सोने से पहले हेयरस्टाइल उतार दी थी।

नाओको चांदनी से आकर्षित होकर बाहर निकली किसी छोटी रात की जीव की तरह एक ही जगह पर जम सी गई। चांदनी की चमक ने उसके होठों की आकृति को और भी उभार दिया। बेहद नाजुक और कमजोर प्रतीत होती हुई, उसकी आकृति उसके दिल की धड़कन या उसके भीतर की भावनाओं के साथ लगभग अगोचर रूप से स्पंदित हो रही थी, मानो वह अंधेरे में बिना आवाज़ के कुछ फुसफुसा रही हो।

मैंने प्यास बुझाने की उम्मीद में पानी पिया, लेकिन रात के सन्नाटे में मेरी आवाज़ बहुत तेज़ थी। मानो यह उसके लिए कोई संकेत हो, नाओको खड़ी हुई और बिस्तर के सिरहाने की ओर सरकी, उसका गाउन हल्की सरसराहट कर रहा था। वह मेरे तकिए के पास ज़मीन पर घुटनों के बल बैठ गई, उसकी निगाहें मुझ पर टिकी थीं। मैंने भी उसे देखा, पर उसकी आँखों ने मुझे कुछ नहीं बताया। अजीब तरह से पारदर्शी, वे मानो किसी दूसरी दुनिया की खिड़कियाँ हों, लेकिन चाहे मैं कितनी भी देर तक उनकी गहराई में देखता रहा, मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। हमारे चेहरे दस इंच से ज़्यादा दूर नहीं थे, लेकिन वह मुझसे मीलों दूर थी।

मैंने हाथ बढ़ाकर उसे छूने की कोशिश की, लेकिन नाओको पीछे हट गई, उसके होंठ हल्के से कांप रहे थे। एक पल बाद, उसने अपने हाथ ऊपर

उठाए और धीरे-धीरे अपने गाउन के बटन खोलने लगी। कुल सात बटन थे। मुझे ऐसा लगा जैसे यह मेरे सपने का ही सिलसिला हो, जब मैंने उसकी पतली, सुंदर उंगलियों को ऊपर से नीचे तक एक-एक करके बटन खोलते देखा। सात छोटे, सफेद बटन: जब उसने सारे बटन खोल दिए, तो नाओको ने गाउन को अपने कंधों से उतार दिया और उसे ऐसे फेंक दिया जैसे कोई कीड़ा अपनी केंचुली उतारता है। उसने 158 बटन पहने हुए थे।

गाउन के नीचे कुछ भी नहीं था। उसने सिर्फ तितली के आकार का हेयरस्लाइड पहना हुआ था।

अब नग्न अवस्था में, बिस्तर के पास घुटनों के बल बैठी हुई, वह मेरी ओर देख रही थी। चाँद की कोमल रोशनी में नहाया हुआ नाओको का शरीर नवजात शिशु के कोमल शरीर की तरह दिलकश चमक रहा था। जब वह हिलती थी - और वह लगभग अदृश्य रूप से हिलती थी - तो उसके शरीर पर प्रकाश और छाया का खेल सूक्ष्म रूप से बदल जाता था। उसके उभरे हुए गोल स्तन, उसके छोटे-छोटे निप्पल, उसकी नाभि का गड्ढा, उसकी कूल्हे की हड्डियाँ और गुप्तांग के बाल, सभी धुंधली छायाएँ बना रहे थे, जिनकी आकृतियाँ किसी शांत झील की सतह पर फैलती लहरों की तरह बदलती रहती थीं।

कितना सुंदर शरीर है! मैंने सोचा। नाओको को इतना सुंदर शरीर कब मिला? पिछली वसंत ऋतु की उस रात, जिस शरीर को मैंने अपनी बाहों में थाम रखा था, उसे क्या हो गया था?

उस रात जब मैं नाओको के शरीर को कोमलता से निर्वस्त्र कर रहा था और वह रो रही थी, तो उसके शरीर ने मुझे अपूर्णता का एहसास कराया था। उसके स्तन सख्त लग रहे थे, निप्पल अजीब तरह से उभरे हुए थे, कूल्हे अजीब तरह से अकड़े हुए थे। बेशक, वह एक खूबसूरत लड़की थी,

उसका शरीर अद्भुत और मोहक था। उस रात इसने मुझे उत्तेजित किया और एक विशाल शक्ति के साथ मुझे अपने साथ बहा ले गया। लेकिन फिर भी, जब मैंने उसे थामा, सहलाया और उसके नग्न शरीर को चूमा, तो मुझे मानव शरीर के असंतुलन और विचित्रता का एक अजीब और शक्तिशाली एहसास हुआ। नाओको को अपनी बाहों में पकड़े हुए, मैं उसे समझाना चाहता था, "मैं अभी तुम्हारे साथ यौन संबंध बना रहा हूँ। मैं तुम्हारे अंदर हूँ। लेकिन वास्तव में यह कुछ भी नहीं है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह दो शरीरों के मिलन के अलावा कुछ नहीं है।"
हम बस एक-दूसरे को वो बातें बता रहे हैं जो दो अपूर्ण शरीरों के आपस में रगड़ने से ही कही जा सकती हैं। ऐसा करके हम अपनी अपूर्णता को साझा कर रहे हैं। लेकिन ज़ाहिर है, मैं ऐसी बात कभी भी इस उम्मीद से नहीं कह सकता था कि कोई उसे समझेगा। मैं बस उसे कसकर पकड़े रहा। और ऐसा करते हुए, मैं उसके शरीर के भीतर एक तरह का पथरीला, बाहरी पदार्थ महसूस कर सका, कुछ ऐसा अतिरिक्त जिसे मैं कभी छू नहीं सकता था। और उस अनुभूति ने नाओको के लिए मेरे दिल को भर दिया और मेरे इरेक्शन को एक भयानक तीव्रता दे दी।
लेकिन नाओको ने अब मेरे सामने जो शरीर प्रकट किया, वह उस रात मेरे द्वारा पकड़े गए शरीर से बिलकुल अलग था। यह शरीर कई 159 कष्टों से गुज़रा था।

चंद्रमा के प्रकाश में पूर्ण परिपूर्णता के साथ पुनर्जन्म लेने के लिए परिवर्तन।
किज़ुकी की मृत्यु के बाद से नाओको के शरीर की मासूमियत और गोल-मटोलपन पूरी तरह गायब हो चुका था और उसकी जगह एक परिपक्व स्त्री का रूप आ गया था। नाओको की शारीरिक सुंदरता अब इतनी

परिपूर्ण थी कि मेरे मन में कोई कामुकता जागृत नहीं हुई। मैं बस अचंभित होकर उसकी कमर से कूल्हों तक के सुंदर घुमाव, सुडौल स्तनों की गोलाई, पतले पेट की हर सांस के साथ होने वाली कोमल हलचल और नीचे की ओर फैली कोमल, काली जघन त्वचा को देखता रहा।

उसने लगभग पाँच मिनट तक इस तरह अपना नग्न शरीर मेरे सामने प्रदर्शित किया, फिर अंत में उसने अपने गाउन को दोबारा लपेट लिया और ऊपर से नीचे तक उसके बटन बंद कर दिए। जैसे ही आखिरी बटन बंद हुआ, वह उठी और बेडरूम की ओर सरक गई, चुपचाप दरवाजा खोला और गायब हो गई।

मैं काफी देर तक एक ही जगह पर बैठा रहा, फिर मुझे बिस्तर से उठने का ख्याल आया। मैंने अपनी घड़ी उठाई जो फर्श पर गिरी हुई थी और उसे चाँद की रोशनी की तरफ घुमाया। 3:40 बज रहे थे। मैं रसोई में गया और कुछ गिलास पानी पिया, फिर बिस्तर पर लेट गया, लेकिन मुझे नींद तब तक नहीं आई जब तक सुबह की धूप कमरे के हर कोने में नहीं फैल गई और चाँद की हल्की रोशनी के सारे निशान गायब नहीं हो गए।

मैं नींद के आखिरी क्षणों में था जब रीको आई और उसने मेरे गाल पर थप्पड़ मारते हुए चिल्लाकर कहा, "सुप्रभात! सुप्रभात!"

जब रीको मेरे सोफा बेड को ठीक कर रही थी, नाओको रसोई में गई और नाश्ता बनाने लगी। उसने मेरी तरफ मुस्कुराते हुए कहा, "सुप्रभात"।

"सुप्रभात," मैंने जवाब दिया। मैं वहीं खड़ा होकर उसे देखता रहा जब उसने पानी उबालने के लिए गैस पर रखा और ब्रेड के टुकड़े किए, साथ ही वह लगातार गुनगुना रही थी, लेकिन उसके हावभाव में मुझे ऐसा कुछ भी नहीं दिखा जिससे यह लगे कि उसने पिछली रात मेरे सामने अपना नग्न शरीर दिखाया था।

कॉफी डालते हुए उसने मुझसे कहा, "तुम्हारी आंखें लाल हैं। क्या तुम

ठीक हो?"
"मैं आधी रात को जाग गया और फिर सो नहीं पाया।"
"मुझे यकीन है कि हम खर्राटे ले रहे थे," रेइको ने कहा।

"बिल्कुल नहीं," मैंने कहा।
"यह अच्छी बात है," नाओको ने कहा।
"वह बस शिष्टाचार निभा रहा है," रेइको ने जम्हाई लेते हुए कहा।
पहले तो मुझे लगा कि नाओको शर्मिंदा है या रेइको के लिए मासूमियत का नाटक कर रही है, लेकिन जब रेइको कुछ पल के लिए कमरे से बाहर चली गई तो उसका व्यवहार अपरिवर्तित रहा और उसकी आँखों में हमेशा की तरह पारदर्शी भाव था।
मैंने नाओको से पूछा, "तुम्हारी नींद कैसी रही?"
"एक लकड़ी के लट्ठे की तरह," उसने सहजता से उत्तर दिया। उसने बिना किसी सजावट के एक साधारण हेयरपिन पहन रखी थी।
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा है, और नाश्ते के दौरान भी मेरी यही भावना बनी रही। चाहे मैं ब्रेड पर मक्खन लगा रही थी या अंडा छील रही थी, मैं बार-बार मेज के उस पार नाओको की तरफ देख रही थी, मानो कोई संकेत ढूंढ रही हो।
"तुम मुझे ऐसे क्यों देखते रहते हो?" उसने मुस्कुराते हुए पूछा।
"मुझे लगता है कि वह किसी से प्यार करता है," रेइको ने कहा।
"क्या तुम किसी से प्यार करती हो?" नाओको ने मुझसे पूछा।
"हो सकता है," मैंने मुस्कुराते हुए कहा। जब दोनों महिलाएं मेरा मज़ाक उड़ाने लगीं, तो मैंने रात में हुई घटनाओं के बारे में सोचना छोड़ दिया और अपना ध्यान रोटी और कॉफी पर केंद्रित कर लिया।

नाश्ते के बाद, रेइको और नाओको ने कहा कि वे पक्षीशाला में पक्षियों को दाना चुगने जा रही हैं। मैंने भी उनके साथ जाने की पेशकश की। उन्होंने जींस, काम की कमीज़ और सफ़ेद रबर के जूते पहन लिए। टेनिस कोर्ट के पीछे एक छोटे से पार्क में स्थित उस पक्षीशाला में मुर्गियों, कबूतरों से लेकर मोर और तोतों तक सब कुछ था और वह फूलों की क्यारियों, झाड़ियों और बेंचों से घिरी हुई थी। चालीस वर्ष के दो पुरुष, जो शायद किसी मानसिक अस्पताल के मरीज़ थे, रास्तों पर गिरे पत्तों को इकट्ठा कर रहे थे। महिलाएं उन्हें सुप्रभात कहने के लिए उनके पास गईं और रेइको ने अपने एक और चुटकुले से उन्हें हंसा दिया। फूलों की क्यारियों में कॉसमॉस खिले हुए थे और झाड़ियाँ बहुत ही करीने से कटी हुई थीं। रेइको को देखते ही पक्षी चहचहाना शुरू कर दिए और पिंजरे के अंदर उड़ने लगे।
महिलाएं पिंजरे के पास वाले शेड में दाखिल हुईं और 161 चीजों से भरा एक थैला लेकर बाहर आईं।

चारा और एक बगीचे की नली। नाओको ने नली को नल से जोड़ा और पानी चालू कर दिया। किसी भी पक्षी को बाहर उड़ने से रोकने का ध्यान रखते हुए, वे दोनों पिंजरे में घुस गईं, नाओको धूल पर पानी डाल रही थी और रेइको डेक ब्रश से पिंजरे के फर्श को साफ़ कर रही थी। सुबह की धूप में पानी की बौछार चमक रही थी। मोर पानी की छींटों से बचने के लिए पिंजरे में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे। एक टर्की ने अपना सिर उठाया और मुझे एक चिड़चिड़े बूढ़े आदमी की तरह घूरने लगा, जबकि ऊपर की चौकी पर बैठा एक तोता अपनी नाराज़गी चीखते हुए अपने पंख फड़फड़ा रहा था। रेइको ने तोते को म्याऊं किया, जो दूर कोने में दुबक गया लेकिन जल्द ही पुकारने लगा: "धन्यवाद!"

"पागल!" "बेवकूफ!"
"पता नहीं उसे इस तरह की भाषा किसने सिखाई?" नाओको ने आह भरते हुए कहा।
"मैं नहीं," रेइको ने कहा। "मैं ऐसा कभी नहीं करूंगी।" वह फिर से म्याऊं करने लगी, और तोता चुप हो गया।
हंसते हुए रेइको ने समझाया, "एक बार इस आदमी का एक बिल्ली से सामना हो गया था।"
अब तो वो उनसे बहुत डरता है।
सफाई पूरी करने के बाद, दोनों ने अपने औजार नीचे रख दिए और बारी-बारी से सभी दाना पात्र भरने लगे। फर्श पर बने पानी के गड्ढों में से उछलते हुए, टर्की झपट्टा मारकर अपने दाना पात्र की ओर दौड़ा और अपना सिर उसमें डुबो दिया; खाने में इतना मग्न था कि नाओको द्वारा उसकी पूंछ पर थपथपाने की भी उसे परवाह नहीं थी।
मैंने नाओको से पूछा, "क्या तुम हर सुबह ऐसा करती हो?"
"हर सुबह!" उसने कहा। "वे आमतौर पर यह काम नई महिलाओं को देते हैं।"
ये तो बहुत आसान है। क्या आप खरगोशों को देखना चाहेंगे?
"ज़रूर," मैंने कहा। खरगोशों का पिंजरा पक्षीशाला के पीछे था। लगभग दस खरगोश अंदर भूसे में सो रहे थे। नाओको ने उनकी बीट साफ की, उनके डिब्बे में दाना डाला और एक बच्चे को उठाकर अपने गाल से रगड़ा।
"कितना प्यारा है ना?" वह खुशी से बोली। उसने मुझे उसे पकड़ने दिया। मेरे हाथों में फर का वह छोटा सा गर्म गोला सिकुड़ गया और अपनी नाक हिलाने लगा।
"चिंता मत करो, वह तुम्हें चोट नहीं पहुँचाएगा," उसने खरगोश से कहा,

अपनी उंगली से उसके सिर को सहलाते हुए और मेरी तरफ मुस्कुराते हुए। उसकी मुस्कान बहुत ही प्यारी थी।

परछाई का नामोनिशान भी नहीं था, मैं खुद मुस्कुराए बिना नहीं रह सका। और कल रात नाओको का क्या हुआ? मैंने सोचा। मुझे पक्का पता था कि वो असली नाओको ही थी, सपना नहीं: उसने सचमुच अपने कपड़े उतार दिए थे और मुझे अपना नग्न शरीर दिखाया था।
रीको ने "प्राउड मैरी" की मधुर धुन सीटी बजाते हुए गाई, और साथ ही उसने इकट्ठा किए गए मलबे को एक प्लास्टिक बैग में भरकर उसका मुंह बांध दिया। मैंने औजार और चारे का बैग शेड तक ले जाने में उनकी मदद की।
"सुबह का समय मुझे सबसे ज़्यादा पसंद है," नाओको ने कहा। "ऐसा लगता है जैसे सब कुछ नए सिरे से शुरू हो रहा हो। दोपहर के आसपास मुझे उदासी सताने लगती है, और सूरज डूबना मुझे बिलकुल पसंद नहीं। मैं इन्हीं भावनाओं के साथ दिन गुज़ारती हूँ।"
"और इन भावनाओं के साथ जीते-जीते, आप युवा भी मेरी ही तरह बूढ़े हो जाते हैं," रेइको ने मुस्कुराते हुए कहा। "आप सोचते रहते हैं कि अभी सुबह है या रात, और देखते ही देखते आप बूढ़े हो जाते हैं।"
"लेकिन तुम्हें बूढ़ा होना अच्छा लगता है," नाओको ने कहा।
"सच में नहीं," रेइको ने कहा। "लेकिन मैं दोबारा जवान होने की इच्छा तो बिल्कुल नहीं रखती।"
मैंने पूछा, "क्यों नहीं?"
"क्योंकि ये बहुत झंझट का काम है!" उसने कहा। फिर उसने अपनी झाड़ू अंदर फेंकी और शेड का दरवाजा बंद कर दिया, और साथ ही साथ "प्राउड मैरी" की धुन सीटी बजाती रही।

फ्लैट में वापस आकर, महिलाओं ने अपने बूट उतारकर टेनिस शूज़ पहन लिए और कहा कि वे खेत पर जा रही हैं। रेइको ने सुझाव दिया कि मैं यहीं रुककर कोई किताब या कुछ और पढ़ लूँ क्योंकि काम देखना मज़ेदार नहीं होगा और वे इसे एक समूह के रूप में करेंगी। "और जब तक तुम इंतज़ार कर रही हो, तुम सिंक के पास रखे गंदे अंडरवियर के ढेर को धो सकती हो।"
उन्होंने आगे कहा।
"आप मजाक कर रहे हैं," मैंने आश्चर्यचकित होकर कहा।
"बिल्कुल, मैं हूँ," वह हँसी। "तुम बहुत प्यारी हो। है ना नाओको?"
"वह सचमुच ऐसा ही है," नाओको ने हंसते हुए कहा।
मैंने आह भरते हुए कहा, "मैं अपनी जर्मन भाषा पर काम करूंगा।"
"हाँ, अच्छे बच्चे की तरह अपना होमवर्क करो," रेइको ने कहा।

हम दोपहर के भोजन से पहले वापस आ जाएंगे।
वे दोनों खिलखिलाते हुए बाहर चले गए। मुझे नीचे से कई लोगों के कदमों की आहट और आवाजें सुनाई दीं।
मैं बाथरूम में गई और दोबारा अपना चेहरा धोया, फिर एक नेल क्लिपर लेकर अपने नाखून काटे। दो महिलाओं द्वारा साझा किए जा रहे बाथरूम के हिसाब से उसमें बहुत कम सामान था। कुछ करीने से रखी बोतलों के अलावा और कुछ नहीं था।
क्लींजिंग क्रीम, लिप मॉइस्चराइजर और सन ब्लॉक के अलावा, मेरे पास लगभग कुछ भी ऐसा नहीं था जिसे कॉस्मेटिक्स कहा जा सके। नाखून काटने के बाद, मैंने अपने लिए कॉफी बनाई और रसोई की मेज पर

बैठकर पी, जर्मन किताब खुली हुई थी। धूप से भरी रसोई में टी-शर्ट पहनकर, मैं व्याकरण चार्ट में दिए गए सभी रूपों को याद करने में जुट गई थी, तभी मुझे एक अजीब सी अनुभूति हुई। मुझे ऐसा लगा जैसे जर्मन क्रियाओं के अनियमित रूप इस रसोई की मेज से सबसे लंबी दूरी पर हैं।

दोनों महिलाएं सुबह 11:30 बजे खेत से लौटीं, बारी-बारी से नहाकर नए कपड़े पहने। हम तीनों दोपहर के भोजन के लिए भोजनालय गए, फिर मुख्य द्वार की ओर चले। इस बार चौकी पर एक आदमी ड्यूटी पर था। वह अपनी मेज पर बैठा दोपहर का भोजन कर रहा था, जो शायद भोजनालय से उसके लिए लाया गया था। शेल्फ पर रखे ट्रांजिस्टर रेडियो पर कोई पुराना भावुक पॉप गीत बज रहा था।

जब हम उनके पास पहुंचे तो उन्होंने दोस्ताना अंदाज में "हाय" कहते हुए हमें हाथ हिलाया, और हमने भी उन्हें जवाब में "हैलो" कहा।

रेइको ने उसे समझाया कि हम मैदान के बाहर टहलने जा रहे हैं और तीन घंटे में वापस आ जाएंगे।

"बहुत बढ़िया," उसने कहा। "मौसम आपके लिए अच्छा है। बस घाटी वाली सड़क से दूर रहना। भारी बारिश में वह सड़क बह गई है। बाकी कहीं कोई दिक्कत नहीं है।"

रेइको ने अपना और नाओको का नाम एक रजिस्टर में तारीख और समय के साथ लिख दिया।

"मज़े करो," गार्ड ने कहा। "और अपना ख्याल रखना।"

मैंने कहा, "अच्छा आदमी है।"

"वह यहाँ थोड़ा अजीब व्यवहार कर रहा है," रेइको ने अपना सिर छूते हुए

कहा।
मौसम के बारे में उसका अनुमान सही निकला था। आसमान एकदम साफ नीला था, आसमान में बस कुछ सफेद बादल ऐसे लटके हुए थे मानो रंग की पतली सी लकीर हो। हम कुछ देर अमी हॉस्टल की नीची पत्थर की दीवार के पास-पास चले, फिर एक कतार में एक खड़ी और संकरी पगडंडी पर चढ़ने के लिए आगे बढ़े। रेइको आगे-आगे चल रही थी, नाओको बीच में और मैं सबसे पीछे। रेइको आत्मविश्वास से ऐसे चढ़ रही थी मानो उसे इलाके के हर पहाड़ की हर चोटी की पूरी जानकारी हो।
हम सब एक-दूसरे से बिना कुछ बोले, सिर्फ चलने पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे। नाओको ने नीली जींस और सफेद ब्लाउज पहनी थी और एक हाथ में जैकेट पकड़ी हुई थी।
मैंने उसके लंबे, सीधे बालों को उसके कंधों पर दाएं-बाएं लहराते हुए देखा। वह बीच-बीच में मेरी तरफ देखती और जब हमारी नज़रें मिलतीं तो मुस्कुराती। रास्ता इतना ऊपर की ओर जाता था कि चक्कर आने लगते थे, लेकिन रीको की रफ़्तार ज़रा भी धीमी नहीं हुई। नाओको उसके साथ कदम मिलाकर चलने की जल्दी में थी और अपने चेहरे से पसीना पोंछ रही थी। काफी समय से ऐसी बाहरी गतिविधियों में शामिल न होने के कारण, मेरी सांस फूलने लगी थी।
मैंने नाओको से पूछा, "क्या तुम ऐसा अक्सर करती हो?"
"शायद हफ्ते में एक बार," उसने जवाब दिया। "क्या आप मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं?"
"कुछ हद तक," मैंने कहा।
"हम लगभग पहुँच गए हैं," रेइको ने कहा। "यह लगभग दो-तिहाई रास्ता है।"
"अरे, तुम तो लड़के हो, है ना?" "हाँ, लेकिन मेरी फिटनेस अच्छी नहीं है।"

"हर समय लड़कियों के साथ खेलना," नाओको ने मानो खुद से बुदबुदाया।
मैं उसे जवाब देना चाहती थी, लेकिन मेरी सांस फूल रही थी इसलिए मैं बोल नहीं पा रही थी। बीच-बीच में, सिर पर गुच्छेदार लाल पक्षी हमारे रास्ते से उड़ते हुए नीले आकाश में बेहद खूबसूरत लग रहे थे। हमारे चारों ओर के खेत सफेद, नीले और पीले फूलों से भरे हुए थे, और मधुमक्खियाँ हर जगह भिनभिना रही थीं।
एक-एक कदम आगे बढ़ते हुए, मैं अपनी आंखों के सामने से गुजर रहे दृश्य के अलावा और कुछ नहीं सोच रहा था।
दस मिनट बाद ढलान खत्म हो गई और हम एक समतल पठार पर पहुँच गए। हमने वहाँ आराम किया, पसीना पोंछा, साँस ली और पानी की बोतलों से पानी पिया। रीको को एक पत्ता मिला और 165

इसका इस्तेमाल सीटी बनाने के लिए किया।
पगडंडी लंबी, लहराती हुई घास की झाड़ियों के बीच एक हल्की ढलान पर उतर गई। हम लगभग 15 मिनट तक चलते रहे और फिर एक गाँव से गुज़रे। यहाँ इंसानियत का कोई नामोनिशान नहीं था, और लगभग एक दर्जन घर जर्जर अवस्था में थे। घरों के बीच कमर तक ऊँची घास उग आई थी, और दीवारों के छेदों में कबूतर की सूखी, सफ़ेद बीट चिपकी हुई थी। एक ढही हुई इमारत के केवल खंभे ही बचे थे, जबकि अन्य इमारतें ऐसी लग रही थीं मानो तूफ़ान से बचाव के लिए खिड़कियाँ खोलते ही उनमें रहने का मन करे। ये निर्जन, खामोश घर सड़क के दोनों ओर सटे हुए थे, और हम उनके बीच से गुज़रते रहे।
"सात-आठ साल पहले तक इस गाँव में लोग रहते थे," रेइको ने मुझे बताया। "यहाँ आसपास खेती की ज़मीन थी। लेकिन वे सब चले गए।

जीवन बहुत कठिन था। सर्दियों में बर्फ़बारी होने पर वे फंस जाते थे। और मिट्टी भी ज़्यादा उपजाऊ नहीं है। शहर में उनकी ज़िंदगी बेहतर हो सकती थी।"

मैंने कहा, "कितनी बर्बादी है! कुछ घर तो बिल्कुल रहने लायक दिखते हैं।"

"कुछ हिप्पियों ने एक समय यहाँ रहने की कोशिश की थी, लेकिन उन्होंने हार मान ली।"

सर्दी बर्दाश्त नहीं कर सका।

गाँव से थोड़ा आगे जाकर हम एक बड़े बाड़े वाले इलाके में पहुँचे जो किसी चरागाह जैसा लग रहा था। दूर दूसरी तरफ, मुझे कुछ घोड़े चरते हुए दिखाई दिए। हम बाड़े की रेखा के साथ-साथ चलते रहे, तभी एक बड़ा कुत्ता पूंछ हिलाता हुआ हमारी तरफ दौड़ता हुआ आया। वह रीको पर झुककर खड़ा हो गया, उसका चेहरा सूंघने लगा, फिर नाओको पर उछल पड़ा। मैंने सीटी बजाई और वह मेरे पास आकर अपनी लंबी जीभ से मेरा हाथ चाटने लगा।

नाओको ने कुत्ते के सिर पर हाथ फेरा और बताया कि यह जानवर चरागाह का है। उसने कहा, "मुझे लगता है कि इसकी उम्र लगभग 20 साल होगी। इसके दांत इतने खराब हैं कि यह कुछ भी सख्त नहीं खा सकता। यह दिन भर दुकान के सामने सोता है और कदमों की आहट सुनते ही दौड़कर आ जाता है।"

रेइको ने अपने बैग से पनीर का एक टुकड़ा निकाला। उसकी गंध सूंघकर कुत्ता दौड़कर उसके पास आया और उसे चट कर गया।

“हम इस साथी को ज़्यादा देर तक नहीं देख पाएंगे,” रेइको ने कुत्ते के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा। “अक्टूबर के मध्य में वे घोड़ों और गायों को 166 में डाल देते हैं।”

ट्रकों में भरकर उन्हें खलिहान में ले जाते हैं। उन्हें चरने के लिए सिर्फ़ गर्मियों में ही जाने देते हैं, जब पर्यटकों के लिए एक छोटा सा कैफ़े जैसा कुछ खोलते हैं। "पर्यटक"! दिन में शायद 20 पैदल यात्री। अरे, कुछ पीने को मिलेगा क्या?"

मैंने कहा, "अच्छा विचार है।"

कुत्ता हमें कैफे तक ले गया, जो एक छोटा सा सफेद घर था, जिसके सामने एक बरामदा था और छत से कॉफी कप के आकार का एक धुंधला सा बोर्ड लटका हुआ था। वह हमें सीढ़ियों से ऊपर ले गया और बरामदे पर लेट गया, अपनी आँखें सिकोड़ते हुए। जब हम बरामदे में एक मेज के चारों ओर बैठ गए, तो पोनीटेल वाली और स्वेटशर्ट और सफेद जींस पहने एक लड़की बाहर आई और रेइको और नाओको का पुराने दोस्तों की तरह स्वागत किया।

"ये नाओको की दोस्त हैं," रेइको ने मेरा परिचय कराते हुए कहा। "हाय," उसने कहा।

"हाय," मैंने जवाब दिया।

तीनों महिलाएं आपस में हल्की-फुल्की बातें कर रही थीं, तभी मैंने मेज के नीचे कुत्ते की गर्दन सहला दी। उसकी गर्दन बूढ़े कुत्ते की तरह सख्त और रेशेदार थी। जब मैंने उभरे हुए हिस्सों को खुजलाया, तो कुत्ते ने अपनी आंखें बंद कर लीं और खुशी से आह भरी।

मैंने लड़की से पूछा, "उसका नाम क्या है?"

"पेपे," उसने कहा।

मैंने कुत्ते से कहा, "हे पेपे," लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ।

"उन्हें सुनने में थोड़ी दिक्कत है," लड़की ने कहा। "आपको ज़ोर से बोलना होगा, नहीं तो वे सुन नहीं पाएंगे।"

"पेपे!" मैंने चिल्लाया। कुत्ते ने अपनी आँखें खोलीं और भौंकते हुए एकदम चौकन्ना हो गया।
"कोई बात नहीं, पेपे," लड़की ने कहा। "ज़्यादा सोओ और ज़्यादा जियो।" पेपे फिर से मेरे पैरों के पास गिर पड़ा।
नाओको और रेइको ने ठंडे दूध के गिलास मंगवाए और मैंने एक बियर मंगवाई।
“चलो रेडियो सुनते हैं,” रेइको ने कहा। लड़की ने एम्पलीफायर चालू किया और एफएम स्टेशन पर ट्यून किया। ब्लड, स्वेट एंड टियर्स बजने लगा।
"चरखा"।
रेइको खुश दिखी। "अब यही तो हम यहाँ करने आए हैं! हमारे पास 167 नहीं हैं।"

हमारे कमरों में रेडियो हैं, इसलिए अगर मैं कभी-कभार यहां नहीं आता, तो मुझे पता ही नहीं चलता कि बाहर क्या चल रहा है।"
मैंने लड़की से पूछा, "क्या तुम यहीं सोती हो?"
"बिल्कुल नहीं!" वह हंस पड़ी। "अगर मैंने यहां रात बिताई तो मैं अकेलेपन से मर जाऊंगी।"
"चारागाह वाला मुझे शहर तक छोड़ देता है और मैं सुबह वापस आ जाती हूँ।" उसने पास के चारागाह कार्यालय के सामने खड़ी एक चार पहिया वाहन की ओर इशारा किया।
"तुम्हारी भी जल्द ही छुट्टियां आने वाली हैं, है ना?" रेइको ने पूछा।
"हाँ, हम जल्द ही इस जगह को बंद कर देंगे," लड़की ने कहा। रीको ने उसे एक सिगरेट दी और दोनों ने सिगरेट पी।
"मुझे तुम्हारी बहुत याद आएगी," रेइको ने कहा।

"लेकिन मैं मई में वापस आ जाऊंगी," लड़की ने हंसते हुए कहा।
रेडियो पर क्रीम बैंड का गाना "व्हाइट रूम" बजने लगा। एक विज्ञापन के बाद साइमन और गारफंकेल का "स्कारबोरो फेयर" प्रसारित हुआ।
"मुझे यह पसंद आया," रीको ने खेल खत्म होने पर कहा।
मैंने कहा, "मैंने फिल्म देखी।"
इसमें कौन-कौन शामिल है?
"डस्टिन हॉफमैन।"
"मैं उसे नहीं जानती," उसने सिर हिलाते हुए उदास स्वर में कहा। "दुनिया पागलों की तरह बदल रही है, और मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या हो रहा है।" उसने लड़की से गिटार माँगा। "ज़रूर," लड़की ने रेडियो बंद करते हुए कहा और एक पुराना गिटार निकाल लाई। कुत्ते ने अपना सिर उठाया और गिटार को सूंघा।
"तुम इसे नहीं खा सकते," रेइको ने बनावटी सख्ती से कहा। घास की खुशबू से भरी एक हल्की हवा बरामदे से गुजरी। पहाड़ हमारे सामने फैले हुए थे, उनकी पर्वत श्रृंखला आसमान में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी।
जब रेइको अपने वाद्य यंत्रों को ट्यून कर रही थी, तब मैंने उससे कहा, "यह तो 'द साउंड ऑफ म्यूजिक' फिल्म के किसी दृश्य जैसा है।"
"यह क्या है?" उसने पूछा।
वह शुरुआती सुर की तलाश में गिटार बजा रही थी।
"स्कारबोरो फेयर"। जाहिर तौर पर यह गाने पर उनका पहला प्रयास था, लेकिन कुछ शुरुआती असफलताओं के बाद वे इसे बिना झिझक के पूरा बजा सकीं।

तीसरी बार में ही उसे सब कुछ अच्छे से आ गया और उसने उसमें कुछ

बारीकियां भी जोड़नी शुरू कर दीं। "तुम्हारी सुनने की क्षमता बहुत अच्छी है," उसने आँख मारते हुए मुझसे कहा। "मैं आमतौर पर किसी भी चीज़ को तीन बार सुनकर बजा सकती हूँ।"

मधुर धुन गुनगुनाते हुए, उसने "स्कारबोरो फेयर" गीत को पूरी तरह से प्रस्तुत किया। हम तीनों ने तालियाँ बजाईं, और रीको ने शालीनता से सिर झुकाकर जवाब दिया।

उन्होंने कहा, "मुझे मोजार्ट के कॉन्सर्टो के लिए इससे ज्यादा तालियां मिलती थीं।"

लड़की ने कहा, अगर वो बीटल्स का गाना "हियर कम्स द सन" बजाएगी तो दूध मुफ़्त में मिलेगा। रेइको ने उसे अंगूठा दिखाकर इशारा किया और गाना शुरू कर दिया। उसकी आवाज़ पूरी तरह से भरी हुई नहीं थी, और ज़्यादा धूम्रपान करने से थोड़ी कर्कश हो गई थी, लेकिन फिर भी प्यारी थी, उसमें एक अलग ही एहसास था। मुझे लगभग ऐसा लगा जैसे मैं वहाँ बैठकर गाना सुन रही थी, बीयर पी रही थी और पहाड़ों को देख रही थी, मानो सूरज सचमुच फिर से उग रहा हो। यह एक कोमल, सुकून भरा एहसास था।

रेइको ने गिटार वापस कर दिया और रेडियो दोबारा सुनने की इच्छा जताई। फिर उसने नाओको और मुझे सुझाव दिया कि हम एक घंटा निकालकर आसपास के इलाके में घूम लें।

"मैं थोड़ा और रेडियो सुनना चाहता हूँ और उसके साथ समय बिताना चाहता हूँ। अगर तुम तीन बजे तक वापस आ जाओ तो ठीक रहेगा।"

"क्या हमारे लिए इतने लंबे समय तक अकेले साथ रहना ठीक है?"

"खैर, वैसे तो यह नियमों के खिलाफ है, लेकिन क्या करें। आखिर मैं कोई अभिभावक तो नहीं हूँ। मुझे थोड़ा आराम चाहिए। और आप टोक्यो से इतनी दूर आए हैं, मुझे यकीन है कि आपके पास बात करने के लिए

बहुत कुछ होगा।"
बोलते-बोलते रीको ने एक और सिगरेट जला ली।
"चलो चलते हैं," नाओको ने खड़े होते हुए कहा।
मैं उसके पीछे-पीछे चलने लगा। कुत्ता जाग गया और थोड़ी देर तक हमारे पीछे-पीछे आया, लेकिन जल्द ही उसकी दिलचस्पी खत्म हो गई और वह बरामदे में अपनी जगह पर वापस चला गया। हम चरागाह की बाड़ के समानांतर एक समतल सड़क पर टहलते रहे। नाओको बीच-बीच में मेरा हाथ पकड़ लेती या अपनी बांह मेरी बांह के नीचे डाल देती।
"यह कुछ-कुछ पुराने दिनों जैसा ही है, है ना?" उसने कहा।
मैंने हंसते हुए कहा, "वो 'पुराने दिन' नहीं थे। ये तो इसी साल की बसंत ऋतु थी! अगर वो 'पुराने दिन' थे, तो दस साल पहले की बात तो बहुत पुरानी हो गई।"

"ऐसा लगता है जैसे ये बहुत पुरानी बात हो गई हो," नाओको ने कहा। "खैर, पिछली रात के लिए माफ़ी चाहती हूँ। पता नहीं, मैं बहुत घबराई हुई थी। टोक्यो से इतनी दूर आने के बाद मुझे ऐसा बिल्कुल नहीं करना चाहिए था।"
"छोड़ो कोई बात नहीं," मैंने कहा। "हम दोनों के मन में बहुत सारी भावनाएं हैं जिन्हें हमें खुलकर व्यक्त करना है। इसलिए अगर तुम उन भावनाओं को लेकर किसी पर बरसाना चाहते हो, तो मुझ पर बरसाओ। तब हम एक-दूसरे को बेहतर समझ पाएंगे।"
"तो अगर आप मुझे बेहतर ढंग से समझ पाते हैं, तो फिर क्या होगा?"
"तुम्हें समझ नहीं आ रहा, है ना?" मैंने कहा। "यह 'फिर क्या होगा' का सवाल नहीं है।"

कुछ लोगों को रेलवे की समय सारिणी पढ़ने में मज़ा आता है और वे दिन भर बस यही करते रहते हैं। कुछ लोग माचिस की तीलियों से नावों के बड़े-बड़े मॉडल बनाते हैं। तो अगर दुनिया में कोई एक ऐसा व्यक्ति है जिसे आपको समझने की कोशिश करने में आनंद आता है, तो इसमें क्या गलत है?

"एक तरह का शौक?" उसने मुस्कुराते हुए कहा।

"हाँ, मुझे लगता है कि आप इसे शौक कह सकते हैं। ज़्यादातर सामान्य लोग इसे दोस्ती या प्यार या कुछ और कहेंगे, लेकिन अगर आप इसे शौक कहना चाहते हैं, तो यह भी ठीक है।"

"मुझे बताओ," नाओको ने कहा, "तुम्हें भी किज़ुकी पसंद थी, है ना?"

"बेशक," मैंने कहा।

"रेइको के बारे में क्या ख्याल है?"

मैंने कहा, "मुझे वो बहुत पसंद है। वो सच में बहुत अच्छी है।"

"तुम्हें हमेशा ऐसे लोग ही क्यों पसंद आते हैं - मेरा मतलब है, हम जैसे लोग?"

हम सब कुछ न कुछ अजीब, उलझे हुए और डूबते जा रहे हैं - मैं, किज़ुकी और रेइको। आप लोग सामान्य लोगों को पसंद क्यों नहीं कर सकते?

कुछ देर सोचने के बाद मैंने कहा, "क्योंकि मैं तुम्हें उस नजरिए से नहीं देखता।"

"मैं तुम्हें, किज़ुकी को या रीको को किसी भी तरह से 'विकृत' नहीं मानता। जिन लोगों को मैं विकृत मानता हूँ, वे तो बाहर खुलेआम घूम रहे हैं।"

"लेकिन हम विकृत हैं," नाओको ने कहा। "मैं यह देख सकती हूँ।"

हम चुपचाप चलते रहे। सड़क बाड़ से अलग होकर एक गोलाकार घास के मैदान में जाकर खत्म हुई, जिसके चारों ओर तालाब की तरह पेड़ लगे हुए

थे।
"कभी-कभी मैं आधी रात को डर के मारे जाग जाती हूँ," नाओको ने मेरी बांह से सटते हुए कहा। "मुझे डर लगता है कि मैं कभी ठीक नहीं हो पाऊँगी।"

फिर से। मैं हमेशा इसी तरह उलझा हुआ रहूंगा और यहीं बूढ़ा होकर सड़ता चला जाऊंगा। मुझे इतनी ठंड लगती है जैसे मैं अंदर से जम गया हूं। यह भयानक है... बहुत ठंड है।
मैंने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा और उसे अपने करीब खींच लिया।
"मुझे ऐसा लगता है जैसे किज़ुकी अंधेरे से मेरी ओर हाथ बढ़ा रहा है, मुझे पुकार रहा है, 'हे नाओको, हम अलग नहीं रह सकते।' जब मैं उसे ऐसा कहते सुनती हूँ, तो मुझे समझ नहीं आता कि मैं क्या करूँ।" "तुम क्या करती हो?"
"अच्छा... इसे गलत मत समझना।" "ठीक है, मैं नहीं समझूंगा।"
मैं रेइको से मुझे गले लगाने के लिए कहती हूँ। मैं उसे जगाती हूँ और उसके बिस्तर पर लेट जाती हूँ और उसे मुझे कसकर पकड़ने देती हूँ। और मैं रोती हूँ। और वह मुझे तब तक सहलाती है जब तक कि बर्फ पिघल न जाए और मैं फिर से गर्म न हो जाऊँ। क्या आपको लगता है कि यह बीमारी है?
"नहीं। काश, मैं ही तुम्हें थाम पाता," मैंने कहा।
"तो मुझे पकड़ो। अभी। यहीं पर।"
हम घास के मैदान की सूखी घास पर बैठ गए और एक-दूसरे को बाहों में भर लिया। चारों ओर लंबी घास थी, और हमें ऊपर आसमान और बादलों के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। मैंने नाओको को धीरे से लिटाया और उसे अपनी बाहों में भर लिया। वह कोमल और गर्म थी और उसके

हाथ मेरी ओर बढ़े। हमने सच्चे दिल से एक-दूसरे को चूमा।
"तोरू, मुझे कुछ बताओ," नाओको ने मेरे कान में फुसफुसाया।
मैंने पूछा, "यह क्या है?"
"क्या तुम मेरे साथ सोना चाहते हो?"
"बिल्कुल," मैंने कहा। "क्या आप इंतज़ार कर सकते हैं?" "बिल्कुल कर सकता हूँ।"
"इससे पहले कि हम इसे दोबारा करें, मैं खुद को थोड़ा बेहतर बनाना चाहता हूँ। मैं खुद को ऐसा व्यक्ति बनाना चाहता हूँ जो आपके इस शौक के ज़्यादा लायक हो। क्या आप तब तक मेरा इंतज़ार करेंगे?"
"ज़रूर, मैं इंतज़ार करूँगा।" "क्या अब तुम उत्तेजित हो?"
"तुम्हारा मतलब मेरे पैरों के तलवों से है?" "बेवकूफी भरी बात है," नाओको खिलखिलाकर हंस पड़ी।
"अगर आप मुझसे पूछ रहे हैं कि क्या मुझे इरेक्शन हुआ है, तो बेशक हुआ है।" "क्या आप मुझ पर एक एहसान करेंगे और 'बेशक' कहना बंद कर देंगे?" "ठीक है, मैं बंद कर देता हूँ।"
"क्या यह मुश्किल है?" "क्या?"
"इतना कठोर होना।" "मुश्किल?"
"मेरा मतलब है, क्या आप पीड़ित हैं?"

"खैर, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप इसे किस नजरिए से देखते हैं।"
"क्या आप चाहते हैं कि मैं इसे हटाने में आपकी मदद करूं?"
"तुम्हारे हाथ से?"
"हम्म। सच कहूँ तो," नाओको ने कहा, "जब से हम लेटे हैं, तब से ये चुभ

रहा है। दर्द हो रहा है।" मैंने अपने कूल्हे पीछे खींच लिए। "अब ठीक है?"
"धन्यवाद।"
"तुम्हें पता है?" मैंने कहा।
"क्या?"
"काश तुम ऐसा कर देते।"
"ठीक है," उसने मुस्कुराते हुए कहा। फिर उसने मेरी पतलून की ज़िप खोली और मेरे कड़े लिंग को अपने हाथ में ले लिया। "यह गर्म है," उसने कहा।
उसने अपना हाथ हिलाना शुरू किया, लेकिन मैंने उसे रोक दिया और उसकी ब्लाउज के बटन खोलकर उसकी ब्रा की पट्टी भी खोल दी। मैंने उसके मुलायम, गुलाबी निप्पल्स को चूमा। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और धीरे-धीरे अपनी उंगलियाँ हिलाने लगी।
"अरे वाह, तुम इसमें काफी अच्छे हो," मैंने कहा। "अच्छे बच्चे बनो और चुप रहो।"
नाओको ने कहा।

मेरे आने के बाद, मैंने उसे अपनी बाहों में भर लिया और फिर से चूमा। नाओको ने अपनी ब्रा और ब्लाउज के बटन बंद किए, और मैंने अपनी पैंट की ज़िप बंद कर ली।
"क्या इससे आपको चलने में आसानी होगी?" उसने पूछा।
"मैं सब के लिए तुम्हारा कर्ज़दार हूँ।"
"अच्छा, तो महोदय, अगर आपको ठीक लगे तो क्या हम थोड़ा और आगे चलें?"
"हर तरह से।"
हम घास के मैदान को पार करते हुए, पेड़ों के एक झुंड से गुज़रे और फिर

दूसरे घास के मैदान को पार किया। नाओको ने अपनी मृत बहन के बारे में बात की और बताया कि हालाँकि उसने इस बारे में शायद ही किसी से कुछ कहा था, फिर भी उसे लगा कि उसे मुझे बताना चाहिए।
"वह मुझसे छह साल बड़ी थी, और हमारे व्यक्तित्व बिल्कुल अलग थे, फिर भी हम बहुत करीब थे। हमने कभी लड़ाई नहीं की, एक बार भी नहीं। यह सच है। ज़ाहिर है, हमारी उम्र में इतना बड़ा अंतर था, तो हमारे बीच लड़ने की कोई वजह ही नहीं थी।"
उसकी बहन उन लड़कियों में से एक थी जो हर 172 क्षेत्र में सफल होती हैं।

वो एक होशियार छात्रा, एक होशियार एथलीट, लोकप्रिय, एक लीडर, दयालु, सीधी-सादी लड़की थी। लड़के उसे पसंद करते थे, उसके शिक्षक उसे प्यार करते थे, उसकी दीवारें प्रशस्ति पत्रों से भरी रहती थीं। हर स्कूल में ऐसी एक लड़की तो होती ही है। "मैं ये इसलिए नहीं कह रही कि वो मेरी बहन है, लेकिन उसने कभी भी इन सब बातों को खुद पर हावी नहीं होने दिया और न ही उसे जरा भी घमंडी या दिखावटी बनने दिया। बात बस इतनी सी है कि उसे जो भी काम दिया जाता, वो उसे स्वाभाविक रूप से दूसरों से बेहतर करती थी।"
"तो जब मैं छोटी थी, मैंने तय कर लिया था कि मैं एक प्यारी सी छोटी लड़की बनूँगी।" नाओको बोलते हुए प्लम ग्रास की एक पत्ती घुमा रही थी। "मतलब, आप जानते हैं, मैं हमेशा से सुनती आई हूँ कि सब उसकी बुद्धिमत्ता, खेलों में उसकी महारत और उसकी लोकप्रियता के बारे में बात करते हैं। ज़ाहिर है, मैं यही मानती थी कि मैं कभी उससे मुकाबला नहीं कर सकती। कम से कम मेरा चेहरा तो उससे थोड़ा ज़्यादा सुंदर था, इसलिए मुझे लगता है कि मेरे माता-पिता ने मुझे सुंदर बनाने का फैसला

किया। शुरू से ही उन्होंने मुझे उसी तरह के स्कूल में दाखिला दिलाया। वे मुझे मखमली पोशाकें, झालरदार ब्लाउज़ और पेटेंट लेदर के जूते पहनाते थे और मुझे पियानो और बैले की क्लास देते थे। इससे मेरी बहन मेरे लिए और भी दीवानी हो गई - आप जानते हैं: मैं उसकी प्यारी छोटी बहन थी। वह मुझे प्यारे-प्यारे तोहफे देती थी, मुझे हर जगह अपने साथ ले जाती थी और मेरे होमवर्क में मेरी मदद करती थी। वह मुझे डेट पर भी ले जाती थी। वह सबसे अच्छी बड़ी बहन थी जिसकी कोई भी कामना कर सकता है।"

"किसी को नहीं पता था कि उसने आत्महत्या क्यों की। बिल्कुल किज़ुकी की तरह। एकदम वैसा ही। वह भी 17 साल की थी, और उसने आत्महत्या करने का ज़रा सा भी संकेत नहीं दिया था। उसने कोई सुसाइड नोट भी नहीं छोड़ा था। सच में, बिल्कुल वैसा ही था, क्या आपको नहीं लगता?"

ऐसा ही लगता है।

"सब कहते थे कि वह बहुत बुद्धिमान थी या बहुत किताबें पढ़ती थी। और वह सच में बहुत पढ़ती थी। उसके पास ढेरों किताबें थीं। उसकी मृत्यु के बाद मैंने उनमें से कई किताबें पढ़ीं, और यह बहुत दुखद था। उनमें हाशिये पर उसकी टिप्पणियां थीं, पन्नों के बीच फूल रखे थे, प्रेमियों के पत्र थे, और जब भी मुझे ऐसा कुछ दिखता, मैं रोने लगती। मैं बहुत रोई।"

नाओको कुछ सेकंड के लिए चुप हो गई और फिर से पंखुड़ी वाली घास को घुमाने लगी।

वह ऐसी इंसान थी जो सब कुछ खुद ही संभाल लेती थी। वह कभी किसी से सलाह या मदद नहीं मांगती थी। मुझे नहीं लगता कि यह कोई घमंड

की बात थी। वह बस वही करती थी जो उसे स्वाभाविक लगता था। मेरे माता-पिता को इसकी आदत हो गई थी और उन्हें लगता था कि अगर उसे अकेला छोड़ दिया जाए तो वह ठीक रहेगी। मैं अपनी बहन से सलाह लेती थी और वह हमेशा सलाह देने के लिए तैयार रहती थी, लेकिन वह कभी किसी और के पास नहीं जाती थी। जो भी करना होता था, वह खुद ही कर लेती थी। वह कभी गुस्सा या चिड़चिड़ी नहीं होती थी। यह सब सच है, मेरा मतलब यही है, मैं बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कह रही। ज्यादातर लड़कियां, जब उन्हें पीरियड्स होते हैं या कुछ और होता है, तो चिड़चिड़ी हो जाती हैं और अपना गुस्सा दूसरों पर निकालती हैं, लेकिन उसने कभी ऐसा भी नहीं किया।

उसका मूड खराब होने के बजाय, वह बहुत शांत हो जाती थी।

शायद दो-तीन महीने में एक बार ऐसा होता था: वह अपने कमरे में खुद को बंद कर लेती, बिस्तर पर पड़ी रहती, स्कूल नहीं जाती, नाममात्र का कुछ खाती, बत्ती बंद कर लेती और खोई-खोई सी रहती। हालांकि, उसका मूड खराब नहीं होता था। जब मैं स्कूल से घर आता, तो वह मुझे अपने कमरे में बुलाती, अपने पास बिठाती और मुझसे मेरे दिन के बारे में पूछती। मैं उसे छोटी-छोटी बातें बताता - जैसे मैंने दोस्तों के साथ कौन-कौन से खेल खेले, टीचर ने क्या कहा, मेरे परीक्षा परिणाम क्या रहे, वगैरह।

वह हर छोटी-छोटी बात पर ध्यान देती और सुझाव व टिप्पणियाँ करती, लेकिन जैसे ही मैं चली जाती—जैसे किसी दोस्त के साथ खेलने या बैले क्लास जाने के लिए—वह फिर से खो जाती। दो दिन बाद, वह अचानक से होश में आती और चली जाती।

स्कूल। यह सिलसिला, मुझे नहीं पता, शायद चार साल तक चलता रहा। मेरे माता-पिता पहले तो चिंतित थे और मुझे लगता है कि उन्होंने सलाह

के लिए डॉक्टर से भी सलाह ली थी, लेकिन, मतलब, दो दिन बाद वह बिल्कुल ठीक हो जाती थी, इसलिए उन्होंने सोचा कि अगर उसे अकेला छोड़ दिया जाए तो सब ठीक हो जाएगा, वह इतनी होशियार और समझदार लड़की थी।

"उसकी मृत्यु के बाद, मैंने अपने माता-पिता को मेरे पिता के एक छोटे भाई के बारे में बात करते सुना, जिसकी मृत्यु बहुत पहले हो गई थी। वह भी बहुत होशियार था, लेकिन वह चार साल तक घर में ही बंद रहा था।" जब वह 17 साल का था तब से लेकर 21 साल का होने तक। और फिर अचानक एक दिन वह घर से निकल गया और ट्रेन के सामने कूद गया। मेरे पिता ने कहा,

"शायद ये मेरे खून में है - मेरी तरफ से।"

जब नाओको बोल रही थी, तो अनजाने में उसकी उंगलियां पंखुड़ीदार घास के गुच्छे को सहला रही थीं, जिससे उसके रेशे हवा में बिखर रहे थे। जब घास का तना पूरी तरह से खुल गया, तो उसने उसे अपनी उंगलियों के चारों ओर लपेट लिया।

“मेरी बहन का शव मैंने ही पाया था,” उसने आगे बताया। “पतझड़ के मौसम में, जब मैं प्रथम वर्ष में थी। नवंबर का महीना था। एक अंधेरा, बरसाती दिन था। उस समय मेरी बहन छठी कक्षा में पढ़ रही थी। मैं शाम साढ़े छह बजे पियानो क्लास से घर लौटी और मेरी माँ खाना बना रही थीं। उन्होंने मुझे मेरी बहन को बताने को कहा कि खाना तैयार है। मैं ऊपर गई और उसके दरवाजे पर दस्तक देकर चिल्लाई, “खाना तैयार है”, लेकिन कोई जवाब नहीं आया। उसका कमरा एकदम शांत था। मुझे यह अजीब लगा, इसलिए मैंने फिर से दस्तक दी, दरवाजा खोला और अंदर

झाँका। मुझे लगा कि वह शायद सो रही होगी। लेकिन वह बिस्तर पर नहीं थी। वह खिड़की के पास खड़ी बाहर देख रही थी, उसकी गर्दन कुछ इस तरह झुकी हुई थी, जैसे वह कुछ सोच रही हो। कमरा अँधेरा था, बत्तियाँ बुझी हुई थीं, और कुछ भी देखना मुश्किल था। “तुम क्या कर रही हो?” मैंने उससे कहा। “खाना तैयार है।”

तभी मैंने देखा कि वह सामान्य से अधिक लंबी लग रही थी। आखिर क्या हो रहा था? मैं सोचने लगी: यह बहुत अजीब था! क्या उसने ऊँची एड़ी के जूते पहने थे?

क्या वह किसी चीज़ पर खड़ी थी? मैं उसके करीब गई और उससे दोबारा बात करने ही वाली थी कि तभी मेरी नज़र उस पर पड़ी: उसके सिर के ऊपर एक रस्सी थी। वह छत की एक बीम से एकदम सीधी लटक रही थी - मतलब, वह इतनी सीधी थी जैसे किसी ने स्केल से ज़मीन पर लकीर खींची हो। मेरी बहन ने एक सफेद ब्लाउज़ पहना था - हाँ, बिल्कुल ऐसा ही एक साधारण सफेद ब्लाउज़ - और एक ग्रे स्कर्ट, और उसके पैर की उंगलियां बैले डांसर की तरह नीचे की ओर थीं, बस फर्क इतना था कि उसकी उंगलियों के सिरे और ज़मीन के बीच शायद सात-आठ इंच का फासला था। मैंने हर छोटी से छोटी बात पर गौर किया। उसका चेहरा भी। मैंने उसके चेहरे को देखा। मैं खुद को रोक नहीं पाई। मैंने सोचा: मुझे तुरंत नीचे जाकर अपनी माँ को बताना होगा। मुझे चीखना होगा। लेकिन मेरे शरीर ने मेरी बात नहीं मानी। वह अपने आप चलने लगा, मेरे होश में रहने वाले मन से अलग। वह उसे रस्सी से नीचे उतारने की कोशिश कर रहा था जबकि मेरा मन मुझे जल्दी से नीचे जाने के लिए कह रहा था। ज़ाहिर है, एक छोटी बच्ची में ऐसा करने की हिम्मत नहीं हो सकती थी, इसलिए मैं बस वहीं खड़ी रही, लगभग पाँच या छह मिनट तक, एकदम खोई हुई, जैसे

मेरे अंदर कुछ मर गया था। मैं अपनी बहन के साथ उस ठंडी, अंधेरी जगह में वैसे ही पड़ी रही, जब तक मेरी माँ आकर यह नहीं देखने लगी कि क्या हो रहा है।

नाओको ने अपना सिर हिलाया।

"उसके बाद तीन दिन तक मैं बोल नहीं पाई। मैं बस बिस्तर पर एक मुर्दे की तरह पड़ी रही, आँखें खुली और खाली जगह को घूरती हुई। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है।" नाओको ने मेरा हाथ थाम लिया। "मैंने तुम्हें अपने पत्र में बताया था, है ना? मैं तुम्हारी सोच से कहीं ज़्यादा कमज़ोर इंसान हूँ। मेरी बीमारी तुम्हारी सोच से कहीं ज़्यादा गंभीर है: इसकी जड़ें कहीं ज़्यादा गहरी हैं। और इसीलिए मैं चाहती हूँ कि अगर हो सके तो तुम मुझसे आगे निकल जाओ। मेरा इंतज़ार मत करो। अगर चाहो तो दूसरी लड़कियों के साथ सो जाओ। मेरे ख्यालों को अपने रास्ते में रुकावट मत बनने दो। बस वही करो जो तुम करना चाहते हो। वरना, हो सकता है मैं तुम्हें भी अपने साथ ले जाऊँ, और यही वो एक चीज़ है जो मैं नहीं करना चाहती। मैं तुम्हारी ज़िंदगी में दखल नहीं देना चाहती। मैं किसी की भी ज़िंदगी में दखल नहीं देना चाहती। जैसा मैंने पहले कहा था, मैं चाहती हूँ कि तुम कभी-कभी मुझसे मिलने आओ, और मुझे हमेशा याद रखना। बस यही मेरी इच्छा है।"

"लेकिन मुझे सिर्फ यही नहीं चाहिए," मैंने कहा।

"मेरे साथ रहकर तुम अपना जीवन बर्बाद कर रहे हो।" "मैं कुछ भी बर्बाद नहीं कर रहा हूँ।"

"लेकिन शायद मैं कभी ठीक न हो पाऊं। क्या तुम मेरा हमेशा इंतजार करोगे?"

क्या आप 10 साल, 20 साल इंतजार कर सकते हैं?

मैंने कहा, "तुम बहुत सी चीजों से डर रही हो। अंधेरे से, बुरे सपनों से, मृतकों की शक्ति से। तुम्हें इन सब बातों को भूलना होगा। मुझे यकीन है कि अगर तुम ऐसा करोगी तो तुम ठीक हो जाओगी।"
"अगर मैं कर सकती हूँ," नाओको ने सिर हिलाते हुए कहा।
मैंने पूछा, "अगर तुम इस जगह से निकल सको, तो क्या तुम मेरे साथ रहोगी?"
"तब मैं तुम्हें अंधेरे और बुरे सपनों से बचा सकती हूँ। तब मुश्किल समय में तुम्हें सहारा देने के लिए रीको की जगह मैं तुम्हारे साथ होऊंगी।"
नाओको मुझसे और भी मजबूती से चिपक गई। "यह बहुत अच्छा होगा," उसने कहा।

हम तीन बजने से कुछ पहले कैफे वापस आ गए। रीको एक किताब पढ़ रही थी।

और रेडियो पर ब्रह्म्स का दूसरा पियानो कॉन्सर्टो सुन रहा था। ब्रह्म्स का संगीत किसी घास के मैदान के किनारे पर, जहाँ दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं देता था, बजाना अपने आप में अद्भुत था।
रेइको तीसरे मूवमेंट की शुरुआत में बजने वाले सेलो के अंश के साथ सीटी बजा रही थी।
"बैकहॉस और बोहम," उसने कहा। "मैंने इस रिकॉर्ड को बहुत पहले एक बार इतना सुना था कि यह घिस गया था। सचमुच। मैंने हर सुर को सुनते-सुनते इसकी ग्रूव्स को घिस दिया था। मैंने इसमें से सारा संगीत निचोड़ लिया था।"
नाओको और मैंने कॉफी ऑर्डर की।
"क्या तुम बहुत बातें करते हो?" रेइको ने पूछा।

"टनों," नाओको ने कहा।
"मुझे उसके बारे में सब कुछ बाद में बताना।"
"हमने ऐसा कुछ नहीं किया," नाओको ने शरमाते हुए कहा। "सच में?" रेइको ने मुझसे पूछा। "कुछ भी नहीं?" "कुछ भी नहीं," मैंने कहा।
"उबाऊ!" उसने ऊब भरे चेहरे से कहा। "सच है," मैंने अपनी कॉफी की चुस्की लेते हुए कहा।

भोजन कक्ष का दृश्य कल जैसा ही था - माहौल, आवाज़ें, चेहरे सब वही थे। बस मेनू बदला था। सफ़ेद कपड़ों में गंजा आदमी, जो कल भारहीनता की स्थिति में पाचन रस के स्राव के बारे में बात कर रहा था, हम तीनों के साथ हमारी मेज़ पर आकर बैठ गया और मस्तिष्क के आकार और बुद्धिमत्ता के बीच संबंध के बारे में काफ़ी देर तक बातें करता रहा। सोयाबीन बर्गर खाते हुए हमने बिस्मार्क और नेपोलियन के मस्तिष्क के आकार के बारे में सुना। उसने अपनी प्लेट एक तरफ़ रख दी और बॉलपॉइंट पेन और नोटपैड से मस्तिष्क के रेखाचित्र बनाने लगा। वह रेखाचित्र बनाना शुरू करता, कहता, "नहीं, यह ठीक नहीं है", और नया रेखाचित्र बनाना शुरू कर देता। ऐसा कई बार हुआ। रेखाचित्र पूरा करने के बाद, उसने बचे हुए नोटपैड को अपनी सफ़ेद जैकेट की जेब में सावधानी से रख दिया और पेन को अपनी छाती की जेब में रख लिया, जिसमें वह पेंसिल और एक रूलर के साथ कुल तीन पेन रखता था। खाना खत्म करने के बाद, उन्होंने वही बात दोहराई जो उन्होंने मुझे एक दिन पहले कही थी, "यहाँ की सर्दियाँ सचमुच बहुत अच्छी होती हैं। सर्दियों में ज़रूर वापस आना," और 177 से चले गए।

भोजन कक्ष।

मैंने रेइको से पूछा, "क्या वह डॉक्टर है या मरीज? तुम्हें क्या लगता है?"
"मैं सचमुच कुछ नहीं कह सकता। दोनों ही मामलों में, वह बिल्कुल सामान्य नहीं लगता।"
"वह एक डॉक्टर हैं," नाओको ने कहा। "डॉक्टर मियाता।"
"हाँ," रेइको ने कहा, "लेकिन मुझे यकीन है कि वह यहाँ सबसे ज़्यादा पागल है।" "दरबान श्री ओमुरा भी काफी पागल हैं," नाओको ने जवाब दिया।
“सच है,” रेइको ने ब्रोकोली में चाकू घोंपते हुए सिर हिलाते हुए कहा। “वह हर सुबह अजीबोगरीब कसरत करता है, ज़ोर-ज़ोर से बेमतलब की बातें चिल्लाता है। और नाओको, तुम्हारे आने से पहले, बिजनेस ऑफिस में मिस किनोशिता नाम की एक लड़की थी, जिसने आत्महत्या करने की कोशिश की थी। और पिछले साल उन्होंने तोकुशिमा नाम के एक पुरुष नर्स को नौकरी से निकाल दिया था, जिसे शराब की बुरी लत थी।”
मैंने कहा, "ऐसा लगता है कि मरीजों और कर्मचारियों को अपनी जगहें बदल लेनी चाहिए।"
"बिल्कुल सही," रेइको ने अपना कांटा हवा में लहराते हुए कहा। "आखिरकार तुम्हें समझ आने लगा है कि यहाँ चीजें कैसे काम करती हैं।"
"मुझे ऐसा लगता है।"
रेइको ने कहा, "जो चीज हमें सबसे ज्यादा सामान्य बनाती है, वह यह जानना है कि हम सामान्य नहीं हैं।"

कमरे में वापस आकर, नाओको और मैंने ताश खेले जबकि रेइको ने अपने गिटार पर बाख का अभ्यास किया।
"कल तुम कितने बजे निकलोगे?" रेइको ने रुककर सिगरेट जलाते हुए मुझसे पूछा।

मैंने कहा, "नाश्ते के तुरंत बाद। बस नौ बजे आती है। इस तरह मैं कल रात के काम के लिए समय पर वापस पहुँच जाऊँगा।"
"अफ़सोस। अगर आप थोड़ी देर और रुक पाते तो अच्छा होता।"
मैंने हंसते हुए कहा, "अगर मैं यहां ज्यादा देर तक रुका रहा, तो शायद यहीं रहने लग जाऊं।"
"शायद," रेइको ने कहा। फिर नाओको से उसने कहा, "ओह, हाँ, मुझे ओका के यहाँ से कुछ अंगूर लेने जाना है। मैं बिल्कुल भूल गई थी।"
"क्या मैं तुम्हारे साथ चलूँ?" नाओको ने पूछा।

"क्या आप मुझे अपने युवा श्री वातानाबे को कुछ समय के लिए उधार दे सकते हैं?"
"ठीक है," नाओको ने कहा।
"अच्छा। चलो हम दोनों ही एक और रात की सैर पर चलते हैं," रेइको ने मेरा हाथ पकड़ते हुए कहा। "कल की तरह। चलो आज रात पूरी सैर पर चलते हैं।"
"ठीक है," नाओको ने खिलखिलाते हुए कहा। "जो चाहो करो।"
हम लगभग पहुँच ही गए थे।
रात की हवा ठंडी थी। रेइको ने अपनी कमीज़ के ऊपर हल्के नीले रंग का कार्डिगन पहना हुआ था और अपने हाथों को जींस की जेबों में डालकर चल रही थी। आसमान की ओर देखते हुए, वह कुत्ते की तरह हवा को सूंघ रही थी। "बारिश जैसी गंध आ रही है," उसने कहा।
मैंने सूंघने की कोशिश भी की, लेकिन कुछ भी गंध नहीं आई। सच है, आसमान में बहुत सारे बादल थे जिनकी वजह से चांद दिखाई नहीं दे रहा था।

"अगर आप यहां काफी देर तक रुकते हैं, तो आप हवा की गंध से ही मौसम का अंदाजा लगा सकते हैं," रेइको ने कहा।
हम उस जंगल वाले इलाके में दाखिल हुए जहाँ कर्मचारियों के घर बने हुए थे। रेइको ने मुझे एक मिनट रुकने को कहा, फिर एक घर के सामने वाले दरवाजे पर जाकर घंटी बजाई। एक महिला दरवाजे पर आई - निस्संदेह घर की मालकिन - और रेइको से बातें करने और हँसने लगी। फिर वह अंदर गई और एक बड़ा प्लास्टिक का थैला लेकर वापस आई। रेइको ने उसे धन्यवाद दिया और शुभ रात्रि कहकर उस जगह लौट गई जहाँ मैं इंतज़ार कर रहा था।
"देखो," उसने बैग खोलते हुए कहा।
इसमें अंगूरों का एक विशाल गुच्छा था।
क्या आपको अंगूर पसंद हैं?
"उन्हें प्यार।"
उसने मुझे सबसे ऊपर वाला गुच्छा पकड़ा दिया। "इन्हें खा सकते हैं। ये धुले हुए हैं।"
हम अंगूर खाते हुए और उनके छिलके और बीज जमीन पर थूकते हुए चल रहे थे। वे ताजे और स्वादिष्ट थे।
"मैं कभी-कभार उनके बेटे को पियानो सिखाता हूँ, और वे मुझे अलग-अलग चीजें देते हैं। हमने जो वाइन पी थी, वह उन्होंने ही दी थी। मैं कभी-कभी उनसे शहर में मेरे लिए थोड़ी खरीदारी करने के लिए कहता हूँ।"
मैंने कहा, "मैं उस कहानी का बाकी हिस्सा सुनना चाहूंगा जो आप मुझे कल बता रहे थे।"

"ठीक है," रेइको ने कहा। "लेकिन अगर हम लगातार देर से घर आते रहे,

तो नाओको को शक होने लग सकता है।"
मैं जोखिम उठाने को तैयार हूं।
"ठीक है, फिर। लेकिन मुझे छत चाहिए। आज रात थोड़ी ठंड है।"

जैसे ही हम टेनिस कोर्ट के पास पहुँचे, वह बाईं ओर मुड़ गई। हम एक संकरी सीढ़ी से नीचे उतरे और एक ऐसी जगह पर पहुँचे जहाँ कई गोदाम एक इमारत की तरह खड़े थे। रेइको ने सबसे पास वाले गोदाम का दरवाजा खोला, अंदर कदम रखा और बत्ती जला दी। "अंदर आ जाओ," उसने कहा। "वैसे यहाँ देखने लायक कुछ खास नहीं है।"
गोदाम में क्रॉस-कंट्री स्की, बूट और पोल की करीने से कतारें लगी हुई थीं, और फर्श पर बर्फ हटाने के उपकरण और सेंधा नमक के बोरे ढेर लगे हुए थे।
"मैं यहाँ अक्सर गिटार का अभ्यास करने आता था - जब मुझे अकेले रहने का मन होता था। कितना अच्छा और आरामदायक है, है ना?"
रेइको सेंधा नमक की बोरियों पर बैठ गई और मुझे अपने बगल में बैठने के लिए कहा। मैंने वैसा ही किया जैसा उसने कहा था।
"यहाँ हवा आने-जाने की ज्यादा जगह नहीं है, लेकिन क्या मैं सिगरेट पी सकता हूँ?"
मैंने कहा, "आगे बढ़ो।"
"यह एक ऐसी आदत है जिसे मैं छोड़ नहीं पा रही हूँ," उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, लेकिन उसके चेहरे पर स्पष्ट आनंद झलक रहा था। रेइको की तरह तंबाकू का आनंद लेने वाले बहुत कम लोग होते हैं। मैंने अपने अंगूर खाए, उन्हें एक-एक करके सावधानी से छीलकर छिलके और बीज एक कूड़ेदान में फेंक दिए।
"अब देखते हैं, कल रात हम कितनी दूर तक पहुँच पाए?" रेइको ने पूछा।

"वह एक अंधेरी और तूफानी रात थी, और तुम चिड़िया का घोंसला लेने के लिए खड़ी चट्टान पर चढ़ रहे थे।"
"तुम कमाल हो, जिस तरह से तुम बिना कोई भाव दिखाए मजाक कर सकती हो," रेइको ने कहा। "देखते हैं, मुझे लगता है कि मैं उस मुकाम पर पहुँच गई थी जहाँ मैं हर शनिवार सुबह उस लड़की को पियानो सिखाती थी।"
"इतना ही।"
"मान लीजिए कि आप दुनिया के हर व्यक्ति को दो समूहों में विभाजित कर सकते हैं -

कुछ लोग दूसरों को चीजें सिखाने में अच्छे होते हैं, और कुछ लोग अच्छे नहीं होते।
"मैं लगभग पहले समूह से ही ताल्लुक रखती हूँ," रेइको ने कहा। "जब मैं छोटी थी तो मैंने कभी ऐसा नहीं सोचा था, और शायद मैं खुद को उस तरह से सोचना भी नहीं चाहती थी, लेकिन एक बार

मैं एक निश्चित उम्र तक पहुँच गया और मुझे आत्मज्ञान का वह स्तर प्राप्त हो गया, तब मुझे एहसास हुआ कि यह सच है: मैं लोगों को चीजें सिखाने में अच्छा हूँ। वास्तव में बहुत अच्छा।
"मैं आप पर शर्त लगाता हुँ।"
"मुझमें दूसरों के लिए खुद से कहीं ज़्यादा धैर्य है, और मैं दूसरों में सर्वश्रेष्ठ लाने में खुद से कहीं ज़्यादा माहिर हूँ। मैं बस ऐसा ही इंसान हूँ। मैं माचिस की डिब्बी के किनारे पर खुरदुरा सा पदार्थ हूँ। लेकिन मुझे इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मुझे ज़रा भी बुरा नहीं लगता। घटिया माचिस की तीली

से बेहतर है कि मैं एक बेहतरीन माचिस की डिब्बी बनूँ। मुझे यह बात तब समझ में आई, जब मैंने इस लड़की को पढ़ाना शुरू किया। जब मैं छोटा था, तब मैंने कुछ और लोगों को पढ़ाया था, बस शौक के तौर पर, तब मुझे अपने बारे में यह एहसास नहीं था। उसे पढ़ाना शुरू करने के बाद ही मुझे अपने बारे में ऐसा लगने लगा। अरे - मैं लोगों को पढ़ाने में अच्छा हूँ। सबक इतने अच्छे से चले।"

जैसा कि मैंने कल कहा था, तकनीक के मामले में वह लड़की कोई खास नहीं थी, और उसके पेशेवर संगीतकार बनने का तो सवाल ही नहीं था, इसलिए मैं निश्चिंत रह सकता था। साथ ही, वह ऐसे लड़कियों के स्कूल में पढ़ती थी जहाँ ठीक-ठाक नंबर लाने वाली हर लड़की को अपने आप ही विश्वविद्यालय में दाखिला मिल जाता था, जिसका मतलब था कि उसे पढ़ाई में ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती थी, और उसकी माँ भी पढ़ाई में ज्यादा सख्ती न करने के पक्ष में थीं। इसलिए मैंने उस पर कोई दबाव नहीं डाला। पहली बार जब मैं उससे मिला था, तभी मुझे पता चल गया था कि वह ऐसी लड़की है जिस पर कोई दबाव नहीं डाला जा सकता, वह ऐसी बच्ची है जो मीठी-मीठी बातें करेगी और बस "हाँ, हाँ" कहेगी, और जो काम वह नहीं करना चाहेगी, उसे करने से साफ इनकार कर देगी। इसलिए मैंने सबसे पहले उसे अपनी मर्जी से एक धुन बजाने दी - पूरी तरह से अपने तरीके से।

फिर मैं उसके लिए वही धुन कई अलग-अलग तरीकों से बजाता, और हम दोनों इस बात पर चर्चा करते कि कौन सा तरीका सबसे अच्छा था या उसे कौन सा तरीका पसंद आया।

ज़्यादातर मामलों में। फिर मैं उससे वह धुन दोबारा बजाने को कहता, और उसका प्रदर्शन पहले से दस गुना बेहतर होता। वह खुद देख लेती कि

सबसे अच्छा क्या काम करता है और उन विशेषताओं को अपने वादन में शामिल कर लेती।

रेइको एक पल के लिए रुकी और अपनी सिगरेट के जलते हुए सिरे को देखने लगी। मैं बिना कुछ बोले अपने अंगूर खाता रहा।

"मुझे पता है कि मुझे संगीत की अच्छी समझ है, लेकिन वह मुझसे बेहतर थी। मुझे लगता था कि यह कितना बड़ा नुकसान है! मैंने सोचा,

काश, उसे शुरुआत में ही एक अच्छा शिक्षक मिल जाता और उचित प्रशिक्षण प्राप्त हो जाता, तो वह आज कितनी आगे होती!' लेकिन मैं गलत था। वह उस तरह की बच्ची नहीं थी जो उचित प्रशिक्षण झेल सके। ऐसे लोग होते ही हैं। उन्हें यह अद्भुत प्रतिभा मिली होती है, लेकिन वे इसे व्यवस्थित करने का प्रयास नहीं कर पाते। वे इसे टुकड़ों-टुकड़ों में बर्बाद कर देते हैं। मैंने ऐसे बहुत से लोगों को देखा है। पहले तो आपको लगता है कि वे कमाल के हैं। वे किसी बेहद कठिन रचना को देखकर ही बजा सकते हैं और उसे शुरू से अंत तक बहुत अच्छे से प्रस्तुत कर सकते हैं। आप उन्हें ऐसा करते हुए देखते हैं और आप अभिभूत हो जाते हैं। आप सोचते हैं,

"मैं लाखों साल में भी ऐसा कभी नहीं कर सकता।" लेकिन बात बस यहीं तक है।

वे इसे आगे नहीं ले जा सकते। और क्यों नहीं? क्योंकि वे मेहनत नहीं करना चाहते। उन्हें अनुशासन सिखाया ही नहीं गया है। वे बिगड़े हुए हैं। उनमें बस इतनी प्रतिभा है कि वे बिना किसी मेहनत के ही अच्छा प्रदर्शन कर लेते हैं और बचपन से ही लोग उन्हें उनकी प्रतिभा की तारीफ करते रहे हैं, इसलिए कड़ी मेहनत उन्हें बेवकूफी लगती है। वे किसी ऐसे वाद्य यंत्र को, जिस पर दूसरे बच्चे को तीन हफ्ते मेहनत करनी पड़ती है, आधे समय में ही पूरा कर लेते हैं, इसलिए शिक्षक मान लेता है कि उन्होंने

काफी मेहनत कर ली है और उन्हें अगले वाद्य यंत्र पर जाने देता है। और वे उसे भी आधे समय में पूरा करके अगले वाद्य यंत्र पर चले जाते हैं। उन्हें कभी पता ही नहीं चलता कि शिक्षक की डांट का क्या मतलब होता है; वे चरित्र निर्माण के लिए आवश्यक एक महत्वपूर्ण तत्व से वंचित रह जाते हैं। यह एक दुखद बात है। मुझमें भी ऐसी ही प्रवृत्ति थी, लेकिन सौभाग्य से मेरे शिक्षक बहुत सख्त थे, इसलिए मैंने उन्हें काबू में रखा।
वैसे भी, उसे पढ़ाना एक आनंददायक अनुभव था। जैसे 182 में हाईवे पर गाड़ी चलाना।

एक शक्तिशाली स्पोर्ट्स कार जो जरा से स्पर्श पर भी प्रतिक्रिया करती है -

कभी-कभी वे बहुत जल्दी प्रतिक्रिया देते हैं। ऐसे बच्चों को सिखाने का तरीका यह है कि उनकी बहुत ज़्यादा तारीफ़ न करें। उन्हें तारीफ़ की इतनी आदत हो जाती है कि उनके लिए इसका कोई मतलब नहीं रह जाता। आपको सोच-समझकर तारीफ़ करनी होगी। और आप उन पर कुछ भी थोप नहीं सकते। आपको उन्हें खुद चुनने देना होगा।
और उन्हें एक काम से दूसरे काम पर जल्दबाजी करने न दें: उन्हें रुककर सोचने का मौका दें। बस इतना ही। अगर आप ये सब करेंगे तो आपको अच्छे नतीजे मिलेंगे।
रेइको ने सिगरेट का टुकड़ा फर्श पर गिरा दिया और उसे पैरों से कुचलकर बुझा दिया। फिर उसने खुद को शांत करने के लिए गहरी सांस ली।
"जब उसकी क्लास खत्म हो जाती थी, तो हम चाय पीते और बातें करते थे। कभी-कभी मैं उसे जैज़ पियानो की कुछ शैलियाँ दिखाता था - जैसे, यह बड पॉवेल की शैली है, या यह थियोनियस मोंक की। लेकिन ज़्यादातर वह बातें करती रहती थी। और वह कितनी बातूनी थी!"

वह आपको तुरंत अपनी ओर खींच लेती थी। जैसा कि मैंने आपको कल बताया था, मुझे लगता है कि उसने जो कुछ भी कहा, उसमें से अधिकतर मनगढ़ंत था, लेकिन वह दिलचस्प था। वह एक पैनी नज़र रखने वाली, भाषा की सटीक जानकार, तीक्ष्ण बुद्धि वाली और हास्यप्रिय थी। वह आपकी भावनाओं को झकझोर सकती थी। हाँ, सचमुच, यही उसकी सबसे बड़ी खूबी थी।

लोगों की भावनाओं को भड़काना, आपको प्रभावित करना। और वह जानती थी कि उसके पास यह शक्ति है। उसने इसे यथासंभव कुशलता और प्रभावी ढंग से इस्तेमाल करने की कोशिश की। वह आपको जो चाहे महसूस करा सकती थी - गुस्सा, उदासी, सहानुभूति, निराशा या खुशी। वह लोगों की भावनाओं को सिर्फ अपनी शक्तियों को परखने के लिए ही नियंत्रित करती थी। बेशक, मुझे यह बाद में समझ आया। उस समय, मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि वह मेरे साथ क्या कर रही थी।

रेइको ने अपना सिर हिलाया और कुछ अंगूर खा लिए।

"यह एक बीमारी थी," उसने कहा। "वह लड़की बीमार थी। वह सड़े हुए सेब की तरह थी जो बाकी सभी सेबों को खराब कर देता है। और कोई भी उसका इलाज नहीं कर सका।"

उसे यह बीमारी मरने तक रहेगी। इस लिहाज से, वह एक दयनीय छोटी सी प्राणी थी। मैं ऐसा करता।

अगर मैं भी उसकी शिकार न होती, तो मुझे भी उस पर तरस आता। मैं उसे भी एक पीड़ित के रूप में देखती।

रेइको ने कुछ और अंगूर खाए। वह सोच रही थी कि 183 को कैसे बेहतर बनाया जाए।

अपनी कहानी को आगे बढ़ाने के लिए।

खैर, मैंने उसे छह महीने तक पढ़ाने का खूब आनंद लिया।
कभी-कभी उसकी कही कोई बात मुझे थोड़ी अटपटी या चौंकाने वाली लगती थी। या फिर वो बात कर रही होती और अचानक मुझे डर का एक झटका लगता जब मुझे एहसास होता कि किसी व्यक्ति के लिए उसकी नफरत की तीव्रता पूरी तरह से अतार्किक है, या फिर मुझे लगता कि वो बहुत ज्यादा चालाक है, और मैं सोचने लगती कि वो असल में क्या सोच रही है। लेकिन आखिर, हर किसी में कुछ न कुछ कमियां तो होती ही हैं, है ना? और आखिर, उसकी शख्सियत या चरित्र पर सवाल उठाना मेरा क्या काम था? मैं तो बस उसकी पियानो टीचर थी। मुझे बस इतना देखना था कि वो अभ्यास करती है या नहीं। और वैसे भी, सच तो ये है कि मैं उसे पसंद करती थी। मैं उसे बहुत पसंद करती थी।
फिर भी, मैंने इस बात का ध्यान रखा कि मैं उसे अपने बारे में कोई भी बहुत निजी बात न बताऊं।
मुझे बस एक अंतरात्मा से यह आभास होता था कि बेहतर होगा कि मैं ऐसी बातों के बारे में बात न करूँ। उसने मुझसे सैकड़ों सवाल पूछे - वह मेरे बारे में और जानने के लिए बेताब थी - लेकिन मैंने उसे केवल सबसे सामान्य बातें बताईं, जैसे मेरे बचपन के बारे में या मैंने कहाँ पढ़ाई की, इस तरह की बातें। उसने कहा कि वह मेरे बारे में और जानना चाहती है, लेकिन मैंने उसे बताया कि बताने के लिए कुछ नहीं है: मेरा जीवन नीरस रहा है, मेरा एक साधारण पति है, एक साधारण बच्चा है, और ढेर सारा घर का काम है। "लेकिन मैं तुम्हें बहुत पसंद करती हूँ," वह कहती और मुझसे चिपकी हुई नज़रों से मेरी आँखों में देखती। जब वह ऐसा करती तो मेरे अंदर एक रोमांच दौड़ जाता - एक सुखद रोमांच। लेकिन फिर भी, मैंने उसे कभी भी ज़रूरत से ज़्यादा कुछ नहीं बताया।
"और फिर एक दिन - मई के किसी दिन, मुझे लगता है - अपनी क्लास

के बीच में ही उसने कहा कि उसे तबीयत खराब लग रही है। मैंने देखा कि उसका चेहरा पीला पड़ गया था और उसे पसीना आ रहा था, तो मैंने उससे पूछा कि क्या वह घर जाना चाहती है, लेकिन उसने कहा कि अगर वह थोड़ी देर लेट जाए तो उसे बेहतर महसूस होगा। इसलिए मैं उसे उठाकर - लगभग गोद में ही उठाकर - बेडरूम में ले गया।"
हमारा सोफा इतना छोटा था कि वो सिर्फ बिस्तर पर ही लेट सकती थी। उसने असुविधा के लिए माफी मांगी, लेकिन मैंने उसे भरोसा दिलाया कि कोई परेशानी नहीं है और पूछा कि क्या उसे कुछ पीने को चाहिए। उसने कहा नहीं, बस मैं उसके पास रहूँ, जिस पर मैंने कहा कि मुझे खुशी होगी। कुछ मिनट बाद उसने मुझसे अपनी पीठ सहलाने को कहा। उसकी आवाज़ 184 जैसी लग रही थी।

हालांकि वह सचमुच बहुत तकलीफ में थी और उसे बहुत पसीना आ रहा था, इसलिए मैंने उसकी अच्छी तरह से मालिश करना शुरू कर दिया। फिर उसने माफी मांगी और मुझसे पूछा कि क्या मुझे उसकी ब्रा उतारने में कोई आपत्ति होगी, क्योंकि उसे दर्द हो रहा था। तो, मुझे नहीं पता, मैंने उतार दी। उसने एक टाइट ब्लाउज पहना हुआ था, और मुझे उसके बटन खोलने पड़े और पीछे हाथ डालकर ब्रा के हुक खोलने पड़े। 13 साल की उम्र के हिसाब से उसके स्तन काफी बड़े थे। मेरे स्तनों से दोगुने बड़े। और उसने कोई साधारण ब्रा नहीं पहनी थी, बल्कि एक असली एडल्ट मॉडल की, महंगी ब्रा पहनी थी। बेशक, उस समय मेरा ध्यान कहीं और था, और मैं बेवकूफ की तरह उसकी पीठ सहलाता रहा। वह दयनीय आवाज में बार-बार माफी मांगती रही जैसे उसे सच में बहुत अफसोस हो, और मैं उसे कहता रहा, "कोई बात नहीं, कोई बात नहीं।"
रेइको ने अपनी सिगरेट की राख ज़मीन पर झाड़ दी। तब तक मैंने अंगूर

खाना बंद कर दिया था और उसका पूरा ध्यान उसकी कहानी पर था।
कुछ देर बाद वह रोने लगी। मैंने उससे पूछा, "क्या हुआ?"
"कुछ नहीं," वह कहती है। "ज़ाहिर है, यह कुछ नहीं है," मैं कहता हूँ। "सच बताओ। तुम्हें क्या परेशान कर रहा है?" तो वह कहती है, "कभी-कभी मेरा हाल ऐसा हो जाता है। मुझे समझ नहीं आता कि क्या करूँ। मैं बहुत अकेली और उदास हूँ, और मैं किसी से बात नहीं कर सकती, और कोई मेरी परवाह नहीं करता। और इससे मुझे बहुत दुख होता है, बस मेरा हाल ऐसा हो जाता है। मुझे रात को नींद नहीं आती, और मुझे खाने का मन नहीं करता, और यहाँ आकर अपना पाठ पढ़ना ही एकमात्र ऐसी चीज़ है जिसका मैं इंतज़ार करती हूँ।"
तो मैंने कहा, "तुम मुझसे बात कर सकते हो। मुझे बताओ कि तुम्हारे साथ ऐसा क्यों होता है।"
वह कहती है कि घर पर हालात ठीक नहीं हैं। वह अपने माता-पिता से प्यार नहीं कर सकती, और वे भी उससे प्यार नहीं करते। उसके पिता किसी और औरत के साथ हैं और घर पर बहुत कम ही रहते हैं, जिससे उसकी माँ लगभग पागल हो गई है और अपना गुस्सा उस पर निकालती है; वह उसे लगभग हर दिन पीटती है और उसे घर जाना बिल्कुल पसंद नहीं है। अब वह लड़की बहुत रो रही है, उसकी आँखें आँसुओं से भरी हैं, उसकी वे खूबसूरत आँखें। यह दृश्य किसी देवता को भी रुलाने के लिए काफी है। इसलिए मैंने उससे कहा, अगर घर जाना इतना ही बुरा लगता है, तो वह जब चाहे मेरे घर आ सकती है। यह सुनकर लड़की ने मुझे गले लगा लिया और बोली, "ओह, मुझे बहुत अफ़सोस है, लेकिन अगर आप न होते तो मुझे नहीं पता होता कि मैं क्या करती। कृपया मुझसे मुँह मत मोड़िए। अगर आपने ऐसा किया, तो मेरे पास जाने के लिए कोई जगह नहीं होगी।"

"तो, मुझे नहीं पता, मैं उसका सिर अपने पास रखता हूँ और उसे सहलाता हूँ 185

और "कोई बात नहीं" कहते हुए, उसने मुझे बाहों में भर लिया और मेरी पीठ सहलाने लगी, और जल्द ही मुझे बहुत अजीब सा महसूस होने लगा, मेरा पूरा शरीर गर्म हो गया। मतलब, ये रही एकदम खूबसूरत लड़की और मैं उसके साथ बिस्तर पर, हम गले मिल रहे थे, और उसके हाथ मेरी पीठ को इतने कामुक तरीके से सहला रहे थे कि मेरा पति भी ऐसा नहीं कर सकता था, और हर बार जब वो मुझे छूती, तो मुझे लगता जैसे मेरे शरीर के सारे पेंच ढीले हो रहे हों, और इससे पहले कि मुझे कुछ पता चलता, उसने मेरा ब्लाउज और ब्रा उतार दिया और मेरे स्तनों को सहलाने लगी। तब जाकर मुझे आखिरकार एहसास हुआ कि वो पूरी तरह से लेस्बियन है।

मेरे साथ ऐसा पहले भी एक बार स्कूल में हो चुका था, छठी कक्षा की एक लड़की के साथ। तब मैंने उसे रुकने के लिए कहा था।

"ओह, कृपया," वह कहती है, "बस थोड़ा और। मैं बहुत अकेली हूँ, मैं बहुत अकेली हूँ, कृपया मुझ पर विश्वास करो, तुम ही मेरे एकमात्र सहारा हो, ओह कृपया, मुझसे मुँह मत मोड़ो," और वह मेरा हाथ पकड़कर अपने स्तन पर रख देती है।

उसके बेहद खूबसूरत स्तन, और हाँ, मैं एक औरत हूँ, लेकिन जब मेरा हाथ उन्हें छूता है तो मेरे अंदर एक बिजली सी दौड़ जाती है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ। मैं बस एक बेवकूफ की तरह बार-बार 'नहीं नहीं नहीं नहीं' दोहराती रहती हूँ। ऐसा लगता है जैसे मैं लकवाग्रस्त हो गई हूँ, हिल भी नहीं सकती। स्कूल में तो मैंने उस लड़की को धक्का देकर दूर कर दिया था, लेकिन अब मैं कुछ नहीं कर सकती। मेरा शरीर

किसी का हुकुम नहीं मानता।
वह अपने बाएं हाथ से मेरा दाहिना हाथ अपने शरीर से सटाए हुए है, और मेरे निपल्स को चूम और चाट रही है, और उसका दाहिना हाथ मेरी पीठ, मेरी कमर, मेरे नितंबों को सहला रहा है। तो मैं यहाँ बेडरूम में पर्दे बंद करके बैठी हूँ और एक 13 साल की लड़की मुझे लगभग नग्न अवस्था में लिए हुए है - वह किसी तरह मेरे कपड़े उतारती जा रही थी - और मुझे हर जगह छू रही है और मैं आनंद से तड़प रही हूँ। अब जब मैं उस पल को याद करती हूँ, तो यह अविश्वसनीय लगता है। मेरा मतलब है, यह पागलपन है, है ना? लेकिन उस समय ऐसा लग रहा था जैसे उसने मुझ पर जादू कर दिया हो।
रेइको सिगरेट का कश लेने के लिए रुकी।
"जानते हो, ये पहली बार है जब मैंने किसी पुरुष को इसके बारे में बताया है," उसने मेरी तरफ देखते हुए कहा। "मैं तुम्हें इसलिए बता रही हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि मुझे बताना चाहिए, लेकिन मुझे सच में बहुत शर्म आ रही है।"
मैंने कहा, "मुझे माफ कर दीजिए," क्योंकि मुझे और कुछ कहना नहीं आता था।

"यह सिलसिला कुछ देर तक चलता रहा, फिर उसका दाहिना हाथ नीचे की ओर बढ़ने लगा और उसने मेरी पैंटी के ऊपर से मुझे छुआ। तब तक मैं पूरी तरह भीग चुकी थी। मुझे यह कहते हुए शर्म आ रही है, लेकिन मैं इससे पहले या इसके बाद कभी इतनी गीली नहीं हुई थी। मैंने हमेशा खुद को सेक्स के प्रति उदासीन समझा था, इसलिए इतना उत्तेजित होते देखकर मैं दंग रह गई। फिर उसने अपनी पतली, मुलायम उंगलियाँ मेरी

पैंटी के अंदर डालीं, और..."
खैर, आप जानते हैं, मैं इसे शब्दों में बयान नहीं कर सकती। मेरा मतलब है, यह उस अनुभव से बिलकुल अलग था जब कोई पुरुष अपने अनाड़ी हाथों से आपको वहाँ छूता है। यह अद्भुत था। सचमुच। जैसे पंख या रुई। मुझे लगा जैसे मेरे दिमाग के सारे तार फट जाएँगे। फिर भी, मेरे धुंधले दिमाग में कहीं न कहीं यह ख्याल आया कि मुझे इसे रोकना ही होगा।
अगर मैंने इसे एक बार होने दिया, तो मैं कभी नहीं रुकूँगी, और अगर मुझे इस तरह का राज़ अपने अंदर छिपाकर रखना पड़ा, तो मेरा दिमाग फिर से पूरी तरह से खराब हो जाएगा। मैंने अपनी बेटी के बारे में भी सोचा। अगर वह मुझे इस हालत में देख ले तो क्या होगा? उसे सुबह तीन बजे तक मेरे माता-पिता के घर पर रहना था।
शनिवार को, लेकिन अगर कुछ हो जाए और वह अचानक घर आ जाए तो क्या होगा? इससे मुझे हिम्मत मिली और मैं बिस्तर पर उठ खड़ी हुई।
"बस करो, प्लीज़ बस करो!" मैंने चिल्लाकर कहा।
"लेकिन वह रुकी नहीं। इसके बजाय, उसने मेरी पैंटी नीचे खींच दी और अपनी जीभ का इस्तेमाल करने लगी। मैंने अपने पति को भी ऐसा करने की शायद ही कभी इजाजत दी थी, मुझे बहुत शर्म आती थी, लेकिन अब एक 13 साल की लड़की मुझे नीचे से चाट रही थी। मैंने हार मान ली। मैं बस रो सकती थी। और यह बिल्कुल स्वर्ग जैसा था।"
“बस करो!” मैंने एक बार फिर चिल्लाकर उसके चेहरे पर पूरी ताकत से थप्पड़ मारा। आखिरकार वह रुकी, उठी और मेरी आँखों में देखा। हम दोनों बिल्कुल नग्न थे, घुटनों के बल बिस्तर पर एक-दूसरे को घूर रहे थे। वह 13 साल की थी, मैं 31 साल का था, लेकिन पता नहीं, उसके शरीर को देखकर मैं पूरी तरह से अभिभूत हो गया। वह दृश्य आज भी मेरे दिमाग में एकदम स्पष्ट है। मुझे मुश्किल से विश्वास हो रहा था कि मैं एक

13 साल की लड़की के शरीर को देख रहा हूँ, और मुझे अब भी विश्वास नहीं हो रहा है। तुलना में, मेरा शरीर तो आपको रुलाने के लिए काफी था। यकीन मानो।"

मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं था, इसलिए मैंने कुछ नहीं कहा।

"क्या हुआ?" उसने मुझसे कहा। "तुम्हें ये तरीका पसंद है, है ना? मुझे पता था जब मैं तुमसे पहली बार मिली थी। मुझे पता है तुम्हें ये अच्छा लगता है। किसी मर्द के साथ करने से ये कहीं बेहतर है, है ना? देखो तुम कितनी गीली हो गई हो। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें और भी अच्छा महसूस करा सकती हूँ। ये सच है। मैं तुम्हें ऐसा महसूस करा सकती हूँ जैसे तुम्हारा शरीर पिघल रहा हो। तुम चाहती हो ना?" और वो सही थी। वो मेरे पति से कहीं बेहतर थी। और मैं चाहती थी कि वो ये और भी ज़्यादा करे! लेकिन मैं ऐसा होने नहीं दे सकती थी। "चलो इसे हफ्ते में एक बार करते हैं," उसने कहा। "बस हफ्ते में एक बार। किसी को पता नहीं चलेगा। ये हमारा छोटा सा राज़ रहेगा।"

लेकिन मैं बिस्तर से उठी, अपना ड्रेसिंग गाउन पहना और उससे कहा कि वह चली जाए और कभी वापस न आए। उसने बस मेरी तरफ देखा। उसकी आँखें एकदम भावहीन थीं। मैंने उन्हें पहले कभी इस तरह नहीं देखा था।

पहले। ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें गत्ते पर चित्रित किया गया हो। उनमें कोई गहराई नहीं थी। कुछ देर तक मुझे घूरने के बाद, उसने बिना कुछ कहे अपने कपड़े समेटे और जितना धीरे हो सके, मानो दिखावा कर रही हो, एक-एक करके हर चीज़ पहनी। फिर वह पियानो वाले कमरे में वापस गई और अपने बैग से एक ब्रश निकाला। उसने अपने बालों में कंघी की

और रुमाल से अपने होठों से खून पोंछा, जूते पहने और चली गई। बाहर जाते हुए उसने कहा,
"तुम्हें पता है, तुम एक लेस्बियन हो। यह सच है। तुम इसे छुपाने की कोशिश कर सकती हो, लेकिन तुम मरने तक लेस्बियन ही रहोगी।"
"क्या यह सच है?" मैंने पूछा।
रेइको ने अपने होंठ सिकोड़े और कुछ देर सोचती रही। "खैर, यह है भी और नहीं भी। मुझे अपने पति के मुकाबले उसके साथ ज़्यादा अच्छा लगता था। यह सच है। एक समय ऐसा भी था जब मैं इस सवाल को लेकर बहुत परेशान थी। शायद मैं सच में लेस्बियन थी और मुझे तब तक इसका एहसास नहीं हुआ था। लेकिन अब मुझे ऐसा नहीं लगता। इसका मतलब यह नहीं है कि मुझमें वो प्रवृत्ति नहीं है। शायद है भी। लेकिन मैं सही मायने में लेस्बियन नहीं हूँ। किसी औरत को देखकर मुझे कभी कोई इच्छा नहीं होती। समझ रही हो ना?"
मेंने सिर हिलाया।

"कुछ खास तरह की लड़कियाँ मुझ पर प्रतिक्रिया देती हैं, और जब ऐसा होता है तो मुझे इसका एहसास होता है। बस उन्हीं पलों में मेरे अंदर ये भावनाएँ जागृत होती हैं। हालाँकि, मैं नाओको को अपनी बाहों में भर सकता हूँ, और मुझे कुछ भी खास महसूस नहीं होता। जब मौसम गर्म होता है तो हम फ्लैट में लगभग नग्न अवस्था में घूमते हैं, साथ में नहाते हैं, कभी-कभी एक ही बिस्तर पर सोते भी हैं, लेकिन कुछ नहीं होता। मुझे कुछ भी महसूस नहीं होता। मैं देख सकता हूँ कि उसका शरीर सुंदर है, बस इतना ही। दरअसल, नाओको और मैंने एक बार एक खेल खेला था। हमने यह मान लिया था कि हम समलैंगिक हैं। इसके बारे में सुनना

चाहोगी?"

"ज़रूर। बताओ।"

"जब मैंने उसे वो कहानी सुनाई जो मैंने अभी आपको बताई - हम एक-दूसरे को सब कुछ बताते हैं, आप जानते हैं - नाओको ने एक प्रयोग किया। हम दोनों ने कपड़े उतार दिए और उसने मुझे सहलाने की कोशिश की, लेकिन इसका कोई असर नहीं हुआ। बस गुदगुदी हुई। मुझे लगा मैं हंसते-हंसते मर जाऊंगी। इसके बारे में सोचते ही मुझे खुजली होने लगती है। वो कितनी अनाड़ी थी! मुझे यकीन है कि आपको ये सुनकर खुशी हुई होगी।"

"जी हां, मैं हूं, सच कहूं तो।"

"खैर, बस इतना ही," रेइको ने अपनी छोटी उंगली के सिरे से भौंह के पास खुजली करते हुए कहा। "उस लड़की के मेरे घर से चले जाने के बाद, मैंने एक कुर्सी ढूंढी और कुछ देर तक वहीं बैठी रही, सोचती रही कि क्या करूँ। मुझे अपने शरीर के अंदर से अपने दिल की धीमी धड़कन सुनाई दे रही थी। मेरे हाथ-पैर मानो एक टन भारी लग रहे थे, और मेरा मुँह इतना सूखा था जैसे मैंने कोई कीड़ा खा लिया हो। लेकिन मैं खुद को घसीटते हुए बाथरूम तक गई, यह जानते हुए कि मेरी बेटी जल्द ही वापस आ जाएगी। मैं उन जगहों को साफ़ करना चाहती थी जहाँ उस लड़की ने मुझे छुआ और चाटा था। मैंने साबुन से बार-बार रगड़ा, लेकिन उसके छोड़े हुए चिपचिपेपन से छुटकारा नहीं मिल पा रहा था। मुझे पता था कि शायद मैं यह सब कल्पना कर रही हूँ, लेकिन इससे कोई फ़ायदा नहीं हुआ। उस रात, मैंने अपने पति से मेरे साथ शारीरिक संबंध बनाने के लिए कहा, मानो उस अपवित्रता से छुटकारा पाने के लिए। बेशक, मैंने उन्हें कुछ नहीं बताया - मैं बता ही नहीं सकती थी। मैंने उनसे बस इतना कहा कि मैं चाहती हूँ कि वे धीरे-धीरे करें, हमेशा से ज़्यादा समय दें। और

उन्होंने ऐसा ही किया। उन्होंने हर छोटी-छोटी बात पर ध्यान दिया, उन्होंने सचमुच बहुत लंबा समय लिया, और जिस तरह से मैं चरम सुख तक पहुँची, रात, ओह हाँ, यह मेरे लिए बिल्कुल नया अनुभव था।

ऐसा अनुभव मैंने पहले कभी नहीं किया था, हमारे पूरे वैवाहिक जीवन में कभी नहीं। और आपको क्या लगता है ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि उस लड़की की उंगलियों का स्पर्श अभी भी मेरे शरीर में मौजूद था। बस यही बात थी।

"अरे यार, ये तो बहुत शर्मनाक है! देखो, मुझे पसीना आ रहा है! मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैं ये सब कह रही हूँ - उसने मुझसे 'प्यार किया', मैं 'उत्तेजित' हुई!" रीको मुस्कुराई, उसके होंठ फिर से मुड़ गए। "लेकिन इससे भी कोई फ़ायदा नहीं हुआ। दो दिन बीत गए, तीन, और उसका स्पर्श अब भी मेरे साथ था। और उसके आखिरी शब्द मेरे दिमाग में गूंजते जा रहे थे।"

अगले शनिवार को वह मेरे घर नहीं आई। मैं दिन भर इंतज़ार करती रही, मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कता रहा, सोचती रही कि अगर वह आ गई तो मैं क्या करूँगी। मैं किसी चीज़ पर ध्यान नहीं लगा पा रही थी। लेकिन वह आई ही नहीं। ज़ाहिर सी बात है। वह बहुत घमंडी थी, और अंत में वह मेरे साथ नाकाम रही। वह अगले हफ्ते भी नहीं आई, उसके अगले हफ्ते भी नहीं, और देखते ही देखते एक महीना बीत गया। मैंने सोचा कि समय बीतने पर मैं जो हुआ उसे भूल जाऊँगी, लेकिन मैं भूल नहीं पाई। जब मैं घर में अकेली होती, तो मुझे उसकी मौजूदगी का एहसास होता और मेरी नसें तनाव में रहतीं। मैं पियानो नहीं बजा पा रही थी, सोच नहीं पा रही थी, उस पहले महीने में मैं कुछ भी नहीं कर पा रही थी।

और फिर एक दिन मुझे एहसास हुआ कि जब भी मैं घर से बाहर

निकलता था, कुछ गड़बड़ होती थी। पड़ोसी मुझे अजीब तरह से देख रहे थे। उनकी आँखों में एक नई दूरी सी झलक रही थी। वे हमेशा की तरह विनम्रता से अभिवादन तो करते थे, लेकिन उनकी आवाज़ के लहजे और मेरे प्रति उनके व्यवहार में कुछ बदलाव आ गया था। बगल वाली महिला, जो कभी-कभार मुझसे मिलने आती थी, अब मुझसे बचने लगी थी। फिर भी मैंने इन बातों को खुद पर हावी नहीं होने दिया। अगर ऐसी बातें नज़र आने लगें, तो समझो बीमारी के पहले लक्षण दिख रहे हैं।

"फिर एक दिन मुझसे एक और गृहिणी मिलने आई, जिनसे मेरी अच्छी दोस्ती थी। हम दोनों एक ही उम्र की थीं, और वह मेरी माँ की एक सहेली की बेटी थी, और उसका बच्चा मेरे बच्चे के साथ उसी किंडरगार्टन में जाता था, इसलिए हम काफी करीबी दोस्त थे। वह एक दिन अचानक आ गई और मुझसे पूछा कि क्या मुझे मेरे बारे में फैली एक भयानक अफवाह के बारे में पता है।"

मैंने पूछा, "किस तरह की अफवाह?" उसने कहा, "मैं लगभग कह भी नहीं सकती, यह इतनी भयानक है।"

उसने कहा, "ठीक है, तुम यहाँ तक पहुँच गए हो, बाकी तुम्हें ही बताना होगा।"

फिर भी उसने मुझे बताने से मना किया, लेकिन आखिरकार मैंने उससे सब कुछ उगलवा लिया। मेरा मतलब है, मुझसे मिलने आने का उसका पूरा मकसद ही मुझे वो सब बताना था जो उसने सुना था, तो ज़ाहिर सी बात है कि वो आखिरकार सब कुछ बता ही देगी। उसके मुताबिक, लोग कह रहे थे कि मैं एक समलैंगिक हूँ और इसी वजह से कई बार मानसिक अस्पतालों में भर्ती हो चुकी हूँ। उन्होंने कहा कि मैंने अपनी पियानो की

छात्रा के कपड़े उतार दिए और उसके साथ कुछ करने की कोशिश की और जब उसने विरोध किया तो मैंने उसे इतनी ज़ोर से थप्पड़ मारा कि उसका चेहरा सूज गया। उन्होंने कहानी को बिल्कुल उलट-पुलट कर दिया था, जो अपने आप में काफी बुरा था, लेकिन जिस बात ने मुझे सबसे ज़्यादा चौंकाया वो ये थी कि लोगों को पता था कि मैं अस्पताल में भर्ती हो चुकी हूँ।

"मेरी दोस्त ने कहा कि वह सबको बता रही थी कि वह मुझे हमेशा से जानती है और मैं ऐसा नहीं हूँ, लेकिन लड़की के माता-पिता ने उसकी बात पर विश्वास कर लिया और उसे पूरे मोहल्ले में फैला रहे थे। इसके अलावा, उन्होंने मेरे बारे में छानबीन की और पाया कि मुझे मानसिक समस्याओं का इतिहास रहा है।"

"मेरी सहेली ने जैसा सुना, उस दिन वो लड़की अपनी क्लास से घर लौटी तो उसका चेहरा सूजा हुआ था, होंठ फटे हुए और खून से लथपथ थे, ब्लाउज के बटन गायब थे और यहाँ तक कि उसकी अंडरवियर भी फटी हुई थी। क्या आप यकीन कर सकते हैं? उसने ये सब अपनी कहानी को सच साबित करने के लिए किया था, जो उसकी माँ ने उससे जबरदस्ती निकलवाई थी। मैं उसे ये सब करते हुए देख सकती हूँ - ब्लाउज पर खून लगाना, बटन तोड़ना, ब्रा की लेस फाड़ना, आँखें लाल होने तक रोना, बाल बिखेरना और अपनी माँ से झूठ का पुलिंदा बोलना।"

"ऐसा नहीं है कि मैं लोगों को उस पर विश्वास करने के लिए दोष दे रही हूँ। मैं भी उस पर विश्वास कर लेती, यह खूबसूरत गुड़िया जैसी दिखने वाली लड़की, जिसकी ज़बान शैतान जैसी है। वह रोते हुए घर आती है, बात करने से मना कर देती है क्योंकि उसे बहुत शर्म आती है, लेकिन फिर सब कुछ उगल देती है। ज़ाहिर है लोग उस पर विश्वास करेंगे। और बात को और बिगाड़ने के लिए, यह सच है कि मुझे मानसिक समस्याओं के

कारण अस्पताल में भर्ती होना पड़ा था, मैंने उसके चेहरे पर पूरी ताकत से मारा था। मुझ पर कौन विश्वास करेगा? शायद सिर्फ मेरा पति।"
कुछ और दिन बीत गए, इस सवाल से जूझते हुए कि उसे बताऊं या नहीं, लेकिन जब मैंने बताया, तो उसने मेरी बात पर विश्वास किया।
191

बिल्कुल। मैंने उसे उस दिन हुई हर बात बताई - उसने मेरे साथ जो समलैंगिक हरकतें कीं, जिस तरह मैंने उसके चेहरे पर थप्पड़ मारा। बेशक, मैंने उसे अपने दिल की बात नहीं बताई। मैं उसे बता ही नहीं सकती थी।
खैर, वह बहुत गुस्से में था और उसने ज़िद की कि वह सीधे लड़की के परिवार के पास जाएगा। उसने कहा, "आखिरकार, तुम शादीशुदा औरत हो। मेरी पत्नी हो। और तुम एक माँ हो। तुम समलैंगिक हो ही नहीं सकती। ये तो मज़ाक है!"
"लेकिन मैंने उसे जाने नहीं दिया। वह तो बस हालात और बिगाड़ सकता था। मुझे पता था। मुझे पता था कि वह बीमार है। मैंने सैकड़ों बीमार लोगों को देखा था, इसलिए मुझे पता था। वह लड़की अंदर से सड़ी हुई थी। उसकी खूबसूरत त्वचा की एक परत हटाओ, तो अंदर सड़ा हुआ मांस ही मिलेगा। मुझे पता है यह कहना भयानक है, लेकिन यह सच है। और मुझे पता था कि आम लोग उसके बारे में सच्चाई कभी नहीं जान सकते, कि हमारे जीतने का कोई रास्ता नहीं था। वह अपने आस-पास के वयस्कों की भावनाओं से खिलवाड़ करने में माहिर थी, और हमारे पास अपने मामले को साबित करने के लिए कुछ भी नहीं था। सबसे पहले तो, कौन विश्वास करेगा कि एक 13 साल की लड़की ने तीस साल की महिला के लिए समलैंगिक जाल बिछाया?"

हम चाहे कुछ भी कहें, लोग वही मानेंगे जो वे मानना चाहते हैं। हम जितना संघर्ष करेंगे, उतने ही असुरक्षित होते जाएंगे।
मैंने कहा, "हमारे पास करने के लिए केवल एक ही रास्ता था: हमें यहाँ से जाना होगा। अगर मैं उस मोहल्ले में और ज़्यादा समय तक रहती, तो तनाव मुझ पर हावी हो जाता; मेरा दिमाग फिर से खराब हो जाता। ऐसा पहले से ही हो रहा था। हमें वहाँ से निकलना था, कहीं दूर जाना था जहाँ मुझे कोई न जानता हो।" हालाँकि, मेरे पति जाने के लिए तैयार नहीं थे। उन्हें अभी तक यह एहसास नहीं हुआ था कि मैं उनकी कितनी आलोचना कर रही थी। और समय भी बहुत खराब था: उन्हें अपना काम बहुत पसंद था, और आखिरकार वे हमें अपने घर में बसाने में सफल हो गए थे (हम एक छोटे से प्रीफैब घर में रहते थे), और हमारी बेटी अपने किंडरगार्टन में सहज महसूस कर रही थी। "एक मिनट रुको," उन्होंने कहा, "हम यूँ ही सब कुछ छोड़कर नहीं जा सकते।"
मुझे यूं ही नौकरी नहीं मिल सकती। हमें घर बेचना पड़ेगा और दूसरा किंडरगार्टन ढूंढना पड़ेगा। इसमें कम से कम दो महीने लगेंगे।
मैंने उससे कहा, "मैं दो महीने इंतज़ार नहीं कर सकता। यह मुझे हमेशा के लिए खत्म कर देगा। मैं मज़ाक नहीं कर रहा हूँ। यकीन मानो, मुझे पता है मैं क्या कह रहा हूँ।" लक्षण पहले से ही शुरू हो चुके थे: मेरे कानों में घंटी बज रही थी, 192

मुझे अजीब-अजीब आवाजें सुनाई दे रही थीं और नींद नहीं आ रही थी। इसलिए उसने सुझाव दिया कि मैं पहले चली जाऊं, कहीं अकेले चली जाऊं, और वह अपना काम निपटाने के बाद मेरे पीछे आ जाएगा।
“नहीं,” मैंने कहा, “मैं अकेले नहीं जाना चाहती। अगर तुम मेरे साथ नहीं रहे तो मैं बिखर जाऊंगी। मुझे तुम्हारी ज़रूरत है। प्लीज़, मुझे अकेला मत

छोड़ो।” उसने मुझे गले लगाया और थोड़ी देर और रुकने की विनती की। उसने कहा, “बस एक महीना। वह सब कुछ संभाल लेगा – अपनी नौकरी छोड़ देगा, घर बेच देगा, बच्चों के लिए स्कूल का इंतज़ाम कर देगा, नई नौकरी ढूंढ लेगा। उसने यह भी कहा कि ऑस्ट्रेलिया में भी कोई पद मिल जाए तो अच्छा होगा। वह बस चाहता था कि मैं एक महीना इंतज़ार करूँ, और सब ठीक हो जाएगा।” मैं इस पर क्या कह सकती थी? अगर मैं विरोध करती, तो मैं और भी ज़्यादा अकेली पड़ जाती।

रेइको ने आह भरी और छत की बत्ती की ओर देखा।

"मैं एक महीने भी बर्दाश्त नहीं कर पाई। एक दिन, फिर वही हुआ: अचानक! और इस बार यह वाकई बहुत बुरा था। मैंने नींद की गोलियां लीं और गैस चालू कर दी। मैं अस्पताल के बिस्तर पर उठी, और सब कुछ खत्म हो चुका था। मुझे शांत होने और सोचने-समझने में कुछ महीने लग गए, और फिर मैंने अपने पति से तलाक मांगा। मैंने उनसे कहा कि यह उनके और हमारी बेटी के लिए सबसे अच्छा होगा। उन्होंने कहा कि उनका मुझे तलाक देने का कोई इरादा नहीं है। उन्होंने कहा, 'हम एक नई शुरुआत कर सकते हैं। हम तीनों कहीं नई जगह जा सकते हैं और सब कुछ नए सिरे से शुरू कर सकते हैं।' मैंने उनसे कहा, 'अब बहुत देर हो चुकी है।'

"जब तुमने मुझसे एक महीने इंतजार करने को कहा, तब सब कुछ खत्म हो गया। अगर तुम सच में फिर से शुरुआत करना चाहती थी, तो तुम्हें मुझसे ऐसा नहीं कहना चाहिए था। अब, चाहे हम कहीं भी जाएं, चाहे कितनी भी दूर चले जाएं, वही सब फिर से होगा। और मैं तुमसे वही मांगूंगी, और तुम्हें तकलीफ दूंगी। मैं अब ऐसा और नहीं करना चाहती।"

"और इस तरह हमारा तलाक हो गया। या यूं कहूं कि मैंने उसे तलाक दे दिया। हालांकि, उसने दो साल पहले दोबारा शादी कर ली। फिर भी मुझे

खुशी है कि मैंने उसे मुझसे अलग कर दिया।"
सचमुच। मुझे पता था कि मैं जीवन भर ऐसा ही रहूंगा, और मैं किसी को भी अपने साथ इस दलदल में नहीं घसीटना चाहता था। मैं किसी को भी इस निरंतर भय में जीने के लिए मजबूर नहीं करना चाहता था कि मैं किसी भी क्षण अपना मानसिक संतुलन खो सकता हूं।
"वह मेरे लिए अद्भुत थे: एक आदर्श पति, वफादार, मजबूत और धैर्यवान, जिस पर मैं पूरा भरोसा कर सकती थी। उन्होंने 193 काम किए थे।

उन्होंने मुझे ठीक करने के लिए हर संभव प्रयास किया, और मैंने भी उनके और हमारी बेटी के लिए ठीक होने के लिए हर संभव कोशिश की। और मुझे अपने ठीक होने पर पूरा भरोसा था। शादी के बाद से छह साल तक मैं खुश रही। उन्होंने मुझे 99 प्रतिशत तक ठीक कर दिया, लेकिन बाकी का एक प्रतिशत बिगड़ गया। अचानक! हमने जो कुछ भी बनाया था, सब कुछ चकनाचूर हो गया। एक पल में सब कुछ खत्म हो गया। और यह सब उस लड़की की वजह से हुआ।
रेइको ने अपने पैरों से कुचले हुए सिगरेट के टुकड़ों को इकट्ठा किया और उन्हें टिन के डिब्बे में फेंक दिया।
"यह एक भयानक कहानी है। हमने बहुत मेहनत की, एक-एक ईंट जोड़कर अपनी दुनिया बनाई। और जब यह सब बिखर गया, तो बस यूं ही हो गया।"
देखते ही देखते सब कुछ खत्म हो गया।
वह खड़ी हुई और अपने हाथ जेब में डाल लिए। "चलो वापस चलते हैं। बहुत देर हो गई है।"
आकाश पहले से ज़्यादा गहरा था, बादल पहले से ज़्यादा घने थे, चाँद दिखाई नहीं दे रहा था। अब मुझे एहसास हुआ, रेइको की तरह मुझे भी

बारिश की महक आ रही थी। और उसके साथ ही मेरे हाथ में पकड़े हुए थैले में रखे अंगूरों की ताज़ी महक भी मिल रही थी।
"इसीलिए मैं इस जगह को छोड़ नहीं सकती," उसने कहा। "मुझे बाहरी दुनिया से जुड़ने में डर लगता है। मुझे नए लोगों से मिलने और नई भावनाओं का अनुभव करने में डर लगता है।"
मैंने कहा, "मैं समझता हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि तुम यह कर सकते हो। मुझे लगता है कि तुम बाहर जाकर इसे कर सकते हो।"
रेइको मुस्कुराई, लेकिन कुछ नहीं बोली।
नाओको सोफे पर एक किताब लेकर बैठी थी। उसने अपने पैर मोड़ रखे थे और पढ़ते समय अपना हाथ कनपटी पर दबाए हुए थी। ऐसा लग रहा था मानो उसकी उंगलियां उसके दिमाग में आने वाले हर शब्द को छूकर परख रही हों।
छत पर बारिश की बूँदें हल्की-हल्की गिरने लगी थीं। लैंप की रोशनी उसे घेरे हुए थी, मानो बारीक धूल की तरह उसके चारों ओर मंडरा रही हो। रेइको से लंबी बातचीत के बाद, नाओको की युवावस्था ने मुझे एक नए तरीके से प्रभावित किया।
"माफ़ करना हमें देर हो गई," रेइको ने नाओको के सिर पर थपथपाते हुए कहा।
"मज़े कर रहे हो?" नाओको ने ऊपर देखते हुए पूछा।
"बिल्कुल," रेइको ने कहा।

"क्या कर रहे हो?" नाओको ने मुझसे पूछा, "सिर्फ तुम दोनों।"
"मुझे इस बारे में कुछ भी कहने की अनुमति नहीं है, महोदया," मैंने उत्तर दिया।

नाओको खिलखिलाकर मुस्कुराई और अपनी किताब नीचे रख दी। फिर हम तीनों ने बारिश की आवाज़ के बीच अंगूर खाए।

नाओको ने कहा, "जब इस तरह बारिश होती है, तो ऐसा लगता है जैसे हम दुनिया में अकेले हैं। काश बारिश होती ही रहे ताकि हम तीनों साथ रह सकें।"

"ओह, ज़रूर," रेइको ने कहा, "और जब तुम दोनों यह सब कर रहे होगे, तो क्या मुझे तुम्हें पंखा करना चाहिए या किसी बेवकूफ गीशा की तरह अपने गिटार पर बैकग्राउंड म्यूज़िक बजाना चाहिए? नहीं, धन्यवाद!"

"ओह, मैं तुम्हें उसे कभी-कभार इस्तेमाल करने दूंगी," नाओको ने हंसते हुए कहा।

"ठीक है, तो मुझे भी शामिल कर लो," रेइको ने कहा। "आओ, बारिश हो, मूसलाधार बारिश हो!"

बारिश ज़ोरों से बरस रही थी, और बरसती ही जा रही थी। बीच-बीच में गरज से पूरा इलाका हिल रहा था। जब हमने अंगूर खत्म कर लिए, तो रेइको वापस सिगरेट पीने लगी और अपने बिस्तर के नीचे से गिटार निकालकर बजाने लगी - पहले "डेसाफिनाडो" और "द गर्ल फ्रॉम इपनेमा", फिर बाचाराच के कुछ गाने और लेनन और मैककार्टनी के कुछ गाने। रेइको और मैंने फिर से वाइन पी, और जब वह खत्म हो गई तो हमने मेरी बोतल में बची हुई ब्रांडी आपस में बाँट ली। हम तीनों रात भर बातें करते रहे और एक गर्मजोशी भरा, आत्मीय माहौल बन गया, और मैं नाओको के साथ यह कामना करने लगा कि बारिश बरसती ही रहे।

"क्या तुम मुझसे दोबारा मिलने आओगे?" उसने मेरी तरफ देखते हुए पूछा।

"बेशक मैं करूँगा," मैंने कहा।

"और क्या आप लिखेंगे?"

"हर हफ्ते।"
"और क्या आप मेरे लिए कुछ पंक्तियाँ जोड़ देंगे?" रेइको ने पूछा। "हाँ, मैं जोड़ दूँगा," मैंने कहा। "मुझे खुशी होगी।"
ग्यारह बजे, रीको ने सोफे को खोला और मेरे लिए बिस्तर लगाया, जैसा उसने पिछली रात किया था। हमने शुभ रात्रि कहा और बत्तियाँ बंद कर दीं।
नींद न आने के कारण मैंने अपने बैग से 'द मैजिक माउंटेन' और एक टॉर्च निकाली और थोड़ी देर पढ़ा। आधी रात से ठीक पहले, बेडरूम का दरवाजा थोड़ा सा खुला और नाओको आकर मेरे बगल में लेट गई। 195 के विपरीत

पिछली रात नाओको हमेशा की तरह ही थी। उसकी आँखें एकाग्र थीं, उसकी हरकतें फुर्तीली थीं। मेरे कान के पास आकर उसने फुसफुसाते हुए कहा, "पता नहीं, मुझे नींद नहीं आ रही है।"
“मैं भी नहीं कर सकता,” मैंने कहा। अपनी किताब नीचे रखकर और टॉर्च बुझाकर, मैंने उसे अपनी बाहों में भर लिया और चूमा। अंधेरा और बारिश की आवाज़ ने हमें घेर लिया।
"रेइको के बारे में क्या ख्याल है?"
"चिंता मत करो, वह गहरी नींद में सो रही है। और जब वह सोती है, तो गहरी नींद में सोती है।"
तब नाओको ने पूछा, "क्या तुम सचमुच मुझसे दोबारा मिलने आओगे?"
"अवश्य मैं करूँगा।"
"भले ही मैं आपके लिए कुछ न कर पाऊं?"
मैंने अँधेरे में सिर हिलाया। मैं उसके स्तनों का पूरा आकार अपने शरीर से महसूस कर सकता था। मैंने अपने हाथ की हथेली से उसके गाउन के

ऊपर से उसके शरीर की आकृति को छुआ। कंधे से पीठ और कूल्हों तक, मैंने बार-बार अपना हाथ उसके शरीर पर फेरा, उसकी रेखा और कोमलता को अपने मन में उतार लिया। कुछ देर तक इस कोमल आलिंगन में रहने के बाद, नाओको ने अपने होंठ मेरे माथे पर रखे और बिस्तर से उठ गई। मैं अँधेरे में उसके हल्के नीले गाउन को मछली की तरह चमकते हुए देख सकता था।
"अलविदा," उसने धीमी आवाज में कहा।
बारिश की आवाज़ सुनते-सुनते मुझे हल्की नींद आ गई।

अगली सुबह भी बारिश हो रही थी - पिछली रात की मूसलाधार बारिश के विपरीत, हल्की, लगभग अदृश्य पतझड़ की बारिश। बारिश का पता केवल पानी के गड्ढों में उठती लहरों और छज्जों से टपकती बूंदों की आवाज़ से ही चल रहा था। मैं उठा तो खिड़की के चारों ओर दूधिया सफेद धुंध छाई हुई थी, लेकिन जैसे ही सूरज निकला, हवा ने धुंध को उड़ा दिया और आसपास के जंगल और पहाड़ दिखने लगे।
जैसा कि हमने कल किया था, हम तीनों ने नाश्ता किया और फिर पक्षीशाला की देखभाल करने के लिए बाहर चले गए। नाओको और रेइको ने हुड वाली पीले रंग की प्लास्टिक की रेनकोट पहनी हुई थी। मैंने एक स्वेटर और एक वाटरप्रूफ विंडचीटर पहना।
बाहर हवा नम और ठंडी थी। पक्षी भी बारिश से बचने के लिए पिंजरे के पिछले हिस्से में एक साथ huddled होकर बैठे थे।

"बारिश होने पर यहाँ ठंड हो जाती है, है ना?" मैंने रेइको से कहा।
"बारिश होने पर अब हर बार थोड़ी ठंड बढ़ती जाएगी, जब तक कि बर्फ न

गिरने लगे।"
उसने कहा, "जापान सागर से आने वाले बादल जब यहां से गुजरते हैं तो टन बर्फ गिरा देते हैं।"
"आप सर्दियों में पक्षियों के साथ क्या करते हैं?"
"बेशक, इन्हें अंदर ले आओ। हम क्या करें - वसंत ऋतु में इन्हें बर्फ से बाहर निकालें, ये सब जमे हुए ही हों? हम इन्हें पिघलाते हैं, फिर से जीवित करते हैं और चिल्लाते हैं, ठीक है, सब लोग आओ और ले जाओ!"
मैंने तार की जाली को छेड़ा और तोते ने अपने पंख फड़फड़ाए और चहचहाया।
"बेवकूफ!" "धन्यवाद!" "पागल!"
"अब, मैं इसे जमा देना चाहूंगी," नाओको ने उदास चेहरे के साथ कहा।
"मुझे सच में लगता है कि अगर मुझे हर सुबह यह सुनना पड़े तो मैं पागल हो जाऊंगी।"
पक्षीशाला साफ़ करने के बाद हम वापस फ्लैट में आ गए। जब मैं अपना सामान पैक कर रही थी, तब बाकी महिलाओं ने अपने खेत के कपड़े पहन लिए। हम सब एक साथ इमारत से बाहर निकले और टेनिस कोर्ट के ठीक आगे अलग हो गए। वे दाईं ओर मुड़ गईं और मैं सीधा आगे बढ़ती रही। हमने एक-दूसरे को अलविदा कहा और मैंने वादा किया कि मैं फिर आऊंगी। नाओको ने हल्की सी मुस्कान दी और एक कोने में गायब हो गई।
गेट की ओर जाते समय मैं कई लोगों के पास से गुजरा, सभी ने वही पीले रंग के रेनकोट पहने हुए थे जो नाओको और रेइको ने पहने थे, और सभी ने अपने हुड ऊपर कर रखे थे।
बारिश में रंग असाधारण स्पष्टता से चमक रहे थे: ज़मीन गहरी काली थी,

चीड़ की शाखाएँ चमकीली हरी थीं, और पीले रंग में लिपटे लोग किसी दूसरी दुनिया के प्रेतों की तरह लग रहे थे जिन्हें केवल बरसात की सुबह ही धरती पर घूमने की अनुमति मिली हो। वे चुपचाप ज़मीन पर तैरते हुए, खेती के औज़ार, टोकरियाँ और बोरे ढो रहे थे।
जब मैं जाने लगा तो चौकीदार को मेरा नाम याद था और उसने आगंतुकों की सूची में उसे दर्ज कर लिया। "देखा, आप टोक्यो से आए हैं," उस बूढ़े व्यक्ति ने कहा। "मैं वहाँ एक बार गया था। बस एक बार। वहाँ बढ़िया सूअर का मांस मिलता है।"
"क्या वे ऐसा करते हैं?" मैंने पूछा, मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उसे क्या जवाब दूं।
"टोक्यो में मैंने जो कुछ खाया, उसमें से मुझे बहुत कुछ पसंद नहीं आया, लेकिन सूअर का मांस स्वादिष्ट था।"
मुझे लगता है कि वे उन्हें पालने का कोई खास तरीका अपनाते होंगे, है ना?
मैंने कहा कि मुझे नहीं पता था, मैंने इसके बारे में पहली बार सुना था।
"यह कब की बात है, 197 के आसपास?"

वैसे, जब आप टोक्यो गए थे?
"हम्म, चलो देखते हैं," उन्होंने सिर झुकाते हुए कहा, "क्या यह वही समय था जब युवराज की शादी हुई थी? मेरा बेटा टोक्यो में था और उसने कहा कि मुझे कम से कम एक बार वह जगह देखनी चाहिए। यह 1959 की बात होगी।"
"अच्छा, तो फिर, ज़रूर, उस समय टोक्यो में सूअर का मांस स्वादिष्ट रहा होगा," मैंने कहा।
"इन दिनों के बारे में क्या ख्याल है?" उसने पूछा।

मैंने कहा, मुझे पक्का पता नहीं था, लेकिन मैंने इसके बारे में कुछ खास नहीं सुना था। इससे वह थोड़ा निराश हो गया। उसने बातचीत जारी रखने की इच्छा जताई, लेकिन मैंने उसे बताया कि मुझे बस पकड़नी है और सड़क की ओर चलने लगी। नदी के किनारे बने रास्ते पर धुंध के कुछ टुकड़े तैर रहे थे, लेकिन हवा उन्हें पास के पहाड़ की खड़ी ढलानों पर ले जा रही थी। चलते-चलते मैं बीच-बीच में रुकती, मुड़कर देखती और बिना किसी खास वजह के गहरी साँस लेती। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी ऐसे ग्रह पर आ गई हूँ जहाँ गुरुत्वाकर्षण थोड़ा अलग है। हाँ, बिल्कुल, मैंने खुद से कहा, उदास होते हुए: अब मैं बाहरी दुनिया में आ गई हूँ।

शाम साढ़े चार बजे तक हॉस्टल लौटकर, मैंने तुरंत कपड़े बदले और शिंजुकु में रिकॉर्ड की दुकान पर काम करने के लिए निकल गया। मैंने सुबह छह बजे से रात दस साढ़े दस बजे तक दुकान संभाली और कुछ रिकॉर्ड बेचे, लेकिन ज़्यादातर मैं वहीं बैठा रहा, बाहर से गुज़रते तरह-तरह के लोगों को देखता रहा। वहाँ परिवार, जोड़े, शराबी, गुंडे, छोटी स्कर्ट पहने चंचल दिखने वाली लड़कियाँ, दाढ़ी वाले हिप्पी, बार होस्टेस और कुछ ऐसे लोग थे जिन्हें परिभाषित करना मुश्किल था। जब भी मैं हार्ड रॉक बजाता, हिप्पी और घर से भागे हुए बच्चे बाहर इकट्ठा होकर नाचने लगते, पेंट थिनर सूंघते या बस ज़मीन पर बैठे रहते, कुछ खास नहीं करते, और जब मैं टोनी बेनेट का गाना बजाता, तो वे गायब हो जाते।

बगल में एक दुकान थी जहाँ एक अधेड़ उम्र का, नींद से भरी आँखों वाला आदमी सामान बेचता था।

"वयस्क खिलौने"। मैं समझ नहीं पा रहा था कि कोई उस तरह के यौन सामान क्यों चाहेगा जो उसके पास था, लेकिन लगता था उसका धंधा खूब चल रहा था। रिकॉर्ड की दुकान के ठीक सामने वाली गली में मैंने

एक नशे में धुत छात्र को उल्टी करते देखा। हमारे सामने वाले गेम आर्केड में, दूसरे कोण से, 198

एक स्थानीय रेस्टोरेंट का रसोइया अपने ब्रेक के दौरान नकद दांव वाले बिंगो खेलकर समय बिता रहा था। रात के लिए बंद हो चुकी एक दुकान की छत के नीचे, एक सांवला बेघर आदमी बेसुध बैठा था। हल्के गुलाबी रंग की लिपस्टिक लगाए एक लड़की, जिसकी उम्र 12 या 13 साल से ज़्यादा नहीं रही होगी, अंदर आई और मुझसे रोलिंग स्टोन्स का गाना बजाने के लिए कहा।

"जंपिन' जैक फ्लैश"। जब मुझे वो रिकॉर्ड मिला और मैंने उसे उसके लिए बजाया, तो वो ताल पर उंगलियां चटकाने लगी और कमर हिलाते हुए दुकान में नाचने लगी। फिर उसने मुझसे सिगरेट मांगी। मैंने उसे मैनेजर की एक सिगरेट दी, जिसे उसने कृतज्ञतापूर्वक पी लिया, और रिकॉर्ड खत्म होते ही वो बिना "धन्यवाद" कहे दुकान से चली गई।

लगभग हर 15 मिनट में मुझे एम्बुलेंस या पुलिस कार का सायरन सुनाई देता था। सूट और टाई पहने तीन नशे में धुत कंपनी के अधिकारी आते थे और हर बार "वाह, क्या गजब का पिछवाड़ा है!" चिल्लाते हुए ज़ोर-ज़ोर से हंसते थे।

एक सुंदर, लंबे बालों वाली लड़की को टेलीफोन बूथ में देखा।

जितना ज़्यादा मैं देखता गया, उतना ही ज़्यादा मैं उलझन में पड़ गया। आखिर ये सब क्या था? मैंने सोचा। इसका मतलब क्या हो सकता है?

मैनेजर डिनर करके वापस आया और मुझसे बोला, "अरे, वातानाबे, जानते हो क्या? परसों रात मैंने उस बुटीक वाली लड़की के साथ संबंध बना लिया।"

कुछ समय से उसकी नजर पास की ही एक बुटीक में काम करने वाली

लड़की पर थी, और वह कभी-कभी दुकान से उसके लिए उपहार के रूप में एक रिकॉर्ड ले आता था।
मैंने उससे कहा, "बहुत बढ़िया!" जिसके बाद उसने मुझे अपनी जीत का हर एक विवरण बताया।
"अगर तुम सच में किसी लड़की को पटाना चाहते हो, तो तुम्हें ये करना होगा।"
वह बहुत प्रसन्न होकर बोलने लगा, "सबसे पहले, तुम्हें उसे उपहार देने होंगे।"
फिर तुम्हें उसे खूब शराब पिलानी होगी। मतलब, बहुत ज्यादा शराब पिलानी होगी। फिर बस कर देना है। आसान है। समझे?
हमेशा की तरह दिमाग उलझा हुआ था, मैं कम्यूटर ट्रेन में चढ़ा और अपने छात्रावास वापस चला गया। पर्दे बंद करके, मैंने लाइटें बंद कीं, बिस्तर पर लेट गया और मुझे ऐसा लगा जैसे नाओको किसी भी क्षण मेरे बगल में रेंगती हुई आ जाएगी। आँखें बंद करके, मैं अपनी छाती पर उसके स्तनों की कोमल उभार को महसूस कर सकता था, उसकी फुसफुसाहट सुन सकता था और 199 की आकृति को महसूस कर सकता था।

उसका शरीर मेरे हाथों में था। अँधेरे में, मैं उसकी उस छोटी सी दुनिया में लौट गया। मैंने घास की महक महसूस की, रात में बारिश की आवाज़ सुनी। मैंने उसे चाँदनी में नग्न अवस्था में देखा था, और कल्पना की कि वह पीले रंग के रेनकोट में लिपटे अपने कोमल, सुंदर शरीर के साथ चिड़ियों का पिंजरा साफ़ कर रही है और सब्ज़ियों की देखभाल कर रही है। अपने लिंग को थामे, मैं नाओको के बारे में सोचता रहा, जब तक कि मेरा वीर्यपात नहीं हो गया। इससे मेरा दिमाग़ थोड़ा सा साफ़ हुआ, लेकिन नींद नहीं आई। मैं थका हुआ था, नींद के लिए बेताब था, लेकिन नींद मेरा

साथ नहीं दे रही थी।
मैं बिस्तर से उठा और खिड़की के पास खड़ा हो गया, मेरी धुंधली निगाहें झंडे के खंभे की ओर भटक रही थीं। राष्ट्रीय ध्वज के बिना, खंभा रात के अंधेरे में उभरी हुई एक विशाल सफेद हड्डी जैसा लग रहा था। नाओको अब क्या कर रही होगी? मैंने सोचा। बेशक, वह सो रही होगी, गहरी नींद में, अपनी उस अजीब सी छोटी दुनिया के अंधेरे में डूबी हुई। काश उसे दुख भरे सपने न आएं, मैं मन ही मन प्रार्थना कर रहा था।
200

अगली सुबह, गुरुवार को, शारीरिक शिक्षा की कक्षा में मैंने 50 मीटर के स्विमिंग पूल में कई चक्कर लगाए। इस ज़ोरदार कसरत से मेरा दिमाग़ और भी साफ़ हो गया और मुझे भूख भी लग गई। एक ऐसे छात्र रेस्तरां में भरपेट खाना खाने के बाद, जो अपने बड़े-बड़े लंच के लिए मशहूर है, मैं कुछ शोध करने के लिए साहित्य विभाग की लाइब्रेरी जा रहा था, तभी मेरी मुलाक़ात मिदोरी कोबायाशी से हो गई। उसके साथ एक छोटी कद की लड़की थी, जिसने चश्मा पहना हुआ था, लेकिन जब उसने मुझे देखा, तो वह अकेले ही मेरे पास आई।

"तुम कहाँ जा रहे हो?" उसने पूछा।
मैंने कहा, "साहित्यिक पुस्तकालय।"
"क्यों न आप इसे भूलकर मेरे साथ दोपहर का भोजन करें?" "मैंने पहले ही खाना खा लिया है।"
"तो क्या हुआ? फिर से खा लो।"
हम पास के एक कैफे में गए जहाँ उसने करी की एक प्लेट ली और मैंने एक कप कॉफी पी। उसने पीले ऊनी बनियान के ऊपर सफेद लंबी आस्तीन वाली कमीज पहनी थी जिस पर मछली बनी हुई थी, साथ ही एक पतली सोने की चेन और डिज्नी की घड़ी भी पहनी थी। ऐसा लग रहा था कि उसे करी बहुत पसंद आई और उसने इसके साथ तीन गिलास पानी पिया।
"तुम कहाँ थे?" मिदोरी ने पूछा। "मुझे नहीं पता मैंने कितनी बार फोन किया।"
"क्या आप कुछ बात करना चाहते थे?" "कुछ खास नहीं। मैंने बस फोन किया था।"

"अच्छा ऐसा है।"

"तुम क्या देखते हो?"
"कुछ नहीं। बस 'ठीक है'," मैंने कहा। "हाल ही में कोई आग लगी है क्या?"
"मज़ा आया ना? ज़्यादा नुकसान तो नहीं हुआ, पर धुएँ ने सब कुछ असली जैसा महसूस करा दिया। कमाल था।" मिदोरी ने एक और गिलास पानी गटक लिया, गहरी साँस ली और कुछ देर तक मेरे चेहरे को देखती

रही। "अरे, तुम्हें क्या हुआ है?" उसने पूछा। "तुम्हारा चेहरा खोया-खोया सा लग रहा है। तुम्हारी आँखें कहीं टिकी नहीं हैं।"
मैंने कहा, "मैं ठीक हूँ। मैं अभी-अभी एक यात्रा से लौटा हूँ और थका हुआ हूँ।"
"ऐसा लग रहा है जैसे तुमने अभी-अभी कोई भूत देखा हो।" "मैं समझ गया।"
"अरे, क्या आपके पास जर्मन और अंग्रेजी है?" "क्या आप 'en' छोड़ सकते हैं?" "जर्मन नहीं। मेरे पास है।" "यह कब खत्म होगा?" "दो।"
"ठीक है। उसके बाद मेरे साथ शहर में जाकर कुछ ड्रिंक्स पीने के बारे में क्या ख्याल है?"
दोपहर के दो बजे?!
"बदलाव के लिए क्यों नहीं? तुम तो बिल्कुल खोए-खोए से लग रहे हो। चलो, मेरे साथ पीजिए और थोड़ा जोश भर लीजिए। मैं भी यही चाहता हूँ - तुम्हारे साथ पीजिए और खुद में भी थोड़ी जान डाल लीजिए।"
आप क्या कहते हैं?"
"ठीक है, चलो चलते हैं," मैंने आह भरते हुए कहा। "मैं तुम्हें दो बजे साहित्य विभाग में ढूंढूंगा।"
जर्मन भाषा की पढ़ाई पूरी करने के बाद हमने शिंजुकु के लिए बस पकड़ी और किनोकुनिया किताबों की दुकान के पीछे स्थित DUG नामक एक भूमिगत बार में गए। हम सभी ने दो-दो वोदका और टॉनिक के साथ शुरुआत की।
"मैं यहाँ कभी-कभार आती हूँ," उसने कहा। "यहाँ दोपहर में शराब पीने पर शर्मिंदगी महसूस नहीं होती।"
"क्या आप दोपहर में बहुत शराब पीते हैं?"
"कभी-कभी," उसने अपने गिलास में बर्फ़ हिलाते हुए कहा। "कभी-कभी,

जब दुनिया में जीना बहुत मुश्किल हो जाता है, तो मैं यहाँ वोदका और टॉनिक पीने आती हूँ।"
क्या दुनिया में रहना मुश्किल हो जाता है?
"कभी-कभी," मिदोरी ने कहा। "मेरी भी अपनी कुछ खास छोटी-मोटी परेशानियां होती हैं।"
"कैसा?"
"परिवार की तरह, बॉयफ्रेंड की तरह, अनियमित पीरियड्स की तरह... ऐसी ही चीज़ें।" "तो एक और ड्रिंक ले लो।"

"मैं करूँगा।"
मैंने वेटर को इशारा किया और दो और वोदका और टॉनिक का ऑर्डर दिया।
"याद है, उस रविवार को जब तुम आए थे, तो तुमने मुझे चूमा था?"
मिडोरी ने पूछा, "मैं इसके बारे में सोच रही थी। यह अच्छा था। सचमुच बहुत अच्छा।"
"यह अच्छा है।"
“ये तो बढ़िया है,” उसने नकल करते हुए कहा। “तुम्हारे बात करने का तरीका तो बहुत अजीब है!”
"यह है?"
खैर, उस समय मैं सोच रही थी। मैं सोच रही थी कि कितना अच्छा होता अगर मेरी ज़िंदगी में पहली बार किसी लड़के ने मुझे चूमा होता। अगर मैं अपनी ज़िंदगी का क्रम बदल सकती, तो मैं बिल्कुल, बिल्कुल उसी पल को अपना पहला चुंबन बनाती। और फिर मैं अपनी बाकी ज़िंदगी यह सोचते हुए बिताती: अरे, मुझे आश्चर्य है कि उस लड़के वातानाबे का क्या

हुआ होगा जिसे मैंने लॉन्ड्री डेक पर अपना पहला चुंबन दिया था, अब वह 58 साल का हो गया है? कितना अच्छा होता ना?
"हां, सचमुच," मैंने एक पिस्ता तोड़ते हुए कहा।
"अरे, तुम्हें क्या हुआ है? तुम इतने खोए-खोए क्यों हो? तुमने अभी तक मुझे जवाब नहीं दिया।"
मैंने कुछ देर सोचने के बाद कहा, 'शायद मैं अभी तक इस दुनिया में पूरी तरह से ढल नहीं पाई हूँ। पता नहीं, मुझे ऐसा लगता है कि यह असली दुनिया नहीं है। लोग, माहौल: ये सब मुझे असली नहीं लगते।'
मिडोरी ने अपनी कोहनी बार पर टिकाई और मेरी तरफ देखा। "मुझे पूरा यकीन है कि जिम मॉरिसन के किसी गाने में कुछ ऐसा ही था।"
"जब आप एक अजनबी हैं तो लोग अजीब हैं।"
"शांति," मिदोरी ने कहा।
"शांति," मैंने कहा।
"तुम्हें मेरे साथ उरुग्वे ज़रूर चलना चाहिए," मिडोरी ने बार पर झुकते हुए कहा। "गर्लफ्रेंड, परिवार, यूनिवर्सिटी - सबको भूल जाओ।"
मैंने हंसते हुए कहा, "बुरा विचार नहीं है।"
"क्या आपको नहीं लगता कि सब कुछ और सभी लोगों से छुटकारा पाकर कहीं ऐसी जगह चले जाना कितना अद्भुत होगा जहाँ आप किसी को भी नहीं जानते हों?"
कभी-कभी मेरा मन ऐसा करने का करता है। कभी-कभी तो मेरा सच में ऐसा करने का बहुत मन करता है। जैसे, मान लो कि तुम मुझे कहीं बहुत दूर ले गए, 203

मैं तुम्हारे लिए ढेर सारे बच्चे पैदा करूँगा जो छोटे सांडों की तरह मजबूत होंगे। और हम सब हमेशा खुशी-खुशी रहेंगे, ज़मीन पर लोट-पोट होते हुए।

मैं हँसा और अपना तीसरा वोदका और टॉनिक पिया।
"मुझे लगता है कि आप अभी छोटे सांडों की तरह बहुत सारे सख्त बच्चे नहीं चाहते हैं," मिदोरी ने कहा।
मैंने कहा, "मुझे जिज्ञासा हो रही है। मैं देखना चाहता हूँ कि वे कैसे दिखते हैं।"
"कोई बात नहीं, आपको उन्हें चाहने की ज़रूरत नहीं है," मिडोरी ने पिस्ता खाते हुए कहा। "मैं यहाँ दोपहर में शराब पी रही हूँ और जो मन में आता है वही कह रही हूँ: 'मैं सब कुछ छोड़कर कहीं भाग जाना चाहती हूँ।'"
उरुग्वे जाने का क्या फायदा? वहां तो सिर्फ गधे का गोबर ही मिलता है।
"आप शायद सही हो सकते हैं।"
"हर जगह गधे का गोबर। यहाँ गोबर, वहाँ गोबर, पूरी दुनिया गधे के गोबर से भरी है। अरे, मैं इसे खोल नहीं पा रही। तुम ले लो।" मिदोरी ने मुझे एक पिस्ता पकड़ा दिया। मैंने बड़ी मशक्कत के बाद उसे खोला। "लेकिन ओह, पिछले रविवार को कितना सुकून मिला! तुम्हारे साथ कपड़े धोने की जगह पर जाना, आग देखना, बीयर पीना, गाने गाना। पता नहीं कितने समय बाद मुझे इतना सुकून मिला है। लोग हमेशा मुझ पर कुछ न कुछ थोपने की कोशिश करते हैं। मुझे देखते ही मुझे बताने लगते हैं कि क्या करना है। कम से कम तुम तो मुझ पर कुछ थोपने की कोशिश नहीं करते।"
मैं तुम्हें इतना अच्छी तरह से नहीं जानता कि तुम पर कुछ थोप सकूं।
"तुम्हारा मतलब है, अगर तुम मुझे बेहतर जानते, तो तुम भी दूसरों की तरह मुझ पर चीजें थोपते?"
मैंने कहा, "यह संभव है। असल दुनिया में लोग इसी तरह जीते हैं: एक-दूसरे पर चीजें थोपते हुए।"
"तुम ऐसा नहीं करोगे। मैं बता सकता हूँ। मैं किसी पर दबाव डालने और

किसी पर दबाव डाले जाने का विशेषज्ञ हूँ। तुम उस तरह के इंसान नहीं हो।"
इसीलिए मैं तुम्हारे साथ आराम महसूस करता हूँ। क्या तुम्हें अंदाज़ा है कि दुनिया में कितने लोग हैं जो दूसरों पर चीज़ें थोपना पसंद करते हैं और खुद भी उन पर चीज़ें थोपी जाती हैं? बहुत सारे! और फिर वे खूब हंगामा करते हैं, जैसे
"मैंने उसे मजबूर किया", "तुमने मुझे मजबूर किया!" यही उन्हें पसंद है। लेकिन मुझे यह पसंद नहीं है। मैं तो बस इसलिए करता हूँ क्योंकि मुझे करना पड़ता है।

"आप लोगों पर किस तरह की चीजें थोपते हैं या वे आप पर किस तरह की चीजें थोपते हैं?"
मिडोरी ने अपने मुंह में बर्फ का एक टुकड़ा रखा और कुछ देर तक उसे चूसती रही।
"क्या तुम मुझे और अच्छे से जानना चाहते हो?" उसने पूछा। "हाँ, कुछ हद तक।"
"अरे, देखो, मैंने तुमसे अभी पूछा था, 'क्या तुम मुझे बेहतर तरीके से जानना चाहते हो?'"
यह किस तरह का जवाब है?
"हां, मिदोरी, मैं तुम्हें और अच्छे से जानना चाहता हूं," मैंने कहा। "सच में?"
"हाँ सच।"
"भले ही आपको जो दिख रहा है उससे अपनी नज़रें फेरनी पड़ें?"
क्या तुम इतने बुरे हो?

"हाँ, एक तरह से," मिदोरी ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। "मुझे एक और ड्रिंक चाहिए।"

मैंने वेटर को बुलाया और ड्रिंक्स का चौथा राउंड ऑर्डर किया। ड्रिंक्स आने तक, मिदोरी ने अपनी ठुड्डी को हाथ से थाम लिया और कोहनी बार पर टिका दी। मैं चुपचाप थियोनियस मोंक का गाना "हनीसकल रोज़" सुनता रहा। वहाँ पाँच-छह और ग्राहक थे, लेकिन हम ही अकेले थे जो शराब पी रहे थे। कॉफी की मनमोहक खुशबू ने उदास से माहौल को एक अंतरंगता प्रदान कर दी।

"क्या आप इस रविवार को खाली हैं?" मिदोरी ने पूछा।

"मुझे लगता है मैंने आपको पहले भी बताया था, मैं रविवार को हमेशा खाली रहता हूँ। जब तक कि मैं शाम छह बजे काम पर नहीं जाता।"

"ठीक है, तो इस रविवार को क्या तुम मेरे साथ समय बिताओगे?"

"ज़रूर," मैंने कहा।

मैं रविवार सुबह आपके छात्रावास से आपको लेने आऊंगा। हालांकि, मुझे ठीक समय नहीं पता। क्या यह ठीक रहेगा?

मैंने कहा, "ठीक है। कोई दिक्कत नहीं।"

"अब, मुझे आपसे पूछने दीजिए: क्या आपको कोई अंदाजा है कि मैं इस समय क्या करना चाहूंगा?"

मैं इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता।

"अच्छा, सबसे पहले तो मैं एक बड़े, चौड़े, मुलायम बिस्तर पर लेटना चाहता हूँ। मैं पूरी तरह से आराम से, मदहोश होकर, आस-पास कहीं भी गधे का गोबर नहीं चाहता, और मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे बगल में लेटी रहो। और फिर, धीरे-धीरे, तुम मेरे कपड़े उतार दो। बड़े प्यार से। जैसे एक माँ अपने छोटे बच्चे के कपड़े उतारती है। बहुत ही नरमी से।"

"हम्म ..."
"मैं बस खोई हुई थी और बहुत अच्छा महसूस कर रही थी, तभी अचानक मुझे एहसास हुआ कि क्या हो रहा है और मैंने तुम पर चिल्लाकर कहा, 'बस करो, वातानाबे!' और फिर मैंने कहा, 'मैं तुम्हें बहुत पसंद करती हूँ, वातानाबे, लेकिन मैं किसी और के साथ हूँ। मैं यह नहीं कर सकती। मानो या न मानो, मैं इन मामलों में बहुत ही शालीन हूँ, इसलिए कृपया रुक जाओ।' लेकिन तुम..."
रुको मत।
"लेकिन मैं रुक जाऊंगा," मैंने कहा।
"मुझे पता है। कोई बात नहीं, ये तो बस मेरी कल्पना है," मिदोरी ने कहा।
"तो फिर मुझे दिखाओ। तुम्हारा वो अंग। एकदम सीधा खड़ा हुआ। मैं तुरंत अपनी आँखें ढक लेती हूँ, बेशक, लेकिन एक पल के लिए मैं उसे देखने से खुद को रोक नहीं पाती।"
और मैं कहती हूँ, "बस करो! ऐसा मत करो! मुझे इतनी बड़ी और सख्त चीज नहीं चाहिए!"
"यह इतना बड़ा नहीं है। बस साधारण सा है।"
"कोई बात नहीं, यह तो एक कल्पना है। तो फिर तुम एकदम उदास चेहरा बना लेते हो, और मुझे तुम पर तरस आता है और मैं तुम्हें दिलासा देने की कोशिश करता हूँ। चिंता मत करो, बेचारे।"
"और आप मुझसे कह रहे हैं कि अब आप यही करना चाहते हैं?" "बस यही।"
"ओह लड़का।"

हमने वोदका और टॉनिक के पाँच राउंड पीने के बाद बार छोड़ दिया। जब

मैंने भुगतान करने की कोशिश की, तो मिदोरी ने मेरे हाथ पर थप्पड़ मारा और अपने पर्स से एक बिल्कुल नया 10,000 पाउंड का नोट निकालकर भुगतान कर दिया।
"कोई बात नहीं," उसने कहा। "मुझे अभी-अभी वेतन मिला है, और मैंने आपको आमंत्रित किया है। बेशक, अगर आप कट्टर फासीवादी हैं और किसी महिला को आपको पेय पदार्थ पिलाने से मना करते हैं..."
नहीं नहीं, मैं ठीक हूँ।
"और मैंने तुम्हें इसे अंदर डालने भी नहीं दिया।" "क्योंकि यह बहुत बड़ा और सख्त है," मैंने कहा।
"हाँ," मिदोरी ने कहा। "क्योंकि यह बहुत बड़ा और सख्त है।"
थोड़ी सी नशे में धुत मिदोरी का एक कदम चूक गया और हम लगभग सीढ़ियों से नीचे गिर ही गए। आसमान को काला कर देने वाली बादलों की परत छंट चुकी थी।

अब ढलती दोपहर की हल्की धूप शहर की सड़कों पर पड़ रही थी। मिदोरी और मैं थोड़ी देर इधर-उधर घूमते रहे। उसने कहा कि वह पेड़ पर चढ़ना चाहती है, लेकिन दुर्भाग्य से शिंजुकु में चढ़ने लायक कोई पेड़ नहीं थे, और शिंजुकु इंपीरियल गार्डन बंद हो रहा था।
"बहुत बुरा हुआ," मिदोरी ने कहा। "मुझे पेड़ पर चढ़ना बहुत पसंद है।"
हम चलते रहे और दुकानों के बाहर से सामान देखते रहे, और जल्द ही मुझे सड़क का दृश्य पहले की तुलना में अधिक वास्तविक लगने लगा।
मैंने कहा, "आपसे मिलकर मुझे खुशी हुई। मुझे लगता है कि अब मैं दुनिया के साथ थोड़ा और तालमेल बिठा चुका हूँ।"
मिडोरी अचानक रुक गई और मेरी तरफ टकटकी लगाकर देखने लगी।
"यह सच है," उसने कहा। "तुम्हारी नज़रें पहले से कहीं ज़्यादा केंद्रित हैं।

देखा? मेरे साथ समय बिताने से तुम्हें फ़ायदा होता है।"
मैंने कहा, "इसमें कोई शक नहीं है।"
शाम 5:30 बजे मिदोरी ने कहा कि उसे घर जाकर खाना बनाना है। मैंने कहा कि मैं बस से अपने छात्रावास वापस चला जाऊंगा, और स्टेशन तक उसे देखता रहा।
"अब मुझे क्या करना है, पता है?" मिदोरी ने जाते हुए मुझसे पूछा।
मैंने कहा, "मुझे बिलकुल भी अंदाजा नहीं है कि आप क्या सोच रहे होंगे।"
"मैं चाहता हूँ कि हम दोनों को समुद्री डाकू पकड़ लें। फिर वे हमारे कपड़े उतार दें और हमें आमने-सामने नग्न अवस्था में सटाकर इन रस्सियों से घेर दें।"
वे ऐसा क्यों करेंगे?
"विकृत समुद्री डाकू," उसने कहा।
मैंने कहा, "तुम ही विकृत हो।"
फिर उन्होंने हमें जहाज के निचले हिस्से में बंद कर दिया और कहा, "एक घंटे में हम तुम्हें समुद्र में फेंक देंगे, तो खूब मजे करो।"
तब तक।"
"और ... ?"
"तो हम एक घंटे तक खूब मजे करते हैं, इधर-उधर लोटते हैं और अपने शरीर को मरोड़ते हैं।"
"और अब आप मुख्य रूप से यही करना चाहते हैं?"
"इतना ही।"
"ओह माय गॉड," मैंने सिर हिलाते हुए कहा।

रविवार की सुबह 9:30 बजे मिदोरी मुझे लेने आई। मैं अभी-अभी उठी थी और मैंने अपना चेहरा नहीं धोया था। किसी ने मेरे दरवाजे पर ज़ोर-ज़ोर से दस्तक दी और चिल्लाने लगा...

"अरे, वातानाबे, ये तो एक औरत है!" मैं लॉबी में गया तो देखा कि मिदोरी वहाँ बेहद छोटी डेनिम स्कर्ट पहने, पैर मोड़े बैठी जम्हाई ले रही थी। नाश्ते के लिए जा रहे हर छात्र ने रुककर उसके लंबे, पतले पैरों को देखा। वाकई उसके पैर बहुत खूबसूरत थे।

"क्या मैं बहुत जल्दी आ गई हूँ?" उसने पूछा। "मुझे यकीन है कि तुम अभी-अभी सोकर उठी हो।"

"क्या आप मुझे 15 मिनट दे सकते हैं? मैं अपना चेहरा धो लूँगा और दाढ़ी बना लूँगा।" "मुझे इंतज़ार करने में कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन ये सब लोग मुझे घूर रहे हैं।"

मेरे पैर।"

"इतनी छोटी स्कर्ट पहनकर लड़कों के छात्रावास में आने पर आप और क्या उम्मीद करती हैं?"

वे घूरेंगे ही, यह तो स्वाभाविक है।

"ओह, कोई बात नहीं। मैंने आज बहुत प्यारी पैंटी पहनी है - पूरी गुलाबी, झालरदार और लेस वाली।"

"इससे तो बात और बिगड़ गई," मैंने आह भरते हुए कहा। मैं अपने कमरे में वापस गया और जल्दी से नहा-धोकर दाढ़ी बनाई, नीली बटन वाली कमीज़ और ग्रे ट्वीड स्पोर्ट्स कोट पहना, फिर नीचे जाकर मिदोरी को छात्रावास के गेट से बाहर तक पहुँचाया। मैं पसीने से तरबतर था।

"मुझे बताओ, वातानाबे," मिदोरी ने छात्रावास की इमारतों की ओर देखते हुए कहा।

"क्या यहाँ के सभी लोग हस्तमैथुन करते हैं?" "शायद," मैंने कहा।
"क्या लड़के ऐसा करते समय लड़कियों के बारे में सोचते हैं?"
"मुझे लगता है ऐसा ही है। मुझे शक है कि हस्तमैथुन करते समय कोई शेयर बाजार, क्रियाओं के रूप या स्वेज नहर के बारे में सोचता होगा। नहीं, मुझे पूरा यकीन है कि लगभग हर कोई लड़कियों के बारे में सोचता है।"
"स्वेज नहर?"
"उदाहरण के लिए।"
"तो मुझे लगता है कि वे कुछ खास लड़कियों के बारे में सोचते हैं, है ना?"
"क्या तुम्हें इस बारे में अपने बॉयफ्रेंड से नहीं पूछना चाहिए?"
उसने कहा, "मुझे रविवार की सुबह आपको इस तरह की बातें क्यों समझानी पड़ें?"

"मुझे बस जिज्ञासा थी," उसने कहा। "वैसे भी, अगर मैं उससे इस तरह की बातें पूछती तो वह गुस्सा हो जाता। वह कहता कि लड़कियों को इस तरह के सवाल नहीं पूछने चाहिए।"
"मेरे हिसाब से यह एक बिल्कुल सामान्य दृष्टिकोण है।"
"लेकिन मैं जानना चाहता हूँ। यह सिर्फ जिज्ञासा है। क्या लड़के हस्तमैथुन करते समय किसी खास लड़की के बारे में सोचते हैं?"
मैंने सवाल से बचने की कोशिश छोड़ दी। "खैर, कम से कम मैं तो करता हूँ।"
मुझे बाकी लोगों के बारे में नहीं पता।
"क्या तुमने इसे करते समय कभी मेरे बारे में सोचा?"
मुझे सच बताओ। मुझे गुस्सा नहीं आएगा।

"नहीं, सच कहूँ तो मैंने नहीं किया है," मैंने ईमानदारी से जवाब दिया।
"क्यों नहीं?"
क्या मैं काफी आकर्षक नहीं हूँ?
"ओह, तुम वाकई आकर्षक हो। तुम प्यारी हो, और सेक्सी कपड़े तुम पर बहुत अच्छे लगते हैं।"
"तो तुम मेरे बारे में क्यों नहीं सोचते?"
"खैर, सबसे पहले तो मैं तुम्हें एक दोस्त मानता हूँ, इसलिए मैं तुम्हें अपनी यौन कल्पनाओं में शामिल नहीं करना चाहता, और दूसरी बात - "
"तुम्हें किसी और के बारे में सोचना चाहिए।"
मैंने कहा, "लगभग यही बात है।"
"इस तरह की स्थिति में भी आपके शिष्टाचार बहुत अच्छे हैं।"
मिडोरी ने कहा, "मुझे तुम्हारी यही बात पसंद है। फिर भी, क्या तुम मुझे बस एक पल के लिए भी अपनी झलक दिखा सकते हो? मैं तुम्हारी किसी यौन कल्पना या दिवास्वप्न में, या जो भी तुम उन्हें कहते हो, शामिल होना चाहती हूँ। मैं तुमसे इसलिए पूछ रही हूँ क्योंकि हम दोस्त हैं। भला मैं और किससे ऐसी बात कहूँ? मैं किसी के पास जाकर यूँ ही नहीं कह सकती, 'आज रात जब तुम हस्तमैथुन करो, तो क्या एक पल के लिए मेरे बारे में सोचोगे?' मैं तुमसे इसलिए पूछ रही हूँ क्योंकि मैं तुम्हें अपना दोस्त मानती हूँ। और मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे बाद में बताओ कि कैसा लगा। मतलब, तुमने क्या किया और बाकी सब।"
मैंने एक लंबी आह भरी।
"लेकिन तुम इसे अंदर नहीं डाल सकते। क्योंकि हम सिर्फ दोस्त हैं। है ना? जब तक तुम इसे अंदर नहीं डालते, तुम जो चाहो कर सकते हो, जो चाहो सोच सकते हो।"

मैंने कहा, "मुझे नहीं पता, मैंने पहले कभी इतने सारे प्रतिबंधों के साथ ऐसा नहीं किया है।"
"क्या तुम मेरे बारे में सोचोगे?"
"ठीक है, मैं तुम्हारे बारे में सोचूंगा।"
"जानते हो, वातानाबे, मैं नहीं चाहता कि तुम्हें गलतफहमी हो जाए - मुझे कामुक या कुंठाग्रस्त या चिढ़ाने वाली या कुछ और नहीं कहा जाता। मुझे बस इन सब चीजों में दिलचस्पी है। मैं इनके बारे में जानना चाहती हूँ। मैं लड़कियों के स्कूल में पली-बढ़ी हूँ, जहाँ मेरे आस-पास सिर्फ लड़कियाँ ही थीं, आप जानते ही हैं। मैं जानना चाहती हूँ कि लड़के क्या सोचते हैं और उनके शरीर की बनावट कैसी होती है। और सिर्फ महिलाओं की पत्रिकाओं के अंशों से नहीं, बल्कि वास्तविक केस स्टडीज़ से।
"केस स्टडी?" मैंने आह भरी।
"लेकिन मेरे बॉयफ्रेंड को यह पसंद नहीं आता जब मैं कुछ जानना या आजमाना चाहती हूँ। वह गुस्सा हो जाता है, मुझे कामुक या पागल कहता है। वह मुझे ओरल सेक्स भी नहीं करने देता। अब, यह एक ऐसी चीज है जिसके बारे में मैं जानने के लिए बेताब हूँ।"
"अहां।"
"क्या आपको ओरल सेक्स करवाना नापसंद है?"
"नहीं, ऐसा नहीं है, मुझे इससे नफरत नहीं है।"
"क्या आप कहेंगे कि आपको यह पसंद आया?"
"हाँ, मैं यही कहूँगा। लेकिन क्या हम इस बारे में अगली बार बात कर सकते हैं? ये रही एक बहुत ही सुहावनी रविवार की सुबह, और मैं इसे हस्तमैथुन और ओरल सेक्स के बारे में बात करके खराब नहीं करना चाहता। चलिए किसी और विषय पर बात करते हैं। क्या आपका बॉयफ्रेंड

हमारे ही विश्वविद्यालय में पढ़ता है?"
नहीं, वो तो किसी और स्कूल में जाता है। हम स्कूल में एक क्लब गतिविधि के दौरान मिले थे। मैं लड़कियों के स्कूल में थी, वो लड़कों के स्कूल में, और आप जानते ही हैं कि वे लोग कैसे मिलकर कॉन्सर्ट करते हैं वगैरह। लेकिन परीक्षा के बाद हमारा रिश्ता गंभीर हो गया। हे, वातानाबे।
"क्या?"
"आपको यह सिर्फ एक बार करना है। बस मेरे बारे में सोचिएगा, ठीक है?"
"ठीक है, अगली बार कोशिश करूंगा," मैंने हार मानते हुए कहा।

हम ओचानोमिज़ु जाने के लिए एक यात्री ट्रेन में सवार हुए। जब हमने 210 पर ट्रेन बदली।

शिंजुकु में, मैंने स्टेशन पर एक स्टॉल से एक पतला सैंडविच खरीदा ताकि नाश्ते की कमी पूरी हो सके। उसके साथ पी गई कॉफी का स्वाद उबली हुई प्रिंटर की स्याही जैसा था। रविवार की सुबह की ट्रेनें जोड़ों और परिवारों से भरी हुई थीं जो घूमने निकले थे। बेसबॉल बैट और एक जैसी वर्दी पहने लड़कों का एक समूह डिब्बे के अंदर इधर-उधर भाग रहा था। ट्रेन में कई लड़कियों ने छोटी स्कर्ट पहनी हुई थी, लेकिन किसी की भी स्कर्ट मिदोरी जितनी छोटी नहीं थी। मिदोरी अपनी स्कर्ट को बार-बार ऊपर खींचते हुए खींचती रहती थी।
कुछ पुरुष उसकी जांघों को घूर रहे थे, जिससे मुझे असहज महसूस हुआ, लेकिन उसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ा।
"जानते हो मैं अभी क्या करना चाहती हूँ?" उसने फुसफुसाते हुए कहा

जब हम कुछ देर यात्रा कर चुके थे।
"मुझे कोई जानकारी नहीं," मैंने कहा। "लेकिन कृपया, यहाँ उन चीजों के बारे में बात मत करो।"
कोई न कोई आपकी बात सुन लेगा।
"बहुत बुरा हुआ। यह तो कुछ ज्यादा ही अजीब है," मिदोरी ने स्पष्ट निराशा के साथ कहा।
वैसे, हम ओचानोमिज़ु क्यों जा रहे हैं?
"बस मेरे साथ आओ, तुम्हें खुद ही पता चल जाएगा।"
ओचानोमिज़ु स्टेशन के आसपास मौजूद तमाम कोचिंग सेंटरों के कारण, रविवार को यह इलाका स्कूल जाने वाले या परीक्षा की तैयारी करने वाले बच्चों से भरा हुआ था।
मिडोरी अपने कंधे के बैग का पट्टा एक हाथ से और मेरा हाथ दूसरे हाथ से पकड़े हुए भीड़ के बीच से आगे बढ़ी।
बिना किसी चेतावनी के, उसने मुझसे पूछा, "हे वातानाबे, क्या तुम अंग्रेजी के वर्तमान और भूतकाल के बीच का अंतर समझा सकते हो?"
मैंने कहा, "मुझे लगता है मैं कर सकता हूँ।"
"तो फिर मैं आपसे पूछता हूँ, रोजमर्रा की जिंदगी में इस तरह की चीजों का क्या उपयोग हो सकता है?"
मैंने कहा, "बिल्कुल नहीं। इससे कोई ठोस उद्देश्य पूरा नहीं होता, लेकिन यह आपको एक प्रकार का प्रशिक्षण जरूर देता है जिससे आप चीजों को अधिक व्यवस्थित तरीके से समझ पाते हैं।"
मिडोरी ने इस पर कुछ देर गंभीरता से विचार किया। "तुम कमाल हो," उसने कहा। "यह बात मेरे दिमाग में पहले कभी नहीं आई। मैं हमेशा चीजों को 211 के रूप में ही सोचती थी।"

जैसे कि संभाव्यता कारक, अवकलन गणित और रासायनिक प्रतीक, ये सब मुझे बिलकुल बेकार लगते थे। सिरदर्द। इसलिए मैंने हमेशा इन्हें नजरअंदाज किया। अब मुझे सोचना पड़ रहा है कि क्या मेरा पूरा जीवन ही एक गलती थी।

"क्या आपने उन्हें नजरअंदाज किया है?"

"हाँ। मेरे लिए तो इनका कोई अस्तित्व ही नहीं था। मुझे ज़रा भी नहीं पता कि 'साइन' और 'कोसाइन' का मतलब क्या होता है।"

"वाह, यह तो अविश्वसनीय है! आपने परीक्षा कैसे पास की? आपको विश्वविद्यालय में दाखिला कैसे मिला?"

"मूर्खता मत करो," मिदोरी ने कहा। "प्रवेश परीक्षा पास करने के लिए कुछ भी जानने की ज़रूरत नहीं है! बस थोड़ी सी सूझबूझ चाहिए - और मेरी सूझबूझ बहुत अच्छी है। नीचे दिए गए तीन विकल्पों में से सही उत्तर चुनो। मुझे तुरंत पता चल जाता है कि कौन सा सही है।"

"मेरी अंतर्ज्ञान शक्ति तुम्हारी जितनी अच्छी नहीं है, इसलिए मुझे कुछ हद तक व्यवस्थित रहना पड़ता है। ठीक वैसे ही जैसे एक मैना पेड़ के खोखले भाग में कांच के टुकड़े इकट्ठा करती है।"

क्या इससे कोई उद्देश्य पूरा होता है?

"मुझे आश्चर्य होता है। शायद इससे कुछ काम करना आसान हो जाता है।" "किस तरह के काम? मुझे एक उदाहरण दीजिए।" "जैसे, आध्यात्मिक चिंतन।"

कई भाषाओं में महारत हासिल करना।" "इससे क्या फायदा होता है?"

"यह इस बात पर निर्भर करता है कि इसे कौन करता है। कुछ लोगों के लिए इसका कोई उद्देश्य होता है, और कुछ के लिए नहीं। लेकिन मुख्य रूप से यह प्रशिक्षण है। इसका कोई उद्देश्य है या नहीं, यह एक अलग सवाल है। जैसा कि मैंने कहा।" "हम्म,"

मिडोरी ने प्रभावित होकर कहा, "वह मुझे अपने साथ ले गई।"
हाथ पहाड़ी से नीचे। "जानते हो, वातानाबे, तुम लोगों को चीजें समझाने में वाकई बहुत अच्छे हो।"
मैंने कहा, "मुझे आश्चर्य हो रहा है।"
"यह सच है। मैंने सैकड़ों लोगों से पूछा है कि अंग्रेजी में सबजंक्टिव का क्या उपयोग है, और उनमें से किसी ने भी मुझे आपके जैसा अच्छा, स्पष्ट उत्तर नहीं दिया। यहाँ तक कि अंग्रेजी शिक्षकों ने भी नहीं। वे या तो भ्रमित हो गए, या गुस्सा हो गए, या उन्होंने इसे हँसी में उड़ा दिया। किसी ने भी मुझे कभी भी उचित उत्तर नहीं दिया। अगर मेरे प्रश्न पूछने के समय आपके जैसा कोई व्यक्ति मौजूद होता, और मुझे उचित व्याख्या देता, तो..."

मुझे भी संभाव्यता में रुचि हो सकती थी। धिक्कार है!" "हम्म,"
मैंने कहा था।
क्या आपने कभी दास कैपिटल पढ़ी है?
"हां। पूरी बात तो नहीं, लेकिन कुछ हिस्से, जैसे कि ज्यादातर लोगों के साथ होता है।"
"क्या आपको समझ में आया?"
"मुझे कुछ अंश समझ में आए, कुछ नहीं। दास कैपिटल जैसी किताब पढ़ने के लिए आवश्यक बौद्धिक क्षमता हासिल करनी पड़ती है।"
मुझे लगता है कि मैं मार्क्सवाद के मूल विचार को समझता हूँ। "क्या आपको लगता है कि प्रथम वर्ष का छात्र जिसने किताबें नहीं पढ़ी हैं, वह मार्क्सवाद को समझ सकता है?"
क्या कोई सिर्फ पढ़कर ही दास कैपिटल को समझ सकता है? "मेरे ख्याल से यह लगभग नामुमकिन है।"

"पता है, जब मैं विश्वविद्यालय गया तो मैंने एक लोक संगीत क्लब में दाखिला लिया। मैं बस गाने गाना चाहता था। लेकिन क्लब के सदस्य सब धोखेबाज़ थे। उनके बारे में सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। क्लब में घुसते ही वे सबसे पहले यही कहते हैं कि आपको मार्क्स पढ़ना होगा। 'अगली बार के लिए फलां-फलां पृष्ठ से फलां-फलां तक पढ़ लेना।' किसी ने इस बात पर भाषण दिया कि लोकगीतों का समाज और क्रांतिकारी आंदोलन से गहरा जुड़ाव होना चाहिए। तो मैंने सोचा, चलो ठीक है, मैं घर गया और उसे पढ़ने की पूरी कोशिश की, लेकिन मुझे कुछ समझ नहीं आया। यह तो संभाव्यता से भी बदतर था। मैंने तीन पन्ने पढ़ने के बाद हार मान ली। तो मैं अगले हफ्ते की बैठक में एक अच्छे जासूस की तरह गया और कहा कि मैंने उसे पढ़ा तो है, लेकिन समझ नहीं पाया। उसके बाद से वे मुझे बेवकूफ समझने लगे।"
उन्होंने कहा, "मुझे वर्ग संघर्ष की कोई समझ नहीं थी, मैं एक सामाजिक अपंग था। मतलब, यह बहुत गंभीर बात थी। और यह सब सिर्फ इसलिए हुआ क्योंकि मैंने कहा कि मुझे एक लेख समझ नहीं आया। क्या आपको नहीं लगता कि वे कितने बुरे थे?"
"हम्म," मैंने कहा।
"और उनकी तथाकथित चर्चाएँ भी बहुत ही घटिया थीं। हर कोई बड़े-बड़े शब्दों का इस्तेमाल करता और दिखावा करता कि उन्हें सब पता है। लेकिन जब भी मुझे कुछ समझ नहीं आता, मैं सवाल पूछता। "यह साम्राज्यवादी शोषण की बात क्या है? क्या यह 213 से जुड़ा है?"

क्या किसी तरह ईस्ट इंडिया कंपनी को?' "क्या शिक्षा-औद्योगिक परिसर को नष्ट करने का मतलब यह है कि स्नातक होने के बाद हमें किसी कंपनी के लिए काम नहीं करना चाहिए?" और इस तरह की बातें। लेकिन कोई

भी मुझे कुछ समझाने को तैयार नहीं था। बल्कि इसके विपरीत, वे बहुत गुस्सा हो गए।
क्या आप इस पर विश्वास कर सकते हैं?"
"हां, मैं कर सकता हूँ," मैंने कहा।
एक आदमी मुझ पर चिल्लाया, "अरे बेवकूफ कुतिया, बिना दिमाग के ऐसे कैसे जी रही हो?" बस, यही काफी था। मैं इसे बर्दाश्त नहीं करने वाली थी। ठीक है, मैं इतनी समझदार नहीं हूँ। मैं मजदूर वर्ग से हूँ। लेकिन दुनिया को चलाने वाला मजदूर वर्ग ही है, और शोषण भी मजदूर वर्ग का ही होता है। यह कैसी क्रांति है जो सिर्फ ऐसे बड़े-बड़े शब्द इस्तेमाल करती है जिन्हें मजदूर वर्ग के लोग समझ ही नहीं सकते? यह कैसी बकवास सामाजिक क्रांति है? मेरा मतलब है, मैं भी दुनिया को बेहतर बनाना चाहती हूँ। अगर किसी का सचमुच शोषण हो रहा है, तो हमें उसे रोकना होगा। यही मेरा मानना है, और इसीलिए मैं सवाल पूछती हूँ।
क्या मैं सही कह रहा हूँ, या नहीं?
"आप ठीक कह रहे हैं।"
"तो तभी मुझे समझ आया। ये लोग पाखंडी हैं। इनके दिमाग में बस यही चलता है कि नई लड़कियों को अपने बड़े-बड़े शब्दों से प्रभावित करें, जिन पर इन्हें बहुत गर्व है, और साथ ही साथ उनकी स्कर्ट के नीचे हाथ डालें। और जब इनकी पढ़ाई पूरी हो जाती है, तो ये अपने बाल छोटे करवा लेते हैं और मित्सुबिशी, आईबीएम या फुजी बैंक में काम करने चले जाते हैं। ये खूबसूरत पत्नियों से शादी करते हैं जिन्होंने कभी मार्क्स को नहीं पढ़ा होता और बच्चों के ऐसे नए-नए नाम रखते हैं जिन्हें सुनकर उल्टी आ जाए। ये किस तरह के शैक्षिक-औद्योगिक तंत्र को ध्वस्त करना है? मुझे हँसी आ रही है! और नए सदस्य भी उतने ही बुरे थे। उन्हें भी कुछ समझ नहीं आ रहा था, लेकिन वे समझने का नाटक कर रहे थे और मुझ पर हँस

रहे थे। मीटिंग के बाद उन्होंने मुझसे कहा, 'मूर्ख मत बनो! अगर समझ नहीं आ रहा तो क्या हुआ? बस उनकी हर बात मान लो।' अरे, वातानाबे, मेरे पास ऐसी बातें हैं जिनसे मुझे इससे भी ज़्यादा गुस्सा आया था। सुनना चाहते हो?"
"हाँ हाँ, क्यों नहीं?"
"खैर, एक बार उन्होंने देर रात एक राजनीतिक बैठक बुलाई, और उन्होंने

मैंने हर लड़की को आधी रात के नाश्ते के लिए 20 चावल के गोले बनाने को कहा। मतलब, ये तो लिंगभेद की बात है! मैंने सोचा कि इस बार चुप रहना ही बेहतर है, और एक अच्छी लड़की की तरह अपने 20 चावल के गोले लेकर पहुँच गई, जिनमें उमेबोशी अंदर और नोरी बाहर लगी हुई थी। और आपको क्या लगता है मुझे अपनी मेहनत का क्या फल मिला? बाद में लोगों ने शिकायत की क्योंकि मेरे चावल के गोलों में सिर्फ उमेबोशी ही थी, और मैं उनके साथ खाने के लिए कुछ और लाई ही नहीं थी!
बाकी लड़कियों ने अपने-अपने स्नैक्स में कॉड मछली के अंडे और सैल्मन मछली भर रखी थी, और साथ में तले हुए अंडे के मोटे-मोटे टुकड़े भी डाले थे। मुझे इतना गुस्सा आया कि मैं बोल ही नहीं पा रही थी!
ये क्रांति के नाम पर हंगामा मचाने वाले खुद को क्या समझते हैं? इन्हें उमेबोशी और नोरी के लिए शुक्रगुजार होना चाहिए।
भारत में भूख से मर रहे बच्चों के बारे में सोचो!
मैं हँस पड़ा। "तो फिर तुम्हारे क्लब का क्या हुआ?"
"मैं जून में ही चली गई थी, मैं बहुत गुस्से में थी," मिदोरी ने कहा। "इनमें से ज़्यादातर छात्र सरासर धोखेबाज़ हैं। उन्हें इस बात का बहुत डर है कि कहीं किसी को पता न चल जाए कि उन्हें कुछ नहीं पता। वे सब एक ही

किताबें पढ़ते हैं, एक ही नारे लगाते हैं, और उन्हें जॉन कोल्ट्रेन सुनना और पासोलिनी की फिल्में देखना बहुत पसंद है। क्या आप इसे 'क्रांति' कहते हैं?"
"अरे, मुझसे मत पूछो, मैंने तो कभी क्रांति देखी ही नहीं है।" "अच्छा, अगर यही क्रांति है, तो तुम इसे अपने पास रखो। चावल के गोलों में उमेबोशी डालने पर भी वे शायद मुझे गोली मार देंगे। तुम्हें भी गोली मार देंगे, क्योंकि तुम्हें संभाव्यता (subjunctive) समझ आती है।" "ऐसा हो सकता है।"
"मेरा यकीन मानिए, मुझे पता है मैं क्या कह रहा हूं। मैं श्रमिक वर्ग से हूं।"
क्रांति हो या न हो, मजदूर वर्ग उन्हीं पुराने बदहाल इलाकों में जैसे-तैसे गुजारा करता रहेगा। और क्रांति होती क्या है? यह तो बस नगर पालिका का नाम बदलना तो बिल्कुल नहीं है। लेकिन ये लोग, बड़े-बड़े शब्दों वाले, ये नहीं जानते। बताओ, वातानाबे, क्या तुमने कभी किसी कर अधिकारी को देखा है?
"कभी नहीं।"
"हाँ, मैंने देखा है। कई बार। वे जबरदस्ती घुस आते हैं और अकड़ दिखाते हैं।"
"ये बहीखाता किस लिए है?" "अरे, तुम तो बड़े ही लापरवाही से हिसाब रखते हो।" "क्या तुम इसे व्यापारिक खर्च कहते हो?" "मुझे अभी तुम्हारी सारी रसीदें देखनी हैं।" इसी बीच, हम कोने में दुबके बैठे हैं, और जब रात के खाने का समय हुआ, 215

जब समय आता है तो हमें उन्हें शानदार सुशी खिलानी पड़ती है - घर पर डिलीवर करवानी पड़ती है। वैसे, मैं आपको बता दूं, मेरे पिता ने कभी

टैक्स में हेराफेरी नहीं की। वो ऐसे ही हैं, एकदम सीधे-सादे, ईमानदार इंसान। लेकिन ये बात टैक्स अधिकारी को बताओ। वो बस खोदते ही रहते हैं, खोदते ही रहते हैं, खोदते ही रहते हैं। "आय थोड़ी कम है, आपको नहीं लगता?" खैर, जब आप कमा ही नहीं रहे हों तो आय कम ही होगी! मेरा मन करता था कि मैं चिल्लाऊं: "जाओ ये काम वहां करो जहां पैसा हो!" क्या आपको लगता है कि अगर क्रांति हो जाए तो टैक्स अधिकारी का रवैया बदल जाएगा?

"अत्यंत संदिग्ध, अत्यंत संदिग्ध।"

"बस, अब हो गया। मैं किसी भी क्रांति में विश्वास नहीं करने वाला।"

मैं सिर्फ प्यार पर ही विश्वास करूंगा।

मैंने कहा, "शांति।"

"शांति," मिदोरी ने कहा।

मैंने पूछा, "अरे, हम कहाँ जा रहे हैं?"

"अस्पताल," उसने कहा। "मेरे पिताजी वहीं हैं। आज पूरे दिन उनके साथ रहने की मेरी बारी है।"

"तुम्हारे पिताजी?! मुझे लगा वो उरुग्वे में हैं!"

"वह झूठ था," मिदोरी ने एक सहज लहजे में कहा। "वह हमेशा से उरुग्वे जाने के लिए चिल्लाता रहा है, लेकिन वह ऐसा कभी नहीं कर सकता।"

वह बड़ी मुश्किल से टोक्यो से बाहर निकल पाता है।

मैंने पूछा, "वह कितना बुरा है?"

"यह तो बस समय की बात है," उसने कहा।

हम चुपचाप चलते रहे।

"मुझे पता है मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ। मेरी माँ को भी यही हुआ था। ब्रेन ट्यूमर। क्या आप विश्वास कर सकते हैं? उनकी ब्रेन ट्यूमर से मृत्यु हुए अभी मुश्किल से दो साल ही हुए हैं, और अब उसे भी वही हो

गया है।"
यूनिवर्सिटी अस्पताल के गलियारे सप्ताहांत में आने वाले आगंतुकों और कम गंभीर लक्षणों वाले मरीजों से भरे हुए थे और शोरगुल से लबालब थे, और हर जगह अस्पताल की वह खास गंध फैली हुई थी, कीटाणुनाशक और आगंतुकों के फूलों के गुलदस्ते, और मूत्र और गद्दों की गंध का एक बादल सा छाया हुआ था, जबकि नर्सें अपनी एड़ियों की सूखी खड़खड़ाहट के साथ इधर-उधर भाग रही थीं।
मिडोरी के पिता दरवाजे के सबसे नजदीक वाले बिस्तर पर एक अर्ध-निजी कमरे में थे।

लेटे हुए वह किसी घातक घाव से ग्रस्त छोटे जीव की तरह दिख रहा था। वह एक तरफ लेटा हुआ था, बेजान, बायां हाथ लटका हुआ था, जिसमें नस में सुई लगी हुई थी। वह दुबला-पतला आदमी था, जिसे देखकर लगता था कि वह और भी दुबला होता जाएगा। उसके सिर पर सफेद पट्टी बंधी थी, और उसके पीले-सफेद हाथों पर इंजेक्शन या ड्रिप के निशान थे। उसकी आधी खुली आंखें एक ही जगह पर टिकी हुई थीं, खून से लाल गोले जो कमरे में हमारे आने पर हमारी तरफ फड़कने लगे। करीब दस सेकंड तक वे हम पर टिकी रहीं, फिर वापस उसी जगह पर चली गईं।
उसकी आँखों को देखते ही समझ आ गया था कि वह जल्द ही मरने वाला है। उसके शरीर में जीवन का कोई नामोनिशान नहीं था, बस कभी रहे जीवन का हल्का सा अंश ही बचा था। उसका शरीर एक जर्जर पुराने घर जैसा था, जिसमें से सारी साज-सज्जा हटा दी गई हो और जो अपने अंतिम विध्वंस की प्रतीक्षा कर रहा हो। सूखे होठों के आसपास दाढ़ी के गुच्छे खरपतवार की तरह उग रहे थे। तब मैंने सोचा, किसी व्यक्ति की

इतनी जीवन शक्ति खो जाने के बाद भी उसकी दाढ़ी बढ़ती ही जा रही है।
मिडोरी ने खिड़की के पास बिस्तर पर लेटे एक मोटे आदमी को नमस्कार किया। उसने सिर हिलाया और मुस्कुराया, मानो बोलने में असमर्थ हो। उसने कुछ बार खांसा और अपने तकिए के पास रखे गिलास से थोड़ा पानी पीने के बाद, करवट बदली और खिड़की से बाहर देखने लगा।
खिड़की के बाहर केवल एक खंभा और कुछ बिजली की तारें दिखाई दे रही थीं, इससे ज्यादा कुछ नहीं, आसमान में एक बादल भी नहीं था।
"पापा, आप कैसा महसूस कर रहे हैं?" मिदोरी ने अपने पिता के कान में फुसफुसाते हुए पूछा, मानो वह माइक्रोफोन का परीक्षण कर रही हो। "आज आप कैसे हैं?"
उसके पिता ने अपने होंठ हिलाए। <अच्छा नहीं> उन्होंने कहा, शब्दों को बोलते हुए नहीं, बल्कि गले के पिछले हिस्से में अटकी सूखी हवा से बनाते हुए।
उन्होंने कहा।
"क्या तुम्हें सिरदर्द हो रहा है?" मिदोरी ने पूछा।
<युह> उसने कहा, जाहिर तौर पर वह एक बार में एक या दो अक्षर से ज्यादा उच्चारण करने में असमर्थ था।
"खैर, इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है," उसने कहा, "तुम्हारा सिर अभी-अभी चीरा गया है। ज़ाहिर है दर्द हो रहा है। बहुत बुरा हुआ, लेकिन हिम्मत रखो। यह मेरा दोस्त है, 217।"

वातानाबे।"
"आपसे मिलकर खुशी हुई," मैंने कहा। मिदोरी के पिता ने अपने होंठ आधे खोले, फिर बंद कर लिए।

मिडोरी ने बिस्तर के पास रखे एक प्लास्टिक के स्टूल की ओर इशारा किया और मुझे बैठने को कहा। मैंने वैसा ही किया जैसा उसने कहा था। मिडोरी ने अपने पिता को पानी पिलाया और पूछा कि क्या वे कोई फल या जेली वाला कोई मीठा व्यंजन खाना चाहेंगे। उन्होंने कहा, "नहीं", और जब मिडोरी ने ज़ोर दिया कि उन्हें कुछ खाना ही होगा, तो उन्होंने कहा, "मैंने खा लिया है।"

बिस्तर के सिरहाने के पास एक नाइट टेबल पर पानी की बोतल, गिलास, प्लेट और एक छोटी घड़ी रखी थी। टेबल के नीचे रखे एक बड़े कागज़ के थैले से मिदोरी ने कुछ नए पायजामे, अंडरवियर और अन्य सामान निकाले, उन्हें ठीक से फैलाया और दरवाजे के पास वाले लॉकर में रख दिया। थैले के निचले हिस्से में मरीज़ के लिए खाना था: दो अंगूर, फ्रूट जेली और तीन खीरे।

"खीरे?! ये यहाँ क्या कर रहे हैं?" मिदोरी ने पूछा। "मैं सोच भी नहीं सकती कि मेरी बहन क्या सोच रही होगी। मैंने उसे फोन पर साफ-साफ बता दिया था कि मुझे क्या खरीदना है, और मुझे यकीन है कि मैंने खीरे का ज़िक्र तक नहीं किया था!"

उसे कीवी फल लाना था।

"हो सकता है उसने आपको गलत समझा हो," मैंने सुझाव दिया।

"हाँ, शायद, लेकिन अगर उसने इस बारे में सोचा होता तो उसे एहसास हो जाता कि खीरा ठीक नहीं हो सकता। मेरा मतलब है, एक मरीज़ क्या करे? बिस्तर पर बैठकर कच्चे खीरे चबाता रहे? अरे पापा, क्या आपको खीरा चाहिए?"

नहीं, मिदोरी के पिता ने कहा।

मिडोरी पलंग के सिरहाने बैठी अपने पिता को घर की खबरें सुना रही थी। टीवी की तस्वीर धुंधली हो गई थी और उसने मरम्मत करने वाले को

बुलाया था; ताकाइदो से उनकी चाची कुछ दिनों में आने वाली थीं; दवा विक्रेता श्री मियावाकी साइकिल से गिर गए थे; इस तरह की कुछ खबरें। उसके पिता बस हल्की-हल्की आवाज़ें निकालते रहे।
"क्या आप वाकई कुछ नहीं खाना चाहते?"
नहीं, उसके पिता ने उत्तर दिया।
"वातानाबे, तुम्हारा क्या ख्याल है? कुछ अंगूर खाना चाहोगे?" "नहीं," मैंने जवाब दिया।

कुछ मिनट बाद, मिदोरी मुझे टीवी रूम में ले गई और सोफे पर बैठकर सिगरेट पीने लगी। वहाँ पायजामा पहने तीन मरीज़ भी सिगरेट पी रहे थे और किसी तरह का राजनीतिक चर्चा कार्यक्रम देख रहे थे।
"अरे!" मिदोरी ने आंखों में शरारत भरी चमक के साथ फुसफुसाते हुए कहा। "बैसाखी वाला वो बूढ़ा आदमी जब से हम अंदर आए हैं, मेरी टांगों को घूर रहा है। नीले पजामे में चश्मा पहने हुए।"
"ऐसी स्कर्ट पहनकर आप और क्या उम्मीद करती हैं?"
"वैसे तो यह अच्छा है। मुझे यकीन है कि वे सब ऊब गए होंगे। शायद इससे उन्हें फायदा ही होगा।"
शायद उत्साह उन्हें तेजी से बेहतर होने में मदद करता है।"
"जब तक इसका विपरीत प्रभाव न हो।"
मिडोरी अपनी सिगरेट से उठते धुएं को घूर रही थी।
“जानती हो,” उसने कहा, “मेरे पिता इतने बुरे इंसान नहीं हैं। कभी-कभी मुझे उन पर गुस्सा आता है क्योंकि वे बहुत बुरी बातें कह देते हैं, लेकिन दिल से वे ईमानदार हैं और मेरी माँ से बहुत प्यार करते थे। उन्होंने अपने तरीके से पूरी शिद्दत से ज़िंदगी जी है। शायद वे थोड़े कमज़ोर हैं, और उन्हें

व्यापार की बिल्कुल समझ नहीं है, और लोग उन्हें ज़्यादा पसंद नहीं करते, लेकिन वे उन धोखेबाज़ों और झूठे लोगों से कहीं बेहतर हैं जो अपनी चालाकी से हर बात को छुपा देते हैं। मैं भी उनकी तरह ही एक बार कुछ कह देने के बाद पीछे नहीं हटती, इसलिए हम अक्सर लड़ते हैं, लेकिन सच में, वे बुरे इंसान नहीं हैं।”

मिडोरी ने मेरा हाथ ऐसे पकड़ा जैसे सड़क पर किसी की गिरी हुई चीज़ उठा रही हो, और उसे अपनी गोद में रख लिया। मेरा आधा हाथ स्कर्ट पर था, बाकी उसकी जांघ को छू रहा था। उसने कुछ देर तक मेरी आँखों में देखा।

"आपको इस तरह की जगह पर लाने के लिए मुझे खेद है," उसने कहा, "लेकिन क्या आप मेरे साथ थोड़ी देर और रुकेंगे?"

मैंने कहा, "अगर तुम चाहो तो मैं पूरे दिन तुम्हारे साथ रहूँगी। पाँच बजे तक। मुझे तुम्हारे साथ समय बिताना अच्छा लगता है, और मेरे पास करने के लिए और कुछ नहीं है।"

आप आमतौर पर रविवार कैसे बिताते हैं?

मैंने कहा, "मैं अपने कपड़े धो रही हूँ। और इस्त्री भी कर रही हूँ।"

"मुझे नहीं लगता कि आप मुझे उसके बारे में ज्यादा कुछ बताना चाहेंगे... आपकी प्रेमिका के बारे में?"

"नहीं, मुझे नहीं लगता। यह जटिल है, और मुझे नहीं लगता कि मैं इसे अच्छी तरह से समझा पाऊँगा।"

"कोई बात नहीं। आपको कुछ भी समझाने की ज़रूरत नहीं है," मिदोरी ने कहा। "लेकिन क्या आपको बुरा लगेगा अगर मैं आपको बताऊं कि मुझे क्या लगता है कि क्या हो रहा है?"

"नहीं, आगे बढ़ो। मुझे लगता है कि तुम जो भी कल्पना करोगे, वह दिलचस्प ही होगी।"
मुझे लगता है कि वह शादीशुदा महिला है।
"आप कर?"
"हाँ, वो बत्तीस या तैंतीस साल की है, अमीर और खूबसूरत है, फर कोट और चार्ल्स जॉर्डन के जूते पहनती है, रेशमी अंडरवियर पहनती है, सेक्स की भूखी है और उसे घिनौनी हरकतें करना पसंद है। तुम दोनों सप्ताह के दिनों में दोपहर को मिलते हो और एक-दूसरे के शरीर को भोगते हो।"
लेकिन उनके पति रविवार को घर पर होते हैं, इसलिए वो आपसे मिल नहीं सकतीं। क्या मैं सही कह रही हूँ?
"बहुत ही दिलचस्प।"
"वह आपसे अपने शरीर को बंधवाती है, आंखों पर पट्टी बांधवाती है और उसके शरीर के हर इंच को चटवाती है। फिर वह आपसे अपने अंदर अजीबोगरीब चीजें डलवाती है और एक कलाबाज की तरह अविश्वसनीय मुद्राएं बनाती है, और आप पोलरॉइड कैमरे से उसकी तस्वीरें लेते हैं।"
"मजाक जैसा लगता है।"
"वह हर समय इसके लिए तड़पती रहती है, इसलिए वह हर मुमकिन कोशिश करती है। और वह इसके बारे में हर दिन सोचती है। उसके पास खाली समय ही खाली समय है, इसलिए वह हमेशा योजना बनाती रहती है: हम्म, अगली बार जब वातानाबे आएगा, तो हम यह करेंगे, या वह करेंगे। आप बिस्तर पर जाते हैं और वह पागल हो जाती है, तरह-तरह की पोजीशन आज़माती है और हर पोजीशन में तीन बार चरम सुख प्राप्त करती है। और वह आपसे कहती है, "क्या मेरा शरीर कमाल का नहीं है? अब आप जवान लड़कियों से संतुष्ट नहीं हो सकते। जवान लड़कियां आपके लिए यह नहीं करेंगी, है ना? या वह। अच्छा लग रहा है? लेकिन

अभी चरम सुख प्राप्त मत करो!""
मैंने हंसते हुए कहा, "तुमने बहुत ज्यादा पोर्न फिल्में देखी हैं।"
"क्या तुम्हें ऐसा लगता है? मुझे थोड़ी चिंता थी। लेकिन मुझे पोर्न फिल्में बहुत पसंद हैं। अगली बार मुझे एक फिल्म दिखाने ले जाना, ठीक है?"
"ठीक है," मैंने कहा। "अगली बार जब आप खाली हों।"

"सच में? मैं तो बेसब्री से इंतज़ार कर रही हूँ। चलो किसी असली एस एंड एम वाले शो में चलते हैं, जहाँ कोड़े हों और लड़की को सबके सामने पेशाब करने के लिए मजबूर किया जाए।"
यह मेरा पसंदीदा है।
"हम यह कर लेंगे।"
"तुम्हें पता है मुझे पोर्न फिल्मों में सबसे ज्यादा क्या पसंद है?" "मैं इसका अंदाज़ा भी नहीं लगा सकता।"
"जब भी कोई सेक्स सीन शुरू होता है, तो सब लोग एक साथ 'गल्प!' की आवाज़ करते हैं," मिदोरी ने कहा। "मुझे वो 'गल्प!' बहुत पसंद है! ये बहुत प्यारा लगता है!"

अस्पताल के कमरे में वापस आकर, मिदोरी ने एक बार फिर अपने पिता से लगातार बातें करना शुरू कर दिया, लेकिन वे या तो बस हल्की सी आवाज़ निकालते या कुछ नहीं कहते। लगभग ग्यारह बजे दूसरे बिस्तर पर लेटे आदमी की पत्नी अपने पति के पायजामे बदलने और उनके लिए फल छीलने आदि के लिए आई। उसका चेहरा गोल-मटोल था और वह एक अच्छी इंसान लग रही थी, और उसने और मिदोरी ने खूब बातें कीं। एक नर्स नई इंट्रावेनस ड्रिप लेकर आई और जाने से पहले मिदोरी और

उसकी पत्नी से थोड़ी देर बात की। मैंने अपनी नज़रें कमरे में और खिड़की से बाहर बिजली की तारों पर घुमाईं।
बीच-बीच में गौरैया आती रहती थीं और उन पर बैठ जाती थीं।
मिडोरी ने अपने पिता से बात की, उनके माथे से पसीना पोंछा, उन्हें टिश्यू में बलगम थूकने में मदद की, बगल के मरीज की पत्नी और नर्स से बातचीत की, कभी-कभार मेरी तरफ टिप्पणी की और अंतःशिरा यंत्र की जाँच की।
डॉक्टर ने 11:30 बजे राउंड लगाया, इसलिए मिदोरी और मैं बाहर गलियारे में इंतजार करने के लिए चले गए। जब वह बाहर आए, तो मिदोरी ने उनसे पूछा कि उसके पिता कैसे हैं।
डॉक्टर ने कहा, "अभी-अभी उनकी सर्जरी हुई है और हमने उन्हें दर्द निवारक दवाइयां दी हैं, इसलिए वे काफी थके हुए हैं। ऑपरेशन के नतीजों का आकलन करने के लिए मुझे दो-तीन दिन और लगेंगे। अगर ऑपरेशन सफल रहा तो वे ठीक हो जाएंगे, और अगर नहीं तो हमें उस समय कुछ फैसले लेने होंगे।"
"तुम उसका सिर दोबारा नहीं खोलने वाले हो, है ना?"

डॉक्टर ने कहा, "जब तक समय नहीं आएगा, मैं कुछ नहीं कह सकता। वाह, तुमने तो बहुत छोटी स्कर्ट पहनी है!"
"अच्छा है ना?"
"आप सीढ़ियों पर क्या करते हैं?" डॉक्टर ने पूछा।
"कुछ खास नहीं। मैंने सब कुछ खुलकर दिखाया," मिदोरी ने कहा। डॉक्टर के पीछे खड़ी नर्स हल्की सी हंसी।
"अविश्वसनीय। आपको किसी दिन आकर अपना सिर खुलवाना चाहिए

ताकि हम देख सकें कि अंदर क्या चल रहा है। कृपया अस्पताल में लिफ्ट का इस्तेमाल करें। मैं और मरीज़ों का खर्च नहीं उठा सकता।"

मैं पहले से ही बहुत व्यस्त हूँ।

डॉक्टर के राउंड के तुरंत बाद दोपहर के भोजन का समय हो गया था। एक नर्स खाने से भरी ट्रॉली को धकेलते हुए एक कमरे से दूसरे कमरे में घूम रही थी।

मिडोरी के पिता को दलिया, फल, उबली हुई, काँटे रहित मछली और सब्जियों का एक प्रकार का जेली जैसा मिश्रण दिया गया। मिडोरी ने उन्हें पीठ के बल लिटाया और पलंग के निचले हिस्से में लगे हैंडल का इस्तेमाल करके उन्हें उठाया। उसने चम्मच से उन्हें सूप पिलाया। पाँच-छह घूंट पीने के बाद, उन्होंने अपना चेहरा दूसरी ओर कर लिया और कहा (और नहीं)।

आपको कम से कम इतना तो खाना ही होगा।" मिदोरी सान ने बाद में कहा।

“तुम्हारा तो कोई इलाज नहीं है – अगर तुम ठीक से नहीं खाओगे, तो तुम्हारी ताकत कभी वापस नहीं आएगी,” उसने कहा। “क्या तुम्हें अभी पेशाब नहीं करना है?” <नहीं> उसने कहा।

"अरे, वातानाबे, चलो कैफेटेरिया चलते हैं।"

मैं जाने के लिए तैयार हो गया, लेकिन सच कहूँ तो मुझे खाने की बिल्कुल इच्छा नहीं थी। कैफ़ेटेरिया डॉक्टरों, नर्सों और आगंतुकों से खचाखच भरा हुआ था। कुर्सियों और मेजों की लंबी कतारें उस विशाल, बिना खिड़की वाले भूमिगत कमरे में लगी हुई थीं, जहाँ हर कोई कुछ न कुछ खा रहा था या बात कर रहा था - निस्संदेह बीमारी के बारे में, आवाज़ें किसी सुरंग की तरह गूँज रही थीं। बीच-बीच में पीए सिस्टम से डॉक्टर या नर्स को बुलाने की आवाज़ गूँजती हुई सुनाई देती थी। जब मैं

एक मेज पर बैठ गया, तो मिदोरी ने दो सेट मील खरीदे और उन्हें एक एल्युमिनियम की ट्रे में रखकर ले आई। क्रीम सॉस के साथ क्रोकेट्स, आलू का सलाद, कटी हुई पत्तागोभी, उबली हुई सब्जियां, चावल और मिसो सूप: ये सब ट्रे में उन्हीं सफेद प्लास्टिक के बर्तनों में रखे थे जिनका इस्तेमाल मरीजों के लिए किया जाता था। मैंने अपने खाने का लगभग आधा हिस्सा खाया और बाकी छोड़ दिया।

मिडोरी ने अपने भोजन का आखिरी निवाला तक आनंद लिया।

"भूख नहीं लगी?" उसने गर्म चाय की चुस्की लेते हुए पूछा। "सच में नहीं," मैंने कहा।

"ये अस्पताल है," उसने कैफ़ेटेरिया पर नज़र डालते हुए कहा। "ऐसा हमेशा होता है जब लोग इस जगह के आदी नहीं होते। गंध, आवाज़ें, बासी हवा, मरीज़ों के चेहरे, तनाव, चिड़चिड़ापन, निराशा, दर्द, थकान - यही सब मिलकर ऐसा करते हैं। ये पेट में अजीब सी बेचैनी पैदा करते हैं और भूख मिटा देते हैं। लेकिन एक बार आदत पड़ जाए तो कोई दिक्कत नहीं रहती। वैसे भी, आप बीमार व्यक्ति की देखभाल तब तक नहीं कर सकते जब तक आप ठीक से खाना न खाएं। ये सच है। मैं जानती हूँ कि मैं क्या कह रही हूँ क्योंकि मैंने ये अपने दादा, दादी, माँ और अब अपने पिता के साथ किया है। आपको कभी नहीं पता कि कब ज़रूरत पड़ जाए, इसलिए जब भी मौका मिले खाना ज़रूरी है।

मैंने कहा, "मैं समझ गया कि आप क्या कहना चाहते हैं।"

"रिश्तेदार मिलने आते हैं और मेरे साथ यहाँ खाना खाते हैं, और वे हमेशा अपना आधा खाना छोड़ देते हैं, बिल्कुल तुम्हारी तरह। और वे हमेशा कहते हैं, 'ओह, मिदोरी, यह बहुत अच्छा है कि तुम्हें इतनी अच्छी भूख

लगती है। मैं तो इतना परेशान हूँ कि खा नहीं पा रहा हूँ।'
लेकिन ज़रा गंभीरता से सोचो, असल में मरीज़ की देखभाल तो मैं ही कर रही हूँ! उन्हें बस आकर थोड़ी सी हमदर्दी दिखानी है। गंदगी साफ़ करने, बलगम इकट्ठा करने और माथे पर पसीना पोंछने का काम तो मैं ही करती हूँ। अगर गंदगी साफ़ करने के लिए सिर्फ़ हमदर्दी ही काफ़ी होती, तो मैं बाक़ी लोगों से 50 गुना ज़्यादा हमदर्दी दिखाती! इसके बजाय, वे मुझे सारा खाना खाते हुए देखते हैं और मुझे घूरकर कहते हैं, "ओह मिदोरी, तुम्हारी भूख तो बहुत अच्छी है।" वे मुझे क्या समझते हैं, कोई गधा जो गाड़ी खींच रहा हो?
वे इतने बड़े हो चुके हैं कि दुनिया के असली तौर-तरीकों को समझते हैं, तो फिर इतने बेवकूफ क्यों हैं? बड़ी-बड़ी बातें करना आसान है, लेकिन असली बात तो यह है कि आप गंदगी साफ करते हैं या नहीं। मुझे भी चोट लग सकती है, आप जानते हैं। मैं भी किसी और की तरह थक सकती हूँ। मुझे भी इतना बुरा लग सकता है कि रोने का मन करे। मतलब, ज़रा डॉक्टरों के एक समूह को किसी ऐसे व्यक्ति का सिर चीरते हुए देखिए, जिसे बचाने की कोई उम्मीद नहीं है, और फिर वे अंदर की चीज़ों को हिलाते-डुलाते हैं, और बार-बार ऐसा करते हैं, और हर बार ऐसा करने से वह व्यक्ति और भी बदतर और थोड़ा पागल हो जाता है, और फिर देखिए आपको कैसा लगता है! और ऊपर से, आप अपनी सारी बचत गायब होते हुए देखते हैं। मुझे 223

मुझे नहीं पता कि मैं अगले साढ़े तीन साल तक विश्वविद्यालय जा पाऊँगी या नहीं, और इस रफ्तार से तो मेरी बहन के पास शादी समारोह का खर्च उठाने के लिए पैसे नहीं हैं।"
मैंने पूछा, "आप सप्ताह में कितने दिन यहाँ आते हैं?"

"आमतौर पर चार," मिदोरी ने कहा। "यह जगह संपूर्ण नर्सिंग देखभाल प्रदान करने का दावा करती है, और नर्सें बहुत अच्छी हैं, लेकिन उनके पास करने के लिए बहुत काम है।"

परिवार के किसी न किसी सदस्य को घर पर रहकर काम संभालना पड़ता है। मेरी बहन दुकान देखती है और मैं अपनी पढ़ाई में व्यस्त रहता हूँ। फिर भी, वो हफ्ते में तीन दिन यहाँ आ जाती है और मैं चार दिन। और हम कभी-कभार चुपके से आ जाते हैं। यकीन मानिए, हमारा शेड्यूल बहुत व्यस्त रहता है!

"अगर आप इतने व्यस्त हैं तो मेरे साथ समय कैसे बिता सकते हैं?"

"मुझे तुम्हारे साथ समय बिताना अच्छा लगता है," मिडोरी ने प्लास्टिक के कप से खेलते हुए कहा।

मैंने कहा, "दो घंटे के लिए यहाँ से बाहर निकलो और टहलने जाओ। मैं कुछ देर के लिए तुम्हारे पिताजी का ख्याल रखूँगा।" "क्यों?"

"आपको अस्पताल से दूर जाकर अकेले में आराम करने की जरूरत है - किसी से बात न करें, बस अपने दिमाग को शांत करें।"

मिडोरी ने एक मिनट सोचा और सिर हिलाया। "हम्म, शायद तुम सही हो। लेकिन क्या तुम्हें पता है कि क्या करना है? उसकी देखभाल कैसे करनी है?"

मैं सब देख रही हूँ। मुझे लगभग सब समझ आ गया है। आप इंट्रावेनस चेक करते हैं, उसे पानी देते हैं, पसीना पोंछते हैं और बलगम थूकने में उसकी मदद करते हैं। बेड पैन बिस्तर के नीचे है, और अगर उसे भूख लगती है तो मैं उसे उसके दोपहर के खाने का बचा हुआ हिस्सा खिला देती हूँ। अगर मुझे कुछ समझ नहीं आता तो मैं नर्स से पूछ लेती हूँ।

"मुझे लगता है इतना काफी होगा," मिदोरी ने मुस्कुराते हुए कहा। "बस एक बात है। उसका दिमाग थोड़ा खराब होने लगा है, इसलिए वह कभी-

कभी अजीबोगरीब बातें बोल देता है - ऐसी बातें जो कोई समझ नहीं पाता।"
अगर ऐसा है तो इसे लेकर परेशान न हों
वह ऐसा करता है।
मैंने कहा, "मैं ठीक हूँ।"

कमरे में वापस आकर, मिदोरी ने अपने पिता से कहा कि उसे कुछ काम निपटाने हैं और जब तक वह बाहर रहेगी, मैं उनकी देखभाल करूँगा।
224

ऐसा लग रहा था कि उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं था। शायद उसके लिए इसका कोई महत्व ही नहीं था। वह बस पीठ के बल लेटा रहा और छत को घूरता रहा। अगर वह बीच-बीच में पलकें न झपका रहा होता, तो मानो वह मर चुका हो।
उसकी आँखें लाल थीं मानो उसने शराब पी हो, और हर बार जब वह देखता था
एक गहरी सांस लेते हुए उसकी नाक के नथुने थोड़े से फैल गए। इसके अलावा, वह बिल्कुल भी नहीं हिला और मिदोरी को जवाब देने की कोई कोशिश नहीं की। मैं यह समझ ही नहीं पा रही थी कि वह अपने मन की गहरी अंधेरी गहराइयों में क्या सोच रहा होगा या क्या महसूस कर रहा होगा।
मिडोरी के जाने के बाद, मैंने सोचा कि मैं उसके पिता से बात करने की कोशिश करूँ, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उनसे क्या कहूँ या कैसे कहूँ, इसलिए मैं चुप ही रहा।
कुछ देर बाद, उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं और सो गए। मैं पलंग के

सिरहाने पर रखे स्टूल पर बैठ गया और उनकी नाक के कभी-कभार फड़कने को देखता रहा, मन ही मन यही दुआ करता रहा कि अब उनकी मृत्यु न हो। मैंने सोचा, कितना अजीब होगा अगर यह आदमी मेरे बगल में ही अपनी अंतिम साँस ले ले।

आखिरकार, मैं उससे अपने जीवन में पहली बार मिला था, और हमारे बीच एकमात्र बंधन मिदोरी थी, एक लड़की जिसे मैं अपने नाटक इतिहास की कक्षा से जानता था।

वह मर नहीं रहा था, बस शांति से सो रहा था। अपना कान उसके चेहरे के पास ले जाकर मैंने उसकी हल्की साँसें सुनीं। मैं निश्चिंत हो गया और बगल वाले बिस्तर पर लेटे आदमी की पत्नी से बातें करने लगा। वह सिर्फ मिदोरी के बारे में ही बात कर रही थी, मानो मैं उसका प्रेमी हूँ।

"वह सचमुच एक अद्भुत लड़की है," उसने कहा। "वह अपने पिता का बहुत अच्छे से ख्याल रखती है; वह दयालु, सौम्य, संवेदनशील और दृढ़ है, और इन सबके अलावा, वह सुंदर भी है। आपको उसके साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। उसे कभी जाने मत देना।"

आपको उसके जैसी दूसरी कोई नहीं मिलेगी।"

मैंने बिना कुछ विस्तार से बताए कहा, "मैं उसके साथ अच्छा व्यवहार करूंगा।"

"मेरे घर पर एक बेटा और एक बेटी है। वह 17 साल का है, वह 21 साल की है, और उनमें से कोई भी कभी अस्पताल आने के बारे में नहीं सोचेगा। स्कूल खत्म होते ही वे सर्फिंग करने या डेटिंग करने या जो भी हो, निकल जाते हैं। वे बहुत ही बुरे हैं।"

वे मुझसे जितना हो सके उतना जेब खर्च निचोड़ लेते हैं और फिर गायब हो जाते हैं।"

दोपहर 1:30 बजे वह कुछ खरीदारी करने के लिए अस्पताल से निकलीं। दोनों पुरुष गहरी नींद में सो रहे थे। दोपहर की हल्की धूप कमरे में फैल रही थी, और मुझे ऐसा लग रहा था मानो मैं अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे ही किसी भी क्षण सो जाऊं। खिड़की के पास मेज पर रखे फूलदान में पीले और सफेद गुलदाउदी के फूल शरद ऋतु की याद दिला रहे थे। हवा में दोपहर के भोजन से बची उबली हुई मछली की मीठी खुशबू तैर रही थी। नर्सें गलियारे में इधर-उधर आती-जाती रहीं और स्पष्ट, मर्मस्पर्शी आवाज़ों में एक-दूसरे से बातें करती रहीं।

वे बीच-बीच में कमरे में झाँकते और जब देखते कि दोनों मरीज़ सो रहे हैं तो मुझे देखकर मुस्कुरा देते। काश मेरे पास पढ़ने के लिए कुछ होता, लेकिन कमरे में न तो किताबें थीं, न पत्रिकाएँ, न अखबार, बस दीवार पर एक कैलेंडर टंगा था।

मैंने नाओको के बारे में सोचा। मैंने उसके नग्न शरीर के बारे में सोचा, जो केवल उसके बालों में बिछी पट्टी पहने हुए थी। मैंने उसकी कमर की गोलाई और उसके गुप्तांग के बालों की गहरी छाया के बारे में सोचा। उसने मुझे उस तरह क्यों दर्शन दिए थे? क्या वह नींद में चल रही थी? या यह महज़ मेरी कल्पना थी? जैसे-जैसे समय बीतता गया और वह छोटी सी दुनिया दूर होती गई, मुझे इस बात पर संदेह बढ़ता गया कि उस रात की घटनाएँ वास्तव में घटी थीं या नहीं। अगर मैं खुद से कहता कि वे सच थीं, तो मुझे यकीन हो जाता कि वे सच थीं, और अगर मैं खुद से कहता कि वे एक कल्पना थीं, तो वे एक कल्पना जैसी लगती थीं। वे कल्पना होने के लिए बहुत स्पष्ट और विस्तृत थीं, और वास्तविक होने के लिए बहुत संपूर्ण और सुंदर थीं: नाओको का शरीर और चाँदनी।

मिडोरी के पिता अचानक जाग गए और खांसने लगे, जिससे मेरा

दिवास्वप्न टूट गया। मैंने उन्हें टिश्यू में बलगम थूकने में मदद की और तौलिए से उनके माथे से पसीना पोंछा।
मैंने पूछा, "क्या आपको पानी चाहिए?" उन्होंने बस चार मिलीमीटर का सिर हिलाया। मैंने पानी की छोटी सी कांच की बोतल पकड़ी ताकि वे थोड़ा-थोड़ा करके पी सकें, उनके सूखे होंठ कांप रहे थे और गला फड़क रहा था। उन्होंने बोतल में मौजूद गुनगुने पानी की एक-एक बूंद पी ली।
"क्या आपको और चाहिए?" मैंने पूछा। ऐसा लग रहा था कि वह बोलने की कोशिश कर रहा है, इसलिए मैंने अपना कान उसके पास ले जाकर सुना।
बस करो, उसने धीमी, रूखी आवाज में कहा - उसकी आवाज पहले से भी धीमी और रूखी थी।

"कुछ खा क्यों नहीं लेते? भूख लगी होगी।" उसने हल्के से सिर हिलाकर जवाब दिया। मिदोरी की तरह, मैंने उसका बिस्तर ऊपर उठाया और उसे बारी-बारी से चम्मच से सब्जी की जेली और उबली हुई मछली खिलाना शुरू किया। उसका आधा खाना खत्म करने में बहुत समय लग गया, जिसके बाद उसने थोड़ा सा सिर हिलाकर इशारा किया कि उसका पेट भर गया है।
यह हरकत लगभग अगोचर थी; जाहिर तौर पर बड़े इशारे करने में उसे दर्द होता था।
मैंने उससे पूछा, "फलों का क्या होगा?"
नहीं, उसने कहा। मैंने तौलिए से उसके मुंह के कोने पोंछे और बर्तन गलियारे में ले जाने से पहले बिस्तर को फिर से समतल किया।
मैंने उससे पूछा, "क्या यह अच्छा था?"

उसने जवाब दिया, "भयानक।"
“हाँ,” मैंने मुस्कुराते हुए कहा। “यह बहुत बुरा लग रहा था।” मिदोरी के पिता यह तय नहीं कर पा रहे थे कि अपनी आँखें और खोलें या बंद कर लें, वे चुपचाप लेटे हुए मुझे घूर रहे थे। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या वे मुझे पहचानते थे। मिदोरी के आसपास होने की तुलना में मेरे साथ अकेले में वे ज़्यादा सहज लग रहे थे। शायद उन्होंने मुझे किसी और के लिए गलत समझ लिया था। या कम से कम मैं यही सोचना पसंद करती थी।
"आज का दिन कितना सुहाना है," मैंने स्टूल पर बैठते हुए और पैर मोड़ते हुए कहा। "पतझड़ का मौसम है, रविवार है, मौसम बहुत बढ़िया है, और हर जगह भीड़ ही भीड़ है। ऐसे सुहावने दिन में घर के अंदर आराम करना सबसे अच्छा है। भीड़ में रहना बहुत थका देने वाला होता है। और हवा भी बदबूदार है। मैं ज़्यादातर रविवार को ही कपड़े धोती हूँ - सुबह कपड़े धोती हूँ, अपने हॉस्टल की छत पर सुखाती हूँ, सूरज डूबने से पहले अंदर ले आती हूँ, और अच्छे से इस्त्री करती हूँ। मुझे इस्त्री करने में कोई दिक्कत नहीं है।"
सिकुड़ी हुई चीज़ों को चिकना बनाने में एक अलग ही संतुष्टि मिलती है। और मैं इसमें काफी अच्छी भी हूँ। बेशक, शुरू में मैं इसमें बहुत बुरी थी। मैं हर चीज़ में सिलवटें डाल देती थी। लेकिन एक महीने के अभ्यास के बाद, मुझे समझ आ गया कि मुझे क्या करना है। इसलिए रविवार मेरा कपड़े धोने और इस्त्री करने का दिन होता है। आज तो मैं ये नहीं कर पाई। अफसोस: कपड़े धोने का एक पूरा दिन बर्बाद हो गया।
"कोई बात नहीं। मैं कल सुबह जल्दी उठकर इसे ठीक कर लूंगा।"
चिंता मत करो। रविवार को मेरे पास करने के लिए और कुछ नहीं है।

"कल सुबह कपड़े धोने और सुखाने के बाद, मैं अपनी दस बजे वाली क्लास में जाऊंगी। यह वही क्लास है जिसमें मैं मिदोरी के साथ हूं: नाटक का इतिहास। मैं यूरिपिड्स पर काम कर रही हूं। क्या आप यूरिपिड्स से परिचित हैं?"

वह एक प्राचीन यूनानी थे - एशिलस और सोफोक्लीज के साथ यूनानी त्रासदी के तीन महान नाटककारों में से एक। कहा जाता है कि मैसेडोनिया में एक कुत्ते के काटने से उनकी मृत्यु हो गई थी, लेकिन हर कोई इस बात पर विश्वास नहीं करता। खैर, ये थे यूरिपाइड्स। मुझे सोफोक्लीज ज़्यादा पसंद हैं, लेकिन शायद ये पसंद-नापसंद की बात है। मैं सच में नहीं कह सकता कि कौन बेहतर है।

उनके नाटकों की खासियत यह है कि उनमें चीजें इतनी उलझ जाती हैं कि पात्र फंस जाते हैं। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं? कई अलग-अलग लोग सामने आते हैं, और उन सभी की अपनी-अपनी परिस्थितियां, कारण और बहाने होते हैं, और हर कोई न्याय या खुशी के अपने-अपने विचार का पीछा कर रहा होता है। नतीजतन, कोई कुछ नहीं कर पाता। जाहिर है। मेरा मतलब है, यह लगभग असंभव है कि हर किसी का न्याय हो या हर किसी की खुशी की जीत हो, इसलिए अराजकता फैल जाती है। और फिर आपको क्या लगता है क्या होता है? सरल - अंत में एक देवता प्रकट होता है और सब कुछ नियंत्रित करने लगता है। 'तुम वहां जाओ, तुम यहां आओ, तुम उसके साथ मिलो, और तुम थोड़ी देर के लिए चुपचाप बैठ जाओ।' बस ऐसे ही। वह एक तरह का मध्यस्थ है, और अंत में सब कुछ ठीक हो जाता है। इसे 'डेउस एक्स माकिना' कहते हैं। यूरिपिड्स के नाटकों में लगभग हमेशा ही एक डेउस एक्स माकिना होता है, और यहीं पर उनके बारे में आलोचकों की राय बंट जाती है।

"लेकिन ज़रा सोचिए - अगर असल ज़िंदगी में कोई चमत्कारिक घटना हो

जाए तो क्या होगा?"
सब कुछ कितना आसान होता! अगर आप कहीं अटक जाते या फँस जाते, तो कोई देवता ऊपर से उतरकर आपकी सारी समस्याएँ हल कर देता। इससे आसान और क्या हो सकता है? खैर, यही है नाटक का इतिहास। विश्वविद्यालय में हम लगभग इसी तरह की चीजें पढ़ते हैं।
मिडोरी के पिता ने कुछ नहीं कहा, लेकिन जब तक मैं बोल रही थी, उनकी निगाहें मुझ पर टिकी रहीं। ज़ाहिर है, उनकी उन निगाहों से यह पता नहीं चल रहा था कि उन्हें मेरी कोई बात समझ आ रही है या नहीं।
मैंने कहा, "शांति।"
इतनी सारी बातों के बाद, मुझे बहुत भूख लग रही थी। मैंने नाश्ते में नाममात्र का ही खाया था और दोपहर का खाना भी आधा ही खाया था। अब मुझे अफसोस हो रहा था कि मैंने 228 क्यों नहीं खाए।

दोपहर के भोजन में और कुछ खाने की इच्छा थी, लेकिन पछतावा करने से कोई फायदा नहीं होने वाला था। मैंने खाने के लिए अलमारी में देखा, लेकिन मुझे केवल नोरी का एक डिब्बा, कुछ विक्स कफ ड्रॉप्स और सोया सॉस ही मिला। खीरे और अंगूर वाला कागज़ का थैला अभी भी वहीं पड़ा था।
"अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं कुछ खीरे खाना चाहती हूँ," मैंने मिदोरी के पिता से कहा। उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने सिंक में तीन खीरे धोए और एक कटोरी में थोड़ा सा सोया सॉस डाला। फिर मैंने एक खीरे को नोरी में लपेटा, सोया सॉस में डुबोया और झटपट खा लिया।
"वाह, बहुत बढ़िया!" मैंने मिदोरी के पिता से कहा। "ताज़ा, सादा, जीवन की महक से भरपूर। खीरे बहुत अच्छे हैं। कीवी फल से कहीं ज़्यादा पौष्टिक भोजन।"

मैंने एक खीरा चट कर लिया और दूसरे पर टूट पड़ा। मेरे खीरे चबाने की आवाज़ से पूरा कमरा गूंज उठा। दूसरा खीरा खत्म करने के बाद ही मुझे आराम करने की फुर्सत मिली। मैंने हॉल में गैस बर्नर पर पानी उबाला और चाय बनाई।

"क्या आप कुछ पीना चाहेंगे? पानी? जूस?" मैंने मिदोरी के पिता से पूछा।

उसने कहा, "खीरा।"

मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "बहुत बढ़िया। नोरी के साथ?"

उन्होंने हल्का सा सिर हिलाया। मैंने बिस्तर को फिर से ऊपर उठाया। फिर मैंने खीरे का एक छोटा टुकड़ा काटा, उसे नोरी की पट्टी में लपेटा, टूथपिक से उसमें छेद किया, सोया सॉस में डुबोया और मरीज़ के मुंह में डाल दिया। चेहरे पर लगभग कोई भाव परिवर्तन किए बिना, मिदोरी के पिता ने उस टुकड़े को बार-बार चबाया और अंत में निगल लिया।

"कैसा रहा? बढ़िया था ना?"

अच्छा, उसने कहा।

मैंने कहा, "जब खाना स्वादिष्ट होता है तो अच्छा लगता है। यह एक तरह से आपके जीवित होने का प्रमाण है।"

उसने पूरा खीरा खा लिया। जब उसने खा लिया, तो उसे पानी चाहिए था, इसलिए मैंने उसे बोतल से पानी पिलाया। कुछ मिनट बाद, उसने कहा कि उसे पेशाब करना है, इसलिए मैंने 229 के नीचे से पेशाब का जार निकाला।

मैंने उसे बिस्तर पर लिटाया और उसके लिंग के सिरे से उसे पकड़ लिया। उसके बाद मैंने जार को शौचालय में खाली कर दिया और उसे धो डाला। फिर मैं बीमार के कमरे में वापस गया और अपनी चाय खत्म की।

मैंने पूछा, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?"

<मेरा... सिर> उसने कहा।
"दर्द हो रहा है?"
उसने थोड़ा सा frowning करते हुए कहा।
"खैर, इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है, आपका अभी-अभी ऑपरेशन हुआ है। बेशक, मेरा कभी ऑपरेशन नहीं हुआ, इसलिए मुझे नहीं पता कि यह कैसा होता है।" <टिकट> उन्होंने कहा।
"टिकट? कौन सा टिकट?"
<मिडोरी> उसने कहा। <टिकट>।
मुझे बिल्कुल समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कह रहा है, इसलिए मैं चुप रहा। वह भी कुछ देर चुप रहा। फिर मानो उसने कहा, 'कृपया'। उसने अपनी आँखें चौड़ी कर लीं और मुझे घूरकर देखा। मुझे लगा कि वह मुझे कुछ बताने की कोशिश कर रहा है, लेकिन मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि वह क्या कहना चाहता है।
<उएनो> उसने कहा। <मिदोरी>।
"उएनो स्टेशन?"
उसने सिर हिलाकर सहमति जताई।
मैंने उसकी बात समझने की कोशिश की: "टिकट, मिदोरी, कृपया, उएनो स्टेशन," लेकिन मुझे इसका मतलब बिल्कुल समझ नहीं आया। मुझे लगा कि उसका दिमाग उलझन में है, लेकिन पहले की तुलना में अब उसकी आँखों में अद्भुत स्पष्टता थी। उसने वह हाथ उठाया जो नसों में लगी सुई से मुक्त था और मेरी ओर बढ़ाया। यह उसके लिए बहुत बड़ी कोशिश रही होगी, जिस तरह से उसका हाथ हवा में काँप रहा था। मैं खड़ी हुई और उसका कमज़ोर, झुर्रीदार हाथ पकड़ लिया। उसने भी अपनी पूरी ताकत से मेरा हाथ थाम लिया और फिर से कहा, "कृपया।"
“चिंता मत करो,” मैंने कहा। “मैं टिकट और मिदोरी का भी ख्याल रख

लूंगा।” उसने अपना हाथ वापस बिस्तर पर रख दिया और आँखें बंद कर लीं। फिर, एक गहरी साँस लेते हुए, वह सो गया। मैंने यह सुनिश्चित करने के लिए जाँच की कि वह अभी भी जीवित है, फिर चाय के लिए और पानी उबालने के लिए बाहर चला गया। गर्म चाय की चुस्की लेते हुए, मुझे एहसास हुआ कि मृत्यु के कगार पर खड़े इस छोटे से आदमी के लिए मेरे मन में एक तरह की सहानुभूति जाग उठी है।

कुछ मिनट बाद दूसरे मरीज की पत्नी वापस आई और पूछा कि सब ठीक है या नहीं। मैंने उसे आश्वस्त किया कि सब ठीक है। उसका पति भी गहरी नींद में सो रहा था और गहरी सांसें ले रहा था।

मिडोरी तीन मिनट बाद वापस आई।

"मैं पार्क में थी, खोई-खोई सी थी," उसने कहा। "मैंने वही किया जो आपने मुझे बताया था, किसी से बात नहीं की, बस अपने दिमाग को खाली छोड़ दिया।"

"यह कैसा था?"

"धन्यवाद, अब मैं काफी बेहतर महसूस कर रहा हूँ। अभी भी थोड़ी सुस्ती और थकान महसूस हो रही है, लेकिन मेरा शरीर पहले से काफी हल्का लग रहा है। मुझे लगता है कि मैं जितना सोच रहा था उससे कहीं ज्यादा थका हुआ था।"

उसके पिता गहरी नींद में सो रहे थे, इसलिए हमारे पास करने को कुछ नहीं था। हमने वेंडिंग मशीन से कॉफी खरीदी और टीवी रूम में बैठकर पी। मैंने मिदोरी को बताया कि उसकी अनुपस्थिति में क्या हुआ था - उसके पिता ने अच्छी नींद ली, फिर उठे और अपने दोपहर के भोजन का

बचा हुआ हिस्सा खाया, फिर मुझे खीरा खाते हुए देखा और खुद भी एक खीरा मांगा, पूरा खीरा खा लिया और पेशाब कर दिया।
"वातानाबे, तुम कमाल हो," मिदोरी ने कहा। "हम सब उसे कुछ भी खिलाने की कोशिश में पागल हो रहे थे, और तुमने उसे पूरा खीरा खिला दिया! अविश्वसनीय!"
"मुझे नहीं पता, मुझे लगता है कि उसने मुझे अपना खीरा खाते हुए देख लिया।"
"या शायद आपमें लोगों को सहज महसूस कराने की खास कला है।"
"बिल्कुल नहीं," मैंने हंसते हुए कहा। "बहुत से लोग मेरे बारे में ठीक इसके विपरीत ही कहेंगे।"
आप मेरे पिता के बारे में क्या सोचते हैं?
"मुझे वो पसंद है। ऐसा नहीं है कि हमने एक-दूसरे से बहुत कुछ कहा हो। लेकिन, मुझे नहीं पता, वो अच्छा लगता है।" "क्या वो शांत था?"
"बहुत।"
"तुम्हें उसे एक हफ्ते पहले देखना चाहिए था। वो बहुत बुरा था," मिदोरी ने सिर हिलाते हुए कहा। "ऐसा लग रहा था जैसे उसका दिमाग खराब हो गया हो और वो बेकाबू हो गया हो। उसने मुझ पर गिलास फेंका और बहुत बुरी-भली बातें चिल्लाईं - 'काश तुम मर जाओ, बेवकूफ कुतिया!'"
यह बीमारी लोगों के साथ ऐसा कर सकती है। उन्हें पता नहीं क्यों, लेकिन ऐसा हो सकता है। 231

लोग अचानक से बहुत क्रूर हो जाते हैं। मेरी माँ के साथ भी ऐसा ही हुआ था। आपको क्या लगता है उन्होंने मुझसे क्या कहा होगा? "तुम मेरी बेटी नहीं हो! मैं तुमसे नफरत करती हूँ!" यह सुनकर मुझे एक पल के लिए लगा जैसे मेरी दुनिया ही अंधेरी हो गई हो। लेकिन इस तरह की बातें इस

खास बीमारी की एक विशेषता हैं। दिमाग के एक हिस्से पर कुछ दबाव पड़ता है और लोग तरह-तरह की बुरी बातें कहने लगते हैं। आप जानते हैं कि यह बीमारी का ही एक हिस्सा है, लेकिन फिर भी, इससे दुख होता है। आप और क्या उम्मीद करते हैं? मैं उनके लिए दिन-रात मेहनत कर रही हूँ और वे मुझसे इतनी बुरी-बुरी बातें कह रहे हैं-"

"मैं समझ गई तुम क्या कहना चाहते हो," मैंने कहा। फिर मुझे मिदोरी के पिता द्वारा मुझसे कही गई अटपटी बातें याद आ गईं।

"टिकट? उएनो स्टेशन?" मिदोरी ने कहा। "पता नहीं यह सब क्या है?"

और फिर उसने कहा, "कृपया, और मिदोरी का ख्याल रखना।" "कृपया मिदोरी का ख्याल रखना?"

"या शायद वह चाहता है कि आप उएनो जाएं और टिकट खरीदें। इन चार शब्दों का क्रम इतना गड़बड़ है, कौन जाने उसका मतलब क्या है? क्या उएनो स्टेशन आपके लिए कोई खास मायने रखता है?"

"हम्म, उएनो स्टेशन।" मिदोरी ने कुछ देर सोचा। "मुझे बस दो बार घर से भागने की याद आ रही है, एक बार जब मैं आठ साल की थी और दूसरी बार जब मैं दस साल की थी। दोनों बार मैंने उएनो से फुकुशिमा जाने वाली ट्रेन पकड़ी थी।"

मैंने कैश काउंटर से पैसे निकालकर टिकट खरीदे। घर पर किसी ने मुझे बहुत गुस्सा दिलाया था, और मैंने बदला लेने के लिए ऐसा किया। फुकुशिमा में मेरी एक चाची रहती थीं, मुझे वो पसंद थीं, इसलिए मैं उनके घर चली गई। मेरे पिताजी मुझे घर वापस लाए। मुझे लेने के लिए वो फुकुशिमा तक आए - सौ मील! उएनो जाने वाली ट्रेन में हमने डिब्बाबंद खाना खाया। यात्रा के दौरान मेरे पिताजी ने मुझे तरह-तरह की बातें बताईं, थोड़ी-थोड़ी बातें, बीच-बीच में लंबा अंतराल। जैसे 1923 के बड़े भूकंप के बारे में, या युद्ध के बारे में, या मेरे जन्म के समय के बारे में,

ऐसी बातें जो वो आमतौर पर नहीं करते थे। अब सोचती हूँ तो, वही वो पल थे जब मेरे पिताजी और मैंने अकेले में अच्छी-खासी लंबी बातचीत की थी।
अरे, क्या आप इस पर विश्वास कर सकते हैं? - मेरे पिता इतिहास के सबसे भीषण भूकंपों में से एक के दौरान टोक्यो के ठीक बीचोंबीच थे और वे बच गए।

मुझे तो पता भी नहीं चला!
"बिलकुल नहीं!"
"यह सच है! वह कोइशिकावा से साइकिल के पीछे ठेला लेकर जा रहे थे और उन्हें कुछ भी महसूस नहीं हुआ। जब वे घर पहुँचे, तो आस-पड़ोस की सभी छतों से टाइलें गिर चुकी थीं और परिवार के सभी लोग खंभों को पकड़े हुए थे और डर के मारे काँप रहे थे। उन्हें अब भी समझ नहीं आया और, जैसा कि वे बताते हैं, उन्होंने पूछा, 'यहाँ आखिर हो क्या रहा है?' यह मेरे पिता की महान कांटो भूकंप की 'प्यारी याद' है!" मिदोरी हँसी। "पुराने दिनों की उनकी सभी कहानियाँ ऐसी ही हैं। कोई नाटकीयता नहीं। वे सभी थोड़ी अटपटी हैं। मुझे नहीं पता, जब वे ये कहानियाँ सुनाते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे पिछले 50 या 60 सालों में जापान में कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं हुआ है।"
1936 का युवा अधिकारियों का विद्रोह, प्रशांत युद्ध, ये सब कुछ इस तरह की घटनाएं हैं, जैसे "अरे हाँ, अब जब आपने इसका जिक्र किया है, तो मुझे लगता है कि ऐसा कुछ कभी हुआ था।" यह बहुत मजेदार है!
"खैर, ट्रेन में, फुकुशिमा से उएनो जाते समय, वह मुझे ये कहानियां टुकड़ों-टुकड़ों में सुनाता रहता था। और अंत में, वह हमेशा कहता था, 'तो इससे पता चलता है, मिदोरी, तुम कहीं भी जाओ, सब कुछ एक जैसा ही

होता है।' मैं इतनी छोटी थी कि ऐसी बातों से प्रभावित हो जाती थी।"
"तो क्या उएनो स्टेशन से जुड़ी आपकी यही 'सुखद याद' है?" मैंने पूछा।
"हाँ,"
मिडोरी ने कहा, "क्या तुम कभी घर से भागे हो, वातानाबे?"
"कभी नहीं।"
"क्यों नहीं?"
"कल्पना की कमी। मुझे भाग जाने का ख्याल ही नहीं आया।" "तुम कितनी अजीब हो!" मिदोरी ने सचमुच प्रभावित होते हुए सिर झुकाते हुए कहा।
मैंने कहा, "मुझे आश्चर्य हो रहा है।"
"खैर, मुझे लगता है कि मेरे पिता यह कहना चाह रहे थे कि वह चाहते थे कि तुम मेरी देखभाल करो।"
"वास्तव में?"
"सच में! मैं ऐसी बातें समझ जाता हूँ। सहज रूप से। तो बताओ, तुमने उसे क्या जवाब दिया?"
"खैर, मुझे समझ नहीं आया कि वह क्या कह रहा था, इसलिए मैंने बस कहा ठीक है, मत करो 233"

चिंता मत करो, मैं तुम्हारा और टिकट दोनों का ख्याल रखूंगा।
"क्या तुमने मेरे पिता से वादा किया था? क्या तुमने कहा था कि तुम मेरा ख्याल रखोगी?" उसने गंभीर भाव से मेरी आँखों में सीधे देखते हुए पूछा।
"ऐसा नहीं," मैंने उसे तुरंत सुधारते हुए कहा। "मुझे सच में समझ नहीं आया कि वह क्या कह रहा था, और-"
"चिंता मत करो, मैं तो बस मजाक कर रही थी," उसने मुस्कुराते हुए कहा। "मुझे तुम्हारी यही बात बहुत पसंद है।"

मिडोरी और मैंने अपनी कॉफ़ी खत्म की और कमरे में वापस चले गए। उसके पिता अभी भी गहरी नींद में सो रहे थे। अगर आप पास झुकते तो उनकी धीमी साँसें सुनाई देतीं। जैसे-जैसे दोपहर ढलती गई, अस्पताल की खिड़की के बाहर की रोशनी शरद ऋतु के कोमल, सौम्य रंगों में बदल गई। पक्षियों का एक झुंड बाहर बिजली के तार पर बैठा, फिर उड़ गया। मिडोरी और मैं कमरे के एक कोने में बैठे, पूरे समय धीरे-धीरे बातें करते रहे। उसने मेरी हथेली देखकर भविष्यवाणी की कि मैं 105 साल तक जीवित रहूँगा, तीन बार शादी करूँगा और एक सड़क दुर्घटना में मर जाऊँगा। "बुरा जीवन नहीं है," मैंने कहा।

जब उसके पिता सुबह चार बजे के कुछ देर बाद जागे, तो मिदोरी उनके तकिये के पास जाकर बैठ गई, उनके माथे से पसीना पोंछा, उन्हें पानी दिया और उनके सिरदर्द के बारे में पूछा। एक नर्स आई और उसने उनका तापमान लिया, उनके पेशाब की संख्या दर्ज की और नसों में लगे इंजेक्शन की जाँच की। मैं टीवी रूम में जाकर थोड़ी देर फुटबॉल देखने लगी।

पांच बजे मैंने मिदोरी को बताया कि मैं जा रही हूँ। मैंने उसके पिता को समझाया, "मुझे अब काम पर जाना है। मैं शिंजुकु में सुबह छह बजे से रात दस:30 बजे तक रिकॉर्ड बेचती हूँ।"

उसने मेरी तरफ देखा और हल्का सा सिर हिलाया।

"हे वातानाबे, मुझे नहीं पता कि इसे कैसे कहूँ, लेकिन मैं आज के लिए वास्तव में आपको धन्यवाद देना चाहती हूँ," मिडोरी ने रिसेप्शन पर मुझे देखकर मुझसे कहा।

मैंने कहा, "मैंने इतना कुछ नहीं किया। लेकिन अगर मैं किसी भी तरह से मदद कर सकूँ, तो मैं अगले हफ्ते भी आऊँगा। मैं आपके पिताजी से दोबारा मिलना चाहूँगा।"

"वास्तव में?"
"वैसे, छात्रावास में मेरे लिए करने को ज़्यादा कुछ नहीं है, और अगर मैं 234 आता हूँ

यहां मुझे खीरे खाने को मिलते हैं।"
मिडोरी ने अपनी बाहें मोड़ीं और अपने जूते की एड़ी से लिनोलियम पर थपथपाया।
"मैं तुम्हारे साथ फिर से शराब पीने जाना चाहूंगी," उसने अपना सिर थोड़ा झुकाते हुए कहा।
"पोर्नो फिल्मों के बारे में क्या ख्याल है?"
"हम पहले वो करेंगे और फिर शराब पीने जाएंगे। और हम हमेशा की तरह सारी घिनौनी बातों पर चर्चा करेंगे।"
मैंने विरोध करते हुए कहा, "मैं घिनौनी बातें नहीं करता। तुम करते हो।"
"खैर, हम ऐसी ही बातों पर चर्चा करेंगे, खूब शराब पिएंगे और सो जाएंगे।"
"और तुम्हें पता है आगे क्या होता है," मैंने आह भरते हुए कहा। "मैं कोशिश करती हूँ, और तुम मुझे करने नहीं देती। है ना?" वह नाक से हंस पड़ी।
मैंने कहा, "खैर, अगले रविवार सुबह मुझे फिर से ले जाना। हम साथ में यहाँ आएंगे।"
"क्या मैं थोड़ी लंबी स्कर्ट पहनूँगी?"
"बिल्कुल," मैंने कहा।

हालांकि, मैं अगले रविवार को अस्पताल नहीं गया। मिदोरी के पिता का निधन शुक्रवार सुबह हो गया था।

उसने सुबह 6:30 बजे मुझे यह बताने के लिए फोन किया। फोन की घंटी बजी और मैं पजामा के ऊपर एक कार्डिगन ओढ़कर लॉबी की ओर भागा। ठंडी बारिश चुपचाप बरस रही थी।
"मेरे पिताजी का कुछ मिनट पहले निधन हो गया," मिदोरी ने धीमी और शांत आवाज़ में कहा। मैंने उससे पूछा कि क्या मैं कुछ मदद कर सकता हूँ। "धन्यवाद," उसने कहा।
"सच में कुछ नहीं है। हमें अंत्येष्टि की आदत है। मैं बस आपको बताना चाहता था।"
उसके होंठों से एक आह निकली।
"अंतिम संस्कार में मत आना, ठीक है? मुझे ऐसी चीजें बिल्कुल पसंद नहीं हैं। मैं तुम्हें वहां नहीं देखना चाहता।"
मैंने कहा, "मैं समझ गया।"
235

"क्या तुम सचमुच मुझे पोर्न फिल्म दिखाने ले जाओगे?" "बिल्कुल ले जाऊँगा।"
"एक बेहद घिनौना।"
"मैं इस मामले की पूरी तरह से जांच कर लूंगी।" "अच्छा। मैं आपको कॉल करूंगी," उसने कहा और फोन काट दिया।

मिडोरी की तरफ से एक हफ्ता बीत गया, कोई खबर नहीं। न कोई कॉल, न लेक्चर हॉल में उसका कोई अता-पता। जब भी मैं हॉस्टल लौटता, उससे मैसेज की उम्मीद करता रहता, पर कभी कोई मैसेज नहीं आता था। एक रात, मैंने अपना वादा निभाने की कोशिश की और हस्तमैथुन करते समय उसके बारे में सोचा, पर कोई असर नहीं हुआ। मैंने नाओको

के बारे में सोचने की कोशिश की, पर नाओको की छवि भी उस समय काम नहीं आई। यह इतना बेतुका लगा कि मैंने हार मान ली। मैंने व्हिस्की का एक घूंट लिया, दांत साफ किए और सो गया।

मैंने रविवार सुबह नाओको को एक पत्र लिखा। उसमें मैंने उसे मिदोरी के पिता के बारे में बताया। मैं अपने एक लेक्चर में शामिल एक लड़की के पिता से मिलने अस्पताल गई थी और उनके कमरे में कुछ खीरे खाए। जब उन्होंने मुझे खीरे चबाते हुए सुना, तो उन्हें भी खाने का मन हुआ और उन्होंने भी उसी तरह खीरे चबाए। लेकिन पाँच दिन बाद उनका देहांत हो गया। मुझे आज भी उनके खीरे चबाने की हल्की सी आवाज़ अच्छी तरह याद है। लोग मरने के बाद अपनी कुछ अजीब सी यादें छोड़ जाते हैं। मेरे पत्र में आगे लिखा था: सुबह उठकर बिस्तर पर लेटे-लेटे मैं तुम्हारे, रेइको और पक्षीशाला के बारे में सोचती हूँ। मैं मोर, कबूतर, तोते, टर्की और खरगोशों के बारे में सोचती हूँ। मुझे याद है उस बरसात की सुबह तुमने और रेइको ने पीले रंग के रेनकोट पहने थे, जिन पर हुड भी था। बिस्तर पर आराम से लेटकर तुम्हारे बारे में सोचना अच्छा लगता है। ऐसा लगता है जैसे तुम मेरे बगल में सिमटकर गहरी नींद में सो रही हो। और मैं सोचती हूँ कि काश यह सच होता।
कभी-कभी मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है, लेकिन आम तौर पर मैं अपनी पूरी ताकत से जी रहा हूँ। जैसे तुम हर सुबह पक्षियों और खेतों की देखभाल करते हो, वैसे ही मैं भी हर सुबह अपनी स्प्रिंग को घुमाता हूँ। मैं उसे लगभग 236 बार घुमाता हूँ।

उठने, ब्रश करने, शेव करने, नाश्ता करने, कपड़े बदलने, हॉस्टल से निकलने और यूनिवर्सिटी पहुँचने तक मैं 36 बार खुद से बातें कर लेता हूँ।

मैं खुद से कहता हूँ, "चलो आज का दिन भी अच्छा बनाते हैं।" पहले मुझे पता नहीं था, लेकिन लोग कहते हैं कि आजकल मैं खुद से बहुत बातें करता हूँ।
शायद मैं स्प्रिंग घुमाते हुए खुद से कुछ बुदबुदा रहा हूँ।
तुम्हें न देख पाना बहुत मुश्किल है, लेकिन टोक्यो में मेरी ज़िंदगी तुम्हारे बिना बहुत बदतर होती। सुबह बिस्तर पर लेटते समय तुम्हारे बारे में सोचकर ही मुझे हिम्मत मिलती है और मैं खुद को समझा पाती हूँ कि मुझे एक और अच्छा दिन जीना है। मुझे पता है कि मुझे यहाँ भी अपना सर्वश्रेष्ठ देना है, ठीक वैसे ही जैसे तुम वहाँ दे रही हो।
आज रविवार है, वो दिन जब मैं कोई काम नहीं करती। मैंने अपने कपड़े धो लिए हैं और अब अपने कमरे में बैठकर तुम्हें लिख रही हूँ। एक बार ये चिट्ठी पूरी हो जाए, इस पर टिकट लग जाए और इसे पोस्टबॉक्स में डाल दूँ, तो सूरज डूबने तक मेरे पास करने को कुछ नहीं होगा। मैं रविवार को पढ़ाई भी नहीं करती। मैं सप्ताह के दिनों में लेक्चर के बीच लाइब्रेरी में पढ़ाई करके ठीक-ठाक काम चला लेती हूँ, इसलिए रविवार को मेरे पास करने को कुछ नहीं बचता। रविवार की दोपहरें शांत, सुकून भरी और मेरे लिए अकेली होती हैं। मैं किताबें पढ़ती हूँ या संगीत सुनती हूँ। कभी-कभी मुझे टोक्यो में रविवार की सैर के अलग-अलग रास्ते याद आते हैं। मुझे साफ-साफ याद है कि तुमने किसी भी सैर पर कैसे कपड़े पहने होते थे। रविवार की दोपहरों में मुझे तरह-तरह की बातें याद आती हैं।
रेइको को मेरी तरफ से नमस्कार कहना। मुझे रात में उसकी गिटार बजाने की बहुत याद आती है।

जब मैंने पत्र लिखना समाप्त कर लिया, तो मैं कुछ ब्लॉक चलकर एक पोस्टबॉक्स तक गया, फिर पास की एक बेकरी से एक अंडे का सैंडविच

और एक कोक खरीदा।
मैंने दोपहर के भोजन में ये सब खाया और एक बेंच पर बैठकर स्थानीय खेल के मैदान में कुछ लड़कों को बेसबॉल खेलते हुए देखा। शरद ऋतु के गहराने से आकाश में नीलापन और गहराई बढ़ गई थी। मैंने ऊपर देखा तो पश्चिम की ओर दो धुंधली लकीरें ट्राम की पटरियों की तरह बिल्कुल समानांतर जा रही थीं। एक फाउल बॉल मेरी तरफ लुढ़कती हुई आई, और जब मैंने उसे वापस उनकी तरफ फेंका तो युवा खिलाड़ियों ने विनम्रता से "धन्यवाद महोदय" कहते हुए अपनी टोपी उतार दी। अधिकांश जूनियर बेसबॉल की तरह, इसमें भी बहुत सारे वॉक्स और 237 रन थे।

चोरी किए गए बेस।
दोपहर के बाद मैं पढ़ने के लिए अपने कमरे में वापस गया लेकिन ध्यान केंद्रित नहीं कर सका।
इसके बजाय, मैं छत को घूरते हुए मिदोरी के बारे में सोचने लगी। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या उसके पिता सचमुच मुझसे अपने जाने के बाद मिदोरी की देखभाल करने के लिए कह रहे थे, लेकिन मुझे पता नहीं था कि उनके मन में क्या चल रहा था। शायद उन्होंने मुझे किसी और के साथ भ्रमित कर दिया था।
खैर, उनकी मृत्यु शुक्रवार की सुबह हुई थी जब ठंडी बारिश हो रही थी, और अब सच जानना नामुमकिन था। मैंने कल्पना की कि मृत्यु के बाद वे पहले से भी ज़्यादा सिकुड़ गए होंगे। और फिर उन्हें भट्टी में जलाकर राख कर दिया गया होगा। और वे अपने पीछे क्या छोड़ गए? एक मामूली सी बस्ती में एक मामूली सी किताबों की दुकान और दो बेटियाँ, जिनमें से कम से कम एक थोड़ी अजीब थी। यह किस तरह का जीवन था? मैंने सोचा। अस्पताल के बिस्तर पर कटे हुए सिर और उलझे हुए दिमाग के

साथ लेटे हुए, जब वे मुझे देख रहे थे, उनके मन में क्या चल रहा था?
मिडोरी के पिता के बारे में इस तरह के विचार सोचते-सोचते मेरा मन इतना उदास हो गया कि मुझे कपड़े पूरी तरह सूखने से पहले ही छत से नीचे उतारने पड़े और शिंजुकु की ओर निकल पड़ा, जहाँ मैंने गलियों में घूमते हुए समय बिताया। रविवार की भीड़ ने मुझे थोड़ी राहत दी। किनोकुनिया की किताबों की दुकान इतनी भरी हुई थी जैसे भीड़भाड़ वाली ट्रेन। मैंने फॉल्कनर की 'लाइट इन अगस्त' की एक प्रति खरीदी और एक शोरगुल वाले जैज़ कैफ़े में चला गया, जहाँ मैंने अपनी नई किताब पढ़ी, ऑर्नेट कोलमैन और बड पॉवेल का संगीत सुना और गरमागरम, गाढ़ी, बेस्वाद कॉफ़ी पी। शाम 5:30 बजे मैंने किताब बंद की, बाहर गया और हल्का नाश्ता किया। ऐसे कितने रविवार - ऐसे सैकड़ों रविवार - मेरे सामने आने वाले थे?
"शांत, सुकून भरा और अकेला," मैंने मन ही मन कहा। रविवार को मैं अपनी स्प्रिंग नहीं घुमाता था।

उस हफ्ते के बीच में ही टूटे हुए कांच के टुकड़े से मेरी हथेली पर गहरा घाव हो गया। मैंने ध्यान नहीं दिया था कि रिकॉर्ड शेल्फ के कांच के

पार्टीशन में दरार थी। मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि कितना खून बह निकला, जिससे मेरे पैरों के पास की ज़मीन एकदम लाल हो गई। दुकान के मैनेजर ने कुछ तौलिए लाकर घाव पर कसकर बांध दिए।

फिर उसने आपातकालीन विभाग को फोन किया। वैसे तो वह आम तौर पर किसी काम का नहीं होता था, लेकिन उसने आश्चर्यजनक कुशलता से काम किया। सौभाग्य से अस्पताल पास ही था, लेकिन जब तक मैं वहाँ पहुँचा, तौलिए खून से लथपथ थे, और जो खून तौलिए सोख नहीं पाए थे, वह सड़क पर टपक रहा था। लोग मेरे लिए रास्ता बनाने लगे। उन्हें लगा कि मैं किसी लड़ाई में घायल हो गया हूँ। मुझे कोई खास दर्द नहीं हो रहा था, लेकिन खून बहना बंद नहीं हो रहा था।

डॉक्टर ने शांत भाव से खून से सने तौलिए हटाए, मेरी कलाई पर पट्टी बांधकर खून बहना रोका, घाव को कीटाणुरहित किया और टांके लगा दिए, और मुझे अगले दिन फिर आने को कहा। रिकॉर्ड शॉप पर वापस आकर, मैनेजर ने मुझे घर जाने को कहा: वह मुझे मेरी ड्यूटी पूरी करने वाले के रूप में दर्ज कर लेगा। मैं बस से छात्रावास गया और सीधे नागासावा के कमरे में चला गया। चोट के कारण मैं बहुत घबराया हुआ था, मैं किसी से बात करना चाहता था, और मैंने नागासावा को बहुत समय से नहीं देखा था।

मैंने उसे उसके कमरे में पाया, वह बीयर का कैन पी रहा था और टीवी पर स्पैनिश की क्लास देख रहा था। "तुम्हें क्या हुआ?" उसने मेरी पट्टी देखकर पूछा। मैंने कहा कि मुझे हल्का सा कट लग गया था, लेकिन कुछ खास नहीं। उसने मुझे बीयर पीने के लिए दी, लेकिन मैंने मना कर दिया।

"बस थोड़ा इंतज़ार करो। एक मिनट में सब खत्म हो जाएगा," नागासावा ने कहा और वह अपने स्पैनिश उच्चारण का अभ्यास करने लगा। मैंने कुछ पानी उबाला और 239

मैंने टी बैग से एक कप चाय बनाई। एक स्पेनिश महिला ने कुछ उदाहरण वाक्य सुनाए: "मैंने इतनी भयानक बारिश कभी नहीं देखी!", "बार्सिलोना में कई पुल बह गए।" नागासावा ने स्पेनिश में पाठ को ज़ोर से पढ़ा। "कितने घटिया वाक्य हैं!" उन्होंने कहा। "ये लोग हमेशा इसी तरह की बकवास ही देते हैं।"

कार्यक्रम समाप्त होने पर उसने टीवी बंद कर दिया और अपने छोटे से फ्रिज से एक और बीयर निकाल ली।

मैंने पूछा, "क्या आपको यकीन है कि मैं रास्ते में नहीं हूँ?"

"बिल्कुल नहीं। मैं बहुत ऊब गया था। क्या आप सच में बीयर नहीं पीना चाहेंगे?"

"नहीं, मुझे बिल्कुल भी नहीं लगता," मैंने कहा।

"ओह, हाँ, उन्होंने कुछ दिन पहले परीक्षा परिणाम घोषित कर दिए। मैं पास हो गया!"

"विदेश मंत्रालय की परीक्षा?"

बस यही है। आधिकारिक तौर पर इसे 'विदेश मामलों के लोक सेवा कर्मियों की प्रथम श्रेणी सेवा परीक्षा' कहा जाता है। कितना बड़ा मजाक है!

"बधाई हो!" मैंने कहा और उनसे हाथ मिलाने के लिए अपना बायां हाथ आगे बढ़ाया।

"धन्यवाद।"

"बेशक, मुझे आपके पास होने पर आश्चर्य नहीं हुआ।"

"नहीं, मैं भी नहीं," नागासावा हँसे। "लेकिन आधिकारिक तौर पर इसकी पुष्टि हो जाने से अच्छा लग रहा है।"

"क्या आपको लगता है कि पद मिलने के बाद आप विदेश जाएंगे?"

"नहीं, पहले वे आपको एक साल की ट्रेनिंग देते हैं। फिर वे आपको कुछ समय के लिए विदेश भेज देते हैं।"
मैंने अपनी चाय की चुस्की ली, और उसने स्पष्ट संतुष्टि के साथ अपनी बीयर पी।
"जब मैं यहां से निकल जाऊंगा, तो अगर आपको यह फ्रिज चाहिए तो मैं आपको दे दूंगा," नागासावा ने कहा। "आपको यह पसंद आएगा, है ना? यह बीयर के लिए बढ़िया है।"
"हाँ, मुझे यह चाहिए, लेकिन क्या आपको इसकी ज़रूरत नहीं होगी? आप तो फ्लैट वगैरह में रह रहे होंगे।"
"बेवकूफी मत करो! जब मैं इस जगह से निकलूंगा, तो अपने लिए एक बड़ा फ्रिज खरीदूंगा। मैं ऐशो-आराम की जिंदगी जिऊंगा! इस घटिया जगह में चार साल बहुत हो गए। मैं इस जगह में इस्तेमाल की हुई कोई भी चीज नहीं देखना चाहता। जो भी तुम चाहो, मैं तुम्हें दे दूंगा - टीवी, थर्मस, रेडियो..."

मैंने कहा, "आप मुझे जो भी देना चाहें, मैं ले लूंगी।" मैंने उनकी मेज पर रखी स्पेनिश की पाठ्यपुस्तक उठाई और उसे घूरने लगी। "आप स्पेनिश सीखना शुरू कर रहे हैं?"
"हाँ। आप जितनी अधिक भाषाएँ जानते हैं, उतना ही अच्छा है। और मुझे भाषाओं का अच्छा ज्ञान है। मैंने खुद ही फ्रेंच सीखी है और यह लगभग पूरी तरह से अच्छी है।"
भाषाएँ खेलों की तरह होती हैं। आप एक के नियम सीख लेते हैं, और फिर सभी भाषाएँ एक ही तरीके से काम करती हैं। बिल्कुल महिलाओं की तरह।

"वाह, चिंतनशील जीवन!" मैंने व्यंग्य भरे लहजे में कहा।
"खैर, चलो जल्द ही बाहर खाना खाने चलते हैं।"
"आपका मतलब महिलाओं की तलाश में घूमना है?"
"नहीं, एक असली डिनर। तुम, मैं और हात्सुमी किसी अच्छे रेस्टोरेंट में। मेरी नई नौकरी का जश्न मनाने के लिए। मेरे पिताजी पैसे दे रहे हैं, इसलिए हम किसी बहुत महंगे रेस्टोरेंट में जाएंगे।"
"क्या सिर्फ तुम और हात्सुमी ही नहीं होने चाहिए?"
"नहीं, आपके वहां होने से बेहतर होगा। मुझे ज्यादा आराम मिलेगा, और हात्सुमी को भी।"
ओह नहीं, ये तो फिर से किज़ुकी, नाओको और मैं ही थे।
"मैं बाद में हात्सुमी के घर पर रात बिताऊंगा, इसलिए आप सिर्फ खाने के लिए हमारे साथ आ जाइए।"
"ठीक है, अगर आप दोनों सच में चाहते हैं तो," मैंने कहा। "लेकिन वैसे, हात्सुमी के बारे में आपकी क्या योजना है? प्रशिक्षण पूरा होने के बाद आपको विदेश में तैनात किया जाएगा, और आप शायद कई सालों तक वापस नहीं लौटेंगे।"
उसका क्या होगा?
"यह उसकी समस्या है।"
मैंने कहा, "मुझे समझ नहीं आया।"
अपने डेस्क पर पैर रखे हुए, नागासावा ने बीयर का एक घूंट लिया और जम्हाई ली।
"देखो, मेरी शादी करने की कोई योजना नहीं है। मैंने यह बात हात्सुमी को साफ-साफ बता दी है। अगर वह किसी से शादी करना चाहती है, तो वह कर सकती है। मैं उसे नहीं रोकूंगा। अगर वह मेरा इंतजार करना चाहती है, तो उसे करने दो। मेरा यही मतलब है।"

मैंने कहा, "मुझे आपकी तारीफ करनी ही पड़ेगी।"
"तुम्हें लगता है मैं एक घटिया इंसान हूँ, है ना?"

"मैं करता हूं।"
"देखो, दुनिया स्वभाव से ही अन्यायपूर्ण जगह है। मैंने नियम नहीं बनाए हैं।"
यह हमेशा से ऐसा ही रहा है। मैंने हात्सुमी को कभी धोखा नहीं दिया। वह जानती है कि मैं एक घटिया इंसान हूँ और जब भी वह चाहे, मुझे छोड़कर जा सकती है। मैंने उसे यह बात शुरू से ही साफ-साफ कह दी थी।
नागासावा ने अपनी बियर खत्म की और सिगरेट जलाई।
मैंने पूछा, "क्या जीवन में ऐसी कोई बात नहीं है जिससे तुम्हें डर लगता हो?"
"अरे, मैं बिल्कुल बेवकूफ नहीं हूँ," नागासावा ने कहा। "बेशक, कभी-कभी ज़िंदगी मुझे डरा देती है। लेकिन मैं इसे हर चीज़ का आधार नहीं बनाता। मैं अपना पूरा प्रयास करूंगा और जितना हो सकेगा आगे बढ़ूंगा। मैं जो चाहता हूँ उसे लूंगा और जो नहीं चाहता उसे छोड़ दूंगा। मैं इसी तरह अपना जीवन जीना चाहता हूँ, और अगर हालात बिगड़ते हैं, तो मैं रुककर उस समय पुनर्विचार करूंगा। ज़रा सोचिए, एक अन्यायपूर्ण समाज वह समाज है जो आपको अपनी क्षमताओं का भरपूर दोहन करने का मौका देता है।"
मैंने कहा, "ये तो काफी स्वार्थी जीवन शैली लगती है।" "शायद, लेकिन मैं सिर्फ आसमान की ओर देखकर फल गिरने का इंतजार नहीं कर रहा हूँ। मैं अपने तरीके से कड़ी मेहनत कर रहा हूँ। मैं तुमसे दस गुना ज्यादा मेहनत कर रहा हूँ।"

"शायद यह सच है," मैंने कहा।
"कभी-कभी मैं अपने आसपास देखता हूँ और मेरा जी मिचला जाता है। ये कमीने कुछ क्यों नहीं करते? मैं सोचता हूँ। ये लोग कुछ नहीं करते, और फिर इसके बारे में शिकायत करते हैं।"
उनकी आवाज़ की कठोरता देखकर मैं अचंभित रह गया और नागासावा की ओर देखा। "मेरी नज़र में तो लोग कड़ी मेहनत कर रहे हैं। दिन-रात जी तोड़ मेहनत कर रहे हैं। या फिर मैं चीज़ों को गलत समझ रहा हूँ?"
"यह कोई कठिन काम नहीं है। यह तो बस शारीरिक श्रम है," नागासावा ने निर्णायक स्वर में कहा। "जिस 'कठिन काम' की मैं बात कर रहा हूँ, वह अधिक स्व-निर्देशित और उद्देश्यपूर्ण होता है।"
"तुम्हारा मतलब है, जब बाकी सब लोग आराम कर रहे हों, तब स्पेनिश की पढ़ाई करना?"
बस यही है। अगले वसंत तक मैं स्पेनिश में महारत हासिल कर लूंगा। मुझे अंग्रेजी, जर्मन और फ्रेंच अच्छी तरह आती हैं, और मैं 242 के लक्ष्य के लगभग करीब हूं।

इतालवी। आपको लगता है कि ऐसी चीजें बिना मेहनत के हो जाती हैं?
नागासावा सिगरेट का कश खींच रहे थे, और मैं मिदोरी के पिता के बारे में सोच रहा था। एक ऐसा आदमी था जिसने शायद कभी टीवी पर स्पैनिश सिखाने के बारे में सोचा भी नहीं होगा। शायद उसने कभी मेहनत और शारीरिक श्रम के बीच का अंतर भी नहीं समझा होगा। वह शायद इन सब बातों के बारे में सोचने के लिए बहुत व्यस्त था - काम में व्यस्त, और फुकुशिमा भाग गई अपनी बेटी को घर लाने में व्यस्त।
"तो, हमारे उस डिनर के बारे में," नागासावा ने कहा। "क्या यह शनिवार आपके लिए ठीक रहेगा?"

"ठीक है," मैंने कहा।

नागासावा ने अज़ाबू की एक शांत गली में स्थित एक आलीशान फ्रांसीसी रेस्तरां चुना। उन्होंने दरवाज़े पर अपना नाम बताया और हम दोनों को एक एकांत निजी कमरे में ले जाया गया। छोटे से कमरे की दीवारों पर लगभग 15 तस्वीरें टंगी हुई थीं। हात्सुमी के आने का इंतज़ार करते हुए, नागासावा और मैंने एक स्वादिष्ट वाइन की चुस्कियाँ लीं और जोसेफ कॉनराड के उपन्यासों पर बातचीत की। उन्होंने एक महंगा दिखने वाला ग्रे सूट पहना हुआ था। मैंने एक साधारण नीला ब्लेज़र पहना हुआ था।
हात्सुमी 15 मिनट बाद पहुंची। उसने बड़े सलीके से मेकअप किया हुआ था और सोने की बालियां, एक खूबसूरत गहरे नीले रंग की पोशाक और सुरुचिपूर्ण लाल रंग के जूते पहने हुए थे। जब मैंने उसकी पोशाक के रंग की तारीफ की, तो उसने बताया कि इसे मिडनाइट ब्लू कहते हैं।
"कितना शानदार रेस्टोरेंट है!" उसने कहा।
"जब भी मेरे पिताजी टोक्यो आते हैं, वे हमेशा यहीं खाना खाते हैं," नागासावा ने कहा। "मैं एक बार उनके साथ यहाँ आया था। मुझे ये दिखावटी जगहें ज़्यादा पसंद नहीं हैं।"
"ऐसी जगह पर कभी-कभार खाना खाने में कोई बुराई नहीं है," हात्सुमी ने कहा। मेरी ओर मुड़कर उसने पूछा, "क्या आप सहमत नहीं हैं?" "मुझे लगता है। बशर्ते मुझे पैसे न देने पड़ें।"
“मेरे पिताजी अक्सर अपनी रखैल को यहाँ लाते हैं,” नागासावा ने कहा। “टोक्यो में उनकी एक रखैल है, तुम्हें पता है ना।” “सच में?” हात्सुमी ने पूछा। मैंने शराब का एक घूंट लिया, मानो मैंने कुछ सुना ही न हो।

आखिरकार एक वेटर आया और उसने हमारा ऑर्डर लिया। ऐपेटाइज़र और सूप चुनने के बाद, नागासावा ने बत्तख का ऑर्डर दिया, और मैंने और हात्सुमी ने सी बास का। खाना धीरे-धीरे आया, जिससे हमें वाइन और बातचीत का आनंद लेने का मौका मिला। नागासावा ने सबसे पहले विदेश मंत्रालय की परीक्षा के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि परीक्षा देने वालों में से अधिकांश निकम्मे थे, जिन्हें सीधे अथाह गड्ढे में फेंक देना ही बेहतर होगा, हालांकि उन्होंने माना कि उनमें कुछ अच्छे लोग भी थे। मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्हें लगता है कि अच्छे लोगों और निकम्मों का अनुपात समाज की तुलना में अधिक है या कम?

"यह एक जैसा ही है," उसने कहा। "बिल्कुल।" उसने आगे कहा कि यह हर जगह एक जैसा ही है: एक अटल नियम।

नागासावा ने अपने लिए शराब की एक और बोतल और डबल स्कॉच का ऑर्डर दिया।

फिर हात्सुमी उस लड़की के बारे में बात करने लगी जिससे वह मेरी शादी करवाना चाहती थी।

यह हमारे बीच हमेशा चर्चा का विषय रहता था। वह हमेशा मुझे "मेरे क्लब की किसी प्यारी लड़की" के बारे में बताती रहती थी, और मैं हमेशा उससे दूर भाग जाता था।

"वो सच में बहुत अच्छी और प्यारी है। अगली बार मैं उसे साथ लाऊंगा। तुम्हें उससे बात करनी चाहिए। मुझे यकीन है कि तुम्हें वो पसंद आएगी।"

"यह समय की बर्बादी है, हात्सुमी," मैंने कहा। "मैं इतना गरीब हूँ कि तुम्हारे विश्वविद्यालय की लड़कियों के साथ बाहर नहीं जा सकता। मैं उनसे बात भी नहीं कर सकता।"

"मूर्खता मत करो," उसने कहा। "यह लड़की सरल, स्वाभाविक और बनावटी नहीं है।"

"चलो, वातानाबे," नागासावा ने कहा। "बस उससे मिल लो। तुम्हें उसके साथ शारीरिक संबंध बनाने की ज़रूरत नहीं है।"
"नहीं!" हात्सुमी ने कहा। "वह कुंवारी है।"
"जैसे तुम पहले हुआ करते थे," नागासावा ने कहा।
"बिल्कुल सही," हात्सुमी ने मुस्कुराते हुए कहा। "मैं भी पहले ऐसी ही थी। लेकिन सच में," उसने मुझसे कहा, "मुझे 'बहुत गरीब' होने वाली बातें मत सुनाओ। इसका इससे कोई लेना-देना नहीं है। हाँ, हर कक्षा में कुछ बहुत ही नखरे वाली लड़कियाँ होती हैं, लेकिन हम बाकी सब साधारण हैं। हम सब स्कूल की कैंटीन में ₹250 में दोपहर का खाना खाते हैं।"
"हात्सुमी, ज़रा एक मिनट रुको," मैंने उसे रोकते हुए कहा। "मेरे 244 में

स्कूल की कैंटीन में तीन तरह के लंच मिलते हैं: ए, बी और सी। ए लंच... पहला लंच 120 का है, बी लंच 100 का और सी लंच 80 का। जब मैं ए लंच खाता हूँ तो सब मुझे घूरते हैं, और जो सी लंच नहीं खरीद सकता वो 60 के रैमन नूडल्स खाता है। मैं ऐसी ही जगहों पर जाता हूँ। क्या तुम्हें अब भी लगता है कि मैं तुम्हारी जगह की लड़कियों से बात कर सकता हूँ?
हात्सुमी अपनी हंसी मुश्किल से रोक पा रही थी। "यह तो बहुत सस्ता है!" उसने कहा।
"शायद मुझे वहाँ दोपहर का खाना खाने जाना चाहिए! लेकिन सच में, तोरू, तुम बहुत अच्छे इंसान हो, मुझे यकीन है कि तुम इस लड़की के साथ अच्छे से घुल-मिल जाओगे। उसे शायद 120 पाउंड का खाना पसंद भी आ जाए।"
मैंने हंसते हुए कहा, "बिल्कुल नहीं। कोई भी उस चीज़ को इसलिए नहीं खाता क्योंकि उसे वह पसंद है; वे उसे इसलिए खाते हैं क्योंकि उनके

पास खाने के लिए और कुछ नहीं होता।"
खैर, किसी को उसके बाहरी रूप से मत आंकिए। यह सच है कि हम इस दिखावटी संस्थान में जाते हैं, लेकिन हममें से बहुत से लोग गंभीर हैं जो जीवन के बारे में गंभीर विचार रखते हैं। हर कोई स्पोर्ट्स कार वाले बॉयफ्रेंड की तलाश में नहीं रहता।
मैंने कहा, "मुझे इतना तो पता है।"
नागासावा ने कहा, "वातानाबे की एक प्रेमिका है। वह उससे प्यार करता है। लेकिन वह उसके बारे में एक शब्द भी नहीं कहता। वह बेहद चुप रहता है। एक रहस्य में लिपटा हुआ पहेली जैसा।"
"सचमुच?" हात्सुमी ने मुझसे पूछा।
"सच में," मैंने कहा। "लेकिन इसमें कोई पहेली नहीं है। बात बस इतनी है कि यह जटिल है, और इसके बारे में बात करना मुश्किल है।"
"एक नाजायज प्यार? ओह! आप मुझसे बात कर सकते हैं!" मैंने जवाब देने से बचने के लिए शराब का एक घूंट लिया।
"समझे मेरी बात?" नागासावा ने अपनी तीसरी व्हिस्की पीते हुए कहा।
"बिल्कुल चुप। जब यह आदमी किसी बात पर बोलने से मना कर देता है, तो कोई भी उससे बात नहीं निकलवा सकता।" "कितनी शर्म की बात है," हात्सुमी ने टेरीन का एक छोटा टुकड़ा काटकर अपने होठों से लगाते हुए कहा।
"अगर तुम्हारी उससे बनती तो हम डबल डेट पर जा सकते थे।"
"हां, हम शराब पीकर थोड़ी अदला-बदली कर सकते थे," नागासावा ने कहा।
"इस तरह की बातें बंद करो," हात्सुमी ने कहा।

"उस तरह की बातों से तुम्हारा क्या मतलब है? वातानाबे की नज़र तुम पर है," नागासावा ने कहा।
"इसका मेरे विषय से कोई लेना-देना नहीं है," हात्सुमी ने धीरे से कहा। "वह उस तरह का इंसान नहीं है। वह ईमानदार और ख्याल रखने वाला है। मैं यह जानती हूँ। इसीलिए मैं उसकी जोड़ी बनाने की कोशिश कर रही हूँ।"
"ओह, ज़रूर, वो ईमानदार है। जैसे कि एक बार हमने औरतों की अदला-बदली की थी, बहुत पहले की बात है। याद है, वातानाबे?" नागासावा ने ये बात बेपरवाही भरे चेहरे से कही, फिर बची हुई व्हिस्की गटक ली और एक और ऑर्डर कर दी।
हात्सुमी ने अपना चाकू और कांटा नीचे रख दिया और नैपकिन से अपना मुंह पोंछा। फिर मेरी तरफ देखते हुए उसने पूछा, "टोरू, क्या तुमने सच में ऐसा किया?"
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उसे क्या जवाब दूं, इसलिए मैंने कुछ नहीं कहा।
"उसे बताओ," नागासावा ने कहा। "क्या बकवास है।" माहौल बिगड़ता जा रहा था। नागासावा नशे में बहुत बदतमीज़ हो जाता था, लेकिन आज रात उसका गुस्सा हात्सुमी पर था, मुझ पर नहीं। यह जानकर मेरे लिए वहाँ बैठे रहना और भी मुश्किल हो गया।
"मैं इसके बारे में सुनना चाहूंगी," हात्सुमी ने कहा। "यह बहुत दिलचस्प लगता है!"
मैंने कहा, "हम नशे में थे।"
"कोई बात नहीं, तोरू। मैं तुम्हें दोष नहीं दे रहा हूँ। मैं बस इतना जानना चाहता हूँ कि क्या हुआ था।"
"हम दोनों शिबुया के एक बार में शराब पी रहे थे, और हमारी दोस्ती दो

लड़कियों से हो गई। वे किसी कॉलेज में पढ़ती थीं, और वे भी काफी नशे में थीं। तो खैर, हम एक होटल में गए और उनके साथ सो गए। हमारे कमरे एक-दूसरे के बिल्कुल बगल में थे। आधी रात को, नागासावा ने मेरे कमरे का दरवाजा खटखटाया और कहा कि हमें लड़कियां बदल लेनी चाहिए, इसलिए मैं उसके कमरे में चला गया और वह मेरे कमरे में आ गया।"

"क्या लड़कियों को कोई आपत्ति नहीं थी?"

"नहीं, वे भी नशे में थे।"

"खैर, मेरे पास ऐसा करने का एक अच्छा कारण था," नागासावा ने कहा।

"कोई अच्छा कारण?"

"खैर, लड़कियाँ बहुत अलग थीं। एक बहुत खूबसूरत थी, लेकिन 246

दूसरी वाली तो कुत्ता थी। मुझे यह अन्यायपूर्ण लगा। मुझे तो सुंदर लड़की मिल गई, लेकिन वातानाबे को दूसरी वाली के साथ रहना पड़ा। इसीलिए हमने अदला-बदली कर ली।

ठीक है, वातानाबे?

"हाँ, मुझे लगता है ऐसा ही है," मैंने कहा। लेकिन असल में, मुझे वह बदसूरत वाली पसंद थी।

उससे बात करना अच्छा लगा और वह एक अच्छी इंसान थी। सेक्स के बाद, हम बिस्तर पर एक-दूसरे से बातें कर रहे थे, तभी नागासावा आ गई और उसने सुझाव दिया कि हम पार्टनर बदल लें। मैंने उस लड़की से पूछा कि क्या उसे कोई आपत्ति है, और उसने कहा कि अगर हम यही चाहते हैं तो उसे कोई दिक्कत नहीं है। शायद उसने सोचा होगा कि मैं खूबसूरत लड़की के साथ सेक्स करना चाहता हूँ।

"क्या मज़ा आया?" हात्सुमी ने मुझसे पूछा।

"अदला-बदली, तुम्हारा मतलब है?"
"पूरी बात।"
"खास तौर पर नहीं। ये तो बस एक आम बात है। लड़कियों के साथ इस तरह सोना उतना मजेदार नहीं होता।"
"तो आप ऐसा क्यों करते हैं?"
"मेरी वजह से," नागासावा ने कहा।
"मैं तोरू से पूछ रही हूँ," हात्सुमी ने नागासावा को पलटवार करते हुए कहा। "तुम ऐसा क्यों करते हो?"
"क्योंकि कभी-कभी मुझे किसी लड़की के साथ सोने की बहुत तीव्र इच्छा होती है।"
कुछ पल सोचने के बाद हात्सुमी ने पूछा, "अगर आप किसी से प्यार करते हैं, तो क्या आप किसी न किसी तरह से उसके साथ तालमेल नहीं बिठा सकते?"
"यह जटिल है।"
हात्सुमी ने आह भरी।
उसी समय दरवाजा खुला और खाना अंदर लाया गया। नागासावा को उनकी भुनी हुई बत्तख परोसी गई, और हात्सुमी और मुझे हमारी सी बास मछली मिली। वेटरों ने हमारी प्लेटों में ताज़ी पकी हुई सब्ज़ियाँ भर दीं और उन पर सॉस छिड़ककर चले गए, और हम तीनों को फिर से अकेला छोड़ दिया। नागासावा ने बत्तख का एक टुकड़ा काटा और बड़े चाव से खाया, फिर और व्हिस्की पी। मैंने पालक का एक टुकड़ा उठाया। हात्सुमी ने अपने खाने को हाथ भी नहीं लगाया।

"तोरू," उसने कहा, "मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम्हारी स्थिति इतनी 'जटिल' क्यों है, लेकिन मुझे लगता है कि तुमने मुझे जिस तरह की बात बताई है, वह तुम्हारे लिए सही नहीं है। तुम उस तरह के इंसान नहीं हो।"
आपको क्या लगता है?" उसने अपने हाथ मेज पर रखे और मेरी आंखों में देखा।
मैंने कहा, "अच्छा, मुझे भी कभी-कभी ऐसा ही महसूस होता है।"
"तो तुम क्यों नहीं रुक जाते?"
मैंने ईमानदारी से जवाब दिया, "क्योंकि कभी-कभी मुझे मानवीय स्नेह की आवश्यकता होती है। कभी-कभी, अगर मुझे किसी स्त्री की त्वचा की गर्माहट जैसी कोई चीज महसूस नहीं होती, तो मैं इतना अकेला महसूस करता हूँ कि असहनीय हो जाता हूँ।"
"चलिए, मैं संक्षेप में बताता हूँ कि मेरे हिसाब से यह सब किस बारे में है," नागासावा ने बीच में कहा। "वातानाबे को एक लड़की पसंद है, लेकिन कुछ जटिल कारणों से उनके बीच शारीरिक संबंध नहीं बन पाते। इसलिए वह खुद से कहता है, 'सेक्स तो बस सेक्स है', और वह किसी और के साथ अपनी ज़रूरत पूरी कर लेता है। इसमें क्या गलत है? यह बिल्कुल तर्कसंगत है। आखिर वह हर समय अपने कमरे में बंद होकर हस्तमैथुन तो नहीं कर सकता, है ना?"
"लेकिन अगर तुम सच में उससे प्यार करते हो, तोरू, क्या तुम्हारे लिए खुद पर नियंत्रण रखना संभव नहीं होना चाहिए?"
"शायद ऐसा ही हो," मैंने कहा और क्रीम सॉस में डूबी सी बास मछली का एक टुकड़ा अपने मुंह में डाल लिया।
"तुम्हें पुरुषों की यौन ज़रूरतों की समझ ही नहीं है," नागासावा ने हात्सुमी से कहा। "मुझे ही देख लो। मैं तुम्हारे साथ तीन साल से हूँ, और इस दौरान मैंने कई महिलाओं के साथ संबंध बनाए हैं। लेकिन मुझे उनके बारे

में कुछ भी याद नहीं है। मुझे उनके नाम नहीं पता, उनके चेहरे याद नहीं हैं। मैंने उनमें से हर एक के साथ सिर्फ़ एक बार संबंध बनाए। उनसे मिलो, संबंध बनाओ, बस।
बस इतना ही। इसमें गलत क्या है?
"मुझे तुम्हारी ये अकड़ बिल्कुल बर्दाश्त नहीं होती," हात्सुमी ने धीमी आवाज़ में कहा। "तुम दूसरी औरतों के साथ सोते हो या नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैंने कभी तुम्हारे इधर-उधर सोने पर गुस्सा नहीं किया, है ना?"

"मैं जो करता हूँ उसे तो 'इधर-उधर सोना' भी नहीं कह सकते। यह तो बस एक खेल है।"

नागासावा ने कहा, "किसी को चोट नहीं लगी।"
"मुझे चोट लगती है," हात्सुमी ने कहा। "मैं तुम्हारे लिए काफी क्यों नहीं हूँ?"
नागासावा एक पल के लिए चुप रहे और अपने गिलास में रखी व्हिस्की को घुमाते रहे। "ऐसा नहीं है कि तुम मेरे लिए काफी नहीं हो। वह एक अलग दौर है, एक अलग सवाल है। यह बस मेरे अंदर की एक भूख है। अगर मैंने तुम्हें दुख पहुंचाया है, तो मुझे माफ कर दो। लेकिन यह सवाल नहीं है कि तुम मेरे लिए काफी हो या नहीं। मैं बस उस भूख के साथ जी सकता हूं। मैं ऐसा ही इंसान हूं।"
यही बात मुझे मैं बनाती है। मैं इसके बारे में कुछ नहीं कर सकता, क्या आप नहीं समझते?
अंततः हात्सुमी ने अपने चम्मच-कांटे उठाए और मछली खाना शुरू कर

दिया।
"कम से कम तो तुम्हें तोरू को अपने 'खेलों' में नहीं घसीटना चाहिए।"
"हालांकि, वातानाबे और मैं काफी हद तक एक जैसे हैं," नागासावा ने कहा।
"हम दोनों में से किसी को भी, असल में, अपने अलावा किसी और चीज़ में दिलचस्पी नहीं है। ठीक है, मैं अहंकारी हूँ और वह नहीं है, लेकिन हम दोनों में से कोई भी अपने विचारों, भावनाओं या कार्यों के अलावा किसी और चीज़ में रुचि महसूस करने में सक्षम नहीं है।"
इसीलिए हम चीजों के बारे में दूसरों से बिल्कुल अलग तरीके से सोच सकते हैं। मुझे उसकी यही बात पसंद है। फर्क सिर्फ इतना है कि उसे खुद इस बात का एहसास नहीं है, इसलिए वह हिचकिचाता है और दुखी महसूस करता है।
"ऐसा कौन सा इंसान है जो हिचकिचाता नहीं और आहत महसूस नहीं करता?" हात्सुमी ने पूछा। "क्या तुम यह कहना चाह रहे हो कि तुमने कभी ये सब महसूस नहीं किया?"
"बेशक मैंने ऐसा किया है, लेकिन मैंने खुद को अनुशासित कर लिया है ताकि मैं उन्हें कम से कम कर सकूं। अगर आप चूहे को भी काफी झटके दें, तो वह भी सबसे कम दर्दनाक रास्ता ही चुनेगा।"
लेकिन चूहे प्यार में नहीं पड़ते।
“चूहे प्यार में नहीं पड़ते।” नागासावा ने मेरी तरफ देखा। “यह तो बहुत बढ़िया है। इसके लिए हमें बैकग्राउंड म्यूजिक रखना चाहिए - दो वीणाओं वाला पूरा ऑर्केस्ट्रा और...”
मेरा मजाक मत उड़ाओ। मैं गंभीर हूं।
"हम खाना खा रहे हैं," नागासावा ने कहा। "और वातानाबे भी यहीं हैं। बेहतर होगा कि हम 'गंभीर' बातचीत किसी और मौके पर करें।"

मैंने कहा, "मैं जा सकता हूँ।"
"नहीं," हात्सुमी ने कहा। "कृपया यहीं रुकिए। आपके यहाँ होने से बेहतर है।"
"कम से कम मिठाई तो खा लो," नागासावा ने कहा।
मुझे कोई आपत्ति नहीं है, सच में।
हम तीनों कुछ देर तक चुपचाप खाना खाते रहे। मैंने अपनी मछली खत्म कर ली।
हात्सुमी ने अपना आधा हिस्सा छोड़ दिया। नागासावा ने अपनी बत्तख बहुत पहले ही खत्म कर दी थी और अब वह अपनी व्हिस्की पर ध्यान केंद्रित कर रहा था।
मैंने कहा, "वह सी बास मछली बहुत ही बढ़िया थी," लेकिन किसी ने मेरी बात नहीं मानी। ऐसा लगा जैसे मैंने किसी गहरे कुएँ में पत्थर फेंक दिया हो।
वेटर हमारी प्लेटें ले गए और नींबू शरबत और एस्प्रेसो ले आए। नागासावा ने अपनी मिठाई और कॉफी को मुश्किल से छुआ, सीधे सिगरेट पीने लगे। हात्सुमी ने अपने शरबत को नज़रअंदाज़ कर दिया। "अरे बाप रे," मैंने मन ही मन सोचा, अपना शरबत और कॉफी खत्म करते हुए। हात्सुमी मेज पर रखे अपने हाथों को घूर रही थी। उसके कपड़ों की तरह ही उसके हाथ भी स्टाइलिश, सुरुचिपूर्ण और महंगे लग रहे थे। मैंने नाओको और रेइको के बारे में सोचा।
अब वे क्या कर रहे होंगे? मैंने सोचा। नाओको सोफे पर लेटकर किताब पढ़ रही होगी, और रेइको गिटार पर "नॉर्वेजियन वुड" बजा रही होगी। मुझे उनके उस छोटे से कमरे में वापस जाने की तीव्र इच्छा हुई। आखिर मैं इस

जगह पर क्या कर रहा था?
नागासावा ने कहा, "वातानाबे और मुझमें एक समानता यह है कि हमें इस बात की परवाह नहीं है कि कोई हमें समझता है या नहीं। यही बात हमें दूसरों से अलग बनाती है। वे सभी इस बात को लेकर चिंतित रहते हैं कि उनके आसपास के लोग उन्हें समझते हैं या नहीं। लेकिन मैं और वातानाबे नहीं। हमें इसकी परवाह ही नहीं है। स्वयं और अन्य अलग-अलग हैं।"
"क्या यह सच है?" हात्सुमी ने मुझसे पूछा।
"नहीं," मैंने कहा। "मैं इतनी मजबूत नहीं हूँ। मुझे अच्छा नहीं लगता अगर कोई मुझे समझता ही नहीं। मेरे कुछ खास लोग हैं जिन्हें मैं समझना चाहती हूँ और जो मुझे समझें। लेकिन उन कुछ लोगों के अलावा, मुझे लगता है कि सब कुछ निराशाजनक है। मैं नागासावा से सहमत नहीं हूँ। मुझे इस बात की परवाह है कि लोग मुझे समझें।"
"यह लगभग वही बात है जो मैं कह रहा हूँ," नागासावा ने अपनी कॉफी का चम्मच उठाते हुए कहा। "बिल्कुल वही है! फर्क सिर्फ 250 का है।"

देर से किए गए नाश्ते या जल्दी किए गए दोपहर के भोजन के बीच। समय वही, खाना वही, बस नाम अलग-अलग।
अब हात्सुमी ने नागासावा से बात की। "क्या आपको इस बात की परवाह नहीं है कि मैं आपकी बात समझ पा रही हूँ या नहीं?"
"तुम्हें समझ नहीं आ रहा, है ना? व्यक्ति A, व्यक्ति B को इसलिए समझता है क्योंकि उस समय ऐसा होना उचित होता है, इसलिए नहीं कि व्यक्ति B, व्यक्ति A द्वारा समझा जाना चाहता है।"
"तो क्या यह सोचना गलत है कि मैं किसी के द्वारा, उदाहरण के लिए आपके द्वारा, समझा जाना चाहता हूँ?"
"नहीं, यह कोई गलती नहीं है," नागासावा ने उत्तर दिया। "अगर आप मुझे

समझना चाहते हैं, तो अधिकतर लोग इसे प्रेम कहेंगे। मेरी जीवनशैली अन्य लोगों की जीवनशैली से बिल्कुल अलग है।"
"तो आपका मतलब यह है कि आप मुझसे प्यार नहीं करते, क्या यही बात है?"
"अच्छा, मेरा सिस्टम और आपका - "
"तुम्हारे इस घटिया सिस्टम का सत्यानाश हो!" हात्सुमी चिल्लाई। यह पहली और आखिरी बार था जब मैंने उसे चिल्लाते हुए सुना।
नागासावा ने मेज के पास वाला बटन दबाया और वेटर बिल लेकर आ गया। नागासावा ने उसे क्रेडिट कार्ड थमा दिया। "माफ़ करना, वातानाबे," नागासावा ने कहा। "मैं हात्सुमी को घर छोड़ने जा रहा हूँ। तुम अकेले हॉस्टल वापस जाओ, ठीक है?" "आपको मुझसे माफ़ी मांगने की ज़रूरत नहीं है। खाना बहुत बढ़िया था," मैंने कहा, लेकिन किसी ने कोई जवाब नहीं दिया।
वेटर कार्ड लेकर आया और नागासावा ने रकम देखकर बॉलपॉइंट पेन से हस्ताक्षर कर दिए। फिर हम तीनों खड़े होकर बाहर चले गए। नागासावा टैक्सी लेने के लिए सड़क पर जाने ही वाले थे कि हात्सुमी ने उन्हें रोक लिया।
"धन्यवाद, लेकिन मैं आज आपके साथ और समय नहीं बिताना चाहता। आपको मुझे घर तक छोड़ने की ज़रूरत नहीं है। रात के खाने के लिए धन्यवाद।"
"जो भी हो," नागासावा ने कहा।
मैं चाहता हूं कि तोरू मुझे घर तक छोड़ने आए।
"जो भी हो," नागासावा ने कहा। "लेकिन वातानाबे व्यावहारिक रूप से मेरे जैसा ही है। वह भले ही अच्छा इंसान हो, लेकिन दिल ही दिल में वह असमर्थ है।"

किसी से भी प्यार करने की चाहत में, उसके भीतर कहीं न कहीं हमेशा एक ऐसा हिस्सा होता है जो पूरी तरह जागृत और उदासीन रहता है। उसके अंदर एक ऐसी भूख है जो कभी खत्म नहीं होती।
यकीन मानिए, मुझे इस बारे में पूरी जानकारी है।
मैंने एक टैक्सी रोकी और हात्सुमी को पहले बैठने दिया। "खैर," मैंने नागासावा से कहा, "मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि वह घर पहुँच जाए।"
"आपको इस परेशानी में डालने के लिए क्षमा करें," नागासावा ने कहा, लेकिन मैं देख सकता था कि वह पहले से ही किसी और चीज के बारे में सोच रहे थे।
टैक्सी में बैठते ही मैंने हात्सुमी से पूछा, "तुम कहाँ जाना चाहती हो?"
"एबिसु वापस?" उसका फ्लैट एबिसु में था।
उसने अपना सिर हिलाया।
"ठीक है। कहीं ड्रिंक के लिए चलें?"
"हां," उसने सिर हिलाते हुए कहा।
मैंने ड्राइवर से कहा, "शिबुया।"
अपनी बाहें मोड़कर और आँखें बंद करके, हात्सुमी सीट के कोने में धंस गई। टैक्सी के हिलने-डुलने से उसकी छोटी सोने की बालियाँ रोशनी में चमक उठीं। उसकी गहरे नीले रंग की पोशाक मानो टैक्सी के अंधेरे इंटीरियर से मेल खाने के लिए ही बनी थी। बीच-बीच में उसके हल्के मेकअप वाले, खूबसूरत होंठ हल्के से कांपते, मानो वह खुद से बात करने ही वाली हो। उसे देखते हुए, मैं समझ सकता था कि नागासावा ने उसे अपनी खास साथी क्यों चुना था। हात्सुमी से कहीं ज़्यादा खूबसूरत औरतें थीं, और नागासावा उनमें से किसी को भी अपना बना सकता था। लेकिन हात्सुमी में कुछ ऐसा गुण था जो दिल में सिहरन पैदा कर देता था। यह

कोई ज़बरदस्ती नहीं थी। उसकी शक्ति सूक्ष्म थी, लेकिन वह गहरी गूंज पैदा करती थी। मैंने शिबुया तक उसे देखा, और बिना कोई जवाब पाए, सोचता रहा कि आखिर यह भावनात्मक हलचल क्या थी जो मैं महसूस कर रहा था।

लगभग एक दर्जन साल बाद आखिरकार मुझे इसका एहसास हुआ। मैं एक चित्रकार का इंटरव्यू लेने सांता फ़े गया था और एक स्थानीय पिज़्ज़ा पार्लर में बैठा था, बीयर पी रहा था, पिज़्ज़ा खा रहा था और एक चमत्कारिक रूप से सुंदर सूर्यास्त देख रहा था।
सब कुछ चमकीले लाल रंग में डूबा हुआ था - मेरा हाथ, प्लेट, मेज, 252

दुनिया मानो किसी खास तरह के फलों के रस से सराबोर हो गई हो। इस अद्भुत सूर्यास्त के बीच, हात्सुमी की छवि मेरे मन में कौंध गई, और उसी क्षण मुझे समझ आया कि मेरे दिल में जो कंपन हुई थी, वह क्या थी। यह बचपन की एक ऐसी अधूरी इच्छा थी जो हमेशा अधूरी ही रही थी और हमेशा के लिए अधूरी ही रहेगी। मैं ऐसी मासूम, लगभग जलती हुई सी इच्छा के अस्तित्व को भूल चुका था: वर्षों से भूल चुका था कि मेरे भीतर कभी ऐसी भावनाएँ भी थीं। हात्सुमी ने मेरे भीतर जो जगाया था, वह मेरे ही एक हिस्से का था जो लंबे समय से सुप्त पड़ा था। और जब मुझे इस बात का एहसास हुआ, तो मुझे इतना दुख हुआ कि मैं लगभग रो पड़ा। वह एक बेहद खास महिला थीं।
किसी को तो कुछ करना चाहिए था - कुछ भी - उसे बचाने के लिए।
लेकिन न तो नागासावा और न ही मैं ऐसा कर पाते। मेरे कई परिचितों की तरह, हात्सुमी भी जीवन के एक पड़ाव पर पहुँची और उसने लगभग अचानक ही अपनी जान देने का फैसला कर लिया। नागासावा के जर्मनी

जाने के दो साल बाद, उसने शादी कर ली और उसके दो साल बाद उसने रेज़र से अपनी कलाई काट ली।
यह नागासावा ही थे जिन्होंने मुझे बताया कि क्या हुआ था।
ऐसा हुआ। बॉन से आए उनके पत्र में उन्होंने लिखा था: "हात्सुमी की मृत्यु ने किसी चीज़ को मिटा दिया है। यह मेरे लिए भी असहनीय रूप से दुखद और पीड़ादायक है।" मैंने उनके पत्र को फाड़कर फेंक दिया। मैंने उन्हें फिर कभी पत्र नहीं लिखा।

हात्सुमी और मैं एक छोटे से बार में गए और खूब ड्रिंक्स पी लीं। हम दोनों में से किसी ने ज्यादा कुछ नहीं कहा। एक ऊबे हुए, बूढ़े शादीशुदा जोड़े की तरह, हम एक-दूसरे के सामने बैठे चुपचाप ड्रिंक्स पीते रहे और मूंगफली चबाते रहे। जब बार में भीड़ बढ़ने लगी, तो हम टहलने चले गए। हात्सुमी ने कहा कि वह बिल देगी, लेकिन मैंने बिल देने पर जोर दिया क्योंकि ड्रिंक्स का आइडिया मेरा ही था।
रात की हवा में गहरी ठंडक थी। हात्सुमी ने अपने हल्के भूरे रंग के कार्डिगन में खुद को लपेट लिया और चुपचाप मेरे बगल में चलने लगी। रात के अंधेरे में गलियों में टहलते हुए, मेरे हाथ जेबों में गहरे तक थे और मेरे मन में कोई मंज़िल नहीं थी। मुझे अचानक एहसास हुआ कि यह नाओको के साथ चलने जैसा ही था।

"क्या आपको यहाँ आस-पास कोई ऐसी जगह पता है जहाँ हम पूल खेल सकें?" हात्सुमी ने अचानक मुझसे पूछा।
"पूल? क्या आप खेलते हैं?"
"हाँ, मैं काफी अच्छा हूँ। आपका क्या हाल है?"

मैं थोड़ा-बहुत खेलता हूँ। ऐसा नहीं है कि मैं इसमें बहुत अच्छा हूँ।
"ठीक है, तो चलिए चलते हैं।"
हमें पास ही एक पूल हॉल मिला और हम अंदर चले गए। यह एक छोटी सी गली के बिल्कुल आखिरी छोर पर स्थित था। हम दोनों - हात्सुमी अपनी स्टाइलिश ड्रेस में और मैं अपने नीले ब्लेज़र और रेजिमेंटल टाई में - उस खस्ताहाल पूल हॉल में बिल्कुल अलग दिख रहे थे, लेकिन हात्सुमी को इससे कोई फर्क नहीं पड़ा क्योंकि वह अपनी क्यू चुनकर उस पर चॉक लगा रही थी। उसने अपने बैग से हेयरस्लाइड निकाली और अपने बालों को एक कनपटी पर क्लिप से बांध लिया ताकि वे उसके खेल में बाधा न डालें।
हमने दो मैच खेले। हात्सुमी उतनी ही अच्छी थी जितना उसने दावा किया था, जबकि मेरे कटे हुए हाथ पर लगी मोटी पट्टी की वजह से मेरा खेल प्रभावित हुआ। उसने मुझे बुरी तरह हरा दिया।

मैंने प्रशंसा करते हुए कहा, "आप बहुत अच्छे हैं।"
"तुम्हारा मतलब है कि दिखावट धोखा दे सकती है?" उसने मुस्कुराते हुए एक तस्वीर को देखते हुए पूछा।
"तुमने इस तरह खेलना कहाँ से सीखा?"
"मेरे दादाजी - मेरे पिता के दादाजी - एक पुराने प्लेबॉय थे। उनके घर में एक पूल टेबल थी। मैं अपने भाई के साथ मजे के लिए पूल खेला करता था, और जब मैं थोड़ा बड़ा हुआ तो मेरे दादाजी ने मुझे सही दांव-पेच सिखाए।"
वह एक शानदार इंसान थे - स्टाइलिश, आकर्षक। हालांकि, अब वह इस दुनिया में नहीं हैं।
वह हमेशा इस बात का बखान करता था कि वह एक बार न्यूयॉर्क में

डियाना डरबिन से मिला था।
उसने लगातार तीन अंक बनाए, फिर चौथे प्रयास में चूक गई। मैं किसी तरह एक अंक हासिल करने में कामयाब रहा, फिर एक आसान शॉट चूक गया।
"ये पट्टी है," हात्सुमी ने मुझे दिलासा देते हुए कहा।
"नहीं, ऐसा इसलिए है क्योंकि मैंने बहुत लंबे समय से नहीं खेला है," मैंने कहा। "दो साल और पांच महीने।"
"आपको समय का इतना पक्का यकीन कैसे हो सकता है?"

मैंने कहा, "हमारे आखिरी मैच के बाद वाली रात मेरे दोस्त की मौत हो गई।"
"तो तुमने खेलना बंद कर दिया?"
"नहीं, ऐसा नहीं है," मैंने कुछ देर सोचने के बाद कहा। "बस उसके बाद मुझे खेलने का मौका ही नहीं मिला। बस इतना ही।" "तुम्हारे दोस्त की मौत कैसे हुई?"
"यातायात दुर्घटना।"
उसने कई और शॉट मारे, पूरी गंभीरता से निशाना साधते हुए और हर शॉट की ताकत को बड़ी सटीकता से नियंत्रित करते हुए। उसे खेलते हुए देखकर - उसके करीने से संवारे हुए बाल आँखों से पीछे हटे हुए थे, सोने की बालियाँ चमक रही थीं, कोर्ट शूज़ ज़मीन पर मज़बूती से टिके हुए थे, सुंदर, पतली उंगलियाँ शॉट मारते समय हरे कपड़े को दबा रही थीं - मुझे ऐसा लगा जैसे खस्ताहाल पूल हॉल का उसका हिस्सा किसी भव्य सामाजिक समारोह में बदल गया हो। मैंने पहले कभी उसके साथ अकेले समय नहीं बिताया था, और यह मेरे लिए एक अद्भुत अनुभव था, मानो मैं

जीवन के एक उच्च स्तर पर पहुँच गया हूँ। तीसरे गेम के अंत में - जिसमें, ज़ाहिर है, उसने मुझे फिर से हरा दिया - मेरे घाव में दर्द होने लगा, इसलिए हमने खेलना बंद कर दिया।

"मुझे खेद है," उसने सच्ची चिंता जताते हुए कहा, "मुझे ऐसा सुझाव कभी नहीं देना चाहिए था।"

मैंने कहा, "कोई बात नहीं। यह कोई बुरा कट नहीं था, मुझे खेलने में मज़ा आया। सचमुच।"

जब हम पूल हॉल से निकल रहे थे, तो दुबली-पतली महिला मालकिन ने हात्सुमी से कहा, "बहन, तुम्हारी नज़र बहुत अच्छी है।" हात्सुमी ने उसे प्यारी सी मुस्कान दी और बिल चुकाते हुए धन्यवाद कहा।

जब हम बाहर थे तो उसने पूछा, "क्या दर्द हो रहा है?"

मैंने कहा, "ज्यादा नहीं।"

"क्या आपको लगता है कि यह खुल गया?"

"नहीं, शायद ठीक ही है।"

"मुझे पता है! तुम्हें मेरे घर आना चाहिए। मैं तुम्हारी पट्टी बदल दूंगी। मेरे पास कीटाणुनाशक वगैरह सब कुछ है। चलो, मैं वहीं पर हूँ।"

मैंने उससे कहा कि चिंता करने की कोई बात नहीं है, मैं ठीक हो जाऊंगी, लेकिन उसने जोर देकर कहा कि हमें यह देखना होगा कि घाव खुला है या नहीं।

"या फिर बात यह है कि आपको मेरे साथ रहना पसंद नहीं है? आप जितनी जल्दी हो सके अपने कमरे में वापस जाना चाहते हैं, क्या यही बात है?" उसने शरारती मुस्कान के साथ कहा।

मैंने कहा, "बिल्कुल नहीं।"

"ठीक है, फिर। औपचारिकता मत निभाओ। थोड़ी ही दूर चलना है।"
हात्सुमी का फ्लैट शिबुया से एबिसु की ओर 15 मिनट की पैदल दूरी पर था। कोई आलीशान इमारत तो नहीं थी, लेकिन ठीक-ठाक थी, जिसमें एक छोटी सी सुंदर लॉबी और लिफ्ट थी। हात्सुमी ने मुझे रसोई की मेज पर बैठाया और कपड़े बदलने के लिए बेडरूम में चली गई। वह प्रिंसटन की हुडी वाली स्वेटशर्ट और सूती पतलून पहने बाहर आई - और अब उसने सोने की बालियां नहीं पहनी थीं। मेज पर प्राथमिक चिकित्सा का डिब्बा रखकर, उसने मेरी पट्टी खोली, यह जांचा कि घाव अभी भी ठीक से बंद है या नहीं, उस जगह पर थोड़ा सा कीटाणुनाशक लगाया और घाव पर नई पट्टी बांध दी। उसने यह सब एक विशेषज्ञ की तरह किया। "तुम इतनी सारी चीजों में इतनी माहिर कैसे हो?" मैंने पूछा।
"मैं अस्पताल में स्वयंसेवी कार्य करती थी। एक तरह से नर्स की भूमिका निभाने जैसा।"
मैंने इसी तरह सीखा।
जब हात्सुमी ने पट्टी बांधना खत्म कर लिया, तो वह फ्रिज से बीयर के दो कैन ले आई। उसने अपना आधा कैन पी लिया, और मैंने अपना कैन और उसके द्वारा छोड़ा गया आधा कैन भी पी लिया। फिर उसने मुझे अपने क्लब की दूसरी लड़कियों की तस्वीरें दिखाईं। वह सही थी: उनमें से कुछ वाकई प्यारी थीं।
"जब भी आपको गर्लफ्रेंड चाहिए हो, तो मेरे पास आना," उसने कहा।
मैं तुम्हारा काम तुरंत कर दूंगा।
"हाँ मिस।"
"ठीक है, तोरू, मुझे सच बताओ। तुम्हें लगता है कि मैं कोई बूढ़ी बिचौलिए हूँ, है ना?"
"कुछ हद तक," मैंने मुस्कुराते हुए उसे सच बताया।

हात्सुमी भी मुस्कुराई। मुस्कुराते हुए वह और भी खूबसूरत लगती थी।
"तोरू, मुझे कुछ और बताओ," उसने कहा। "नागासावा और मेरे बारे में तुम्हारा क्या विचार है?"
"मेरा मतलब क्या है कि मैं क्या सोचता हूँ? किस बारे में?"
"मुझे अब से क्या करना चाहिए, इस बारे में।"
मैंने ठंडी बीयर का एक घूंट लेते हुए कहा, "इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं क्या सोचता हूं।"

"कोई बात नहीं। मुझे बताओ कि तुम क्या सोचते हो।"
"खैर, अगर मैं तुम्हारी जगह होती, तो मैं उसे छोड़ देती। मैं किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढती जिसका नजरिया ज़्यादा सामान्य हो और हम हमेशा के लिए खुशी से रहते। उसके साथ तुम्हारा खुश रहना नामुमकिन है। जिस तरह से वह जीता है, उसके मन में कभी खुद को या दूसरों को खुश करने का ख्याल ही नहीं आता। उसके साथ रहने से तुम्हारा मानसिक संतुलन बिगड़ जाएगा। मेरे लिए तो यह किसी चमत्कार से कम नहीं है कि तुम तीन साल से उसके साथ हो। बेशक, मैं उसे अपने तरीके से बहुत पसंद करती हूँ। वह मजेदार है और उसमें कई अच्छी खूबियाँ हैं।"
उसके पास ऐसी खूबियाँ और क्षमताएँ हैं जिनकी बराबरी करने की मैं कभी कल्पना भी नहीं कर सकता। लेकिन अंततः, चीजों के बारे में उसके विचार और जीने का तरीका सामान्य नहीं है। कभी-कभी, जब मैं उससे बात करता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं गोल-गोल घूम रहा हूँ। वही प्रक्रिया जो उसे ऊंचाइयों तक ले जाती है, मुझे वहीं गोल-गोल घुमाती रहती है। इससे मुझे बहुत खालीपन महसूस होता है! अंततः, हमारी व्यवस्थाएँ पूरी तरह से अलग हैं। क्या आप समझ रहे हैं मैं क्या कहना

चाहता हूँ?
"हाँ," हात्सुमी ने कहा और फ्रिज से मेरे लिए एक और बियर ले आई।
"इसके अलावा, विदेश मंत्रालय में शामिल होने और एक साल का प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, वह विदेश जाएगा। उस पूरे समय में आप क्या करेंगे?"
उसका इंतज़ार करना? उसका किसी से शादी करने का कोई इरादा नहीं है।"
मुझे भी यह पता है।
"इसलिए मेरे पास कहने के लिए और कुछ नहीं है।"
"मैं समझ गई," हात्सुमी ने कहा।
मैंने धीरे-धीरे अपने गिलास में बीयर भर ली।
"जानती हो, जब हम पहले पूल खेल रहे थे, तो अचानक मेरे मन में एक बात आई," मैंने कहा। "मैं अपने माता-पिता की इकलौती संतान थी, लेकिन बचपन से लेकर अब तक मुझे कभी किसी चीज की कमी महसूस नहीं हुई या भाई-बहनों की कमी नहीं लगी। मैं अकेले रहकर खुश थी। लेकिन अचानक, तुम्हारे साथ पूल खेलते हुए, मुझे ये एहसास हुआ कि काश मेरी भी तुम्हारे जैसी कोई बड़ी बहन होती।"
बेहद स्टाइलिश और गहरे नीले रंग की ड्रेस और सोने की बालियों में बेहद खूबसूरत लग रही हैं और पूल क्यू के साथ उनका खेल भी शानदार है।"
हात्सुमी ने मुझे एक प्यारी सी मुस्कान दी। "यह तो सबसे अच्छी बात है।"

पिछले एक साल में किसी ने मुझसे यह कहा है," उसने कहा। "सचमुच।"
मैंने शरमाते हुए कहा, "मैं तुम्हारे लिए बस यही चाहती हूँ कि तुम खुश रहो। लेकिन ये अजीब बात है। तुम तो किसी के भी साथ खुश रह सकती हो, तो फिर आखिर नागासावा से तुम्हारी शादी कैसे हो गई?"

"ऐसी चीजें तो होती ही रहती हैं। शायद आप इनके बारे में कुछ नहीं कर सकते। मेरे मामले में तो यह बात बिल्कुल सच है। बेशक, नागासावा कहेंगे कि यह मेरी जिम्मेदारी है, उनकी नहीं।"

मुझे पूरा यकीन है कि वह ऐसा करेगा।

लेकिन खैर, तोरू, मैं दुनिया की सबसे समझदार लड़की नहीं हूँ। बल्कि, मैं थोड़ी नासमझ और पुराने ख्यालों वाली हूँ। मुझे 'प्रणालियों' और 'जिम्मेदारी' से कोई मतलब नहीं है। मैं बस शादी करना चाहती हूँ और चाहती हूँ कि मेरा प्यारा आदमी हर रात मुझे अपनी बाहों में भर ले और हम बच्चे पैदा करें।

मेरे लिए इतना ही काफी है। जीवन से मुझे बस यही चाहिए।

"और नागासावा जीवन से क्या चाहते हैं, इसका इससे कोई लेना-देना नहीं है।"

"लोग बदलते हैं, है ना?" हात्सुमी ने पूछा। "तुम्हारा मतलब है, जैसे वे समाज में जाते हैं और उन्हें सबक मिलता है और वे समझदार हो जाते हैं?"

"हाँ। और अगर वो मुझसे लंबे समय तक दूर रहता है, तो उसके मेरे लिए भावनाएँ बदल सकती हैं, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?"

"शायद, अगर वो एक आम आदमी होता," मैंने कहा। "लेकिन वो अलग है। वो बेहद दृढ़ निश्चयी है - जितना हम सोच भी नहीं सकते। और वो हर गुजरते दिन के साथ खुद को और मजबूत बनाता जाता है। अगर कोई चीज उसे तोड़ भी देती है, तो वो खुद को और मजबूत बनाने में जुट जाता है। वो किसी के सामने झुकने से पहले घोंघे खाना पसंद करेगा। ऐसे आदमी से आप और क्या उम्मीद कर सकते हैं?"

"लेकिन मैं उसके आने का इंतजार करने के अलावा कुछ नहीं कर

सकती," हात्सुमी ने अपनी ठुड्डी पर हाथ रखकर कहा।
"तुम उससे इतना प्यार करते हो?"
"हाँ," उसने बिना एक पल भी हिचकिचाए जवाब दिया।
"अरे वाह," मैंने आह भरते हुए कहा और अपनी बियर का आखिरी घूंट पी लिया। "किसी से प्यार करने का इतना पक्का यकीन होना कितना अद्भुत अनुभव होगा।"
"मैं एक मूर्ख, पुराने ख्यालों वाली लड़की हूँ," उसने कहा। "एक और बियर लेंगे?"

"नहीं, धन्यवाद, मुझे अब जाना होगा। पट्टी और बीयर के लिए धन्यवाद।"
जब मैं हॉलवे में खड़े होकर जूते पहन रहा था, तभी टेलीफोन की घंटी बजी। हात्सुमी ने मेरी तरफ देखा, फिर फोन की तरफ देखा।
और उसने फिर मेरी तरफ देखा।
"शुभ रात्रि," मैंने बाहर कदम रखते हुए कहा। जैसे ही मैंने दरवाजा बंद किया, मैंने हात्सुमी को रिसीवर उठाते हुए देखा। यह आखिरी बार था जब मैंने उसे देखा था।

जब मैं छात्रावास लौटा तो 11:30 बज चुके थे। मैं सीधे नागासावा के कमरे में गया और उसके दरवाजे पर दस्तक दी। दसवीं बार दस्तक देने के बाद मुझे याद आया कि यह शनिवार की रात थी। नागासावा को शनिवार की रात को हमेशा अपने रिश्तेदारों के घर रुकने की अनुमति मिल जाती थी।
मैं अपने कमरे में वापस गया, टाई उतारी, जैकेट और पैंट को हैंगर पर टांगा, पजामा पहना और दांत साफ किए। अरे नहीं, मैंने सोचा, कल फिर

से रविवार है! रविवार तो मानो हर चार दिन में आ जाता है। दो और रविवार बीतेंगे और मैं 20 साल का हो जाऊंगा। मैं बिस्तर पर लेट गया और कैलेंडर को घूरने लगा, तभी मेरे मन में उदासी छा गई।

मैं नाओको को रविवार की सुबह का पत्र लिखने के लिए अपनी डेस्क पर बैठा था, एक बड़े कप में कॉफी पी रहा था और माइल्स डेविस के पुराने एल्बम सुन रहा था। बाहर हल्की बारिश हो रही थी, जबकि मेरे कमरे में एक्वेरियम जैसी ठंड थी।
मैंने अभी-अभी एक डिब्बे से जो मोटा स्वेटर निकाला था, उसमें कपूर की गंध अभी भी बाकी थी। खिड़की के शीशे पर एक बड़ी, मोटी मक्खी चिपकी हुई थी, हिल नहीं रही थी। हवा न चलने के कारण, उगते सूरज का झंडा झंडे के खंभे पर किसी रोमन सीनेटर के चोगे की तरह लटका हुआ था। आंगन में भटकता हुआ एक दुबला-पतला, डरपोक सा दिखने वाला भूरा कुत्ता फूलों की क्यारी में हर फूल को सूंघ रहा था। मैं सोच भी नहीं सकता था कि बारिश के दिन कोई कुत्ता फूलों को क्यों सूंघेगा।
मेरा पत्र लंबा था, और जब भी कलम पकड़ने से मेरी दाहिनी हथेली में दर्द होने लगता, तो मैं अपनी नज़रें बारिश से भरे आसमान की ओर घुमा लेता।

चतुर्भुज।
मैंने नाओको को यह बताकर बात शुरू की कि रिकॉर्ड की दुकान में काम करते समय मेरे दाहिने हाथ में गहरा कट लग गया था, फिर मैंने बताया कि नागासावा, हात्सुमी और मैंने पिछली रात नागासावा के विदेश मंत्रालय की परीक्षा पास करने की खुशी में एक तरह का जश्न मनाया था। मैंने रेस्टोरेंट और खाने का वर्णन किया। मैंने कहा कि खाना तो

बढ़िया था, लेकिन बीच में ही माहौल थोड़ा असहज हो गया।
मैंने सोचा कि क्या मुझे हात्सुमी के साथ पूल खेलने के संदर्भ में किज़ुकी के बारे में लिखना चाहिए और मैंने लिखने का फैसला किया। मुझे लगा कि यह एक ऐसा विषय है जिसके बारे में मुझे लिखना चाहिए।

मुझे आज भी किज़ुकी का उस दिन का आखिरी शॉट याद है - जिस दिन उनकी मृत्यु हुई। वह एक मुश्किल कुशन शॉट था, जिसकी मैंने उनसे कभी उम्मीद नहीं की थी। लेकिन किस्मत उनके साथ थी: शॉट एकदम सटीक था, और सफेद और लाल गेंदें हरे रंग के कपड़े पर एक-दूसरे को छूते हुए लगभग बिना किसी आवाज के टकराईं, जिससे खेल का आखिरी स्कोर बना। वह इतना खूबसूरत शॉट था कि आज भी उसकी तस्वीर मेरे दिमाग में साफ है। उसके बाद लगभग ढाई साल तक मैंने कभी क्यू को हाथ नहीं लगाया।
जिस रात मैंने हात्सुमी के साथ पूल खेला, उस रात पहले गेम के खत्म होने तक किज़ुकी का ख्याल मेरे मन में आया ही नहीं, और यह मेरे लिए एक बड़ा झटका था। मैंने हमेशा यही सोचा था कि पूल खेलते समय मुझे किज़ुकी की याद जरूर आएगी। लेकिन पहला गेम खत्म होने और वेंडिंग मशीन से पेप्सी खरीदकर पीने के बाद ही मुझे उसका ख्याल आया। यह वही पूल हॉल था जहाँ हम अक्सर खेलते थे, और हम अक्सर गेम के नतीजे पर ड्रिंक्स की शर्त लगाते थे।
मुझे इस बात का अपराधबोध हुआ कि मैंने किज़ुकी के बारे में तुरंत नहीं सोचा, मानो मैंने उसे भुला दिया हो। लेकिन अपने कमरे में वापस आकर मैंने इस बारे में इस तरह सोचा: घटना को ढाई साल बीत चुके हैं, और किज़ुकी अभी भी 17 साल का है। इसका मतलब यह नहीं है कि उसकी यादें धुंधली पड़ गई हैं। उसकी मृत्यु से जो भावनाएँ उत्पन्न हुईं, वे आज

भी मेरे भीतर स्पष्ट और जीवंत हैं, कुछ तो पहले से भी अधिक स्पष्ट हैं। मैं बस इतना कहना चाहती हूँ: मैं जल्द ही 20 साल की होने वाली हूँ। (260 का भाग)

किज़ुकी और मैंने जब हम सोलह और सत्रह साल के थे, तब जो कुछ भी साझा किया था, वह सब अब खो चुका है, और कितना भी रोने से वह वापस नहीं आएगा। मैं इसे इससे बेहतर ढंग से समझा नहीं सकती, लेकिन मुझे लगता है कि आप शायद समझ सकते हैं कि मैं क्या महसूस कर रही हूँ और क्या कहना चाह रही हूँ। वास्तव में, शायद आप ही दुनिया में एकमात्र व्यक्ति हैं जो इसे समझ सकते हैं।
आज मुझे तुम्हारी याद पहले से कहीं ज़्यादा आ रही है। आज बारिश हो रही है। बारिश वाले रविवार मेरे लिए बहुत मुश्किल होते हैं। बारिश में मैं कपड़े नहीं धो सकती, मतलब इस्त्री भी नहीं कर सकती। मैं टहलने भी नहीं जा सकती, और छत पर लेट भी नहीं सकती। बस इतना ही कर सकती हूँ कि रिकॉर्ड प्लेयर को ऑटो रिपीट पर चलाकर 'काइंड ऑफ़ ब्लू' गाना बार-बार सुनती रहूँ और आंगन में गिरती बारिश को देखती रहूँ। जैसा कि मैंने तुम्हें पहले लिखा था, मैं रविवार को अपनी स्प्रिंग नहीं घुमाती। इसीलिए ये चिट्ठी इतनी लंबी हो गई है। अब मैं यहीं रुक रही हूँ। मैं दोपहर के खाने के लिए डाइनिंग हॉल जा रही हूँ। अलविदा।
261

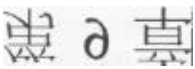

अगले दिन के लेक्चर में भी मिदोरी का कोई अता-पता नहीं था। आखिर उसे क्या हो गया था? दस दिन बीत चुके थे जब हमने आखिरी बार फोन पर बात की थी। मैंने उसे फोन करने का सोचा, लेकिन फिर मना कर दिया। उसने कहा था कि वह मुझे फोन करेगी।

उस गुरुवार को मैंने नागासावा को भोजनालय में देखा। वह खाने से भरी ट्रे लेकर मेरे बगल में बैठ गए और हमारे खाने में गड़बड़ी करने के लिए माफी मांगी।

"पार्टी" इतनी अप्रिय है।

"कोई बात नहीं," मैंने कहा। "मुझे तो आपको शानदार डिनर के लिए धन्यवाद देना चाहिए। हालांकि, मुझे यह मानना पड़ेगा कि अपनी पहली नौकरी का जश्न मनाने का यह एक अजीब तरीका था।"

"आप इसे दोबारा कह सकते हैं।"

कुछ मिनट बीत गए और हम चुपचाप खाना खाते रहे। "मैंने हात्सुमी से सुलह कर ली है," उसने कहा।

"मैं हैरान नहीं हूँ।"

"जहां तक मुझे याद है, मैं भी तुम्हारे साथ कुछ हद तक सख्त था।"

मैंने पूछा, "इतनी बार माफी क्यों मांग रहे हो? क्या तुम बीमार हो?"

"हो सकता है," उसने हल्के से सिर हिलाते हुए कहा। "हात्सुमी ने मुझे बताया कि तुमने उससे मुझे छोड़ने के लिए कहा था।"

मैंने कहा, "यह तो स्वाभाविक है।"

"हां, मुझे लगता है ऐसा ही है," नागासावा ने कहा।

मैंने मिसो सूप पीते हुए कहा, "वह बहुत अच्छी लड़की है।"
"मुझे पता है," उसने आह भरते हुए कहा। "मेरे लिए थोड़ा ज़्यादा ही बड़ा है।"
मैं गहरी नींद में सो रहा था जब घंटी बजी और मुझे पता चला कि एक कॉल आई है। इसने मुझे नींद की सबसे गहरी अवस्था से जगा दिया।

उलझन। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं सिर पानी में भिगोकर सो रहा था और मेरा दिमाग फूल गया हो। घड़ी में 6:15 बज रहे थे, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि सुबह है या शाम, और मुझे यह भी याद नहीं आ रहा था कि आज कौन सा दिन है। मैंने खिड़की से बाहर देखा तो पाया कि खंभे पर कोई झंडा नहीं था। शायद शाम हो रही थी। तो, झंडा फहराने का कुछ तो मकसद था ही।
"हे वातानाबे, क्या तुम अभी खाली हो?" मिदोरी ने पूछा।
मुझे नहीं पता, आज कौन सा दिन है?
"शुक्रवार।"
"सुबह या शाम?"
"शाम, बिलकुल! तुम कितने अजीब हो! चलो देखते हैं, अभी शाम के 6:18 बज रहे हैं।"
तो आखिरकार शाम हो ही गई थी! जी हाँ, मैं बिस्तर पर लेटा-लेटा किताब पढ़ रहा था तभी मुझे नींद आ गई। शुक्रवार। मेरा दिमाग चलने लगा। शुक्रवार की रात को मुझे रिकॉर्ड शॉप जाने की ज़रूरत नहीं थी।
"हाँ, मैं खाली हूँ। तुम कहाँ हो?"
"उएनो स्टेशन। आप शिंजुकु में मुझसे क्यों नहीं मिलते? मैं अब निकल रहा हूँ।"
हमने समय और स्थान तय किया और फोन काट दिया।

जब मैं DUG पहुंचा, तो मिदोरी काउंटर के बिल्कुल आखिरी छोर पर एक ड्रिंक लिए बैठी थी। उसने पुरुषों का झुर्रीदार, सफेद बलमाकान कोट, एक पतला पीला जम्पर, नीली जींस और एक कलाई पर दो कंगन पहने हुए थे।
मैंने पूछा, "तुम क्या पी रहे हो?"
"टॉम कॉलिन्स।"
मैंने व्हिस्की और सोडा का ऑर्डर दिया, तभी मुझे एहसास हुआ कि मिदोरी के पैरों के पास एक बड़ा सूटकेस पड़ा हुआ है।
मैं चली गई थी," उसने कहा। "अभी-अभी वापस आई हूँ।"

तुम कहाँ गए थे?
"दक्षिण में नारा और उत्तर में आओमोरी।"
"एक ही यात्रा पर?!"
"मूर्ख मत बनो। मैं शायद अजीब हूँ, लेकिन मैं एक ही समय में उत्तर और दक्षिण नहीं जा सकती। मैं अपने प्रेमी के साथ नारा गई थी, और फिर अकेले आओमोरी के लिए निकल गई।"

मैंने अपनी व्हिस्की और सोडा की एक घूंट ली, फिर मिडोरी के होठों के बीच दबी मार्लबोरो सिगरेट को जलाने के लिए माचिस जलाई। "अंतिम संस्कार और बाकी सब चीज़ों की वजह से तुम्हारा समय बहुत मुश्किल रहा होगा।"
नहीं, अंतिम संस्कार तो कुछ भी नहीं है। हमें इसका खूब अभ्यास है। आप काला किमोनो पहनकर एक सभ्य महिला की तरह बैठ जाती हैं और बाकी सब लोग अपना काम संभाल लेते हैं - चाचा, पड़ोसी, वगैरह। वे

साके लाते हैं, सुशी मंगवाते हैं, सांत्वना भरी बातें करते हैं, रोते हैं, बातें करते हैं, स्मृति चिन्ह बाँटते हैं। यह तो बहुत आसान है। एक पिकनिक जैसा। किसी की दिन-रात देखभाल करने की तुलना में यह बिल्कुल पिकनिक जैसा है। हम दोनों, मेरी बहन, पूरी तरह थक चुकी थीं। हम रो भी नहीं पा रही थीं। हमारे पास आँसू बचे ही नहीं थे। सचमुच।

लेकिन जब आप ऐसा करते हैं, तो वे आपके बारे में कानाफूसी करने लगते हैं: "ये लड़कियाँ बर्फ़ की तरह ठंडी हैं।" इसलिए, हम कभी रोने वाले नहीं हैं, हम दोनों ऐसे ही हैं। मुझे पता है कि हम नाटक कर सकते थे, लेकिन हम ऐसा कभी नहीं करेंगे। कमीने! जितना ज़्यादा वे हमें रोते हुए देखना चाहते थे, उतना ही ज़्यादा हम उन्हें यह संतुष्टि न देने के लिए दृढ़ थे। मेरी बहन और मैं बिल्कुल अलग तरह के लोग हैं, लेकिन जब ऐसी कोई बात आती है, तो हम पूरी तरह एकमत होते हैं।

मिडोरी के कंगन उसकी बांह पर खनक रहे थे जब उसने वेटर को हाथ हिलाकर एक और टॉम कॉलिन्स और पिस्ता का एक छोटा कटोरा ऑर्डर किया।

"तो फिर, जब अंतिम संस्कार समाप्त हो गया और सब लोग घर चले गए, तो हम दोनों सूर्यास्त तक साके पीते रहे। हमने उन विशाल आधा गैलन की बोतलों में से एक को खत्म कर दिया, और दूसरी की आधी बोतल भी, और पूरे समय हम सब पर शराब उड़ेलते रहे।"

ये एक बेवकूफ है, वो एक घटिया इंसान है, एक आदमी बीमार कुत्ते जैसा दिखता है, दूसरा सूअर है, फलां-फलां पाखंडी है, वो एक बदमाश है।

आपको अंदाजा भी नहीं है कि यह कितना शानदार अनुभव था!

"मैं कल्पना कर सकता हूँ।"

हम खूब शराब पीकर सो गए - हम दोनों गहरी नींद में सो गए। घंटों सोते रहे, और अगर फोन की घंटी बजती भी तो हम उसे अनसुना कर देते।

जैसे दुनिया से बेखबर। आखिरकार, जब हम उठे तो हमने सुशी मंगवाई और आगे क्या करना है इस बारे में बात की। हमने तय किया कि कुछ समय के लिए दुकान बंद कर दें और मौज-मस्ती करें। हम महीनों से खुद को थका रहे थे और हमें आराम करने का हक था।

ब्रेक। मेरी बहन बस कुछ देर अपने बॉयफ्रेंड के साथ समय बिताना चाहती थी, और मैंने सोचा कि मैं अपने बॉयफ्रेंड को कुछ दिनों के लिए ट्रिप पर ले जाऊंगी और जमकर मजे करूंगी।" मिदोरी ने अपना मुंह कसकर बंद कर लिया और अपने कान मलने लगी।
"ऊप्स माफ़ करना।"
मैंने कहा, "कोई बात नहीं। तो तुम नारा गए थे।"
"हां, मुझे वह जगह हमेशा से पसंद रही है। मंदिर, हिरण पार्क।"
"और क्या तुमने बेतहाशा सेक्स किया?"
"नहीं, बिलकुल नहीं, एक बार भी नहीं," उसने आह भरते हुए कहा। "होटल के कमरे में घुसते ही और बैग रखते ही, मेरा मासिक धर्म शुरू हो गया। एकदम तेज बहाव वाला।"
मुझे हंसी आ गई।
"अरे, ये मज़ाक नहीं है। मुझे एक हफ़्ता पहले ही पीरियड आ गया! जब ऐसा हुआ तो मैं रोना बंद ही नहीं कर पा रही थी। मुझे लगता है कि सारे तनाव की वजह से ऐसा हुआ। मेरा बॉयफ्रेंड बहुत गुस्सा हो गया! वो ऐसा ही है: उसे तुरंत गुस्सा आ जाता है। वैसे, इसमें मेरी कोई गलती नहीं थी। ऐसा नहीं है कि मैं पीरियड चाहती थी। और वैसे भी, मेरे पीरियड थोड़े ज़्यादा ही आते हैं। पहले एक-दो दिन तो मेरा कुछ करने का मन ही नहीं करता। उस समय मुझसे दूर रहना।"
"मैं जानना तो चाहूंगी, लेकिन मुझे कैसे पता चलेगा?" मैंने पूछा।

"ठीक है, मैं अपने मासिक धर्म शुरू होने के बाद कुछ दिनों तक टोपी पहनूंगी। लाल रंग की। इससे काम बन जाना चाहिए," उसने हंसते हुए कहा। "अगर आप मुझे सड़क पर लाल टोपी पहने हुए देखें, तो मुझसे बात मत करना, बस भाग जाना।"
"बहुत खूब। काश सारी लड़कियाँ ऐसा करतीं," मैंने कहा। "तो वैसे तुमने नारा में क्या किया?"
"हम और क्या कर सकते थे? हमने हिरणों को खाना खिलाया और खूब घूमे-फिरे। ये तो बहुत बुरा था! हमारी बहुत बड़ी लड़ाई हुई और वापस आने के बाद से मैंने उसे नहीं देखा। मैं कुछ दिन वहीं रुका रहा और फिर अकेले घूमने का फैसला किया। तो मैं आओमोरी चला गया। पहले दो रातें मैं हिरोसाकी में एक दोस्त के साथ रुका, और फिर मैंने शिमकिता, टाप्पी जैसी जगहों की यात्रा शुरू कर दी। वे जगहें अच्छी हैं। मैंने एक बार उस इलाके के लिए एक नक्शे का ब्रोशर लिखा था। क्या आप कभी वहाँ गए हैं?"
"कभी नहीं।"
"तो खैर," मिडोरी ने अपनी टॉम कॉलिन्स की चुस्की लेते हुए कहा, फिर 265 को घुमाते हुए बोली।

एक पिस्ता खोलते हुए मैंने लिखा, "जब मैं अकेले यात्रा कर रहा था, तो हर समय मैं तुम्हारे बारे में सोच रहा था। मैं सोच रहा था कि कितना अच्छा होता अगर तुम मेरे साथ होती।"
"ऐसा कैसे?"
"ऐसा कैसे?!" मिदोरी ने शून्यता में डूबी निगाहों से मेरी ओर देखा।
"तुम्हारा मतलब क्या है 'ऐसा कैसे?'?!"
"बस यही। तुम मेरे बारे में क्यों सोच रहे थे?"

"शायद इसलिए कि मैं तुम्हें पसंद करता हूँ, इसलिए! वरना मैं तुम्हारे बारे में क्यों सोच रहा होता? भला कौन सोचेगा कि वह किसी ऐसे व्यक्ति के साथ रहना चाहेगा जिसे वह पसंद नहीं करता?"
"लेकिन तुम्हारा तो बॉयफ्रेंड है," मैंने कहा। "तुम्हें मेरे बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं है।" मैंने अपनी व्हिस्की और सोडा का एक घूंट धीरे से लिया।
"मतलब, अगर मेरा बॉयफ्रेंड है तो मुझे तुम्हारे बारे में सोचने की इजाज़त नहीं है?"
नहीं, ऐसा नहीं है, मैं बस...
"अब इसे अच्छी तरह समझ लो, वातानाबे," मिदोरी ने मेरी ओर इशारा करते हुए कहा। "मैं तुम्हें चेतावनी दे रही हूँ, मेरे अंदर पूरे एक महीने का दुख भरा हुआ है और वह कभी भी फूट सकता है। इसलिए मुझसे बात करते समय सावधान रहो।"
अगर ऐसा कुछ और हुआ तो मैं इस जगह को आंसुओं से भर दूंगी। एक बार शुरू हो गया तो पूरी रात रोती रहूंगी। क्या आप इसके लिए तैयार हैं? रोना शुरू करते ही मैं बिल्कुल बेकाबू हो जाती हूं, चाहे मैं कहीं भी रहूं!
मैं मज़ाक नहीं कर रहा हूँ।"
मैंने सिर हिलाया और चुप रहा। मैंने एक और व्हिस्की और सोडा का ऑर्डर दिया और कुछ पिस्ता खाए। शेकर की आवाज़, गिलासों की खनक और बर्फ़ बनाने वाली मशीन की आवाज़ के बीच कहीं सारा वॉन एक पुराने ज़माने का प्रेम गीत गा रही थी।
"टैम्पोन वाली घटना के बाद से मेरे और मेरे बॉयफ्रेंड के बीच सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है।"
"टैम्पोन वाली घटना?"
"हाँ, लगभग एक महीने पहले मैं उसके और उसके कुछ दोस्तों के साथ शराब पी रहा था और मैंने उन्हें अपने पड़ोस की एक महिला की कहानी

सुनाई जिसने छींकते ही टैम्पोन बाहर निकाल दिया। मज़ेदार है ना?"
मैंने हंसते हुए कहा, "यह तो मजेदार है।"

"हाँ, बाकी सब लोग भी यही सोचते थे। लेकिन वो गुस्सा हो गया और कहने लगा कि मुझे ऐसी गंदी बातें नहीं करनी चाहिए। कितना बोरिंग आदमी है!"
"बहुत खूब।"
"वह बहुत ही शानदार इंसान है, लेकिन ऐसी बातों में उसकी सोच बहुत संकीर्ण हो जाती है," मिदोरी ने कहा। "जैसे, अगर मैं सफेद अंडरवियर के अलावा कुछ और पहन लूँ तो वह गुस्सा हो जाता है। क्या आपको नहीं लगता कि यह संकीर्ण सोच है?"
"शायद ऐसा हो," मैंने कहा, "लेकिन ये तो बस पसंद की बात है।" मुझे ये बात अविश्वसनीय लगी कि उस जैसे लड़के को मिदोरी जैसी गर्लफ्रेंड चाहिए होगी, लेकिन मैंने ये विचार अपने तक ही सीमित रखा।
"तो, तुम क्या कर रहे थे?" उसने पूछा।
"कुछ नहीं। सब पहले जैसा ही है," मैंने कहा, लेकिन फिर मुझे याद आया कि मैंने वादा किया था कि मैं मिदोरी के बारे में सोचते हुए हस्तमैथुन करने की कोशिश करूँगा। मैंने उसे इसके बारे में धीमी आवाज़ में बताया ताकि आसपास के लोगों को सुनाई न दे।
मिडोरी की आँखें चमक उठीं और उसने उंगलियां चटकाते हुए पूछा, "कैसा रहा? क्या यह अच्छा था?"
"नहीं, मुझे बीच में ही शर्म आ गई और मैंने रोक दिया।" "मतलब तुम्हारा इरेक्शन खत्म हो गया?"
"बहुत ज्यादा।"

"धत् तेरे की," उसने झुंझलाहट भरी नज़र से मेरी तरफ देखते हुए कहा। "खुद को शर्मिंदा मत होने दो। कुछ बेहद कामुक सोचो। कोई बात नहीं, मैं तुम्हें इजाज़त दे रही हूँ। अरे, मुझे पता है क्या! अगली बार मैं तुम्हें फ़ोन करूंगी: 'ओह, ओह, ये तो बहुत बढ़िया है... ओह, मुझे महसूस हो रहा है... रुको, मैं बस आने ही वाली हूँ... ओह, ऐसा मत करो!' मैं इस तरह की बातें तुमसे तब कहूँगी जब तुम ये कर रहे होगे।"
मैंने समझाया, "छात्रावास का फोन सामने वाले दरवाजे के पास लॉबी में है, जहाँ लोग लगातार आते-जाते रहते हैं। अगर छात्रावास के प्रमुख ने मुझे ऐसी जगह पर हस्तमैथुन करते हुए देख लिया, तो वह मुझे अपने हाथों से मार डालेंगे।"
"ओह, बहुत बुरा हुआ।"
"कोई बात नहीं," मैंने कहा। "मैं एक दिन फिर अकेले कोशिश करूंगा।"
"अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करो," मिदोरी ने कहा। "मैं करूंगा," मैंने कहा।
"मुझे आश्चर्य होता है कि क्या यह मेरी गलती है," उसने कहा। "शायद मैं जन्मजात रूप से ऐसी नहीं हूँ।"
मैंने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, "ऐसा नहीं है। यह तो रवैये का सवाल है।"

“तुम्हें पता है,” उसने कहा, “मेरी पीठ बहुत संवेदनशील है। उंगलियों का कोमल स्पर्श... उम्मम।” “मैं इसे ध्यान में रखूंगी।”
"अरे, क्यों न हम अभी जाकर कोई अश्लील फिल्म देखें?" मिदोरी ने सुझाव दिया।
"एक बेहद घिनौना एस एंड एम वाला।"
हम बार से एक ईल की दुकान पर गए, और वहाँ से शिंजुकु के सबसे

खस्ताहाल एडल्ट सिनेमाघरों में से एक में तीन फिल्में देखने गए। अखबार में मिली जानकारी के अनुसार, यही एक जगह थी जहाँ एसएंडएम (यौन और यौन) से जुड़ी फिल्में दिखाई जा रही थीं।

सिनेमा हॉल के अंदर एक अजीब सी गंध थी। हमारा समय अच्छा था: जैसे ही हम अपनी सीटों पर बैठे, एसएंडएम (यौन और यौन शोषण) फिल्म शुरू हो रही थी। यह एक सेक्रेटरी और उसकी स्कूली छात्रा बहन की कहानी थी, जिन्हें कुछ आदमियों ने अगवा कर लिया था और उन पर बेरहमी से अत्याचार किए थे। वे आदमी बड़ी बहन को बलात्कार की धमकी देकर उससे तरह-तरह के भयानक काम करवाते हैं, लेकिन जल्द ही बड़ी बहन एक उग्र मासोकिस्ट (पीड़ितों को सहने वाली) बन जाती है, और छोटी बहन उन सभी यातनाओं को देखकर उत्तेजित हो जाती है। यह इतनी निराशाजनक और एक ही पैटर्न पर चलने वाली फिल्म थी कि थोड़ी देर बाद ही मुझे बोरियत होने लगी।

"अगर मैं छोटी बहन होती, तो इतनी आसानी से परेशान नहीं होती," मिदोरी ने कहा। "मैं देखती रहती।"

मैंने कहा, "मुझे पूरा यकीन है कि आप ऐसा करेंगे।"

और वैसे भी, क्या आपको नहीं लगता कि एक स्कूली छात्रा के लिए उसके निपल्स बहुत गहरे रंग के हैं?

- एक कुंवारी?"

"बिल्कुल।"

मिडोरी की निगाहें स्क्रीन पर टिकी हुई थीं। मैं प्रभावित हुआ: इतनी तीव्रता से फिल्म देखने वाली किसी भी महिला को अपने पैसे का पूरा मूल्य मिल रहा था। वह लगातार मुझे अपने विचार बता रही थी: "हे भगवान, देखो तो ज़रा!" या "तीन-तीन लोग एक साथ! वे उसे फाड़ डालेंगे!" या "मैं भी किसी पर ऐसा करना चाहूँगी, वातानाबे।" मुझे फिल्म

से ज़्यादा मिडोरी में मज़ा आ रहा था।

जब मध्यांतर के दौरान बत्तियाँ जलीं, तो मुझे एहसास हुआ कि वहाँ कोई और महिला नहीं थी। हमारे पास बैठा एक युवक -
शायद कोई छात्र था - उसने मिदोरी को एक नज़र देखा और अपनी सीट बदलकर 268 पर बैठ गया।

दूर की ओर।
"मुझे बताओ, वातानाबे, क्या तुम्हें इस तरह की चीजें देखकर उत्तेजना होती है?"
"हाँ, कभी-कभी," मैंने कहा। "इसीलिए तो ये फिल्में बनती हैं।"
तो आपका मतलब यह है कि जब भी ऐसे दृश्य शुरू होते हैं, सिनेमा हॉल में मौजूद हर आदमी का लिंग एक साथ खड़ा हो जाता है? तीस या चालीस लिंग एक साथ खड़े हो जाते हैं? अगर आप ज़रा सोच-विचार करें तो यह बहुत अजीब लगता है, है ना?
"हां, मुझे लगता है ऐसा ही है, अब जब आपने इसका जिक्र किया है।"
दूसरी फिल्म एक सामान्य पोर्न फिल्म थी, यानी पहली से भी ज़्यादा उबाऊ। इसमें ओरल सेक्स के कई सीन थे, और जब भी वे फेलैटियो, कनिंलिंगस या सिक्सटी-नाइन करते, तो पूरे सिनेमा हॉल में चूसने या स्लरपिंग की तेज़ आवाज़ें गूंजने लगतीं। उन्हें सुनकर मुझे अजीब सा एहसास हुआ कि मैं भी इसी विचित्र ग्रह पर अपना जीवन जी रहा हूँ।
मैंने मिदोरी से कहा, "मुझे आश्चर्य होता है कि ये आवाज़ें कौन बनाता है?"
"मुझे लगता है कि वे बहुत अच्छे हैं!" उसने कहा।
साथ ही, लिंग के योनि में अंदर-बाहर होने की आवाज़ भी आ रही थी। मुझे कभी पता ही नहीं था कि ऐसी आवाज़ें भी होती हैं। आदमी ज़ोर-ज़ोर

से साँस ले रहा था, और औरत उसके नीचे छटपटाते हुए "हाँ!" या "और!" जैसे आम भाव व्यक्त कर रही थी। बिस्तर के चरमराने की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी। ये दृश्य लगातार चलते रहे।
मिडोरी को पहले तो ये सब अच्छा लग रहा था, लेकिन थोड़ी देर बाद वो भी ऊब गई और उसने जाने का सुझाव दिया। हम बाहर गए और गहरी साँसें लीं। शिंजुकु की ताज़ी हवा मुझे पहली बार सेहतमंद लगी।
"मज़ेदार था," मिदोरी ने कहा। "चलो इसे कभी फिर से करते हैं।"
मैंने कहा, "वे बस वही पुरानी बातें दोहराते रहते हैं।"
"खैर, वे और क्या कर सकते हैं? हम सब तो बस वही काम करते रहते हैं।"
उसकी बात में दम था।
हमें एक और बार मिला और हमने ड्रिंक्स ऑर्डर किए। मैंने और व्हिस्की पी, और मिदोरी ने तीन-चार तरह के कॉकटेल पिए। बाहर आकर मिदोरी ने कहा कि वह पेड़ पर चढ़ना चाहती है।

मैंने कहा, "यहाँ आस-पास कोई पेड़ नहीं हैं। और अगर होते भी, तो तुम इतने लड़खड़ाते हो कि चढ़ नहीं सकते।"
तुम हमेशा इतने ज्यादा समझदार होते हो कि सब कुछ बिगाड़ देते हो। मैं नशे में हूँ।
क्योंकि मैं नशे में धुत होना चाहता हूँ। इसमें क्या बुराई है? और अगर मैं नशे में भी हूँ, तो भी मैं पेड़ पर चढ़ सकता हूँ। अरे यार, मैं एक ऊँचे, विशाल पेड़ की चोटी तक चढ़ूँगा और सब पर पेशाब करूँगा!
"क्या आपको गलती से भी शौचालय जाने की आवश्यकता है?"
"हां।

मैं मिदोरी को शिंजुकु स्टेशन के एक सशुल्क शौचालय में ले गया, उसमें सिक्का डाला और उसे अंदर धकेल दिया। फिर मैंने पास के एक स्टॉल से शाम का अखबार खरीदा और उसके बाहर आने का इंतजार करते हुए उसे पढ़ा। लेकिन वह बाहर नहीं आई। 15 मिनट बाद मुझे चिंता होने लगी और मैं उसे देखने जाने ही वाला था कि वह आखिरकार पीली-सी दिखने वाली बाहर निकली या नहीं।

"माफ़ कीजिए," उसने कहा। "मैं सो गई थी।"

"क्या तुम ठीक हो?" मैंने अपना कोट उसके कंधों पर डालते हुए पूछा।

"वास्तव में नहीं," उसने कहा।

मैं तुम्हें घर छोड़ दूंगा। तुम्हें बस घर पहुंचना है, अच्छे से नहाना है और सो जाना है। तुम बहुत थक गए हो।

मैं घर नहीं जा रहा। क्या फायदा? वहां कोई नहीं है। मैं ऐसी जगह पर अकेले सोना नहीं चाहता।

मैंने कहा, "बहुत बढ़िया। तो अब आप क्या करने वाले हैं?"

"आस-पास के किसी अच्छे होटल में चलो और रात भर मुझे बाहों में भरकर सो जाओ। एकदम गहरी नींद में। कल सुबह हम कहीं नाश्ता करेंगे और साथ में लेक्चर सुनने चलेंगे।"

"तुम पहले से ही इसकी योजना बना रहे थे, है ना? इसीलिए तो तुमने मुझे फोन किया था।"

"बिल्कुल।

"तुम्हें मुझे नहीं, अपने बॉयफ्रेंड को फोन करना चाहिए था। यही एकमात्र समझदारी वाली बात है। बॉयफ्रेंड इसीलिए तो होते हैं।"

"लेकिन मैं आप के साथ रहना चाहता हूँ।"

मैंने कहा, "तुम मेरे साथ नहीं रह सकते। सबसे पहले तो मुझे आधी रात तक हॉस्टल वापस जाना होगा। नहीं तो मैं कर्फ्यू तोड़ दूँगा। एक बार मैंने

270 का उल्लंघन किया था।"

कि इसके लिए बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी। और दूसरी बात, अगर मैं किसी लड़की के साथ बिस्तर पर जाता हूँ, तो मैं उसके साथ शारीरिक संबंध बनाना चाहूँगा, और आखिरी चीज जो मैं चाहता हूँ वह यह है कि मैं वहाँ लेटा हुआ खुद को रोकने के लिए संघर्ष करता रहूँ। मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ, हो सकता है कि मैं तुम्हें भी मजबूर कर दूँ।
"क्या तुम्हारा मतलब है कि तुम मुझे मारोगे, बांधोगे और पीछे से मेरा बलात्कार करोगे?"
"अरे, देखो, मैं सच कह रहा हूँ।"
"पर मैं कितनी अकेली हूँ! मैं किसी के साथ रहना चाहती हूँ! मुझे पता है मैं तुम्हारे साथ बहुत बुरा बर्ताव कर रही हूँ, तुमसे कुछ माँगती हूँ और बदले में कुछ नहीं देती, जो मन में आता है बोल देती हूँ, तुम्हें तुम्हारे कमरे से खींचकर हर जगह ले जाने के लिए मजबूर करती हूँ, लेकिन तुम ही हो जिसके साथ मैं ऐसा कर सकती हूँ! मैं कभी किसी के साथ अपनी मर्ज़ी नहीं चला पाई, अपनी 20 साल की ज़िंदगी में एक बार भी नहीं। मेरे पिता, मेरी माँ, उन्होंने कभी मेरी तरफ ध्यान नहीं दिया, और मेरा बॉयफ्रेंड, खैर, वो उस तरह का लड़का ही नहीं है। अगर मैं अपनी मर्ज़ी चलाने की कोशिश करती हूँ तो वो गुस्सा हो जाता है। इसलिए हम लड़ते रहते हैं। तुम ही हो जिससे मैं ये सब बातें कह सकती हूँ। और अब मैं बहुत, बहुत, बहुत थक गई हूँ और मैं किसी को ये कहते हुए सोना चाहती हूँ कि वो मुझे कितना पसंद करता है, मैं कितनी सुंदर हूँ वगैरह। बस यही चाहती हूँ। और जब मैं जागूँगी, तो मैं ऊर्जा से भरी होऊँगी और फिर कभी इस तरह की स्वार्थी माँगें नहीं करूँगी। कसम से। मैं अच्छी लड़की बनूँगी।"

"मैं आपकी बात सुन रहा हूँ, यकीन मानिए, लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकता।"
"अरे, रहने दो! नहीं तो मैं यहीं ज़मीन पर बैठ जाऊंगी और पूरी रात फूट-फूट कर रोऊंगी। और जो भी पहला लड़का मुझसे बात करेगा, मैं उसी के साथ सो जाऊंगी।"
बस, यही काफी था। मैंने छात्रावास में फोन किया और नागासावा के बारे में पूछा।
जब उसने फोन उठाया तो मैंने उससे पूछा कि क्या वह ऐसा दिखा सकता है कि मैं शाम के लिए वापस आई हूँ। मैंने समझाया कि मैं एक लड़की के साथ थी।
“ठीक है,” उसने कहा। “यह एक नेक काम है, मुझे आपकी मदद करके खुशी होगी। मैं बस आपका नेम टैग अंदर वाले हिस्से की तरफ पलट दूंगा। चिंता मत करो। जितना समय चाहिए ले लो। सुबह आप मेरी खिड़की से अंदर आ सकते हैं।”
"धन्यवाद। मैं आपका एहसानमंद हूँ," मैंने कहा और फोन रख दिया। "सब ठीक है?" मिदोरी ने पूछा।
“लगभग,” मैंने आह भरते हुए कहा। “बहुत बढ़िया, चलो डिस्को चलते हैं, ये तो एकदम ट्रेंडी है।”

जल्दी।" "एक मिनट रुको, मुझे लगा तुम थके हुए हो।" "इस तरह की चीज़ के लिए, मैं बिल्कुल ठीक हूँ।" "अरे बाप रे।"
और वह सही थी। हम एक डिस्को में गए, और नाचते-नाचते उसकी ऊर्जा धीरे-धीरे वापस आने लगी। उसने दो व्हिस्की और कोक पी और तब तक डांस फ्लोर पर रही जब तक उसका माथा पसीने से भीग नहीं गया।
जब हम एक मेज पर आराम करने के लिए रुके तो उसने उत्साह से कहा,

"यह तो बहुत मजेदार है!"
"मैंने इतने सालों में इस तरह डांस नहीं किया है। पता नहीं, जब आप अपने शरीर को हिलाते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे आपकी आत्मा मुक्त हो जाती है।"
"मैं कहूंगा कि आपकी आत्मा हमेशा मुक्त रहती है।"
"बिल्कुल नहीं," उसने सिर हिलाते हुए और मुस्कुराते हुए कहा। "खैर, अब जब मैं बेहतर महसूस कर रही हूँ, तो मुझे बहुत भूख लगी है! चलो पिज्जा खाने चलते हैं।"
मैं उसे एक जाने-माने पिज़्ज़ा रेस्टोरेंट में ले गया और ड्राफ्ट बियर और एंकोवी पिज़्ज़ा ऑर्डर किया। मुझे ज़्यादा भूख नहीं थी और मैंने बारह स्लाइस में से सिर्फ़ चार ही खाए। बाकी बचे हुए पिज़्ज़ा मिदोरी ने खत्म कर दिए।
मैंने कहा, "तुमने बहुत जल्दी ठीक हो गए। कुछ समय पहले तक तो तुम बिल्कुल पीले और कमजोर दिख रहे थे।"
"ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि मेरी स्वार्थी मांगों का किसी पर असर हुआ... इसने मुझे राहत दी। वाह, यह पिज्जा बहुत बढ़िया है!"
"लेकिन मुझे बताओ। क्या सचमुच घर पर कोई नहीं है?"
"यह सच है। मेरी बहन अपनी दोस्त के घर पर रह रही है। अब, उस लड़की को तो सच में बहुत डर लगता है। अगर मैं वहां नहीं होती तो वह घर में अकेले सो नहीं पाती।"
"चलो, इस लव होटल के झंझट को छोड़ो। ऐसी जगह जाने से तो बस घटियापन महसूस होता है। चलो तुम्हारे घर चलते हैं। तुम्हारे पास मेरे लिए बिस्तर तो होगा ही?"
मिडोरी ने एक मिनट सोचा, फिर सिर हिलाया। "ठीक है, हम आज रात मेरे घर पर रुकेंगे।"

हम यामानोते लाइन से ओत्सुका गए, और जल्द ही हमने कोबायाशी बुकशॉप के सामने का धातु का शटर उठाया। शटर पर एक कागज़ का बोर्ड लगा था जिस पर लिखा था, "अस्थायी रूप से बंद"। अंधेरी दुकान में पुराने कागज़ों की गंध फैली हुई थी, मानो शटर लंबे समय से खुला ही न हो। आधी अलमारियाँ खाली थीं, और 272 किताबों में से अधिकांश गायब थीं।

पत्रिकाओं को लौटाने के लिए बंडलों में बांधा गया था। पहली बार आने पर मुझे जो खालीपन और ठंडक का एहसास हुआ था, वह और भी गहरा हो गया था। वह जगह किनारे पर छोड़े गए किसी जहाज़ के मलबे जैसी लग रही थी।
मैंने पूछा, "क्या आप दोबारा दुकान खोलने की योजना नहीं बना रहे हैं?"
"नहीं, हम इसे बेच देंगे," मिदोरी ने कहा। "हम पैसे आपस में बाँट लेंगे और कुछ समय के लिए बिना किसी के 'सुरक्षा' के अपने दम पर रहेंगे। मेरी बहन की शादी अगले साल है, और मुझे विश्वविद्यालय में तीन साल और पढ़ाई करनी है।"
हमें कम से कम इतने पैसे तो कमाने ही चाहिए जिससे हमारा गुजारा चल सके। मैं अपनी पार्ट-टाइम नौकरी भी करती रहूंगी। घर बिक जाने के बाद, मैं कुछ समय के लिए अपनी बहन के साथ एक फ्लैट में रहूंगी।
"क्या आपको लगता है कि कोई इसे खरीदना चाहेगा?"
"शायद। मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानती हूँ जो ऊन की दुकान खोलना चाहता है। वह हाल ही में मुझसे पूछ रही थी कि क्या मैं अपनी संपत्ति बेचना चाहती हूँ। लेकिन बेचारे पिताजी। उन्होंने इस जगह को पाने के लिए बहुत मेहनत की थी, और वे धीरे-धीरे अपना कर्ज चुका रहे थे, और अंत में उनके पास लगभग कुछ भी नहीं बचा था। सब कुछ नदी के झाग

की तरह बह गया।"
"लेकिन उसने तुम्हें पकड़ लिया था," मैंने कहा।
"मैं?!" मिदोरी हंसते हुए बोली। उसने गहरी सांस ली और छोड़ी।
"चलो ऊपर चलते हैं। यहाँ नीचे बहुत ठंड है।"
ऊपर जाकर उसने मुझे रसोई की मेज पर बिठाया और नहाने का पानी गर्म करने चली गई। जब वह उसमें व्यस्त थी, मैंने केतली में पानी उबलने के लिए रख दिया और चाय बना ली। पानी गर्म होने का इंतज़ार करते हुए हम रसोई की मेज पर आमने-सामने बैठ गए और चाय पी। ठुड्डी पर हाथ रखे हुए उसने मुझे एकटक देखा। घड़ी की टिक-टिक और फ्रिज के थर्मोस्टेट के बार-बार चालू-बंद होने की हल्की आवाज़ के अलावा कोई और आवाज़ नहीं थी। घड़ी बता रही थी कि आधी रात तेज़ी से नज़दीक आ रही है।
"जानते हो, वातानाबे, अगर तुम इसका अच्छे से अध्ययन करोगे, तो तुम्हारा चेहरा काफी दिलचस्प हो जाएगा।"
"ऐसा सोचते हो?" मैंने थोड़ा आहत होकर पूछा।
"मुझे तो बस एक सुंदर चेहरा ही काफी लगता है," उसने कहा। "और तुम्हारा चेहरा... खैर, जितना ज्यादा मैं उसे देखती हूं, उतना ही मुझे लगता है, 'वह ठीक रहेगा'।"

"मैं भी," मैंने कहा। "कभी-कभी मैं अपने बारे में सोचता हूँ, 'अब मैं क्या करूँ?'"
"अरे, मेरा मतलब इसे बुरे तरीके से कहना नहीं है। मैं अपनी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करने में उतना अच्छा नहीं हूँ। इसीलिए लोग मुझे गलत समझते हैं। मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि मैं तुम्हें पसंद करता

हूँ। क्या मैंने तुम्हें यह पहले बताया है?"
मैंने कहा, "तुमने किया है।"
"मेरा मतलब है, मैं अकेली नहीं हूँ जिसे पुरुषों के असली स्वभाव को समझने में दिक्कत होती है। लेकिन मैं धीरे-धीरे इस दिशा में आगे बढ़ रही हूँ।"
मिडोरी मार्लबोरो सिगरेट का एक डिब्बा लेकर आई और एक सिगरेट जलाई। "जब आप शून्य से शुरुआत करते हैं, तो आपको बहुत कुछ सीखना होता है।" "मुझे आश्चर्य नहीं होगा।"
"अरे, मैं लगभग भूल ही गया था! क्या आप मेरे पिताजी के लिए अगरबत्ती जलाना चाहते हैं?"
मैं मिदोरी के पीछे-पीछे बौद्ध वेदी वाले कमरे में गया, उसके पिता की तस्वीर के सामने अगरबत्ती जलाई और अपने हाथ जोड़ लिए।
"जानती हो मैंने उस दिन क्या किया?" मिदोरी ने पूछा। "मैं अपने पिता की तस्वीर के सामने पूरी तरह नग्न हो गई। मैंने अपने सारे कपड़े उतार दिए और उन्हें अच्छी तरह से, देर तक देखने दिया। जैसे योगासन में बैठी थी। मानो कह रही हो, 'देखो पापा, ये मेरे स्तन हैं, और ये मेरी योनि है'।"
मैंने पूछा, "आखिर तुमने ऐसा क्यों किया?"
"मुझे नहीं पता, मैं बस उसे दिखाना चाहती थी। मतलब, मेरा आधा हिस्सा तो उसके शुक्राणु से ही बना है, है ना? तो मैं उसे क्यों न दिखाऊं? 'ये रही तुम्हारी बेटी।' उस समय मैं थोड़ी नशे में थी। शायद इसका भी कुछ असर था।"
"मुझे लगता है।"
"मेरी बहन अंदर आई और लगभग गिर ही गई। मैं अपने पिता के स्मारक चित्र के सामने पूरी तरह नग्न अवस्था में, पैर फैलाए खड़ी थी। मुझे लगता है कि आप थोड़ा हैरान होंगे।" "हाँ, ऐसा ही लगता है।"

मैंने समझाया कि मैं ऐसा क्यों कर रही हूँ और कहा, "तो मोमो (उसका नाम मोमो है) तुम भी अपने कपड़े उतार दो और मेरे बगल में बैठ जाओ और उसे दिखाओ।"
लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। वह सदमे में चली गई। उसमें एक बेहद रूढ़िवादी प्रवृत्ति है।
"दूसरे शब्दों में कहें तो, आपका मतलब है कि वह अपेक्षाकृत सामान्य है।"

"मुझे बताओ, वातानाबे, मेरे पिता के बारे में तुम्हारा क्या विचार था?"
"मैं नए मिले लोगों के साथ सहज नहीं हूं, लेकिन उनके साथ अकेले रहने में मुझे कोई परेशानी नहीं हुई। मुझे काफी आराम महसूस हुआ।"

हमने कई तरह की बातें कीं।
-किस तरह की चीजें?
-यूरिपाइड्स," मैंने कहा।
मिडोरी जोर से हंस पड़ी। "तुम कितनी अजीब हो! कोई भी मरते हुए व्यक्ति से, जिससे अभी-अभी मुलाकात हुई हो, यूरिपिड्स के बारे में बात नहीं करता!"
वैसे भी, कोई भी अपने पिता के स्मारक चित्र के सामने पैर फैलाकर नहीं बैठता!
मिडोरी खिलखिलाकर हंसी और उसने वेदी की घंटी बजाई। "शुभ रात्रि, पापा।"
अब हम खूब मस्ती करने वाले हैं, इसलिए चिंता मत करो और सो जाओ। अब तुम्हें कोई तकलीफ नहीं हो रही, है ना? तुम मर चुके हो, ठीक है?

मुझे यकीन है कि तुम्हें कोई तकलीफ नहीं हो रही है। अगर हो रही है, तो बेहतर होगा कि तुम देवताओं से शिकायत करो। बताओ
ये तो बहुत ही ज़ालिम है। उम्मीद है तुम मम्मी से मिलोगे और तुम दोनों सच में संबंध बनाओगे। जब मैंने तुम्हें पेशाब करने में मदद की थी, तब मैंने तुम्हारा लिंग देखा था। वो वाकई बहुत प्रभावशाली था! तो अपनी पूरी ताकत लगा दो। शुभ रात्रि।

हम बारी-बारी से नहाए और पायजामा पहना। मैंने उसके पिता का लगभग नया पायजामा उधार लिया। वो थोड़ा छोटा था, लेकिन कुछ न होने से तो बेहतर था। मिदोरी ने मेरे लिए वेदी कक्ष के फर्श पर एक गद्दा बिछा दिया।
"क्या तुम्हें वेदी के सामने सोने से डर नहीं लगता?" उसने पूछा।
"बिल्कुल नहीं। मैंने कुछ भी बुरा नहीं किया है," मैंने मुस्कुराते हुए कहा।
"लेकिन तुम मेरे साथ रहोगे और मुझे तब तक थामे रखोगे जब तक मैं सो न जाऊं, है ना?"
"ठीक है," मैंने कहा।
मिडोरी के छोटे से बिस्तर के किनारे से लगभग गिरते-गिरते बचा, मैंने उसे अपनी बाहों में थाम लिया। उसकी नाक मेरी छाती से लगी थी और उसने अपने हाथ मेरी कमर पर रख दिए थे। मेरा दाहिना हाथ उसकी पीठ के चारों ओर लिपटा हुआ था और मैं अपने बाएं हाथ से बिस्तर के फ्रेम को पकड़कर गिरने से बचने की कोशिश कर रहा था। यह बिल्कुल 275 नहीं था।

यौन उत्तेजना के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ थीं। मेरी नाक उसके सिर पर टिकी हुई थी और उसके छोटे-छोटे बाल बीच-बीच में गुदगुदी कर रहे थे।

"चलो, कुछ तो बोलो," मिदोरी ने अपना चेहरा मेरी छाती में छिपाते हुए कहा।
"आप मुझेसे क्या कहलवाना चाहते हैं?"
"कुछ भी। कुछ ऐसा जिससे मुझे अच्छा महसूस हो।" "तुम बहुत प्यारी हो," मैंने कहा।
"मिडोरी," उसने कहा। "मेरा नाम लो।"
"तुम बहुत प्यारी हो, मिदोरी," मैंने खुद को सुधारते हुए कहा। "बहुत प्यारी का क्या मतलब है?"
"पहाड़ों का टूटना और महासागरों का सूखना कितना प्यारा है।" मिदोरी ने अपना चेहरा ऊपर उठाया और मेरी तरफ देखा। "तुम्हारे पास शब्दों को कहने का एक खास तरीका है।"
"जब आप ऐसा कहते हैं तो मुझे लगता है मेरा दिल नरम पड़ रहा है," मैंने मुस्कुराते हुए कहा।
"कुछ और भी अच्छा कहो।"
"मुझे तुम बहुत पसंद हो, मिदोरी। बहुत ज्यादा।"
"बहुत ज़्यादा का मतलब कितना होता है?"
मैंने कहा, "बसंत ऋतु में निकलने वाले भालू की तरह।"
"एक बसंत भालू?" मिदोरी ने फिर ऊपर देखा। "यह सब क्या है? एक बसंत भालू।"
एक दिन वसंत ऋतु में आप अकेले ही एक खेत में टहल रही थीं, तभी मखमली फर और चमकीली छोटी आँखों वाला एक प्यारा सा भालू का बच्चा आपके पास आया। उसने आपसे कहा, "नमस्ते, नन्ही परी। क्या तुम मेरे साथ खेलना चाहोगी?" तो आप और भालू का बच्चा पूरा दिन एक-दूसरे की बाहों में, तिपतिया घास से ढकी उस पहाड़ी पर लुढ़कते हुए बिताते हैं। है ना मज़ेदार?"

"हाँ। बहुत बढ़िया।"
"मैं तुम्हें इतना पसंद करता हूँ।"
"मैंने आज तक इससे बेहतर बात कभी नहीं सुनी," मिदोरी ने मेरी छाती से लिपटते हुए कहा। "अगर तुम मुझे इतना पसंद करते हो, तो मैं जो भी कहूँगी, तुम वो करोगे ना? गुस्सा तो नहीं करोगे ना?"
"नही बिल्कुल नही।"
और तुम हमेशा मेरा ख्याल रखोगे।
“बिल्कुल करूँगा,” मैंने उसके छोटे, मुलायम, लड़कों जैसे बालों को सहलाते हुए कहा। “नहीं, 276

चिंता मत करो, सब ठीक हो जाएगा।
"लेकिन मुझे डर लग रहा है," उसने कहा।
मैंने उसे धीरे से थाम लिया, और थोड़ी देर में उसके कंधे ऊपर-नीचे होने लगे, और मुझे नींद की नियमित साँसें सुनाई देने लगीं। मैं उसके बिस्तर से उठा और रसोई में गया, जहाँ मैंने एक बियर पी। मुझे ज़रा भी नींद नहीं आ रही थी, इसलिए मैंने एक किताब पढ़ने के बारे में सोचा, लेकिन मुझे आस-पास पढ़ने लायक कुछ नहीं मिला। मैंने मिदोरी के कमरे में वापस जाकर किताब ढूंढने के बारे में सोचा, लेकिन मैं उसे सोते हुए जगाना नहीं चाहता था।
मैं कुछ देर तक खाली जगह को घूरता हुआ बैठा रहा, अपनी बीयर पीता रहा, तभी मुझे याद आया कि मैं एक किताबों की दुकान में हूँ। मैं नीचे गया, लाइट जलाई और पेपरबैक की अलमारियों में किताबें देखने लगा। मुझे ज़्यादा कुछ पसंद नहीं आया, और जो पसंद आया, उनमें से ज़्यादातर मैं पहले ही पढ़ चुका था, लेकिन मुझे कुछ तो पढ़ना ही था, चाहे कुछ भी हो जाए। मैंने हरमन हेस की किताब 'बेनेथ द व्हील' की एक

फीकी सी प्रति उठाई, जो शायद दुकान में काफी समय से बिना बिके पड़ी थी, और उसके पैसे कैश काउंटर के पास छोड़ दिए। यह कोबायाशी बुकशॉप के कर्ज को कम करने में मेरा छोटा सा योगदान था।

मैं रसोई की मेज पर बैठकर बीयर पीते हुए 'बेनेथ द व्हील' पढ़ रहा था। मैंने यह उपन्यास पहली बार स्कूल में दाखिला लेने के साल पढ़ा था। और अब, लगभग आठ साल बाद, मैं यहाँ एक लड़की की रसोई में, उसके मृत पिता के छोटे साइज़ के पायजामे पहने हुए, वही किताब पढ़ रहा था। अजीब बात है। अगर ये अजीब परिस्थितियाँ न होतीं, तो शायद मैं इसे दोबारा कभी नहीं पढ़ता।

पहिए के नीचे।

किताब में कुछ पुराने ज़माने की बातें ज़रूर थीं, लेकिन एक उपन्यास के तौर पर यह बुरी नहीं थी। आधी रात को शांत किताबों की दुकान में बैठकर मैंने इसे धीरे-धीरे पढ़ा, हर पंक्ति का आनंद लिया। रसोई में एक शेल्फ पर ब्रांडी की एक धूल भरी बोतल रखी थी। मैंने थोड़ी सी ब्रांडी कॉफी के कप में डाली और धीरे-धीरे पी।

इससे मुझे गर्मी तो मिली लेकिन नींद आने में कोई मदद नहीं मिली।

मैं तीन बजे से कुछ देर पहले मिदोरी को देखने गया, लेकिन वह गहरी नींद में सो रही थी।

वह बहुत थकी हुई होगी। दुकानों के ब्लॉक 277 से आती रोशनी।

खिड़की के बाहर से आती हल्की सफेद रोशनी कमरे में चांदनी जैसी चमक बिखेर रही थी। मिदोरी रोशनी की ओर पीठ करके सो रही थी। वह इतनी शांत लेटी थी मानो जम गई हो। झुककर मैंने उसकी सांसों की आवाज सुनी। वह बिल्कुल अपने पिता की तरह सो रही थी।

हाल की यात्रा से लाया गया उसका सूटकेस बिस्तर के पास रखा था।

उसका सफेद कोट कुर्सी के पीछे टंगा था। उसकी डेस्क करीने से सजी हुई थी, और उसके ऊपर दीवार पर स्नूपी का कैलेंडर टंगा था। मैंने पर्दा हटाया और नीचे सुनसान दुकानों की ओर देखा। हर दुकान बंद थी, उनके धातु के शटर नीचे थे, शराब की दुकान के सामने झुकी हुई वेंडिंग मशीनें ही भोर की प्रतीक्षा का एकमात्र संकेत थीं। लंबी दूरी के ट्रकों के टायरों की गड़गड़ाहट बीच-बीच में हवा में एक गहरी सिहरन पैदा कर रही थी। मैं रसोई में वापस गया, अपने लिए ब्रांडी का एक और शॉट डाला, और 'बेनेथ द व्हील' पढ़ना जारी रखा।

जब तक मैंने लिखना खत्म किया, आसमान में उजाला होने लगा था। मैंने अपने लिए इंस्टेंट कॉफी बनाई और मेज पर पड़े नोटपैड और बॉलपॉइंट पेन से मिदोरी के लिए एक संदेश लिखा: मैंने तुम्हारी ब्रांडी पी ली। मैंने 'बेनेथ द व्हील' की एक कॉपी खरीदी। बाहर उजाला हो गया है, इसलिए मैं घर जा रहा हूँ। अलविदा। फिर, कुछ हिचकिचाहट के बाद, मैंने लिखा: सोते समय तुम बहुत प्यारी लगती हो। मैंने अपना कॉफी कप धोया, रसोई की लाइट बंद की, नीचे गया, चुपचाप शटर उठाया और बाहर निकल गया। मुझे चिंता थी कि कोई पड़ोसी मुझ पर शक कर सकता है, लेकिन सुबह 5:50 बजे के आसपास सड़क पर कोई नहीं था।

केवल कौवे ही अपनी सामान्य छत पर बैठे थे, सड़क की ओर घूर रहे थे। मैंने मिदोरी की खिड़की के हल्के गुलाबी पर्दों पर एक नज़र डाली, ट्राम स्टॉप तक गई, आखिरी स्टेशन तक गई और अपने छात्रावास की ओर चल पड़ी। रास्ते में मुझे एक खुला कैफे मिला और मैंने चावल, मिसो सूप, अचार वाली सब्जियां और तले हुए अंडे का नाश्ता किया। छात्रावास के पीछे की ओर घूमकर, मैंने नागासावा की भूतल की खिड़की पर दस्तक दी। उन्होंने मुझे तुरंत अंदर आने दिया।

"कॉफी?" उसने पूछा।

"नहीं।"
मैंने उन्हें धन्यवाद दिया, अपने कमरे में गया, अपने दांत ब्रश किए, और अपनी 278वीं कॉपी ली।

मैंने अपनी पैंट उतारी, कंबल के नीचे घुस गया और आँखें कसकर बंद कर लीं। आखिरकार, एक गहरी नींद ने मुझे भारी सीसे के दरवाजे की तरह जकड़ लिया।

मैं नाओको को हर हफ्ते पत्र लिखता था, और वह अक्सर जवाब देती थी। उसके पत्र कभी बहुत लंबे नहीं होते थे। जल्द ही पत्रों में नवंबर की ठंडी सुबह और शामों का जिक्र आने लगा।

जब शरद ऋतु का मौसम गहराने लगा था, उसी समय आप टोक्यो वापस चले गए, इसलिए कुछ समय के लिए मैं यह तय नहीं कर पाई कि मेरे अंदर जो खालीपन पैदा हुआ था, वह आपकी याद आने के कारण था या मौसम के बदलाव के कारण।
मैं और रेइको हमेशा तुम्हारे बारे में बात करते रहते हैं। वो कहती है कि तुम्हें हाय कहना मत भूलना। वो आज भी मुझसे उतनी ही अच्छी तरह पेश आती है। मुझे नहीं लगता कि वो मेरे साथ न होती तो मैं इस जगह को बर्दाश्त कर पाती। मैं अकेलेपन में रोने लगती हूँ।
रेइको कहती है कि अच्छा है कि मैं रो सकती हूँ। लेकिन अकेलापन सच में बहुत दुख देता है। जब मैं रात में अकेली होती हूँ, तो लोग अंधेरे से मुझसे बातें करते हैं। वे मुझसे वैसे ही बातें करते हैं जैसे रात में हवा में पेड़ कराहते हैं। किज़ुकी; मेरी बहन: वे मुझसे हमेशा ऐसे ही बातें करती हैं। वे भी अकेली हैं और किसी से बात करना चाहती हैं।
मैं अक्सर रात में अकेलेपन और पीड़ा में तुम्हारे पत्र दोबारा पढ़ती हूँ।

बाहर से आने वाली कई बातें मुझे उलझन में डाल देती हैं, लेकिन तुम्हारे आस-पास की दुनिया के वर्णन से मुझे अद्भुत सुकून मिलता है। ये कितना अजीब है! मुझे आश्चर्य होता है कि ऐसा क्यों होता है? इसलिए मैं उन्हें बार-बार पढ़ती हूँ, और रेइको भी उन्हें पढ़ती है। फिर हम उन बातों पर चर्चा करते हैं जो तुम मुझे बताती हो।
मुझे मिदोरी के पिता के बारे में लिखा गया हिस्सा बहुत पसंद आया। हम हर हफ्ते आपके पत्र का इंतजार करते हैं, यह हमारे कुछ चुनिंदा मनोरंजनों में से एक है।
हां, ऐसी जगह पर तो चिट्ठियां ही हमारा मनोरंजन होती हैं।
मैं हफ्ते में एक बार तुम्हारे लिए पत्र लिखने का समय निकालने की पूरी कोशिश करती हूँ, लेकिन जैसे ही मैं खाली कागज के सामने बैठती हूँ, मुझे उदासी महसूस होने लगती है। इस पत्र को लिखने के लिए भी मुझे खुद को बहुत मजबूर करना पड़ रहा है। रेइको मुझसे तुम्हें जवाब देने के लिए लगातार कह रही है। लेकिन मुझे गलत मत समझना। मेरे पास तुमसे बात करने के लिए, तुम्हें बताने के लिए बहुत सी बातें हैं। बस उन्हें शब्दों में व्यक्त करना मेरे लिए मुश्किल है। इसीलिए यह पत्र 279वां है।

मुझे पत्र लिखना बहुत कष्टदायक लगता है।
मिडोरी की बात करें तो, वो एक दिलचस्प इंसान लगती है। तुम्हारा पत्र पढ़कर मुझे लगा कि वो तुमसे प्यार करती होगी। जब मैंने ये बात रेइको को बताई, तो उसने कहा, "अरे हाँ, ज़रूर करती होगी! मैं भी वातानाबे से प्यार करती हूँ!" हम मशरूम तोड़ रहे हैं और शाहबलूत इकट्ठा कर रहे हैं और उन्हें रोज़ खा रहे हैं। और मेरा मतलब है रोज़: शाहबलूत के साथ चावल, मत्सुताके मशरूम के साथ चावल, लेकिन उनका स्वाद इतना बढ़िया होता है कि हम उनसे कभी ऊबते नहीं। हालाँकि, रेइको ज़्यादा

नहीं खाती। उसके लिए तो अभी भी एक के बाद एक सिगरेट पीना ही सब कुछ है। पक्षी और खरगोश ठीक-ठाक हैं।
अलविदा।

मेरे बीसवें जन्मदिन के तीन दिन बाद, नाओको की ओर से मेरे लिए एक पैकेज आया। उसके अंदर मुझे वाइन कलर का क्रू नेक पुलओवर और एक पत्र मिला।
जन्मदिन मुबारक हो! आशा है आपका 20वां जन्मदिन खुशियों से भरा हो। मेरा 20वां जन्मदिन तो हमेशा की तरह उदास ही बीतने वाला है, पर मैं दिल से चाहूंगी कि आपको और मुझे दोनों को खुशियों का मिलाजुला अनुभव मिले। सच में। रेइको और मैंने इस स्वेटर का आधा-आधा हिस्सा बुना है।
अगर मैंने ये सब खुद किया होता, तो अगले वैलेंटाइन डे तक का समय लग जाता। इसका अच्छा हिस्सा रेइको का है, और बुरा हिस्सा मेरा।
रेइको हर काम में इतनी माहिर है कि उसे देखकर कभी-कभी मुझे खुद से नफरत होने लगती है। मतलब, मुझमें तो एक भी ऐसी चीज नहीं है जिसमें मैं सच में अच्छी हूँ!
अलविदा।
ठीक रहें।

पैकेज में रीको की ओर से एक छोटा सा नोट भी था।

आप कैसी हैं? आपके लिए नाओको शायद खुशियों की पराकाष्ठा हो, लेकिन मेरे लिए वह बस एक अनाड़ी लड़की है। फिर भी, हमने आपके जन्मदिन के लिए यह जम्पर समय पर तैयार कर लिया। कितना सुंदर है, है ना? हमने रंग और 280

शैली।
जन्मदिन की शुभकामनाएँ।

281

सन् 1969 के उस दौर को याद करते हुए मेरे मन में बस एक दलदल की छवि उभरती है – एक गहरा, चिपचिपा कीचड़, जो हर कदम पर मेरे जूते को खींच लेने जैसा लगता है। मैं कीचड़ में थका-हारा चलता हूँ। मेरे आगे, मेरे पीछे, मुझे दलदल के अंतहीन अंधेरे के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं देता।
समय स्वयं मेरे लड़खड़ाते कदमों की ताल पर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। मेरे आस-पास के लोग बहुत पहले ही आगे निकल चुके थे, जबकि मैं और मेरा समय कीचड़ में संघर्ष करते हुए पीछे रह गए थे। मेरे चारों ओर की दुनिया बड़े बदलावों की कगार पर थी। जॉन कोल्ट्रेन की मृत्यु हो चुकी थी और अब कई अन्य लोग भी उनके साथ चल बसे। लोग चिल्ला रहे थे कि क्रांतिकारी बदलाव आएंगे - जो हमेशा सड़क के मोड़ पर, बस आगे ही दिखाई देते थे। लेकिन जो "बदलाव" आए, वे केवल दो आयामी मंच के दृश्य थे, सार या अर्थहीन पृष्ठभूमि।
मैं बारी-बारी से हर दिन धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहा, शायद ही कभी ऊपर देखता, मेरी आँखें मेरे सामने फैले अंतहीन दलदल पर टिकी रहतीं, मैं

अपना दायाँ पैर जमाता, बायाँ पैर उठाता, बायाँ पैर जमाता, दायाँ पैर उठाता, मुझे कभी पता नहीं होता था कि मैं कहाँ हूँ, मुझे कभी यकीन नहीं होता था कि मैं सही दिशा में जा रहा हूँ, मुझे बस इतना पता था कि मुझे आगे बढ़ते रहना है, एक-एक कदम करके।
मैं 20 साल का हो गया, पतझड़ के बाद सर्दी आ गई, लेकिन मेरे जीवन में कोई खास बदलाव नहीं आया। मैं बेफिक्र होकर अपने लेक्चर अटेंड करता, हफ्ते में तीन रात रिकॉर्ड शॉप में काम करता, कभी-कभार 'द ग्रेट गैट्सबी' पढ़ता और रविवार को कपड़े धोकर नाओको को एक लंबा पत्र लिखता। कभी-कभी मैं मिदोरी के साथ खाना खाने, चिड़ियाघर या सिनेमा देखने चला जाता। कोबायाशी बुकशॉप की बिक्री योजना के मुताबिक हुई और मिदोरी और उसकी बहन म्योगादानी के पास एक दो बेडरूम वाले फ्लैट में रहने लगीं, जो एक पॉश इलाका था। मिदोरी ने कहा कि जब उसकी बहन की शादी हो जाएगी तो वह फ्लैट छोड़कर अकेले किराए पर ले लेगी। इसी बीच, उसने मुझे अपने 282वें जन्मदिन पर आमंत्रित किया।

एक बार दोपहर के भोजन के लिए एक नई जगह। यह एक धूपदार, सुंदर फ्लैट था, और मिदोरी को कोबायाशी बुकशॉप के ऊपर वाले फ्लैट की तुलना में वहां रहना कहीं अधिक अच्छा लगा।
कभी-कभी नागासावा सुझाव देता था कि हम घूमने चलें, लेकिन मैं हमेशा कुछ और करने का बहाना ढूंढ लेता था। मैं झंझट में नहीं पड़ना चाहता था। ऐसा नहीं था कि मुझे लड़कियों के साथ सोने का विचार पसंद नहीं था: बात बस इतनी थी कि जब मैं उस पूरी प्रक्रिया के बारे में सोचता था - शहर में शराब पीना, सही तरह की लड़कियों को ढूंढना, उनसे बात करना, होटल जाना - तो यह सब बहुत ज़्यादा मेहनत वाला लगता था।

नागासावा की इस बात के लिए मैं और भी ज़्यादा तारीफ़ करता था कि वह इस रस्म को बिना थके कैसे निभाता रहता था। शायद हात्सुमी की कही बातों का मुझ पर कुछ असर हुआ था: मैं किसी अनजान लड़की के साथ सोने के बजाय नाओको के बारे में सोचकर ही ज़्यादा खुश हो जाता था। घास के मैदान में नाओको की उंगलियों से चरम सुख तक पहुंचने का एहसास आज भी मेरे भीतर ताज़ा था।
मैंने दिसंबर की शुरुआत में उन्हें पत्र लिखकर पूछा कि क्या सर्दियों की छुट्टियों में उनसे मिलने आना ठीक रहेगा। रीको ने जवाब दिया कि उन्हें मुझे पाकर खुशी होगी। उन्होंने बताया कि नाओको को लिखने में परेशानी हो रही है और इसलिए वह उनकी तरफ से पत्र लिख रही हैं। मुझे यह नहीं समझना चाहिए कि नाओको की तबीयत कुछ ज्यादा खराब है: मुझे चिंता करने की कोई जरूरत नहीं थी। ये सब बातें कभी-कभी होती हैं।

छुट्टियाँ आते ही मैंने अपना सारा सामान अपने बैग में भरा, स्नो बूट पहने और क्योटो के लिए निकल पड़ा। उस अजीब डॉक्टर की बात सही निकली: बर्फ से ढके सर्दियों के पहाड़ बेहद खूबसूरत थे। पहले की तरह, मैंने नाओको और रेइको के साथ फ्लैट में दो रातें बिताईं और उनके साथ तीन दिन बिताए, लगभग वही सब करते हुए जो पहले करते थे।
सूरज ढलने पर, रीको गिटार बजाती और हम तीनों बैठकर बातें करते। पिकनिक के बजाय, हम क्रॉसकंट्री स्कीइंग करने गए। स्की पर जंगल में एक घंटे तक घूमने से हम हाँफने लगे और पसीने से तरबतर हो गए। हम निवासियों और कर्मचारियों के साथ भी शामिल हुए।

जब समय मिलता, हम बर्फ हटाते थे। डॉक्टर मियाता रात के खाने के समय हमारी मेज पर आए और समझाने लगे कि लोगों की मध्यमा उंगली

तर्जनी उंगली से लंबी क्यों होती है, जबकि पैर की उंगलियों के मामले में यह उल्टा होता है। चौकीदार, ओमुरा ने मुझसे फिर से टोक्यो के सूअर के मांस के बारे में बात की। रेइको को शहर से उपहार के रूप में लाए गए रिकॉर्ड बहुत पसंद आए। उसने कुछ धुनें लिखकर उन्हें अपने गिटार पर बजाने का अभ्यास किया।

नाओको शरद ऋतु की तुलना में और भी कम बोल रही थी। जब हम तीनों साथ होते, तो वह सोफे पर बैठी मुस्कुराती रहती और मुश्किल से एक शब्द भी बोलती। रीको उसकी कमी पूरी करने के लिए लगातार बकबक करती रहती। "लेकिन चिंता मत करो," नाओको ने मुझसे कहा। "यह बस कभी-कभी होता है। मुझे खुद बोलने से ज्यादा तुम दोनों की बातें सुनना अच्छा लगता है।"

रेइको ने कुछ काम निपटाए और फ्लैट से बाहर चली गई ताकि नाओको और मैं बिस्तर पर जा सकें। मैंने उसकी गर्दन, कंधे और स्तनों को चूमा, और उसने पहले की तरह अपने हाथों से मुझे चरम सुख तक पहुँचाया।

बाद में, उसे गले लगाते हुए, मैंने उसे बताया कि कैसे इन दो महीनों में उसका स्पर्श मेरे साथ बना रहा, कि मैंने उसके बारे में सोचा और हस्तमैथुन किया।

"तुमने किसी और के साथ संबंध नहीं बनाए?" नाओको ने पूछा। "एक बार भी नहीं," मैंने कहा।

"ठीक है, तो अब याद रखने के लिए एक और बात सुनो।" वह नीचे झुकी और मेरे लिंग को चूमा, फिर उसे अपने गर्म मुंह में भर लिया और अपनी जीभ से उसे चारों ओर फेरने लगी। उसके लंबे, सीधे बाल उसके होंठों की हर हरकत के साथ मेरे पेट और जांघों पर लहरा रहे थे, जब तक कि मैं दूसरी बार स्खलित नहीं हो गया।

"क्या आपको लगता है कि आपको वह याद रहेगा?" उसने पूछा।

"बिल्कुल कर सकता हूँ," मैंने कहा। "मैं इसे हमेशा याद रखूंगा।"
मैंने उसे कसकर पकड़ लिया और अपना हाथ उसकी पैंटी के अंदर डालकर उसकी अभी भी सूखी योनि को छुआ। नाओको ने अपना सिर हिलाया और मेरा हाथ हटा दिया। हम कुछ देर तक एक-दूसरे को पकड़े रहे, बिना कुछ बोले।
मैंने कहा, "मैं सोच रहा हूँ कि टर्म खत्म होते ही हॉस्टल से निकलकर फ्लैट ढूंढ लूँ। हॉस्टल की ज़िंदगी से तंग आ चुका हूँ। अगर मैं पार्ट-टाइम काम करता रहूँ तो अपने खर्चे अच्छे से चला लूँगा। 284 में आने के बारे में क्या ख्याल है?

"टोक्यो मेरे साथ रहने के लिए तैयार है, जैसा मैंने पहले सुझाव दिया था?"
"ओह, तोरू, धन्यवाद। मुझे बहुत खुशी है कि आपने मुझसे ऐसा कुछ करने के लिए कहा!"
मैंने कहा, "ऐसा नहीं है कि मुझे इस जगह में कुछ गलत लगता है।"
"यह जगह शांत है, आसपास का वातावरण बहुत अच्छा है, और रेइको एक अद्भुत इंसान हैं। लेकिन यह लंबे समय तक रहने के लिए उपयुक्त जगह नहीं है। यह जगह बहुत ही खास है, इसलिए लंबे समय तक रहना मुश्किल है। मुझे यकीन है कि आप यहां जितना ज्यादा समय बिताएंगे, यहां से जाना उतना ही मुश्किल होगा।"
जवाब देने के बजाय, नाओको ने अपनी नज़र बाहर की ओर घुमाई। खिड़की के बाहर बर्फ के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। बर्फ के बादल आसमान में नीचे और घने छाए हुए थे, और बर्फ से ढकी धरती के बीच बस थोड़ी सी ही दूरी थी।
मैंने कहा, "अपना समय लो, अच्छे से सोच लो। चाहे कुछ भी हो जाए, मैं

मार्च के अंत तक यहाँ आ जाऊँगा। जब भी तुम मेरे साथ आना चाहो, आ सकते हो।"
नाओको ने सिर हिलाया। मैंने उसे इतनी सावधानी से गले लगाया मानो मैं कांच की किसी नाजुक कलाकृति को थामे हुए हूँ। उसने भी अपनी बाहें मेरी गर्दन में डाल दीं। मैं नग्न था और उसने सिर्फ़ बेहद पतली सफ़ेद अंडरवियर पहनी हुई थी। उसका शरीर इतना सुंदर था कि मैं उसे दिन भर निहार सकता था।
"मैं भीग क्यों नहीं रही?" नाओको ने धीरे से कहा। "ऐसा सिर्फ एक बार हुआ था। मेरे बीसवें जन्मदिन के दिन, अप्रैल के उस दिन।"
जिस रात तुमने मुझे अपनी बाहों में लिया था। मुझमें क्या खराबी है?
मैंने कहा, "मुझे यकीन है कि यह पूरी तरह से मनोवैज्ञानिक मामला है। समय दीजिए। कोई जल्दी नहीं है।"
नाओको ने कहा, "मेरी सारी समस्याएं पूरी तरह से मनोवैज्ञानिक हैं। अगर मैं कभी ठीक न हो पाऊं तो क्या होगा? अगर मैं जीवन भर कभी सेक्स न कर पाऊं तो क्या होगा?"
क्या तुम मुझे पहले की तरह ही प्यार करते रहोगे? क्या तुम्हारे लिए हमेशा हाथ और होंठ ही काफी होंगे? या फिर तुम दूसरी लड़कियों के साथ सोकर अपनी यौन समस्या का समाधान करोगे?
मैंने कहा, "मैं जन्म से ही आशावादी हूं।"
नाओको बिस्तर पर उठ बैठी और एक टी-शर्ट पहन ली। उसने ऊपर से एक फलालैन की शर्ट पहन ली।

इसके ऊपर से गुजरते हुए, उसने अपनी जींस पहन ली। मैंने भी अपने कपड़े पहन लिए।
"मुझे इसके बारे में सोचने दो," नाओको ने कहा। "और तुम भी इसके बारे

में सोचो।"
"मैं करूँगा," मैंने कहा। "और होंठों की बात करें तो, तुमने अभी-अभी उनके साथ जो किया वह शानदार था।"
उसका चेहरा थोड़ा लाल हो गया और उसने हल्की सी मुस्कान दी। "किज़ुकी भी यही कहा करती थी।"
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "मेरी और उसकी पसंद और राय लगभग एक जैसी थी।"
हम रसोई की मेज पर आमने-सामने बैठे कॉफी पी रहे थे और पुराने दिनों की बातें कर रहे थे। वह किज़ुकी के बारे में ज़्यादा बात करने लगी थी। वह हिचकिचाती और सोच-समझकर बोलती। बीच-बीच में बर्फ गिरती और रुक जाती। मैं वहाँ तीन दिन रहा, आसमान बिल्कुल साफ नहीं हुआ। जाते हुए मैंने कहा, "मुझे लगता है मैं मार्च में वापस आ सकता हूँ।" मैंने अपने विंटर कोट के साथ उसे आखिरी बार गले लगाया और उसके होंठों पर चुंबन किया। "अलविदा।"
उसने कहा।

1970 - एक बिल्कुल नया साल - आया और इसने मेरी किशोरावस्था का अंत कर दिया। अब मैं एक बिल्कुल नई दुनिया में कदम रख सकता था। फिर परीक्षाओं का समय आया और मैंने इन्हें अपेक्षाकृत आसानी से पास कर लिया। अगर आपके पास करने के लिए कुछ और न हो और आप अपना सारा समय व्याख्यानों में बिताते हों, तो साल के अंत की परीक्षाओं को पास करने के लिए किसी विशेष कौशल की आवश्यकता नहीं होती।
हालांकि, छात्रावास में कुछ समस्याएं खड़ी हो गईं। एक राजनीतिक गुट में सक्रिय कुछ लड़कों ने अपने हेलमेट और लोहे के पाइप अपने कमरों में

छिपा रखे थे। छात्रावास प्रमुख के संरक्षण में रहने वाले कुछ बेसबॉल खिलाड़ियों के साथ उनकी झड़प हो गई, जिसके परिणामस्वरूप उनमें से दो घायल हो गए और छह को निष्कासित कर दिया गया। इस घटना का असर लंबे समय तक महसूस किया गया, जिससे लगभग हर दिन छोटी-मोटी झड़पें होने लगीं। छात्रावास का माहौल घुटन भरा था और लोग तनाव में थे। मैं खुद एक बेसबॉल खिलाड़ी के हाथों पिटने ही वाला था कि नागासावा ने हस्तक्षेप किया और मामला शांत कर दिया। खैर, अब मेरे लिए वहां से निकलने का समय आ गया था।
286

जब मेरी ज़्यादातर परीक्षाएँ खत्म हो गईं, तो मैंने गंभीरता से एक फ्लैट की तलाश शुरू कर दी। एक हफ्ते की खोज के बाद, मुझे किचिज़ोजी के बाहरी इलाके में एक सही जगह मिल गई। जगह भले ही सुविधाजनक न हो, लेकिन यह एक घर था: एक स्वतंत्र घर - सचमुच एक बढ़िया खोज। मूल रूप से यह किसी माली की झोपड़ी या किसी अन्य प्रकार की कुटिया रही होगी, जो एक बड़े भूखंड के कोने में अकेली खड़ी थी, और मुख्य घर से एक बड़े उपेक्षित बगीचे द्वारा अलग थी। मकान मालिक सामने के गेट का इस्तेमाल करता था और मैं पीछे के गेट का, जिससे मुझे अपनी निजता बनाए रखने में मदद मिलती थी। इसमें एक अच्छा-खासा कमरा, एक छोटी रसोई और बाथरूम, और एक बहुत बड़ा कोठरी था।

इसमें बगीचे की ओर खुलने वाला एक बरामदा भी था। एक प्यारे बुजुर्ग दंपति ने घर को बाज़ार मूल्य से काफी कम किराए पर लिया था, इस शर्त पर कि अगर उनका पोता टोक्यो आने का फैसला करता है तो किरायेदार अगले साल घर खाली करने के लिए तैयार रहे। उन्होंने मुझे आश्वासन

दिया कि मैं वहां अपनी इच्छानुसार रह सकता हूँ; वे कोई मांग नहीं करेंगे। नागासावा ने मुझे सामान शिफ्ट करने में मदद की। उन्होंने मेरा सामान ले जाने के लिए एक वैन का इंतजाम किया और जैसा वादा किया था, उन्होंने मुझे अपना फ्रिज, टीवी और बड़ा थर्मस दे दिया। शायद अब उन्हें इनकी ज़रूरत न हो, लेकिन मेरे लिए ये बिल्कुल सही थे। उन्हें खुद दो दिन बाद मीता मोहल्ले के एक फ्लैट में शिफ्ट होना था।

"मुझे लगता है कि हम लंबे समय तक एक-दूसरे से नहीं मिलेंगे," उसने मुझसे विदा लेते हुए कहा, "इसलिए अपना ख्याल रखना। मुझे पूरा यकीन है कि सालों बाद हम किसी अनजान जगह पर फिर मिलेंगे।"

मैंने कहा, "मैं तो अभी से इसके लिए उत्सुक हूं।"

"और उस समय जब हमने लड़कियों को बदला, तो अजीब दिखने वाली लड़की कहीं बेहतर थी।"

“बिल्कुल सही,” मैंने हंसते हुए कहा। “लेकिन खैर, नागासावा, हात्सुमी का ख्याल रखना। उसके जैसी अच्छी लड़कियां मिलना मुश्किल है। और वो दिखने में जितनी लगती है, उससे कहीं ज्यादा नाजुक है।”

"हाँ, मुझे पता है," उसने सिर हिलाते हुए कहा। "इसीलिए तो मैं उम्मीद कर रहा था कि मेरे काम खत्म होने के बाद तुम उसे ले जाओगे। तुम दोनों मिलकर 287 की जोड़ी बनाओगे।"

महान जोड़ी।"

"हाँ, बिल्कुल!" मैंने कहा।

"मज़ाक कर रहा था," नागासावा ने कहा। "खैर, खुश रहो। मुझे लगता है कि तुम्हारे रास्ते में बहुत सारी मुश्किलें आने वाली हैं, लेकिन तुम बड़े जिद्दी हो, मुझे यकीन है कि तुम उनसे निपट लोगे। क्या मैं तुम्हें एक सलाह दूं?"

"आगे बढ़ो।"
"खुद पर तरस मत खाओ," उसने कहा। "ऐसा सिर्फ बेवकूफ लोग करते हैं।"
मैंने कहा, "मैं इसे ध्यान में रखूंगा।" हमने हाथ मिलाया और अपने-अपने रास्ते चले गए, वह अपनी नई दुनिया की ओर और मैं अपने दलदल की ओर।

नए घर में जाने के तीन दिन बाद मैंने नाओको को चिट्ठी लिखी। मैंने अपने नए घर के बारे में बताया और कहा कि हॉस्टल के उन बेवकूफों और उनकी सारी मूर्खतापूर्ण बातों से दूर होकर मुझे कितनी राहत मिली है। अब मैं नए नजरिए से अपनी नई जिंदगी शुरू कर सकती थी।

मेरी खिड़की से एक बड़ा बगीचा खुलता है, जो पड़ोस की सभी बिल्लियों का मिलन स्थल है। मुझे बरामदे में लेटकर उन्हें देखना अच्छा लगता है। मुझे नहीं पता कि उनमें से कितनी बिल्लियाँ एक साथ इकट्ठा होती हैं, लेकिन यह बिल्लियों का एक बड़ा झुंड है। वे समूह में धूप सेंकती हैं। मुझे नहीं लगता कि वे मुझे यहाँ रहते देखकर खुश हैं, लेकिन एक बार जब मैंने पनीर का एक पुराना टुकड़ा रखा, तो उनमें से कुछ चुपके से आईं और उसे कुतरने लगीं। शायद जल्द ही वे मेरी दोस्त बन जाएँगी। इस झुंड में एक धारीदार नर बिल्ली है जिसके कान आधे खाए हुए हैं। यह देखकर आश्चर्य होता है कि वह मेरे पुराने छात्रावास के हेड से कितना मिलता-जुलता है। मुझे लगता है कि वह किसी भी दिन झंडा फहराना शुरू कर देगा।
मैं यहाँ विश्वविद्यालय से काफी दूर हूँ, लेकिन तीसरे साल में मेरी सुबह की क्लासें कम हो जाएँगी, इसलिए कोई दिक्कत नहीं होगी। ट्रेन में पढ़ने का

समय मिलने से शायद और भी अच्छा हो जाए। अब मुझे बस यहाँ कोई आसान काम ढूंढना है जिसे मैं हफ्ते में तीन-चार दिन कर सकूँ। फिर मैं अपनी भागदौड़ भरी जिंदगी में वापस लौट जाऊँगा।
मैं जल्दबाजी नहीं करना चाहता, लेकिन अप्रैल नए काम शुरू करने के लिए साल का अच्छा समय होता है, और मुझे लगता है कि हमारे लिए सबसे अच्छा यही होगा कि हम 288

फिर हम साथ रहने लगेंगे। अगर सब ठीक रहा तो तुम दोबारा यूनिवर्सिटी भी जा सकती हो। अगर साथ रहने में कोई दिक्कत हुई तो मैं तुम्हारे लिए आस-पड़ोस में एक फ्लैट ढूंढ दूंगी। सबसे ज़रूरी बात ये है कि हम हमेशा एक-दूसरे के पास रहें। ज़रूरी नहीं कि बसंत का मौसम ही हो। अगर तुम्हें गर्मी का मौसम बेहतर लगे तो मुझे कोई आपत्ति नहीं।
बस मुझे बता देना कि तुम क्या सोच रहे हो, ठीक है?
मैं कुछ समय के लिए काम पर थोड़ा अतिरिक्त समय देने की योजना बना रहा हूँ। ताकि मैं अपने स्थानांतरण के खर्चों को पूरा कर सकूँ। अकेले रहने के बाद मुझे किसी न किसी चीज़ के लिए अच्छी-खासी रकम की ज़रूरत पड़ेगी: बर्तन, प्लेटें, वगैरह। मार्च में मैं पूरी तरह से फ्री हो जाऊँगा और आपसे मिलने ज़रूर आना चाहूँगा। आपके लिए कौन सी तारीखें सबसे अच्छी रहेंगी? मैं उसी समय क्योटो की यात्रा की योजना बना लूँगा। आपसे मिलने और आपके जवाब का इंतज़ार रहेगा।

अगले कुछ दिन मैंने पास के किचिज़ोजी शॉपिंग डिस्ट्रिक्ट में ज़रूरत का सामान खरीदने में बिताए और घर पर अपने लिए सादा खाना बनाना शुरू कर दिया। मैंने पास के एक लकड़ी के गोदाम से कुछ तख्ते खरीदे और उन्हें अपने हिसाब से कटवाकर एक डेस्क बना ली। मैंने सोचा कि मैं उस

पर बैठकर पढ़ाई कर सकूँगी और फिलहाल वहीं बैठकर खाना भी खाऊँगी। मैंने कुछ अलमारियाँ भी बनाईं और तरह-तरह के मसाले भी ले आई। एक सफ़ेद बिल्ली, जिसकी उम्र शायद छह महीने थी, मुझे पसंद करने लगी और मेरे घर आकर खाने लगी। मैंने उसका नाम सीगल रख दिया।

जब मेरा रहने का इंतज़ाम कुछ हद तक हो गया, तो मैं शहर गया और एक पेंटर के सहायक के तौर पर अस्थायी नौकरी ढूंढ ली। इस तरह मैंने पूरे दो हफ्ते काम किया। तनख्वाह अच्छी थी, लेकिन काम बहुत मुश्किल था और धुएं से मेरा सिर चकरा जाता था। हर दिन काम के बाद मैं किसी सस्ते रेस्टोरेंट में खाना खाता, बीयर पीता, घर जाकर बिल्ली के साथ खेलता और फिर गहरी नींद सो जाता। इस दौरान नाओको की तरफ से कोई जवाब नहीं आया।

मैं पेंटिंग में पूरी तरह डूबी हुई थी कि अचानक मुझे मिदोरी की याद आ गई। मुझे एहसास हुआ कि उससे करीब तीन हफ्तों से कोई संपर्क नहीं हुआ था और मैंने उसे यह भी नहीं बताया था कि मैं दूसरी जगह चली गई हूँ। मैंने उससे बस इतना कहा था कि मैं कहीं और जाने की सोच रही हूँ, और उसने कहा था, "ओह, सच में?" और उसके बाद हमारी कोई बात नहीं हुई थी।

289

मैं एक टेलीफोन बूथ पर गया और उसका नंबर डायल किया। फोन उठाने वाली महिला शायद उसकी बहन थी। जब मैंने उसे अपना नाम बताया, तो उसने कहा...

"बस एक मिनट", लेकिन मिदोरी ने फोन नहीं उठाया।

फिर वो बहन, या जो भी वो थी, फोन पर वापस आई। "मिडोरी कहती है

कि वो तुमसे बात करने के लिए बहुत गुस्से में है। तुम अभी-अभी चली गई और उससे कुछ भी नहीं कहा, है ना? बस गायब हो गई और उसे बताया भी नहीं कि तुम कहाँ जा रही हो, है ना? अब तुमने उसे बुरी तरह से गुस्सा दिला दिया है। और एक बार गुस्सा आ जाए तो फिर वैसे ही बनी रहती है। जैसे कोई जानवर हो।"

"देखिए, क्या आप उसे फोन पर बात करवा सकते हैं? मैं समझा सकता हूँ।"

"वह कहती है कि वह कोई स्पष्टीकरण नहीं सुनना चाहती।"

"तो क्या मैं आपको समझा सकता हूँ? मुझे ऐसा करते हुए बुरा लग रहा है, लेकिन क्या आप बस सुन कर उसे बता सकते हैं कि मैंने क्या कहा?"

"मैं नहीं! खुद करो। तुम किस तरह के आदमी हो? यह तुम्हारी जिम्मेदारी है, इसलिए इसे करो, और सही तरीके से करो।"

यह नामुमकिन था। मैंने उसे धन्यवाद कहा और फोन काट दिया। मिदोरी के गुस्से के लिए मैं उसे दोष नहीं दे सकती थी। घर बदलने, मरम्मत करने और अतिरिक्त पैसे कमाने के चक्कर में मैंने उसके बारे में सोचा तक नहीं था। यहाँ तक कि नाओको का ख्याल भी मेरे मन में नहीं आया था। यह मेरे लिए कोई नई बात नहीं थी। जब भी मैं किसी काम में लग जाती हूँ, तो बाकी सब कुछ भूल जाती हूँ।

लेकिन फिर मैंने सोचना शुरू किया कि अगर परिस्थिति उलट जाती और मिदोरी मुझे बिना बताए या तीन सप्ताह तक मुझसे संपर्क किए बिना कहीं चली जाती तो मुझे कैसा लगता। मुझे बहुत दुख होता।

मुझे बहुत दुख हुआ, इसमें कोई शक नहीं। नहीं, हम प्रेमी नहीं थे, लेकिन एक तरह से हमने एक-दूसरे के सामने अपने दिल की बात इतनी गहराई से रखी थी जितनी प्रेमी भी नहीं रखते। यह सोचकर मुझे बहुत दुख हुआ। किसी ऐसे व्यक्ति को दुख पहुँचाना कितना भयानक होता है जिसकी

आप सच में परवाह करते हैं - और वह भी अनजाने में।
काम से घर आते ही मैं अपनी नई डेस्क पर बैठ गया और मिदोरी को चिट्ठी लिखी। मैंने उसे अपने दिल की बात पूरी ईमानदारी से बताई। मैंने बिना किसी स्पष्टीकरण या बहाने के, अपनी लापरवाही और असंवेदनशीलता के लिए माफ़ी मांगी। मैंने लिखा, "मुझे तुम्हारी बहुत याद आ रही है। मैं तुमसे जल्द से जल्द मिलना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरा नया घर देखो। कृपया 290 पर चिट्ठी लिखो।"

मैंने कहा, "मैं," और मैंने पत्र को विशेष डाक से भेज दिया।
इसका जवाब कभी नहीं आया।
यह एक अजीब वसंत की शुरुआत थी। मैंने पूरी छुट्टियाँ चिट्ठियों का इंतज़ार करते हुए बिताईं। मैं कहीं घूमने नहीं जा सकी, अपने माता-पिता से मिलने घर नहीं जा सकी, यहाँ तक कि कोई पार्ट-टाइम नौकरी भी नहीं कर सकी क्योंकि पता नहीं कब नाओको की चिट्ठी आ जाए जिसमें वो मुझे किसी तारीख को मिलने बुलाए। दोपहरें मैं पास के किचिज़ोजी शॉपिंग डिस्ट्रिक्ट में बिताती, डबल शो देखती या किसी जैज़ कैफ़े में पढ़ती। मैं किसी से नहीं मिली और लगभग किसी से बात भी नहीं की। और हफ्ते में एक बार नाओको को चिट्ठी लिखती। मैंने उसे कभी नहीं बताया कि मैं जवाब की उम्मीद कर रही हूँ। मैं उस पर किसी भी तरह का दबाव नहीं डालना चाहती थी। मैं उसे अपने पेंटिंग के काम के बारे में, सीगल के बारे में, बगीचे में खिले आड़ू के फूलों के बारे में, टोफू बेचने वाली अच्छी बूढ़ी औरत के बारे में, स्थानीय रेस्टोरेंट की बदतमीज़ बूढ़ी औरत के बारे में, और अपने लिए बनाए गए खाने के बारे में बताती। लेकिन फिर भी, उसने कभी चिट्ठी नहीं लिखी।
जब भी मैं पढ़ने या रिकॉर्ड सुनने से ऊब जाता था, तो बगीचे में थोड़ा

काम कर लेता था। मैंने अपने मकान मालिक से एक रेक, झाड़ू और प्रूनिंग कैंची उधार ली और खरपतवार निकालने और झाड़ियों की छंटाई करने में अपना समय बिताया। बगीचे को सुंदर बनाने में ज्यादा मेहनत नहीं लगती थी। एक बार मकान मालिक ने मुझे चाय पर बुलाया, तो हम मुख्य घर के बरामदे में बैठकर हरी चाय पीते और चावल के क्रैकर्स खाते हुए हल्की-फुल्की बातें करने लगे। उन्होंने बताया कि सेवानिवृत्ति के बाद उन्हें एक बीमा कंपनी में नौकरी मिल गई थी, लेकिन उन्होंने वह नौकरी छोड़ दी थी।

कुछ वर्षों बाद, अब वह आराम से जीवन व्यतीत कर रहे थे। घर और ज़मीन लंबे समय से उनके परिवार की संपत्ति थी, उनके बच्चे बड़े और आत्मनिर्भर हो चुके थे, और वे बिना काम किए भी सुखमय वृद्धावस्था बिता सकते थे। यही कारण था कि वे और उनकी पत्नी हमेशा साथ-साथ यात्रा करते थे।

मैंने कहा, "यह अच्छा है।"

"नहीं, ऐसा नहीं है," उसने जवाब दिया। "यात्रा करना बिल्कुल भी मजेदार नहीं है। मुझे काम करना ज्यादा पसंद है।"

उन्होंने कहा कि उन्होंने बगीचे को जंगली रूप से बढ़ने दिया, क्योंकि वहाँ कोई सभ्य 291 नहीं थे।

उस इलाके में माली काम नहीं करते थे और उन्हें एलर्जी हो गई थी, जिसकी वजह से उनके लिए खुद काम करना नामुमकिन था। घास काटने पर उन्हें छींक आती थी।

चाय खत्म होने के बाद, उन्होंने मुझे एक गोदाम दिखाया और कहा कि मैं अंदर जो कुछ भी पाऊं, उसका इस्तेमाल कर सकता हूं, एक तरह से बागवानी के लिए धन्यवाद के तौर पर। उन्होंने कहा, "हमें इनमें से किसी

भी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, इसलिए बेझिझक इस्तेमाल करें।"
और सच में वह जगह तरह-तरह की चीजों से भरी पड़ी थी - एक पुराना लकड़ी का बाथटब, बच्चों का स्विमिंग पूल, बेसबॉल बैट। मुझे एक पुरानी साइकिल, दो कुर्सियों वाली एक सुविधाजनक डाइनिंग टेबल, एक दर्पण और एक गिटार मिली। मैंने कहा, "अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो मैं इन्हें उधार लेना चाहूंगा।"
"बेझिझक," उन्होंने फिर कहा।
मैंने पूरा दिन साइकिल पर काम करते हुए बिताया: जंग साफ किया, बेयरिंग में तेल डाला, टायरों में हवा भरी, गियर ठीक किए और फिर उसे साइकिल मरम्मत की दुकान पर ले जाकर नया गियर केबल लगवाया। काम खत्म होते-होते साइकिल बिलकुल नई जैसी लग रही थी। मैंने मेज पर जमी धूल की मोटी परत साफ की और उस पर वार्निश का नया कोट लगाया। मैंने गिटार के तार बदले और उसके टूटे हुए हिस्से को चिपकाया। मैंने ट्यूनिंग पेग्स पर लगे जंग को वायर ब्रश से साफ किया और उन्हें ठीक किया। गिटार उतना अच्छा तो नहीं बना था, लेकिन कम से कम अब वो सुर में बजने लगा था। मुझे एहसास हुआ कि स्कूल के बाद से मैंने कभी गिटार नहीं पकड़ा था। मैं बरामदे में बैठा और जितना हो सका, द ड्रिफ्टर्स का गाना "अप ऑन द रूफ" बजाने की कोशिश की। मुझे यह देखकर हैरानी हुई कि मुझे अभी भी ज़्यादातर कॉर्ड्स याद थे।
इसके बाद मैंने लकड़ी के कुछ तख्ते लिए और उनसे अपने लिए एक चौकोर लेटरबॉक्स बनाया।
मैंने उसे लाल रंग से रंगा, उस पर अपना नाम लिखा और अपने दरवाजे के बाहर रख दिया। 3 अप्रैल तक, मेरे बॉक्स में केवल एक ही डाक आई, वो भी छात्रावास से भेजी गई: मेरे स्कूल की पुनर्मिलन समिति का एक नोटिस। कक्षा पुनर्मिलन से मेरा कोई वास्ता नहीं था। मैं किज़ुकी के साथ

उसी कक्षा में पढ़ता था। मैंने उसे कूड़ेदान में फेंक दिया।
4 अप्रैल की दोपहर को मुझे बॉक्स में एक पत्र मिला। उसके पीछे रीको इशिडा लिखा था। मैंने अपनी 292 नंबर की सुई से सील पर एक साफ-सुथरा कट लगाया।

मैंने कैंची उठाई और उसे पढ़ने के लिए बरामदे में चली गई। मुझे पहले से ही आभास हो रहा था कि यह कोई अच्छी खबर नहीं होगी, और मेरा आभास सही निकला।
सबसे पहले रीको ने मुझे जवाब देने में इतना लंबा इंतजार कराने के लिए माफी मांगी।
नाओको ने कहा कि वह मुझे पत्र लिखने के लिए संघर्ष कर रही थी, लेकिन वह कभी भी पत्र को अंत तक पूरा नहीं लिख पाती थी।

मैंने उसकी तरफ से आपको जवाब भेजने की पेशकश की थी, लेकिन हर बार जब मैंने उसे बताया कि आपको इंतज़ार करवाना कितना गलत है, तो उसने यही कहा कि यह बहुत ही निजी मामला है, वह खुद आपको लिखेगी, इसीलिए मैंने पहले नहीं लिखा। मुझे सच में बहुत खेद है। आशा है आप मुझे क्षमा कर देंगे।
मुझे पता है कि जवाब का इंतज़ार करते हुए आपका पूरा महीना मुश्किल भरा रहा होगा, लेकिन यकीन मानिए, नाओको के लिए भी यह महीना उतना ही कठिन रहा है। कृपया उसकी हालत समझने की कोशिश कीजिए। मुझे पूरी ईमानदारी से कहना पड़ रहा है कि उसकी हालत ठीक नहीं है। वह अपने पैरों पर खड़े होने की पूरी कोशिश कर रही है, लेकिन अब तक नतीजे अच्छे नहीं रहे हैं।
अब पीछे मुड़कर देखने पर मुझे समझ आता है कि उसकी समस्या का

पहला लक्षण पत्र लिखने की क्षमता का खत्म होना था। यह नवंबर के अंत या दिसंबर की शुरुआत में हुआ। फिर उसे अजीब-अजीब आवाजें सुनाई देने लगीं।
जब भी वह कोई पत्र लिखने की कोशिश करती, उसे लोगों की बातें सुनाई देतीं, जिससे उसके लिए लिखना नामुमकिन हो जाता था। आवाज़ें उसके शब्दों के चुनाव में बाधा डालती थीं। आपके दूसरे दौरे तक तो स्थिति इतनी खराब नहीं थी, इसलिए मैंने इसे गंभीरता से नहीं लिया। हम सभी के लिए, इस तरह के लक्षण कमोबेश चक्रों में आते-जाते रहते हैं। उसके मामले में, आपके जाने के बाद ये लक्षण काफी गंभीर हो गए। अब उसे सामान्य बातचीत करने में भी परेशानी हो रही है। उसे बोलने के लिए सही शब्द नहीं मिल रहे हैं, और इससे वह बुरी तरह भ्रमित और भयभीत हो जाती है। साथ ही, उसे सुनाई देने वाली आवाज़ें भी बदतर होती जा रही हैं।
हम हर दिन एक विशेषज्ञ के साथ सत्र करते हैं। नाओको, डॉक्टर और मैं बैठकर बातें करते हैं और यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि उसके शरीर का कौन सा हिस्सा टूटा हुआ है। मुझे यह विचार आया कि 293 जोड़ना अच्छा रहेगा।

अगर संभव हो तो आपको हमारे किसी एक सेशन में आने को कहा गया, और डॉक्टर इसके पक्ष में थे, लेकिन नाओको इसके खिलाफ थीं। मैं आपको उनका कारण बिल्कुल स्पष्ट रूप से बता सकती हूँ: "जब मैं उनसे मिलूँ तो मैं चाहती हूँ कि मेरा शरीर इन सब चीजों से पूरी तरह मुक्त हो।" मैंने उनसे कहा कि समस्या यह नहीं थी; समस्या तो उन्हें जल्द से जल्द ठीक करना था, और मैंने पूरी कोशिश की, लेकिन उन्होंने अपना मन नहीं बदला।

मुझे लगता है मैंने आपको एक बार समझाया था कि यह कोई विशेष अस्पताल नहीं है।
हमारे पास यहाँ चिकित्सा विशेषज्ञ तो हैं ही, और वे प्रभावी उपचार भी प्रदान करते हैं, लेकिन गहन चिकित्सा एक अलग बात है। इस स्थान का उद्देश्य एक ऐसा प्रभावी वातावरण बनाना है जिसमें रोगी स्वयं अपना उपचार कर सके, और सही मायने में इसमें चिकित्सा उपचार शामिल नहीं है। इसका अर्थ यह है कि यदि नाओको की हालत और बिगड़ती है, तो संभवतः उन्हें किसी अन्य अस्पताल या चिकित्सा केंद्र में स्थानांतरित करना पड़ेगा। व्यक्तिगत रूप से, मुझे यह बहुत कष्टदायक लगेगा, लेकिन हमें ऐसा करना ही होगा। इसका यह अर्थ नहीं है कि वह अस्थायी अवकाश पर उपचार के लिए यहाँ वापस नहीं आ सकतीं। या इससे भी बेहतर, वह पूरी तरह से ठीक हो सकती हैं और अस्पतालों से उनका सारा काम समाप्त हो सकता है। किसी भी स्थिति में, हम अपनी ओर से हर संभव प्रयास कर रहे हैं, और नाओको भी अपनी ओर से हर संभव प्रयास कर रही हैं। इस बीच आप जो सबसे अच्छा कर सकते हैं वह है उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करना और उन्हें पत्र भेजते रहना।

यह 31 मार्च की तारीख का पत्र था। इसे पढ़ने के बाद, मैं बरामदे में ही बैठा रहा और अपनी नज़रें बगीचे की ओर घुमाता रहा, जो अब वसंत की ताजगी से भरा हुआ था। वहाँ एक पुराना चेरी का पेड़ खड़ा था, जिसके फूल अपनी पूरी सुंदरता के चरम पर पहुँच चुके थे। एक हल्की हवा चल रही थी, और दिन के उजाले ने हर चीज़ को अपना अजीब सा धुंधला, धुएँ जैसा रंग दे दिया था। कहीं से एक सीगल आती हुई दिखी, और कुछ देर तक बरामदे की लकड़ियों को खरोंचने के बाद, वह मेरे पास लेट गई और सो गई।

मुझे पता था कि मुझे गंभीरता से सोचना चाहिए, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि कैसे सोचूँ। और सच कहूँ तो, सोचना मेरी सबसे आखिरी इच्छा थी। वो समय जल्द ही आ जाएगा जब मेरे पास कोई विकल्प नहीं बचेगा।

इस मामले में मेरी पसंद होगी, और जब वो समय आएगा तो मैं इस पर अच्छी तरह से सोच-विचार करने के लिए काफी समय लूंगा। लेकिन अभी नहीं। अभी नहीं।

मैंने पूरा दिन बगीचे को निहारते हुए, एक खंभे से टेक लगाकर और सीगल को सहलाते हुए बिताया। मैं पूरी तरह से थक चुकी थी।

दोपहर गहरी होती जा रही थी, गोधूलि बेला छाने लगी थी और बगीचे में नीली परछाइयाँ छा गई थीं। सीगल गायब हो गया, लेकिन मैं चेरी के फूलों को निहारता रहा। बसंत के धुंधलके में वे ऐसे लग रहे थे मानो घाव पर से मांस फूट पड़ा हो। बगीचा सड़े हुए मांस की मीठी, भारी दुर्गंध से भर गया। और तभी मुझे नाओको के शरीर की याद आई। नाओको का सुंदर शरीर अँधेरे में मेरे सामने पड़ा था, अनगिनत कलियाँ उसकी त्वचा से फूट रही थीं, हरी और लगभग न के बराबर हवा में काँप रही थीं। इतना सुंदर शरीर इतना बीमार क्यों था? मैंने सोचा। उन्होंने नाओको को अकेला क्यों नहीं छोड़ दिया?

मैं अंदर गई और पर्दे खींच लिए, लेकिन घर के अंदर भी बसंत की गंध से छुटकारा पाना नामुमकिन था। यह ज़मीन से लेकर ऊपर तक हर जगह फैली हुई थी। लेकिन अब बसंत की गंध से मुझे बस सड़ी हुई बदबू ही याद आ रही थी। पर्दों के पीछे बंद होकर, मुझे बसंत से घृणा होने लगी। मुझे नफरत थी कि बसंत मेरे लिए क्या लेकर आने वाला है; मुझे नफरत थी उस सुस्त, धड़कते दर्द से जो इसने मेरे अंदर जगाया था। मैंने अपने

जीवन में कभी किसी चीज़ से इतनी तीव्र घृणा नहीं की थी।
उसके बाद मैंने पूरे तीन दिन लगभग समुद्र की तलहटी पर ही बिताए। मुझे लोगों की बातें मुश्किल से सुनाई दे रही थीं, और उन्हें भी मेरी बातें समझने में उतनी ही परेशानी हो रही थी। मेरा पूरा शरीर किसी झिल्ली से घिरा हुआ सा लग रहा था, जिसने मुझे बाहरी दुनिया से पूरी तरह अलग कर दिया था। मैं उन्हें छू नहीं सकता था, और वे भी...
वे मुझे छू भी नहीं सकते थे। मैं पूरी तरह से असहाय था, और जब तक मैं उस अवस्था में रहा, "वे" मुझ तक पहुँचने में असमर्थ थे।
मैं दीवार से टेक लगाकर बैठा था, छत को घूर रहा था। जब भूख लगती तो आस-पास जो भी मिलता उसे थोड़ा-थोड़ा खा लेता, पानी पीता और जब उदासी हावी हो जाती तो व्हिस्की पीकर बेहोश हो जाता। मैंने न नहाया, न दाढ़ी बनाई। इस तरह तीन दिन बीत गए।

6 अप्रैल को मिदोरी का एक पत्र आया। उसने मुझे 10 तारीख को कैंपस में मिलने और दोपहर के भोजन पर साथ चलने का निमंत्रण दिया, क्योंकि उस दिन हमें व्याख्यानों के लिए पंजीकरण कराना था। मैंने तुम्हें पत्र लिखने में जितना हो सके देरी की, जिससे अब हमारी बराबरी हो गई है, तो चलो सुलह कर लेते हैं। मुझे यह स्वीकार करना होगा, मुझे तुम्हारी याद आ रही है।
मैंने चिट्ठी को बार-बार पढ़ा, कुल मिलाकर चार बार, फिर भी मैं समझ नहीं पाई कि वह मुझसे क्या कहना चाह रही थी। आखिर इसका मतलब क्या हो सकता है? मेरा दिमाग इतना उलझ गया था कि मैं एक वाक्य को दूसरे से जोड़ नहीं पा रही थी। दाखिले के दिन उससे मिलने से हम

"बराबर" कैसे हो जाएंगे? वह मेरे साथ "लंच" क्यों करना चाहती थी? मैं सचमुच अपना आपा खो रही थी। मेरा दिमाग सुस्त पड़ गया था, जैसे ज़मीन के नीचे उगने वाले पौधे की गीली जड़ें। लेकिन किसी तरह मुझे पता था कि मुझे इससे बाहर निकलना होगा। और तभी नागासावा के वे शब्द याद आए: "खुद पर तरस मत खाओ। ऐसा सिर्फ बेवकूफ लोग करते हैं।"

"ठीक है, नागासावा। एकदम सही," मैंने मन ही मन सोचा। मैंने एक गहरी सांस ली और खड़ा हो गया।

मैंने हफ़्तों बाद पहली बार अपने कपड़े धोए, सार्वजनिक स्नानघर गया और दाढ़ी बनाई, अपना कमरा साफ़ किया, खाने-पीने का सामान खरीदा और अपने लिए एक अच्छा खाना बनाया, भूखी सीगल को खाना खिलाया, सिर्फ़ बीयर पी और 30 मिनट व्यायाम किया। दाढ़ी बनाते समय मैंने आईने में देखा कि मैं दुबला-पतला होता जा रहा हूँ। मेरी आँखें फटी रह गईं। मैं खुद को पहचान ही नहीं पा रहा था।

अगली सुबह मैं साइकिल पर लंबी सवारी के लिए निकला, और घर पर दोपहर का भोजन करने के बाद, मैंने रीको का पत्र एक बार फिर पढ़ा। फिर मैंने गंभीरता से सोचा कि मुझे आगे क्या करना चाहिए। रीको के पत्र से मुझे इतना दुख इसलिए हुआ था क्योंकि इसने नाओको के ठीक होने के मेरे आशावादी विश्वास को तोड़ दिया था। नाओको ने खुद मुझसे कहा था, "मेरी बीमारी आपकी सोच से कहीं ज्यादा गंभीर है: इसकी जड़ें बहुत गहरी हैं।" और रीको ने मुझे चेतावनी दी थी कि आगे क्या होगा, यह कहना मुश्किल है। फिर भी, मैंने नाओको को दो बार देखा था, और मुझे लगा था कि वह ठीक हो रही है। मैंने मान लिया था कि एकमात्र समस्या यह थी कि क्या वह

उसे वास्तविक दुनिया में लौटने का साहस फिर से प्राप्त करना होगा, और यदि वह ऐसा करने में सफल हो जाती है, तो हम दोनों मिलकर काम कर सकते हैं और कुछ कर सकते हैं।

एक कोशिश करते हैं।

रेइको के पत्र ने उस कमज़ोर परिकल्पना पर बने मेरे काल्पनिक महल को चकनाचूर कर दिया, और अब वहाँ केवल एक भावहीन सपाट सतह ही बची थी। मुझे अपनी स्थिति को फिर से संवारने के लिए कुछ करना होगा। नाओको को उबरने में शायद लंबा समय लगेगा। और तब भी, वह निस्संदेह पहले से कहीं अधिक कमज़ोर और आत्मविश्वासहीन हो चुकी होगी। मुझे इस नई परिस्थिति के अनुरूप ढलना होगा। हालाँकि, मैं कितना भी मज़बूत क्यों न हो जाऊँ, इससे सारी समस्याएँ हल नहीं होंगी। मुझे इतना तो पता था। लेकिन मैं और कुछ नहीं कर सकता था: बस अपना हौसला बनाए रखूं और उसके ठीक होने का इंतजार करूं।

अरे, किज़ुकी, मैंने सोचा। तुम्हारे विपरीत, मैंने जीने का फैसला किया है - और जितना हो सके उतना बेहतर तरीके से जीने का। हाँ, तुम्हारे लिए मुश्किल था। खैर, मेरे लिए भी मुश्किल है। बहुत मुश्किल। और यह सब इसलिए क्योंकि तुमने आत्महत्या कर ली और नाओको को पीछे छोड़ दिया। लेकिन मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा। मैं कभी भी, कभी भी उससे मुंह नहीं मोड़ूँगा। सबसे पहले तो इसलिए कि मैं उससे प्यार करता हूँ, और इसलिए कि मैं उससे ज़्यादा मज़बूत हूँ। और मैं बस और मज़बूत होता रहूँगा।

मैं परिपक्व होऊंगा। मैं एक वयस्क बनूंगा। क्योंकि मुझे यही करना है। मैं हमेशा सोचता था कि अगर संभव हो तो मैं 17 या 18 साल का ही रहना चाहूंगा।

लेकिन अब ऐसा नहीं है। मैं अब किशोर नहीं हूँ। अब मुझमें ज़िम्मेदारी का

बोध है। मैं वो इंसान नहीं हूँ जो मैं तब था जब हम साथ में समय बिताते थे। अब मैं 20 साल का हूँ। और मुझे जीने के लिए कीमत चुकानी होगी।

"अरे यार, वातानाबे, तुम्हें क्या हो गया?" मिदोरी ने पूछा। "तुम तो बिल्कुल हड्डियों का ढांचा बन गए हो!"
"इतना बुरा, है ना?"

"मुझे यकीन है कि तुम अपनी उस शादीशुदा प्रेमिका के साथ कुछ ज्यादा ही मौज-मस्ती कर रहे हो।"
मैंने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया। "मैंने 297 के बाद से किसी लड़की के साथ संबंध नहीं बनाया है।"

अक्टूबर की शुरुआत में।"
"वाह! ये सच नहीं हो सकता। हम यहाँ छह महीने की बात कर रहे हैं!"
"तुमने सही सुना।"
"तो तुमने इतना वजन कैसे कम किया?" "बड़े होने से," मैंने कहा।
मिडोरी ने मेरे कंधों पर हाथ रखा और गुस्से भरी निगाहों से मेरी आँखों में देखा, जो जल्द ही एक प्यारी सी मुस्कान में बदल गई। "यह सच है," उसने कहा।
"कुछ तो अलग सा है। तुम बदल गए हो।"
मैंने तुमसे कहा था, मैं बड़ा हो गया हूँ। मैं अब वयस्क हूँ।
"तुम कमाल हो, तुम्हारा दिमाग जिस तरह से काम करता है," उसने सचमुच प्रभावित होकर कहा। "चलो खाना खाते हैं। मुझे बहुत भूख लगी है।"
हम साहित्य विभाग के पीछे एक छोटे से रेस्तरां में गए। मैंने लंच स्पेशल ऑर्डर किया और उसने भी वही किया। "हे वातानाबे, क्या तुम मुझसे

नाराज़ हो?" "किसलिए?"
"तुम्हें जवाब न देने के लिए, सिर्फ बदला लेने के लिए। क्या तुम्हें लगता है कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था? मतलब, तुमने माफी भी मांग ली थी।"
"हां, लेकिन शुरू में तो मेरी ही गलती थी। ऐसा ही होता है।"
"मेरी बहन कहती है कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। यह बहुत ही क्रूर और बचकाना था।"
"हाँ, लेकिन इससे तुम्हें अच्छा लगा होगा, है ना, इस तरह बदला लेने से?"
"अहां।"
"ठीक है, तो बात यहीं खत्म होती है।"
"तुम तो माफ करने वाले हो, है ना?" मिदोरी ने कहा। "लेकिन सच बताओ, वातानाबे, तुमने छह महीने से सेक्स नहीं किया है?"
"एक बार नहीं।"
"तो, उस समय जब तुमने मुझे सुलाया था, तब तुम सच में ऐसा चाहती होगी।"
"हां, मुझे लगता है मैंने किया।"
"लेकिन तुमने ऐसा नहीं किया, है ना?"
मैंने कहा, "देखो, तुम ही मेरे सबसे अच्छे दोस्त हो। मैं तुम्हें खोना नहीं चाहता।"
"तुम्हें पता है, अगर तुमने उस समय मुझ पर जबरदस्ती करने की कोशिश की होती, तो मैं विरोध नहीं कर पाती, मैं इतनी थकी हुई थी।"
"लेकिन मैं बहुत बड़ा और सख्त था," मैंने कहा।

मिडोरी मुस्कुराई और मेरी कलाई को छुआ। "उससे कुछ देर पहले ही मैंने तय कर लिया था कि मैं तुम पर पूरा भरोसा करूंगी। सौ प्रतिशत। इसी वजह से मैं इतनी शांति से सो पाई। मुझे पता था कि मैं ठीक रहूंगी, तुम्हारे साथ मैं सुरक्षित रहूंगी। और सच में, मैं बहुत गहरी नींद सोई, है ना?"

"तुमने बिल्कुल सही किया।"

दूसरी ओर, अगर आप मुझसे कहें, "हे मिदोरी, चलो इसे करते हैं।"

फिर सब कुछ बढ़िया हो जाएगा,' मैं शायद तुम्हारे साथ ऐसा करूँगी। अब, यह मत सोचो कि मैं तुम्हें बहकाने या चिढ़ाने की कोशिश कर रही हूँ। मैं बस पूरी ईमानदारी से अपने मन की बात कह रही हूँ।

"मैं जानता हूँ मुझे पता है।"

दोपहर का खाना खाते समय हमने एक-दूसरे को अपने नामांकन कार्ड दिखाए और पाया कि हमने दो एक जैसे कोर्स में दाखिला लिया था। तो अब मुझे उससे हफ्ते में कम से कम दो बार मिलना पड़ेगा। यह बात साफ होने के बाद, मिदोरी ने मुझे अपने रहने के इंतज़ाम के बारे में बताया। उसने कहा कि कुछ समय तक न तो उसे और न ही उसकी बहन को फ्लैट में रहने की आदत पड़ पाई, क्योंकि यह बहुत आसान था। उन्हें हमेशा से ही हर दिन पागलों की तरह भागदौड़ करने, बीमार लोगों की देखभाल करने, किताबों की दुकान में मदद करने और न जाने क्या-क्या करने की आदत थी।

"अब हमें इसकी आदत पड़ रही है," उसने कहा। "हमें हमेशा से ऐसे ही जीना चाहिए था - किसी और की ज़रूरतों की चिंता किए बिना, बस अपनी मर्ज़ी से जैसे मन करे वैसे जीना। शुरू में हम दोनों घबरा गए थे, जैसे हमारे शरीर ज़मीन से कुछ इंच ऊपर तैर रहे हों। यह अवास्तविक लग रहा था, जैसे असल ज़िंदगी ऐसी हो ही नहीं सकती।"

हम दोनों तनाव में थे, मानो किसी भी क्षण सब कुछ उलट-पुलट होने वाला हो।
मैंने मुस्कुराते हुए कहा, "दो चिंता करने वाले लोग।"
"दरअसल, अब तक जिंदगी हमारे साथ बहुत ही बेरहमी से पेश आई है।"
मिडोरी ने कहा, "लेकिन कोई बात नहीं। हम उससे अपना सारा बकाया वसूल लेंगे।"
मैंने कहा, "मुझे यकीन है कि तुम होगे, क्योंकि मैं तुम्हें जानता हूँ। लेकिन बताओ, तुम्हारी बहन आजकल क्या कर रही है?"
"उसकी एक सहेली ने कुछ समय पहले यह शानदार एक्सेसरीज़ की दुकान खोली थी 299

कुछ समय पहले। मेरी बहन हफ्ते में तीन बार वहाँ मदद करती है। बाकी समय वह खाना बनाना सीखती है, अपने मंगेतर के साथ डेट पर जाती है, सिनेमा जाती है, आराम करती है और बस ज़िंदगी का आनंद लेती है।
फिर मिदोरी ने मेरी नई जिंदगी के बारे में पूछा। मैंने उसे घर के लेआउट, बड़े बगीचे, सीगल नाम की बिल्ली और अपने मकान मालिक के बारे में बताया।
"क्या तुम मजे कर रहे हो?" उसने पूछा। "काफी हद तक," मैंने कहा।
"मुझे तो धोखा हो गया था," मिदोरी ने कहा।
"हां, और यह वसंत ऋतु भी है," मैंने कहा।
और तुमने वो शानदार पुलओवर पहना है जो तुम्हारी गर्लफ्रेंड ने तुम्हारे लिए बुना था।
अचानक चौंककर मैंने अपनी वाइन कलर की स्वेटर पर नजर डाली।
"आप कैसे जानते हो?"
"तुम तो बिल्कुल ईमानदार हो," मिदोरी ने कहा। "मैं तो बस अंदाज़ा लगा

रही हूँ! वैसे, तुम्हें क्या हुआ है?"
"मुझे नहीं पता। मैं थोड़ा उत्साह जगाने की कोशिश कर रहा हूँ।" "बस याद रखना, जीवन चॉकलेट के डिब्बे जैसा है।"

मैंने कुछ बार अपना सिर हिलाया और उसकी तरफ देखा। "शायद मैं इतनी समझदार नहीं हूँ, लेकिन कभी-कभी मुझे समझ ही नहीं आता कि तुम किस बारे में बात कर रही हो।"
"पता है, चॉकलेट के कई पैकेट आते हैं, जिनमें से कुछ आपको पसंद आते हैं और कुछ नहीं? आप अपनी पसंद की सारी चॉकलेट खा लेते हैं, और आखिर में सिर्फ वही बचती हैं जो आपको उतनी पसंद नहीं आतीं? जब भी कोई तकलीफ होती है, मैं हमेशा यही सोचती हूँ। अब मुझे बस इन्हें खत्म करना है, और सब ठीक हो जाएगा। ज़िंदगी चॉकलेट के डिब्बे जैसी है।"
"मुझे लगता है कि आप इसे एक दर्शन कह सकते हैं।"
"यह सच है। मैंने इसे अपने अनुभव से सीखा है।"

हम कॉफी पी रहे थे तभी दो लड़कियां अंदर आईं। मिदोरी उन्हें विश्वविद्यालय से जानती हुई लग रही थी। तीनों ने अपने नामांकन कार्डों की तुलना की और कई अलग-अलग बातें कीं: "300 अंक किस तरह के होते हैं?"

क्या तुम्हें जर्मन भाषा में दाखिला मिल गया? "कैंपस दंगों में फलां व्यक्ति घायल हो गया।"
"वाह, शानदार जूते हैं! आपने इन्हें कहाँ से खरीदा?" मैंने उनकी बात आधी-अधूरी सुनी, लेकिन ऐसा लगा जैसे उनकी टिप्पणियाँ दुनिया के दूसरे छोर से आ रही हों।

मैंने अपनी कॉफ़ी की चुस्की ली और दुकान की खिड़की से बाहर का नज़ारा देखा। यह विश्वविद्यालय में वसंत ऋतु का एक आम दृश्य था, क्योंकि नया साल शुरू होने वाला था: आसमान में हल्की धुंध छाई हुई थी, चेरी के पेड़ खिल रहे थे, और नए छात्र (जिन्हें देखते ही पहचाना जा सकता था) ढेर सारी नई किताबें लिए हुए थे। मुझे थोड़ी सी नींद आने लगी और मैं नाओको के बारे में सोचने लगी, जो इस साल फिर से अपनी पढ़ाई शुरू नहीं कर पा रही थी। खिड़की के पास एनीमोन फूलों से भरा एक छोटा सा गिलास रखा था।

जब बाकी दोनों अपनी मेज पर लौट गए, तो मैं और मिदोरी आस-पड़ोस में घूमने निकल गए। हमने कुछ पुरानी किताबों की दुकानों का दौरा किया, कुछ किताबें खरीदीं, एक और कैफे में जाकर एक और कप कॉफी पी, एक आर्केड में पिनबॉल खेला और एक पार्क की बेंच पर बैठकर बातें कीं - या यूं कहें कि मिदोरी बातें कर रही थी और मैं बस हल्की सी आवाज़ निकाल रहा था। जब उसने प्यास लगने की बात कही, तो मैं दौड़कर एक अखबार की दुकान पर गया और हम दोनों के लिए दो कोक खरीद लाया। वापस आकर देखा तो वह किसी लाइन वाले कागज पर बॉलपॉइंट पेन से कुछ लिख रही थी।

मैंने पूछा, "यह क्या है?"

"कुछ नहीं," उसने कहा।

"मुझे जाना होगा," उसने 3:30 बजे घोषणा की। "मुझे गिन्ज़ा में अपनी बहन से मिलना है।"

हम मेट्रो स्टेशन तक पैदल गए और फिर अलग-अलग दिशाओं में चले गए।

जाते समय मिदोरी ने कागज का वह टुकड़ा, जो अब चार हिस्सों में मुड़ा हुआ था, मेरी जेब में डाल दिया। "घर पहुँचकर इसे पढ़ लेना," उसने

कहा। मैंने इसे ट्रेन में पढ़ा।

मैं ये पत्र आपको तब लिख रहा हूँ जब आप ड्रिंक्स खरीदने गए हैं। ये मेरे जीवन में पहली बार है जब मैं किसी ऐसे व्यक्ति को पत्र लिख रहा हूँ जो मेरे बगल में बेंच पर बैठा है, लेकिन मुझे लगता है कि यही एक तरीका है जिससे मैं आप तक अपनी बात पहुँचा सकता हूँ।
मतलब, तुम मेरी बात बिल्कुल नहीं सुनते। क्या मैं सही कह रहा हूँ?
क्या तुम्हें एहसास है कि तुमने आज मेरे साथ बहुत बुरा किया है? तुमने कभी 301 नहीं किया

क्या आपने ध्यान दिया कि मेरा हेयरस्टाइल बदल गया है? मैं इसे संवारने में बहुत समय से लगी हुई थी, इसे लंबा करने की कोशिश कर रही थी, और आखिरकार, पिछले हफ्ते के अंत में, मैं इसे एक ऐसे स्टाइल में लाने में कामयाब हो गई जिसे आप सच में लड़कियों जैसा कह सकते हैं, लेकिन आपने कभी ध्यान ही नहीं दिया। यह काफी अच्छा लग रहा था, इसलिए मैंने सोचा कि जब आप मुझे इतने लंबे समय बाद पहली बार देखेंगे तो आपको थोड़ा झटका लगेगा, लेकिन आपको इसका एहसास भी नहीं हुआ। क्या आपको नहीं लगता कि यह बहुत बुरा है? मुझे यकीन है कि आपको यह भी याद नहीं होगा कि मैंने आज क्या पहना था। अरे, मैं एक लड़की हूँ! तो क्या हुआ अगर आपके दिमाग में कुछ चल रहा है? आप मुझे एक बार तो ठीक से देख ही सकते थे! आपको बस इतना कहना था, "प्यारे बाल", और मैं आपको लाखों विचारों में डूबे रहने के लिए माफ कर देती, लेकिन नहीं!
इसीलिए मैं तुमसे झूठ बोल रही हूँ। यह सच नहीं है कि मुझे गिन्ज़ा में अपनी बहन से मिलना है। मैं तुम्हारे घर पर रात बिताने की योजना बना

रही थी। मैं अपने पजामा भी साथ लाई थी। यह सच है। मेरे बैग में पजामा और टूथब्रश है। मैं कितनी बेवकूफ हूँ! मतलब, तुमने मुझे अपने नए घर को देखने के लिए बुलाया तक नहीं। चलो कोई बात नहीं, तुम अकेले रहना चाहते हो, तो मैं तुम्हें अकेला छोड़ देती हूँ। तुम जो चाहो सोच लो!

लेकिन मुझे गलत मत समझिए। मैं आपसे पूरी तरह से नाराज़ नहीं हूँ। मैं बस दुखी हूँ। जब मैं मुश्किलों में थी, तब आप मेरे प्रति बहुत दयालु थे, लेकिन अब जब आप मुश्किलों में हैं, तो ऐसा लगता है कि मैं आपके लिए कुछ भी नहीं कर सकती।

तुम अपनी उस छोटी सी दुनिया में ही सिमटे हुए हो, और जब मैं दरवाजा खटखटाने की कोशिश करता हूं, तो तुम बस एक पल के लिए ऊपर देखते हो और तुरंत वापस अंदर चले जाते हो।

अब मैं तुम्हें हमारे पेय पदार्थ लेकर वापस आते हुए देख रहा हूँ - चलते-चलते और सोचते हुए।

मुझे उम्मीद थी कि तुम गिर जाओगे, पर नहीं गिरे। अब तुम मेरे बगल में बैठकर कोक पी रहे हो। मुझे बस एक आखिरी उम्मीद थी कि तुम देखोगे और कहोगे, "अरे, तुम्हारे बाल बदल गए हैं!" पर नहीं। अगर तुमने ऐसा कहा होता, तो मैं ये चिट्ठी फाड़कर कहती: "चलो तुम्हारे घर चलते हैं। मैं तुम्हारे लिए बढ़िया खाना बनाऊंगी। और उसके बाद हम बिस्तर पर जाकर एक-दूसरे को गले लगाएंगे।" पर तुम तो लोहे की थाली जितने कठोर हो। अलविदा।

पुनश्च: अगली बार जब हम मिलें तो कृपया मुझसे बात मत करना।

किचिज़ोजी स्टेशन पर ट्रेन से उतरते ही मैंने मिदोरी के फ्लैट पर फोन किया, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। कुछ और करने को न होने के कारण, मैं आस-पड़ोस में इधर-उधर घूमकर पार्ट-टाइम काम ढूंढने लगा, जिसे मैं लेक्चर शुरू होने के बाद कर सकूँ। शनिवार और रविवार को मैं पूरे दिन खाली रहूँगा और सोमवार, बुधवार और गुरुवार को शाम पाँच बजे के बाद काम कर सकता हूँ; लेकिन अपने शेड्यूल के हिसाब से नौकरी ढूँढना आसान नहीं था। मैंने हार मान ली और घर लौट आया। रात के खाने के लिए किराने का सामान खरीदने बाहर जाते समय मैंने फिर से मिदोरी के घर फोन किया। उसकी बहन ने बताया कि मिदोरी अभी तक घर नहीं आई है और उसे भी नहीं पता कि वह कब वापस आएगी। मैंने उसे धन्यवाद कहा और फोन काट दिया।

खाना खाने के बाद, मैंने मिदोरी को पत्र लिखने की कोशिश की, लेकिन कई बार असफल होने के बाद मैंने हार मान ली और इसके बजाय नाओको को पत्र लिखा।

मैंने कहा, वसंत ऋतु आ गई थी और विश्वविद्यालय का नया सत्र शुरू हो रहा था। मैंने उससे कहा कि मुझे उसकी याद आ रही है, और मैं किसी न किसी तरह उससे मिलने और बात करने की उम्मीद कर रहा था। खैर,

मैंने लिखा, मैंने खुद को मजबूत बनाने का फैसला किया है। जहाँ तक मुझे लगता है, मैं बस इतना ही कर सकता हूँ।

एक और बात है। शायद ये सिर्फ मुझसे जुड़ी बात है, और आपको इससे कोई फर्क न पड़े, लेकिन मैं अब किसी के साथ नहीं सोती। क्योंकि मैं उस आखिरी पल को भूलना नहीं चाहती जब आपने मुझे छुआ था। वो पल मेरे लिए आपकी सोच से कहीं ज़्यादा मायने रखता था। मैं हर पल उसके बारे में सोचती रहती हूँ।

मैंने पत्र को एक लिफाफे में डाला, उस पर टिकट चिपकाया और काफी देर तक अपनी मेज पर बैठकर उसे देखता रहा। यह हमेशा की तरह छोटा पत्र था, लेकिन मुझे लगा कि नाओको शायद इस तरह मुझे बेहतर समझ पाएगी। मैंने अपने लिए डेढ़ इंच व्हिस्की डाली, दो घूंट में पी गया और सो गया।

अगले दिन मुझे किचिज़ोजी स्टेशन के पास एक नौकरी मिल गई जिसे मैं रूट नंबर 303 पर कर सकता था।

शनिवार और रविवार: एक छोटे से इतालवी रेस्तरां में वेटर का काम। हालात काफी खराब थे, लेकिन आने-जाने और दोपहर के खाने का खर्चा शामिल था। और जब भी देर रात की शिफ्ट में कोई सोमवार, बुधवार या गुरुवार को छुट्टी लेता (जो अक्सर होता था), तो मैं उसकी जगह काम कर सकता था। यह मेरे लिए एकदम सही था। मैनेजर ने कहा कि तीन महीने काम करने के बाद वे मेरी तनख्वाह बढ़ा देंगे, और वे चाहते थे कि मैं उसी शनिवार से काम शुरू करूँ। वह शिंजुकु में रिकॉर्ड की दुकान चलाने वाले बेवकूफ से कहीं ज्यादा अच्छा आदमी था।

मैंने दोबारा मिदोरी के फ्लैट पर फोन करने की कोशिश की, और फिर से उसकी बहन ने ही फोन उठाया।
मिडोरी कल से वापस नहीं आई थी, उसने थकी हुई आवाज़ में कहा, और अब वह खुद चिंतित होने लगी थी: क्या मुझे कोई अंदाज़ा है कि वह कहाँ गई होगी? मुझे बस इतना पता था कि मिडोरी के बैग में उसका पायजामा और एक टूथब्रश था।

मैंने बुधवार को लेक्चर में मिदोरी को देखा। उसने गहरे हरे रंग का पुलओवर और वही गहरे रंग के धूप के चश्मे पहने हुए थे जो वह उस गर्मी में अक्सर पहनती थी। वह आखिरी पंक्ति में बैठी थी और चश्मा पहने एक पतली लड़की से बात कर रही थी जिसे मैंने पहले एक बार देखा था। मैं उसके पास गई और कहा कि मैं लेक्चर के बाद बात करना चाहूंगी। चश्मा पहने लड़की ने पहले मेरी तरफ देखा, फिर मिदोरी ने मेरी तरफ देखा। दरअसल, उसके बाल पहले से कुछ ज़्यादा स्त्रीत्वपूर्ण लग रहे थे: ज़्यादा परिपक्व।

"मुझे किसी से मिलना है," उसने अपना सिर थोड़ा झुकाते हुए कहा।

मैंने कहा, "मैं आपका ज्यादा समय नहीं लूंगा। बस पांच मिनट।"

मिडोरी ने अपने धूप के चश्मे उतारे और अपनी आँखें सिकोड़ीं। मानो वह कुछ सौ गज की दूरी पर स्थित किसी जर्जर, परित्यक्त मकान को देख रही हो।

"मैं तुमसे बात नहीं करना चाहती। माफ कीजिए," उसने कहा।

चश्मा पहनी लड़की ने मुझे ऐसी आँखों से देखा मानो कह रही हो: वह तुमसे बात नहीं करना चाहती। माफ कीजिए।

मैं व्याख्यान के लिए पहली पंक्ति के दाहिने छोर पर बैठा था (304 का एक अवलोकन)।

मैंने टेनेसी विलियम्स की रचनाओं और अमेरिकी साहित्य में उनके स्थान के बारे में चर्चा की, और जब यह चर्चा समाप्त हुई, तो मैंने तीन तक लंबी गिनती की और मुड़कर देखा। मिदोरी जा चुकी थी।

अप्रैल का महीना अकेले बिताने के लिए बहुत अकेलापन भरा था। अप्रैल में मेरे आस-पास हर कोई खुश नज़र आता था। लोग अपने कोट उतारकर धूप में एक-दूसरे का साथ एन्जॉय करते थे - बातें करते, कैच-कैच खेलते,

हाथ पकड़ते। लेकिन मैं हमेशा अकेली रहती थी। नाओको, मिदोरी, नागासावा: सब मुझसे दूर जा चुके थे। अब मेरे पास किसी को "गुड मॉर्निंग" या "आपका दिन अच्छा हो" कहने के लिए कोई नहीं था। मुझे स्टॉर्म ट्रूपर की भी याद आ रही थी। पूरा महीना मैंने इसी अकेलेपन के एहसास में बिताया। मैंने मिदोरी से कई बार बात करने की कोशिश की, लेकिन उसका जवाब हमेशा एक ही होता था: "मैं अभी तुमसे बात नहीं करना चाहती" - और मैं उसकी आवाज़ के लहजे से समझ जाती थी कि वह सच कह रही है। वह हमेशा चश्मा पहनने वाली लड़की के साथ होती थी, या फिर मैंने उसे एक लंबे, छोटे बालों वाले लड़के के साथ देखा था। उसके पैर बहुत लंबे थे और वह हमेशा सफेद बास्केटबॉल के जूते पहनता था।

अप्रैल का महीना खत्म हुआ और मई आ गया, लेकिन मई अप्रैल से भी बदतर था। मई की बढ़ती वसंत ऋतु में, मेरे पास अपने दिल की कंपकंपी को पहचानने के अलावा कोई चारा नहीं था। यह अक्सर सूरज डूबने के समय होता था। शाम के धुंधलके में, जब हवा में मैग्नोलिया की हल्की खुशबू फैली होती थी, मेरा दिल अचानक उमड़ पड़ता, कांपने लगता और दर्द की एक तेज लहर के साथ हिल जाता। मैं अपनी आँखें बंद करने और दांत भींचने की कोशिश करता और इसके गुजरने का इंतजार करता। और यह गुजर जाता - लेकिन धीरे-धीरे, अपना समय लेते हुए, और अपने पीछे एक हल्का दर्द छोड़ जाता।

उन दिनों मैं नाओको को पत्र लिखती थी। अपने पत्रों में मैं केवल उन्हीं चीजों का वर्णन करती थी जो दिल को छूने वाली, सुखद या सुंदर होती थीं: घास की खुशबू, बसंत की हवा का स्पर्श, चंद्रमा का प्रकाश, कोई फिल्म जो मैंने देखी हो, कोई गाना जो मुझे पसंद हो, कोई किताब जिसने मुझे भावुक कर दिया हो। मुझे स्वयं भी इन चीजों से सुकून मिलता था।

जब मैं अपने लिखे हुए को दोबारा पढ़ता था, तो मुझे ऐसे ही पत्र मिलते थे। और मुझे लगता था कि मैं जिस दुनिया में रहता हूँ, वह अद्भुत है। मैंने कोई भी संख्या लिखी, 305

मुझे इस तरह के पत्र तो मिले, लेकिन नाओको या रेइको की तरफ से कुछ भी सुनने को नहीं मिला।

जिस रेस्टोरेंट में मैं काम करता था, वहाँ मेरी मुलाकात इतोह नाम के एक हमउम्र छात्र से हुई। कला महाविद्यालय के तेल चित्रकला विभाग के इस शांत और सौम्य छात्र को मुझसे बातचीत शुरू करने में काफी समय लगा, लेकिन आखिरकार हम काम के बाद पास के एक बार में जाने लगे और तरह-तरह की बातें करने लगे। उसे भी पढ़ना और संगीत सुनना पसंद था, इसलिए हम अक्सर अपनी पसंद की किताबों और रिकॉर्ड्स के बारे में बातें करते थे।

वह दुबला-पतला, आकर्षक लड़का था, जिसके बाल आम कला छात्रों की तुलना में काफी छोटे थे और कपड़े भी बहुत साफ-सुथरे थे। वह ज्यादा बोलता नहीं था, लेकिन उसकी अपनी पसंद और राय पक्की थीं। उसे फ्रांसीसी उपन्यास पसंद थे, खासकर जॉर्जेस बटाइल और बोरिस वियन के। संगीत में उसे मोजार्ट और रावेल पसंद थे। और मेरी तरह, वह भी एक ऐसे दोस्त की तलाश में था जिससे वह इन सब बातों पर चर्चा कर सके।

एक बार इतोह ने मुझे अपने फ्लैट पर बुलाया। वहाँ पहुँचना मेरे फ्लैट जितना मुश्किल नहीं था: इनोकाशिरा पार्क के पीछे एक अजीब सा, एक मंज़िला मकान। उसका कमरा पेंटिंग के सामान और कैनवस से भरा हुआ था। मैंने उसका काम देखने की इच्छा जताई, लेकिन उसने कहा कि मुझे कुछ भी दिखाने में उसे शर्म आ रही है। हमने चिवास रीगल व्हिस्की पी,

जो वह चुपके से अपने पिता के घर से लाया था, उसके कोयले के चूल्हे पर कुछ मछलियाँ भूनीं और रॉबर्ट कैसडेसस को मोजार्ट का पियानो कॉन्सर्टो बजाते हुए सुना।
इतोह नागासाकी का रहने वाला था। उसने बताया कि उसकी एक प्रेमिका थी जिसके साथ वह घर जाने पर सोता था, लेकिन हाल ही में उसके साथ उसके रिश्ते ठीक नहीं चल रहे थे।
"आप जानते हैं कि लड़कियां कैसी होती हैं," उन्होंने कहा। "जब वे 20 या 21 साल की होती हैं, तो अचानक उनके मन में पक्के विचार आने लगते हैं। वे अति-यथार्थवादी हो जाती हैं। और जब ऐसा होता है, तो उनमें जो कुछ भी प्यारा और मनमोहक लगता था, वह साधारण और निराशाजनक लगने लगता है। अब जब मैं उससे मिलता हूं, आमतौर पर हमारे साथ संबंध बनाने के बाद, वह मुझसे पूछना शुरू कर देती है, 'ग्रेजुएशन के बाद आप क्या करने वाले हैं?'"
मैंने उससे पूछा, "अच्छा, स्नातक होने के बाद तुम क्या करोगे?"
स्मेलट मछली का एक टुकड़ा चबाते हुए उसने अपना सिर हिलाया। "मैं क्या कर सकता हूँ?"
मैं तेल चित्रकला करता हूँ! अगर आप ऐसी बातों की चिंता करने लगेंगे, तो कोई भी 306 नहीं रहेगा।

मैं तेल चित्रकला का अध्ययन करने जा रही हूँ! इसे पेट भरने के लिए नहीं किया जाता। तो उसने कहा, "तुम नागासाकी वापस आकर कला शिक्षिका क्यों नहीं बन जाती?" वह अंग्रेजी शिक्षिका बनने की योजना बना रही थी।
"अब तुम उसके बारे में उतने दीवाने नहीं रहे, है ना?"
"बस यही बात है," इतोह ने स्वीकार किया। "और भला कौन कला

शिक्षक बनना चाहेगा? मैं अपनी पूरी ज़िंदगी किशोर बंदरों को चित्र बनाना सिखाने में तो नहीं बिताने वाला!"

मैंने कहा, "ये बात मायने नहीं रखती। क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हें उससे रिश्ता तोड़ देना चाहिए? तुम दोनों के भले के लिए।"

"हाँ, बिल्कुल। लेकिन मुझे नहीं पता कि उससे कैसे कहूँ। वो मेरे साथ अपनी पूरी जिंदगी बिताने की योजना बना रही है। मैं उससे ये कैसे कहूँ, 'अरे, हमें अलग हो जाना चाहिए। मुझे अब तुम पसंद नहीं हो'?"

हमने चिवास व्हिस्की बिना बर्फ के सीधे पी ली, और जब स्मेल्ट्स खत्म हो गईं तो हमने कुछ खीरे और अजवाइन काटकर उन्हें मिसो में डुबोकर खाया। खीरे के टुकड़ों को चबाते समय मुझे मिदोरी के पिता की याद आ गई, जिससे मुझे याद आया कि मिदोरी के बिना मेरा जीवन कितना नीरस और बेस्वाद हो गया था और इससे मेरा मूड खराब हो गया।

मुझे पता भी नहीं चला, लेकिन वह मेरे भीतर एक विशाल उपस्थिति बन गई थी।

"क्या तुम्हारी कोई गर्लफ्रेंड है?" इतोह ने पूछा।

"हां," मैंने कहा, फिर थोड़ी देर रुककर जोड़ा, "लेकिन मैं इस समय उसके साथ नहीं रह सकता।"

"लेकिन आप दोनों एक-दूसरे की भावनाओं को समझते हैं, है ना?"

"मुझे तो ऐसा ही लगता है। वरना इसका क्या मतलब है?" मैंने हंसते हुए कहा।

इतोह ने दबी आवाज़ में मोजार्ट की महानता के बारे में बात की। वह मोजार्ट को उसी तरह अच्छी तरह जानता था, जैसे कोई देहाती लड़का पहाड़ों के रास्तों को जानता है।

उनके पिता को संगीत से बहुत प्यार था और उन्होंने बचपन से ही उन्हें संगीत से परिचित कराया था। मुझे शास्त्रीय संगीत के बारे में ज़्यादा

जानकारी नहीं थी, लेकिन इतोह की समझदारी भरी और दिल को छू लेने वाली टिप्पणियों ("वहाँ - वह हिस्सा," "यह कैसा लगा?") के साथ मोजार्ट का यह कॉन्सर्टो सुनकर, मुझे बहुत समय बाद पहली बार सुकून मिला। हमने इनोकाशिरा पार्क के ऊपर लटकते अर्धचंद्र को निहारा और अपनी चिवास रीगल व्हिस्की की आखिरी बूंद तक पी ली। शानदार! 307

व्हिस्की।
इतोह ने कहा कि मैं रात वहीं बिता सकता हूँ, लेकिन मैंने उससे कहा कि मुझे कुछ काम है, व्हिस्की के लिए उसे धन्यवाद दिया और नौ बजे से पहले उसके फ्लैट से निकल गया।
अपने घर लौटते समय मैंने एक टेलीफोन बूथ से मिदोरी को फोन किया। मुझे आश्चर्य हुआ कि उसने सचमुच फोन उठा लिया।
"माफ़ कीजिए, लेकिन मैं अभी आपसे बात नहीं करना चाहती," उसने कहा।
"मुझे पता है, मुझे पता है। लेकिन मैं नहीं चाहता कि हमारा रिश्ता इस तरह खत्म हो।"
तुम मेरे उन गिने-चुने दोस्तों में से एक हो, और तुमसे न मिल पाना मुझे बहुत दुख देता है। मैं तुमसे कब बात कर पाऊँगी? कम से कम इतना तो तुम मुझे बता दो।
"जब मेरा मन करेगा तुमसे बात करने का," उसने कहा।
मैंने पूछा, "आप कैसे हैं?"
"ठीक है," उसने कहा और फोन काट दिया।

मई के मध्य में रेइको की ओर से एक पत्र आया।

इतनी बार लिखने के लिए धन्यवाद। नाओको को आपके पत्र अच्छे लगते

हैं। और मुझे भी।
अगर मैं इन्हें पढ़ लूँ तो आपको कोई आपत्ति तो नहीं होगी?
माफ़ कीजिए, इतने लंबे समय तक जवाब नहीं दे पाई। सच कहूँ तो, मैं थोड़ी थकी हुई महसूस कर रही थी, और कोई अच्छी खबर भी नहीं थी। नाओको की तबीयत ठीक नहीं है। उसकी माँ कुछ दिन पहले कोबे से आई थीं। हम चारों - वह, नाओको, डॉक्टर और मैं - ने काफी देर तक बात की और हम इस नतीजे पर पहुँचे कि नाओको को कुछ समय के लिए किसी अच्छे अस्पताल में भर्ती कराया जाए, जहाँ उसका गहन इलाज हो और फिर नतीजों के आधार पर उसे वापस यहाँ लाया जा सके। नाओको कहती है कि अगर मुमकिन हो तो वह यहीं रहना चाहती है और ठीक होना चाहती है, और मैं जानती हूँ कि मुझे उसकी बहुत याद आएगी और उसकी चिंता भी होगी, लेकिन सच तो यह है कि यहाँ उसे संभालना दिन-ब-दिन मुश्किल होता जा रहा है। ज़्यादातर समय वह ठीक रहती है, लेकिन कभी-कभी उसकी भावनाएँ बहुत ज़्यादा अस्थिर हो जाती हैं, और जब ऐसा होता है तो हम उससे नज़रें नहीं हटा पाते।
यह कहना मुश्किल है कि वह क्या करेगी। जब उसे आवाज़ें सुनाई देने के तीव्र दौरे पड़ते हैं, तो वह पूरी तरह से चुप हो जाती है और 308 में घुस जाती है।

अपने भीतर।
इसीलिए मैं खुद इस बात से सहमत हूँ कि नाओको के लिए सबसे अच्छा यही होगा कि उसे कुछ समय के लिए किसी उचित संस्था में चिकित्सा सहायता मिले। मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है, लेकिन यही एकमात्र उपाय है। जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया है, धैर्य सबसे महत्वपूर्ण है। हमें उम्मीद नहीं छोड़नी है, बल्कि एक-एक करके उलझे हुए धागों को

सुलझाना होगा। उसकी हालत चाहे कितनी भी निराशाजनक क्यों न लगे, हमें देर-सवेर वह एक सुराग ज़रूर मिल जाएगा। घोर अंधकार में होने पर, आप बस तब तक चुपचाप बैठे रह सकते हैं जब तक आपकी आँखें अंधेरे की आदी न हो जाएँ।

जब तक आपको यह पत्र मिले, नाओको को दूसरे अस्पताल में स्थानांतरित हो जाना चाहिए था। मुझे खेद है कि मैंने आपको निर्णय होने तक बताने में देरी की, लेकिन यह सब बहुत जल्दी हुआ। नया अस्पताल वाकई बहुत अच्छा है।

अच्छे डॉक्टरों के पास। मैं नीचे पता लिख रही हूँ: कृपया नाओको को वहाँ पत्र लिखें। वे मुझे भी उसकी सेहत के बारे में जानकारी देते रहेंगे, इसलिए मैं आपको जो भी खबर मिलेगी, बता दूँगी। मुझे उम्मीद है कि अच्छी खबर होगी। मुझे पता है कि यह आपके लिए मुश्किल होगा, लेकिन उम्मीद बनाए रखें। और भले ही नाओको अब हमारे बीच नहीं है, कृपया मुझे कभी-कभी पत्र लिखते रहें।

अलविदा।

उस वसंत ऋतु में मैंने अनगिनत पत्र लिखे: नाओको को हर हफ्ते एक, रेइको को कई और मिदोरी को भी कई। मैंने व्याख्यान कक्ष में पत्र लिखे, घर पर अपनी डेस्क पर सीगल को गोद में लेकर पत्र लिखे, इतालवी रेस्तरां में खाली मेजों पर ब्रेक के दौरान पत्र लिखे। ऐसा लग रहा था मानो मैं अपने बिखरते जीवन के टुकड़ों को जोड़ने के लिए पत्र लिख रही थी।

मिडोरी को मैंने लिखा: अप्रैल और मई मेरे लिए बहुत दर्दनाक और अकेलेपन भरे महीने थे क्योंकि मैं तुमसे बात नहीं कर पाई। मुझे कभी पता नहीं था कि बसंत इतना दर्दनाक और अकेलापन भरा हो सकता है। इस तरह के बसंत से तो तीन फरवरी बेहतर होते। मुझे पता है कि यह

कहने में बहुत देर हो चुकी है, लेकिन तुम्हारा नया हेयरस्टाइल तुम पर बहुत अच्छा लग रहा है। सच में बहुत प्यारा। मैं अब एक इटैलियन रेस्टोरेंट में काम कर रही हूँ, और रसोइए ने मुझे स्पेगेटी बनाने का एक शानदार तरीका सिखाया है। मैं 309 बनाना चाहूँगी।

मैं इसे जल्द ही आपके लिए उपलब्ध करा दूंगा।

मैं हर दिन विश्वविद्यालय जाता था, सप्ताह में दो या तीन बार रेस्तरां में काम करता था, इतोह के साथ किताबों और संगीत के बारे में बातें करता था, बोरिस वियन के कुछ उपन्यास पढ़ता था जो उसने मुझे उधार दिए थे, पत्र लिखता था, सीगल के साथ खेलता था, स्पेगेटी बनाता था, बगीचे में काम करता था, नाओको के बारे में सोचते हुए हस्तमैथुन करता था, और बहुत सारी फिल्में देखता था।
जून के लगभग मध्य में जाकर मिदोरी ने मुझसे बात करना शुरू किया। दो महीने से हमने एक-दूसरे से एक शब्द भी नहीं कहा था। एक लेक्चर खत्म होने के बाद, वह मेरे बगल में बैठ गई, अपनी ठुड्डी को हाथ पर टिका लिया और चुपचाप बैठी रही।

खिड़की के बाहर बारिश हो रही थी - बिल्कुल बरसाती मौसम की बारिश, बिना हवा के सीधी बरस रही थी, नीचे की हर चीज़ भीग रही थी। बाकी छात्र-छात्राओं के कक्षा से बाहर चले जाने के काफी देर बाद भी, मिदोरी चुपचाप मेरे बगल में बैठी रही। फिर उसने अपनी जींस जैकेट की जेब से एक मार्लबोरो सिगरेट निकाली, उसे अपने होठों के बीच रखा और मुझे माचिस थमा दी। मैंने माचिस जलाई और उसकी सिगरेट जला ली।
मिडोरी ने अपने होंठ सिकोड़े और मेरे चेहरे पर तंबाकू का हल्का सा धुआं उड़ा दिया।

"मेरा हेयरस्टाइल कैसा लगा?" उसने पूछा।
"यह बहुत अच्छा है।"
"कितना महान हैं?"
"इतना शक्तिशाली कि दुनिया के सभी जंगलों के सभी पेड़ों को गिरा सके।"
"तुम सच में ऐसा लगता है?"
मुझे सचमुच ऐसा ही लगता है।
कुछ देर तक उसने मेरी आँखों में देखा, फिर अपना दाहिना हाथ मेरी ओर बढ़ाया। मैंने उसका हाथ थाम लिया। वह मुझसे भी ज़्यादा राहत महसूस कर रही थी। उसने अपनी अस्थियाँ ज़मीन पर झाड़ीं और खड़ी हो गई।
"चलो खाना खाते हैं। मुझे बहुत भूख लगी है," उसने कहा।
मैंने पूछा, "तुम कहाँ जाना चाहते हो?"
310 नंबर पर स्थित ताकाशीमाया डिपार्टमेंट स्टोर के रेस्तरां में

निहोनबाशी।"
"इतनी सारी जगहों में से वही जगह क्यों?"
"मुझे कभी-कभी वहां जाना अच्छा लगता है, बस इतना ही।"
और इसलिए हम मेट्रो से निहोनबाशी गए। वह जगह लगभग खाली थी, शायद इसलिए कि सुबह से बारिश हो रही थी। बारिश की गंध उस बड़े, गुफा जैसे डिपार्टमेंटल स्टोर में फैली हुई थी, और सभी कर्मचारियों के चेहरे पर 'अब क्या करें?' वाली उलझन थी। मिदोरी और मैं तहखाने के रेस्तरां में गए और खिड़की में रखे प्लास्टिक के खाने को ध्यान से देखने के बाद, हम दोनों ने चावल, अचार, ग्रिल्ड मछली, टेम्पुरा और टेरीयाकी चिकन से बना एक पारंपरिक ठंडा लंच करने का फैसला किया। दोपहर का समय होने के बावजूद अंदर बिल्कुल भी भीड़ नहीं थी।

"हे भगवान, मैंने आखिरी बार किसी डिपार्टमेंटल स्टोर के रेस्तरां में दोपहर का भोजन कब किया था?" मैंने डिपार्टमेंटल स्टोर के रेस्तरां में मिलने वाले उन चिकने, सफेद कपों में से एक में हरी चाय पीते हुए मन ही मन सोचा।

"मुझे इस तरह की चीजें करना अच्छा लगता है," मिदोरी ने कहा। "पता नहीं, इससे मुझे ऐसा लगता है कि मैं कुछ खास कर रही हूँ। शायद यह मुझे मेरे बचपन की याद दिलाता है। मेरे माता-पिता मुझे लगभग कभी भी डिपार्टमेंट स्टोर नहीं ले जाते थे।"

"और मुझे यह हल्का सा शक होता है कि मेरे सारे पालतू जानवर हमेशा से यही करते थे। मेरी माँ को उनसे बहुत लगाव था।"

"बहुत भाग्यशाली हो!"

"तुम किस बारे में बात कर रहे हो? मुझे डिपार्टमेंट स्टोर जाना खास पसंद नहीं है।"

"नहीं, मेरा मतलब है, तुम भाग्यशाली थे कि उन्होंने तुम्हारी इतनी परवाह की कि तुम्हें जगहों पर ले गए।"

"खैर, मैं अपने माता-पिता की इकलौती संतान थी," मैंने कहा।

"जब मैं छोटी थी, तो मैं सपना देखती थी कि बड़ी होकर मैं अकेले ही किसी डिपार्टमेंट स्टोर के रेस्टोरेंट में जाऊंगी और जो चाहूं वो खाऊंगी।"

लेकिन ये कैसा खोखला सपना है! ऐसी जगह पर अकेले बैठकर मुंह भर-भरकर चावल खाने में क्या मज़ा है? खाना उतना बढ़िया नहीं है, और ये जगह बस बड़ी, भीड़भाड़ वाली, घुटन भरी और शोरगुल वाली है। फिर भी, कभी-कभार मैं यहाँ आने के बारे में सोचता हूँ।

मैंने कहा, "पिछले दो महीनों से मैं बहुत अकेला महसूस कर रहा हूँ।"

"हाँ, मुझे पता है। तुमने मुझे अपने पत्रों में बताया था," मिदोरी ने सपाट स्वर में कहा। "खैर, चलो खाना खाते हैं। अभी तो बस यही मेरे दिमाग में है।"

हमने अपने सुंदर पॉलिश किए हुए अर्धचंद्राकार लंच बॉक्स के अलग-अलग खानों में रखे हुए सभी तले हुए, भुने हुए और अचार वाले व्यंजन खत्म कर दिए, पॉलिश किए हुए कटोरे में अपना साफ़ सूप पिया और उन सफेद कपों में अपनी हरी चाय पी। मिडोरी ने लंच के बाद एक सिगरेट पी। सिगरेट खत्म करने के बाद, वह बिना कुछ कहे खड़ी हो गई और अपना छाता उठा लिया। मैं भी खड़ा हो गया और अपना छाता उठा लिया।

मैंने पूछा, "अब तुम कहाँ जाना चाहते हो?"

"बेशक, छत पर। डिपार्टमेंट स्टोर के रेस्तरां में दोपहर का भोजन करने के बाद अगला पड़ाव वही होता है।"

बारिश में छत पर कोई नहीं था, पालतू जानवरों के विभाग में कोई क्लर्क नहीं था, और कियोस्क और बच्चों के झूलों के टिकट बूथ के शटर बंद थे। हमने अपने छाते खोले और भीगे हुए लकड़ी के घोड़ों, बगीचे की कुर्सियों और अस्तबलों के बीच घूमने लगे। मुझे यह अविश्वसनीय लग रहा था कि टोक्यो के बीचोंबीच कोई ऐसी जगह भी हो सकती है जहाँ इतने कम लोग हों। मिदोरी ने कहा कि वह दूरबीन से देखना चाहती है, इसलिए मैंने एक सिक्का डाला और उसका छाता पकड़े रखा जबकि वह दूरबीन के लेंस से देखने की कोशिश कर रही थी।

छत के एक कोने में बच्चों के झूलों की कतार वाला एक ढका हुआ खेल क्षेत्र था। मिदोरी और मैं एक चबूतरे जैसी जगह पर एक-दूसरे के बगल में बैठ गए और बारिश को देखने लगे।

"तो बोलो," मिदोरी ने कहा। "मुझे पता है कि तुम मुझसे कुछ कहना

चाहती हो।"
मैंने कहा, "मैं बहाने नहीं बना रही, लेकिन उस समय मैं सचमुच बहुत उदास थी। मेरा दिमाग पूरी तरह सुन्न हो गया था। कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। लेकिन जब मैं तुम्हें देख नहीं पा रही थी, तब एक बात एकदम स्पष्ट हो गई। मुझे एहसास हुआ कि तब तक मैं सिर्फ तुम्हारे बिना ही जी पा रही थी। जब मैंने तुम्हें खोया, तो दर्द और अकेलापन मुझ पर हावी हो गया।"
क्या आपको इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं है कि यह मेरे लिए कितना दर्दनाक और अकेलापन भरा रहा है?

पिछले दो महीनों से तुम्हारे बिना?
इससे मैं पूरी तरह से हैरान रह गया। "नहीं," मैंने कहा। "मुझे ऐसा कभी लगा ही नहीं। मुझे लगा कि आप मुझसे नाराज़ हैं और मुझसे मिलना नहीं चाहते।"
"तुम इतने बेवकूफ कैसे हो सकते हो? बिल्कुल, मैं तुमसे मिलना चाहती थी! मैंने तुम्हें बताया था कि मैं तुम्हें कितना पसंद करती हूँ! जब मैं किसी को पसंद करती हूँ, तो मैं उसे सच में पसंद करती हूँ। मेरे लिए यह यूँ ही शुरू या खत्म नहीं होता। क्या तुम्हें मेरे बारे में कम से कम इतना तो पता है?"
"ठीक है, लेकिन..."
"इसीलिए तो मैं तुमसे इतनी नाराज़ थी! मेरा मन कर रहा था कि तुम्हें एक ज़ोरदार लात मारूँ। मतलब, हम इतने समय तक मिले ही नहीं थे, और तुम उस दूसरी लड़की के बारे में सोचते-सोचते इतने खोए हुए थे कि तुमने मेरी तरफ देखा तक नहीं! भला मुझे तुम पर गुस्सा क्यों नहीं आता? लेकिन इन सब बातों के अलावा, मुझे काफी समय से लग रहा था

कि कुछ समय के लिए तुमसे दूर रहना मेरे लिए बेहतर होगा। ताकि मैं अपने दिमाग को साफ़ कर सकूँ।"
"किस तरह की चीजें?"
"हमारा रिश्ता, ज़ाहिर है। बात यहाँ तक पहुँच गई थी कि मुझे उसके साथ रहने से ज़्यादा तुम्हारे साथ रहना अच्छा लगता था। मतलब, क्या तुम्हें इसमें कुछ अजीब और मुश्किल नहीं लगता? बेशक, मैं उसे अब भी पसंद करती हूँ। वह थोड़ा स्वार्थी, संकीर्ण सोच वाला और कुछ हद तक कट्टरपंथी है, लेकिन उसमें कई अच्छी बातें भी हैं, और वह पहला आदमी है जिसके लिए मैंने कभी गंभीरता से सोचा था। लेकिन तुम, तुम मेरे लिए खास हो। जब मैं तुम्हारे साथ होती हूँ तो मुझे लगता है कि सब कुछ ठीक है। मुझे तुम पर भरोसा है। मैं तुम्हें पसंद करती हूँ। मैं तुम्हें जाने नहीं देना चाहती। मैं और ज़्यादा उलझन में पड़ रही थी, इसलिए मैं उसके पास गई और उससे पूछा कि मुझे क्या करना चाहिए। उसने मुझसे कहा कि मैं तुमसे मिलना बंद कर दूँ। उसने कहा कि अगर मैं तुमसे मिलती रहूँगी, तो मुझे उससे रिश्ता तोड़ देना चाहिए।"
"तो आप क्या करते हो?"
"मैंने उससे रिश्ता तोड़ दिया। बस यूं ही।" मिदोरी ने एक मार्लबोरो सिगरेट मुंह में डाली, उसे हाथ से ढककर सिगरेट जलाई और धुआं अंदर खींचा।
"क्यों?"
“क्यों?” वह चीखी। “क्या तुम पागल हो? तुम्हें अंग्रेजी सबजंक्टिव पता है, तुम्हें त्रिकोणमिति समझ आती है, तुम मार्क्स को पढ़ सकते हो, और

इतनी सरल बात का जवाब भी तुम्हें नहीं पता? पूछने की ज़रूरत ही क्या है? किसी लड़की से ऐसी बात कहलवाने की क्या ज़रूरत है? मुझे उससे

ज़्यादा तुम पसंद हो, बस इतना ही। काश, मुझे किसी ज़्यादा सुंदर लड़के से प्यार हो जाता, पर ऐसा नहीं हुआ।
मुझे तुमसे प्यार हो गया!"
मैंने बोलने की कोशिश की, लेकिन मुझे लगा कि शब्द मेरे गले में अटक गए हैं।
मिडोरी ने अपनी सिगरेट पानी के एक गड्ढे में फेंक दी। "क्या तुम अपने चेहरे से ये भाव हटाओगे? मुझे रुला दोगे। चिंता मत करो, मुझे पता है तुम किसी और से प्यार करते हो। मैं तुमसे कुछ भी उम्मीद नहीं कर रही हूँ। लेकिन कम से कम मुझे गले तो लगा लो। मेरे लिए ये दो महीने बहुत मुश्किल रहे हैं।"
मैंने अपना छाता खोला और हम खेल के मैदान के पीछे गए और एक-दूसरे को कसकर गले लगा लिया। हमारे शरीर एक-दूसरे से कसकर चिपक गए और हमारे होंठ मिल गए। बारिश की महक उसके बालों और जींस जैकेट में बसी हुई थी। लड़कियों...
शरीर कितने कोमल और गर्म थे! कपड़ों के ऊपर से ही मुझे उसके स्तनों का स्पर्श महसूस हो रहा था। किसी दूसरे इंसान से शारीरिक संपर्क किए हुए कितना समय बीत गया था?
"जिस दिन मैंने तुम्हें आखिरी बार देखा था, उसी रात मैंने उससे बात की थी और हमारा ब्रेकअप हो गया था।"
मिडोरी ने कहा।
मैंने उससे कहा, "मैं तुमसे प्यार करता हूँ। दिल की गहराइयों से। मैं तुम्हें कभी जाने नहीं देना चाहता। लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकता। मैं कोई कदम नहीं उठा सकता।"
"उसकी वजह से?"
मेंने सिर हिलाया।

"बताओ, क्या तुमने उसके साथ संबंध बनाए हैं?"
"एक बार। एक साल पहले।"
"और उसके बाद से आपने उसे नहीं देखा?"
"मैंने उसे दो बार देखा है। लेकिन हमने कुछ नहीं किया।" "क्यों नहीं?"
क्या वह तुमसे प्यार नहीं करती?
"यह कहना मुश्किल है," मैंने कहा। "यह बहुत जटिल है। और उलझा हुआ है। और यह इतने लंबे समय से चल रहा है कि मुझे अब कुछ समझ नहीं आ रहा है। और उसे भी नहीं। मुझे बस इतना पता है कि मेरे पास 314 है।"

एक इंसान होने के नाते, मुझ पर इस सबमें एक तरह की ज़िम्मेदारी है, और मैं इससे मुंह नहीं मोड़ सकता। कम से कम अभी तो मुझे ऐसा ही लगता है। भले ही वह मुझसे प्यार न करती हो।
"मैं तुम्हें बस इतना बताना चाहती हूँ, वातानाबे," मिदोरी ने अपना गाल मेरी गर्दन से सटाते हुए कहा। "मैं एक असली, ज़िंदा लड़की हूँ, जिसकी रगों में असली, ज़िंदा खून दौड़ रहा है। तुम मुझे अपनी बाहों में थामे हो और मैं तुमसे कह रही हूँ कि मैं तुमसे प्यार करती हूँ। तुम जो भी कहोगे, मैं वो करने को तैयार हूँ। मैं थोड़ी पागल ज़रूर हूँ, लेकिन मैं अच्छी लड़की हूँ, ईमानदार हूँ, मेहनती हूँ, थोड़ी प्यारी भी हूँ, मेरे स्तन अच्छे हैं, मैं अच्छा खाना बनाती हूँ, और मेरे पिता ने मेरे लिए एक ट्रस्ट फंड छोड़ा है। मतलब, मैं सचमुच एक बढ़िया सौदा हूँ, तुम्हें नहीं लगता? अगर तुम मुझे नहीं अपनाओगे, तो मैं कहीं और चली जाऊँगी।"
मैंने कहा, "मुझे समय चाहिए। मुझे सोचने, चीजों को सुलझाने और कुछ फैसले लेने के लिए समय चाहिए। मुझे माफ करना, लेकिन इस समय मैं बस इतना ही कह सकता हूँ।"

"हाँ, लेकिन तुम मुझे दिल से प्यार करते हो, है ना? और तुम मुझे कभी जाने नहीं देना चाहते, है ना?"
मैंने यह कहा था और मेरा यही मतलब था।
मिडोरी मुस्कुराते हुए मुझसे दूर हट गई। "ठीक है, मैं इंतज़ार करूँगी! मुझे तुम पर भरोसा है," उसने कहा। "लेकिन जब तुम मुझे अपना बनाओगे, तो सिर्फ़ मुझे ही अपना बनाओगे।"
और जब तुम मुझे अपनी बाहों में लेते हो, तो तुम सिर्फ मेरे बारे में सोचते हो। क्या यह बात स्पष्ट है?
"मैं बिल्कुल समझ गया।"
"मुझे परवाह नहीं कि तुम मेरे साथ क्या करते हो, लेकिन मैं नहीं चाहती कि तुम मुझे चोट पहुँचाओ। मैंने अपने जीवन में पहले ही बहुत दुख झेला है। हद से ज़्यादा। अब मैं खुश रहना चाहती हूँ।"
मैंने उसे अपने करीब खींचा और उसके होंठों पर चुंबन लिया।
"उस छाते को नीचे रखो और अपनी दोनों बाहों से मुझे कसकर गले लगा लो!"
उसने कहा।
लेकिन हम तो पूरी तरह भीग जाएंगे!
"तो क्या हुआ? मैं चाहती हूँ कि तुम सोचना बंद करो और मुझे कसकर गले लगा लो! मैं दो महीने से इसी का इंतज़ार कर रही हूँ!"
मैंने छाता नीचे रख दिया और बारिश में उसे कसकर गले लगा लिया। राजमार्ग पर टायरों की धीमी सरसराहट ने हमें कोहरे की तरह घेर लिया। बारिश लगातार बरसती रही।

बिना कोई आवाज किए, वह टूट पड़ी, उसके और मेरे बालों को भिगोते हुए, आंसुओं की तरह हमारे गालों से बहते हुए, उसकी डेनिम जैकेट और

मेरे पीले नायलॉन विंडचीटर पर जा गिरी, और गहरे धब्बों के रूप में फैल गई।
मैंने कहा, "छत के नीचे वापस जाने के बारे में क्या ख्याल है?"
"मेरे घर आ जाओ। अभी घर पर कोई नहीं है। इस तरह हम दोनों को सर्दी लग जाएगी।"
"यह सच है।"
"ऐसा लग रहा है जैसे हमने अभी-अभी कोई नदी तैरकर पार की हो," मिदोरी ने मुस्कुराते हुए कहा। "कितना शानदार एहसास है!"
हमने लिनेन डिपार्टमेंट से एक अच्छा-खासा तौलिया खरीदा और बारी-बारी से बाथरूम में जाकर अपने बाल सुखाए। फिर हमने ज़रूरी टॉप-अप टिकट लेकर मेट्रो से म्योगादानी में उसके फ्लैट तक का सफर तय किया। उसने मुझे पहले नहाने दिया और फिर खुद नहाया। मेरे कपड़े सूखने तक मुझे बाथरोब पहनने के लिए देते हुए, मिदोरी ने पोलो शर्ट और स्कर्ट पहन ली। हम रसोई की मेज पर बैठकर कॉफी पीने लगे।
"अपने बारे में कुछ बताओ," मिदोरी ने कहा।
"मेरा क्या?"
"हम्म, मुझे नहीं पता, तुम्हें क्या नापसंद है?" "चिकन, यौन रोग और बहुत ज्यादा बोलने वाले नाई।" "और क्या?"
"अप्रैल की अकेली रातें और जालीदार टेलीफोन कवर।" "और क्या?"
मैंने सिर हिलाया। "मुझे और कुछ नहीं सूझ रहा।"
"मेरे प्रेमी - मतलब मेरे पूर्व प्रेमी - को कई बातें नापसंद थीं। जैसे कि जब मैं बहुत छोटी स्कर्ट पहनती थी, या जब मैं सिगरेट पीती थी, या जब मैं जल्दी नशे में हो जाती थी, या जब मैं गंदी बातें कहती थी, या जब मैं उसके दोस्तों की आलोचना करती थी। इसलिए अगर मेरे बारे में कुछ भी आपको पसंद नहीं है, तो बस मुझे बता दीजिए, और अगर हो सके तो मैं

उसे ठीक करने की कोशिश करूंगी।"
कुछ देर सोचने के बाद मैंने कहा, "मुझे कुछ सूझ नहीं रहा। कुछ भी नहीं है।"
"वास्तव में?"
"मुझे आपके कपड़े पहनने का हर तरीका पसंद है, और मुझे आपका हर काम, हर बात, आपके चलने का तरीका और आपके नशे में धुत होने का तरीका भी पसंद है। सब कुछ।"
"क्या आपका मतलब है कि मैं जैसी हूँ वैसी ही ठीक हूँ?"

मुझे नहीं पता कि तुम कैसे बदल सकते हो, इसलिए तुम जैसे हो वैसे ही ठीक होगे।
"तुम मुझसे कितना प्यार करते हो?" मिदोरी ने पूछा।
मैंने कहा, "इतना कि दुनिया के सारे बाघ पिघलकर मक्खन बन जाएं।"
"बेहद अद्भुत!"
उसने थोड़ी संतुष्टि के साथ कहा, "क्या तुम मुझे फिर से गले लगाओगे?"
हम उसके बिस्तर पर लेट गए और एक-दूसरे को गले लगाकर चूमने लगे, बारिश की आवाज़ हमारे कानों में गूंज रही थी। फिर हमने ब्रह्मांड की उत्पत्ति से लेकर उबले अंडों की कठोरता के बारे में अपनी-अपनी पसंद तक, हर चीज़ पर बातें कीं।
"मुझे आश्चर्य होता है कि बारिश के दिनों में चींटियाँ क्या करती हैं?" मिदोरी ने पूछा।
"मुझे कोई अंदाज़ा नहीं," मैंने कहा। "वे मेहनती लोग हैं, इसलिए वे शायद पूरा दिन घर की सफाई या सामान का हिसाब-किताब करने में बिताते होंगे।"

"अगर वे इतनी मेहनत करते हैं, तो वे विकसित क्यों नहीं होते? वे तो हमेशा से एक जैसे ही रहे हैं।"
मैंने कहा, "मुझे नहीं पता। शायद उनकी शारीरिक संरचना विकास के लिए उपयुक्त नहीं है - उदाहरण के लिए बंदरों की तुलना में।"
"अरे, वातानाबे, ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो तुम नहीं जानते। मुझे लगा था कि तुम सब कुछ जानते हो।"
मैंने कहा, "यह दुनिया बहुत बड़ी है।"
"ऊँचे पहाड़, गहरे महासागर," मिदोरी ने कहा। उसने अपना हाथ मेरे बाथरोब के अंदर डाला और मेरे लिंग को पकड़ लिया। फिर, एक गहरी साँस लेते हुए उसने कहा, "अरे, वातानाबे, मज़ाक छोड़ो, ये काम नहीं चलेगा। मैं इस बड़े, सख्त लिंग को अपने अंदर कभी नहीं डाल सकती। बिलकुल नहीं।"
मैंने आह भरते हुए कहा, "तुम मजाक कर रहे हो।"
"जी हां," उसने हंसते हुए कहा। "चिंता मत करो। सब ठीक हो जाएगा। मुझे यकीन है कि यह फिट हो जाएगा। उह, क्या मैं इसे देख सकती हूं?"
"स्वतंत्र महसूस करना।"
मिडोरी कंबल के नीचे घुस गई और मुझे नीचे तक सहलाने लगी, मेरे लिंग की त्वचा को खींचकर, मेरे अंडकोषों को अपनी हथेली में तौलने लगी। फिर उसने अपना सिर बाहर निकाला और आह भरी। "मुझे बहुत अच्छा लग रहा है!" उसने कहा। "कोई चापलूसी नहीं! मुझे सचमुच बहुत अच्छा लग रहा है!"
मैंने सरल शब्दों में कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा, "धन्यवाद।"

"लेकिन सच में, वातानाबे, तुम मेरे साथ यह नहीं करना चाहते, है ना -

जब तक तुम उस सारे मामले को सुलझा नहीं लेते?"
मैंने कहा, "ऐसा हो ही नहीं सकता कि मैं तुम्हारे साथ ऐसा न करना चाहूँ। मैं इतना बेताब हूँ कि पागल हो रहा हूँ। लेकिन यह सही नहीं होगा।"
"तुम तो हद से ज्यादा जिद्दी हो! अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं बस कर देता - फिर बाद में इसके बारे में सोचता।"
"आप करेंगे?"
"मज़ाक कर रही थी," मिदोरी ने धीमी आवाज़ में कहा। "अगर मैं तुम्हारी जगह होती, तो शायद मैं भी ऐसा नहीं करती। और यही बात मुझे तुम्हारे बारे में सबसे ज़्यादा पसंद है। यही बात मुझे तुम्हारे बारे में सबसे ज़्यादा पसंद है।"
मैंने पूछा, "तुम मुझसे कितना प्यार करती हो?" लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, वह मुझसे सट गई, अपने होंठ मेरे निप्पल पर रखे और उस हाथ को हिलाने लगी जो मेरे लिंग पर लिपटा हुआ था। सबसे पहले मेरे मन में यही ख्याल आया कि नाओको के हाथ हिलाने के तरीके से यह कितना अलग था। दोनों ही कोमल और अद्भुत थीं, लेकिन उनके करने के तरीके में कुछ अलग था, और इसलिए यह एक बिल्कुल अलग अनुभव था।
"अरे, वातानाबे, मुझे यकीन है कि तुम उस दूसरी लड़की के बारे में सोच रहे हो।"
"सच नहीं है," मैंने झूठ बोला।
"वास्तव में?"
"वास्तव में।"
"क्योंकि मुझे यह बिल्कुल भी पसंद नहीं आएगा।"
मैंने कहा, "मैं किसी और के बारे में सोच ही नहीं सकता।"
"क्या तुम मेरे स्तनों को या नीचे के हिस्से को छूना चाहते हो?" मिदोरी ने

पूछा। "ओह वाह, मुझे बहुत अच्छा लगेगा, लेकिन बेहतर होगा कि मैं ऐसा न करूँ। अगर हम ये सब एक साथ करेंगे, तो मेरे लिए बहुत ज़्यादा हो जाएगा।"
मिडोरी ने सिर हिलाया और चादर के नीचे करवटें बदलते हुए अपनी पैंटी उतारी और उसे मेरे लिंग के सिरे पर रख दिया। "तुम इन पर स्खलित हो सकते हो," उसने कहा। "लेकिन इससे ये गंदी हो जाएंगी।"
"बस करो, क्या तुम? तुम मुझे रुला दोगे," मिडोरी ने कहा, मानो उसकी आँखों में आँसू आ रहे हों। "मुझे बस इन्हें धोना है। इसलिए संकोच मत करो, जितना चाहो उतना खुलकर करो। अगर तुम्हें मेरी 318 की चिंता है..."

पैंटी, मेरे लिए एक नई खरीद दो। या फिर ये मेरी हैं इसलिए तुम मेरे पास नहीं आ पाओगे?
"बिल्कुल नहीं," मैंने कहा। "तो फिर छोड़ दो।"
जब मेरा काम पूरा हो गया, तो मिदोरी ने मेरे वीर्य की जाँच की। "वाह, यह तो बहुत ज़्यादा मात्रा है!"
"बहुत अधिक?"
"नहीं, कोई बात नहीं, बेवकूफ। जितना चाहो आ जाओ," उसने मुस्कुराते हुए कहा। फिर उसने मुझे चूमा।

शाम को मिदोरी ने आस-पड़ोस में कुछ खरीदारी की और रात का खाना बनाया। हमने रसोई की मेज पर बैठकर टेम्पुरा और हरी मटर के साथ चावल खाए और साथ में बीयर भी पी।
"खूब खाओ और खूब वीर्य बनाओ," मिदोरी ने कहा। "फिर मैं तुम्हारी मदद करूंगी और उसे शरीर से बाहर निकाल दूंगी।"

मैंने कहा, "बहुत-बहुत धन्यवाद।"
"मुझे इसे करने के कई तरीके पता हैं। मैंने महिलाओं की पत्रिकाओं से सीखा था जब हमारी किताबों की दुकान थी। एक बार उनका एक विशेष संस्करण आया था जिसमें बताया गया था कि गर्भावस्था के दौरान जब आप यौन संबंध नहीं बना सकतीं, तब अपने पति की देखभाल कैसे करें ताकि वह आपको धोखा न दे। इसके अनगिनत तरीके हैं।"
क्या आप इन्हें आजमाना चाहेंगे?
मैंने कहा, "मैं बेसब्री से इंतजार कर रहा हूँ।"
मिडोरी को अलविदा कहने के बाद, मैंने स्टेशन से एक अखबार खरीदा, लेकिन जब मैंने ट्रेन में उसे खोला, तो मुझे एहसास हुआ कि अखबार पढ़ने की मेरी बिल्कुल भी इच्छा नहीं थी और वास्तव में मुझे समझ ही नहीं आ रहा था कि उसमें क्या लिखा है। मैं बस उस समझ से परे पन्ने को घूरता रहा और सोचता रहा कि अब मेरे साथ क्या होगा और मेरे आस-पास की चीजें कैसे बदलेंगी। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे दुनिया हर पल धड़क रही हो। मैंने गहरी साँस ली और अपनी आँखें बंद कर लीं। उस दिन मैंने जो किया था, उसके लिए मुझे ज़रा भी पछतावा नहीं था; मुझे पूरा यकीन था कि अगर मुझे यह सब दोबारा करना पड़े, तो मैं इस दिन को बिल्कुल वैसे ही जीऊँगा। मैं बारिश में छत पर मिडोरी को कसकर पकड़ूँगा; मैं उसके साथ पूरी तरह भीग जाऊँगा; और मैं उसकी उंगलियों को मुझे चरम सुख तक पहुँचाने दूँगा।

उसका बिस्तर। मुझे इन बातों पर कोई शक नहीं था। मैं मिदोरी से प्यार करता था, और मुझे खुशी थी कि वह मेरे पास वापस आ गई थी। हम दोनों का रिश्ता कायम हो सकता था, यह निश्चित था। जैसा कि मिदोरी ने खुद कहा था, वह एक असली, जीवंत लड़की थी जिसकी रगों में खून

दौड़ रहा था, और वह अपना गर्म शरीर मेरी बाहों में समेट रही थी। उसे नंगा करने, उसके शरीर को खोल देने और उसकी गर्माहट में डूब जाने की तीव्र इच्छा को दबाना मेरे लिए बहुत मुश्किल था। एक बार जब उसने मेरा लिंग पकड़ लिया और अपना हाथ हिलाना शुरू कर दिया, तो उसे रोकना मेरे लिए नामुमकिन था। मैं चाहता था कि वह ऐसा करे, वह भी ऐसा करना चाहती थी, और हम प्यार में थे। भला ऐसी चीज़ को कौन रोक सकता था? यह सच था: मैं मिदोरी से प्यार करता था। और शायद मुझे यह बात काफी समय से पता थी। मैं बस बहुत लंबे समय से इस बात को मानने से बचता रहा था।

समस्या यह थी कि मैं नाओको को इन सब बातों के बारे में कभी समझा नहीं पाया। किसी भी समय यह मुश्किल होता, लेकिन नाओको की वर्तमान स्थिति को देखते हुए, उसे यह बताना नामुमकिन था कि मुझे किसी और लड़की से प्यार हो गया है। और वैसे भी, मैं अब भी नाओको से प्यार करता था। चाहे वह प्यार कितना भी उलझा हुआ क्यों न हो, मैं उससे प्यार करता था। मेरे भीतर कहीं न कहीं नाओको के लिए एक विशाल, खुला स्थान था, जो अब तक अछूता था, और किसी और के लिए नहीं।

मैं एक काम कर सकता था, वो था रेइको को एक पत्र लिखना जिसमें मैं पूरी ईमानदारी से सब कुछ बता देता। घर पर, मैं बरामदे में बैठा, रात में बगीचे पर बरसती बारिश को देखता रहा और मन ही मन वाक्य बनाता रहा। फिर मैं अपनी मेज पर गया और पत्र लिखा। मैंने लिखना शुरू किया, "मेरे लिए यह लगभग असहनीय है कि अब मुझे तुम्हें इस तरह का पत्र लिखना पड़ रहा है।" मैंने मिदोरी के साथ अपने रिश्ते का सारांश दिया और उस दिन जो कुछ हुआ था, उसे समझाया।

मैंने हमेशा नाओको से प्यार किया है, और आज भी करता हूँ। लेकिन मिदोरी और मेरे बीच जो रिश्ता है, उसमें एक निर्णायक अंत है। इसमें एक ऐसी अदम्य शक्ति है जो मुझे भविष्य की ओर खींच ले जाने के लिए बाध्य है। नाओको के लिए मेरे दिल में एक बेहद शांत, कोमल और पारदर्शी प्यार है, लेकिन मिदोरी के लिए मेरे दिल में जो भावना है, वह बिल्कुल अलग है। यह अपने आप में एक अनूठी भावना है, जो जीवित है, साँस लेती है, धड़कती है और मुझे झकझोर देती है।

मैं अपने अस्तित्व की जड़ों तक पहुँच गया हूँ। मुझे नहीं पता कि क्या करूँ। मैं उलझन में हूँ। मैं अपने लिए बहाने नहीं बना रहा, लेकिन मुझे यकीन है कि मैंने अपनी पूरी ईमानदारी से जीवन जिया है। मैंने कभी किसी से झूठ नहीं बोला, और सालों से मैंने दूसरों को दुख न पहुँचाने का पूरा ध्यान रखा है। फिर भी मैं इस भूलभुलैया में फँस गया हूँ। ये कैसे हो सकता है? मैं इसे समझा नहीं सकता। मुझे नहीं पता कि मुझे क्या करना चाहिए। क्या तुम मुझे बता सकती हो, रेइको? सलाह के लिए मैं सिर्फ तुम्हारे पास ही जा सकता हूँ।

मैंने उसी रात विशेष डाक सेवा के माध्यम से पत्र भेज दिया।

रेइको का जवाब पांच दिन बाद, 17 जून को आया।

चलिए अच्छी खबर से शुरुआत करते हैं। नाओको की सेहत में उम्मीद से कहीं ज्यादा तेजी से सुधार हो रहा है। मैंने उससे एक बार फोन पर बात की और उसने बहुत ही स्पष्टता से जवाब दिया। हो सकता है कि वह जल्द ही वापस यहाँ आ सके।
अब, आपके बारे में।

मुझे लगता है कि आप हर बात को ज़रूरत से ज़्यादा गंभीरता से लेते हैं। किसी दूसरे से प्यार करना एक अद्भुत अनुभव है, और अगर वह प्यार सच्चा हो, तो कोई भी उलझन में नहीं फंसता। आपको खुद पर ज़्यादा भरोसा रखना होगा।

मेरी सलाह बहुत सीधी-सादी है। सबसे पहले, अगर आप मिदोरी नाम की इस लड़की की तरफ इतना आकर्षित हैं, तो स्वाभाविक है कि आपको उससे प्यार हो गया है। हो सकता है सब ठीक चले, या हो सकता है न चले। लेकिन प्यार तो ऐसा ही होता है।

जब आप प्यार में पड़ते हैं, तो स्वाभाविक बात यह है कि आप खुद को पूरी तरह से उसमें समर्पित कर देते हैं।

मुझे तो यही लगता है। यह ईमानदारी का ही एक रूप है।

दूसरी बात, मिडोरी के साथ यौन संबंध बनाना है या नहीं, यह आपको खुद तय करना है। मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता। मिडोरी से बात करें और अपना खुद का निष्कर्ष निकालें, ऐसा निष्कर्ष जो आपको सही लगे।

तीसरी बात, नाओको को इनमें से कुछ भी मत बताना। अगर कभी ऐसी स्थिति आ जाए कि उसे बताना ही पड़े, तो हम दोनों मिलकर कोई अच्छा प्लान बना लेंगे। तो अभी बस इसे चुपचाप रखना। मुझ पर छोड़ दो।

चौथी बात जो मुझे कहनी है वह यह है कि आप नाओको के लिए ताकत का एक बहुत बड़ा स्रोत रहे हैं, इसलिए भले ही अब आपके मन में उसके प्रति प्रेमी की भावनाएं न हों, फिर भी आप उसके लिए बहुत कुछ कर सकते हैं।

इसलिए हर बात पर इतना गंभीर मत बनो। हम सब (मेरा मतलब है हम

सब, चाहे सामान्य हों या असामान्य) अपूर्ण इंसान हैं और एक अपूर्ण दुनिया में रहते हैं। हम बैंक खाते की तरह यांत्रिक सटीकता से नहीं जीते, न ही हम हर रेखा और कोण को तराजू और प्रोटेक्टर से मापते हैं। क्या मैं सही कह रहा हूँ?

मुझे व्यक्तिगत रूप से लगता है कि मिदोरी एक बहुत अच्छी लड़की है। आपका पत्र पढ़कर ही मैं समझ गया कि आप उसकी ओर क्यों आकर्षित हुए।

और मैं यह भी समझता हूं कि आप नाओको की ओर क्यों आकर्षित होंगे।

इसमें ज़रा भी पाप नहीं है। इस विशाल दुनिया में ऐसी चीज़ें तो हर समय होती रहती हैं। यह ठीक वैसे ही है जैसे किसी खूबसूरत दिन किसी सुंदर झील में नाव चलाना और आसमान और झील दोनों को खूबसूरत समझना। इसलिए, खुद को दोष देना बंद करो। अगर आप चीज़ों को स्वाभाविक रूप से होने देंगे, तो वे अपने आप ही होंगी।

आपकी तमाम कोशिशों के बावजूद, जब लोगों को दुख पहुँचाने का समय आएगा, तो वे दुख ज़रूर पहुँचाएँगे। ज़िंदगी ऐसी ही है। मुझे पता है कि मैं उपदेश दे रही हूँ, लेकिन अब समय आ गया है कि आप भी इस तरह जीना सीखें। आप ज़िंदगी को अपने हिसाब से ढालने की बहुत कोशिश करते हैं। अगर आप पागलखाने में समय नहीं बिताना चाहते, तो आपको थोड़ा और खुलना होगा और ज़िंदगी के स्वाभाविक प्रवाह के साथ बहना होगा। मैं तो बस एक बेबस और अपूर्ण महिला हूँ, लेकिन फिर भी कई बार मैं सोचती हूँ कि ज़िंदगी कितनी खूबसूरत हो सकती है! यकीन मानिए, यह सच है! तो अभी जो भी कर रहे हैं, उसे रोकें और खुश हो जाएँ। खुद को खुश रखने की कोशिश करें!

यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि मुझे बहुत दुख है कि आप और नाओको

का रिश्ता सुखद अंत तक नहीं पहुँच सका। लेकिन कौन कह सकता है कि क्या बेहतर है? इसीलिए आपको जहाँ भी खुशी का मौका मिले, उसे थाम लेना चाहिए और दूसरों के बारे में ज़्यादा चिंता नहीं करनी चाहिए। मेरे अनुभव से पता चलता है कि जीवन में ऐसे दो या तीन ही मौके मिलते हैं, और अगर हम उन्हें गंवा देते हैं, तो हमें जीवन भर पछतावा होता है।
322

मैं हर दिन गिटार बजाता हूँ, किसी खास मकसद से नहीं। यह थोड़ा निरर्थक सा लगता है। मुझे अंधेरी, बरसाती रातें भी पसंद नहीं हैं। मुझे उम्मीद है कि मुझे फिर कभी तुम्हारे और नाओको के साथ कमरे में बैठकर गिटार बजाने और अंगूर खाने का मौका मिलेगा।
खैर, तब तक के लिए -
रेइको इशिदा
323

नाओको की मृत्यु के बाद रीको ने मुझे कई बार पत्र लिखा। उसने कहा, इसमें मेरी कोई गलती नहीं थी। किसी की भी गलती नहीं थी, ठीक वैसे ही जैसे बारिश के लिए किसी को दोष नहीं दिया जा सकता। लेकिन मैंने उसे कभी जवाब नहीं दिया। मैं क्या कह सकती थी? इससे क्या फायदा

होता? नाओको अब इस दुनिया में नहीं थी; वह मुट्ठी भर राख बनकर रह गई थी।

अगस्त के अंत में कोबे में नाओको का अंतिम संस्कार सादगी से किया गया, और उसके बाद मैं टोक्यो लौट आया। मैंने अपने मकान मालिक को बताया कि मैं कुछ समय के लिए बाहर रहूँगा और इतालवी रेस्तरां में अपने बॉस को भी बताया कि मैं काम पर नहीं आ पाऊँगा। मिदोरी के लिए मैंने एक छोटा सा नोट लिखा: मैं अभी कुछ कह नहीं सकता था, लेकिन मुझे उम्मीद थी कि वह मेरा थोड़ा और इंतज़ार करेगी। मैंने अगले तीन दिन सिनेमाघरों में बिताए, और टोक्यो में हर नई फिल्म देखने के बाद, मैंने अपना बैग पैक किया, बैंक से अपनी सारी बचत निकाली, शिंजुकु स्टेशन गया, और शहर से बाहर जाने वाली पहली एक्सप्रेस ट्रेन पकड़ ली।

मैं अपनी यात्राओं पर कहाँ-कहाँ गया, यह याद करना मेरे लिए नामुमकिन है। मुझे दृश्य, आवाज़ें और गंध तो साफ़-साफ़ याद हैं, लेकिन शहरों के नाम नहीं, और न ही मुझे यह याद है कि मैं किस क्रम में एक जगह से दूसरी जगह गया। मैं ट्रेन, बस या ट्रक में लिफ़्ट लेकर एक शहर से दूसरे शहर जाता था, खाली पार्किंग स्थलों, स्टेशनों, पार्कों, नदी के किनारों या समुद्र तट पर अपना स्लीपिंग बैग बिछा लेता था। एक बार मैंने उन्हें मनाकर स्थानीय पुलिस स्टेशन के कोने में सोने की अनुमति ली थी, और एक बार कब्रिस्तान के पास सोया था। मुझे इस बात की परवाह नहीं थी कि मैं कहाँ सोता हूँ, बस इतना था कि मैं लोगों के रास्ते से दूर रहूँ और जब तक मन करे अपने स्लीपिंग बैग में रह सकूँ। चलने से थककर, मैं उसमें घुस जाता, थोड़ी सी सस्ती व्हिस्की पीता, और सो जाता।

मैं गहरी नींद में सो रहा था। अच्छे शहरों में लोग मेरे लिए खाना और

मच्छर भगाने वाली कॉइल लाते थे, और खराब शहरों में लोग पुलिस को बुलाकर मुझे पार्कों से भगा देते थे। मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। मैं बस अनजान शहरों में जाकर सोना चाहता था।

जब मेरे पास पैसे कम पड़ जाते थे, तो मैं कुछ दिनों के लिए मज़दूरी करता था, जब तक कि मेरे पास ज़रूरत के पैसे न आ जाएँ। मेरे लिए हमेशा काम मिलता रहता था। मैं बस एक शहर से दूसरे शहर घूमता रहता था, बिना किसी मंज़िल के। दुनिया बहुत बड़ी थी और अजीबोगरीब चीज़ों और अजनबी लोगों से भरी हुई थी। एक बार मैंने मिदोरी को फ़ोन किया क्योंकि मुझे उसकी आवाज़ सुनने की बहुत इच्छा थी।

"टर्म तो बहुत पहले ही शुरू हो चुका है, तुम्हें पता है ना," उसने कहा। "कुछ कोर्स तो अभी से पेपर भी मांग रहे हैं। अब तुम क्या करोगे? क्या तुम्हें पता है कि तुम तीन हफ्ते से संपर्क में नहीं हो? तुम कहाँ हो? क्या कर रहे हो?"

"माफ़ कीजिए, लेकिन मैं अभी टोक्यो वापस नहीं जा सकता। अभी नहीं।"

"और बस इतना ही बताओगे मुझे?"

"इस समय मैं इससे ज्यादा कुछ नहीं कह सकता। शायद अक्टूबर में कह सकूं।"

.."

मिडोरी ने बिना कुछ कहे फोन काट दिया।

मैंने अपनी यात्रा जारी रखी। बीच-बीच में मैं किसी सस्ते होटल में रुकता और नहाकर दाढ़ी बनाता। लेकिन आईने में जो चेहरा दिखता था, वह बहुत बुरा लगता था।

धूप से मेरी त्वचा सूख गई थी, आँखें धँसी हुई थीं, और गालों पर अजीब-अजीब धब्बे और कट के निशान थे। मैं ऐसी लग रही थी जैसे अभी-अभी

किसी गुफा से रेंगकर निकली हूँ, लेकिन आखिर मैं ही तो थी। मैं ही थी। उस समय तक मैं तट के किनारे-किनारे टोक्यो से जितना दूर जा सकता था, जा रहा था - शायद तोटोरी या ह्योगो के किसी छिपे हुए हिस्से में। समुद्र तट पर चलना आसान था। मुझे रेत में सोने के लिए हमेशा कोई आरामदायक जगह मिल जाती थी। मैं बहकर आई लकड़ियों से आग जलाता और स्थानीय मछुआरे से खरीदी हुई सूखी मछली भूनता। फिर मैं थोड़ी व्हिस्की पीता और लहरों की आवाज़ सुनता हुआ नाओको के बारे में सोचता। यह सोचना बहुत अजीब था कि वह मर चुकी है और अब इस दुनिया का हिस्सा नहीं है।
मैं इस सच्चाई को पचा नहीं पा रहा था। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था। मैंने 325 सुना था।

उसके ताबूत के ढक्कन में कीलें ठोंकी जा रही थीं, लेकिन फिर भी मैं इस तथ्य को स्वीकार नहीं कर पा रहा था कि वह शून्यता में लौट गई है।
नहीं, उसकी छवि अभी भी मेरी यादों में ताज़ा थी। मैं अब भी उसे अपने लिंग को अपने मुँह में लिए, उसके बाल मेरे पेट पर बिखरे हुए देख सकता था। मैं अब भी उसकी गर्माहट, उसकी साँसें अपने ऊपर महसूस कर सकता था, और वह बेबस पल जब मैं बस स्खलित होने के अलावा कुछ नहीं कर सकता था। मैं यह सब इतनी स्पष्टता से याद कर सकता था जैसे यह सब पाँच मिनट पहले ही हुआ हो, और मुझे पूरा यकीन था कि नाओको अब भी मेरे बगल में है, कि मैं बस हाथ बढ़ाकर उसे छू सकता हूँ। लेकिन नहीं, वह वहाँ नहीं थी; उसका शरीर अब इस दुनिया में नहीं था।
जिन रातों में मुझे नींद नहीं आती थी, नाओको की तस्वीरें मेरे सामने आ जाती थीं। उन्हें रोकना नामुमकिन था। उसकी बहुत सारी यादें मेरे अंदर

भरी हुई थीं, और जैसे ही उनमें से एक को थोड़ी सी भी जगह मिलती, बाकी सब एक अंतहीन धारा की तरह, एक अनियंत्रित बाढ़ की तरह बाहर निकल आतीं: उस बरसात की सुबह पीले रेनकोट में नाओको पक्षीशाला साफ कर रही थी और दाना ढो रही थी; पिचका हुआ जन्मदिन का केक और नाओको के आंसुओं का मेरी कमीज़ को भिगो देना (हाँ, तब भी बारिश हो रही थी); सर्दियों में ऊंट के बालों का कोट पहने नाओको मेरे बगल में चल रही थी; नाओको हमेशा पहने रहने वाली हेयरस्लाइड को छू रही थी; नाओको अपनी उन बेहद साफ आँखों से मुझे देख रही थी; नाओको सोफे पर बैठी थी, पैर अपनी नीली नाइटड्रेस के नीचे मोड़े हुए, ठुड्डी घुटनों पर टिकी हुई।
यादें मुझ पर ज्वार की लहरों की तरह टूट पड़तीं, मेरे शरीर को किसी अनजान नई जगह पर ले जातीं - एक ऐसी जगह जहाँ मैं मृतकों के साथ रहती थी। वहाँ नाओको रहती थी, और मैं उससे बातें कर सकती थी और उसे अपनी बाहों में भर सकती थी। उस जगह मृत्यु जीवन का निर्णायक अंत नहीं थी। वहाँ मृत्यु जीवन के अनेक तत्वों में से एक थी। वहाँ नाओको अपने भीतर मृत्यु को लिए जीती थी। और उसने मुझसे कहा, "चिंता मत करो, यह तो बस मृत्यु है। इसे अपने ऊपर हावी मत होने दो।" उस अजीब जगह पर मुझे कोई उदासी महसूस नहीं हुई। मृत्यु तो मृत्यु थी, और नाओको तो नाओको ही थी। "क्या समस्या है?" उसने शरमाते हुए मुस्कुराते हुए मुझसे पूछा।

"मैं यहाँ हूँ, है ना?" उसके परिचित छोटे-छोटे हाव-भाव ने मेरे दिल को मरहम की तरह सुकून दिया। "अगर यही मृत्यु है," मैंने मन ही मन सोचा, "तो मृत्यु इतनी बुरी भी नहीं है।" "यह सच है," नाओको ने कहा, "मृत्यु कुछ भी नहीं है। यह बस मृत्यु है।"

"यहाँ मेरे लिए सब कुछ बहुत आसान है।" नाओको ने अंधेरी लहरों के टकराने की आवाज़ के बीच मुझसे कहा।

लेकिन अंततः, लहरें पीछे हट जातीं और मैं समुद्र तट पर अकेला रह जाता। बेबस, मैं कहीं नहीं जा सकता था; उदासी मुझे गहरे अंधकार में घेर लेती, जब तक कि आंसू न आ जाते। मुझे ऐसा महसूस नहीं होता था कि मैं रो रहा हूँ, बल्कि ऐसा लगता था कि आंसू पसीने की तरह मेरे शरीर से बह रहे हैं।

किज़ुकी की मृत्यु से मैंने एक बात सीखी थी, और मेरा मानना था कि मैंने इसे एक दर्शन के रूप में अपने भीतर समाहित कर लिया है: "मृत्यु का अस्तित्व जीवन के विपरीत नहीं, बल्कि जीवन के एक भाग के रूप में है।"

अपने जीवन को जीते हुए हम मृत्यु को पोषित करते हैं। यह सत्य भले ही हो, लेकिन यह उन सच्चाइयों में से एक थी जिन्हें हमें सीखना ही था। नाओको की मृत्यु से मैंने यह सीखा: किसी प्रियजन को खोने से होने वाले दुख को कोई सत्य दूर नहीं कर सकता। न सत्य, न ईमानदारी, न शक्ति, न दया, उस दुःख को दूर कर सकती है। हम बस इतना कर सकते हैं कि उस दुःख को अंत तक सहन करें और उससे कुछ सीखें, लेकिन जो हम सीखेंगे वह अचानक आने वाले अगले दुःख का सामना करने में कोई मदद नहीं करेगा। रात में लहरों की आवाज़ सुनना, हवा की सरसराहट सुनना, दिन-ब-दिन मैं इन्हीं विचारों में डूबा रहता था। पीठ पर थैला, बालों में रेत, मैं पश्चिम की ओर बढ़ता चला गया, व्हिस्की, रोटी और पानी के सहारे।

एक तूफानी शाम, जब मैं एक परित्यक्त जहाज़ के किनारे स्लीपिंग बैग में लिपटी हुई रो रही थी, तभी एक युवक वहाँ से गुज़रा और उसने मुझे

सिगरेट दी। मैंने उसे स्वीकार कर लिया और एक साल से ज़्यादा समय बाद पहली बार सिगरेट पी। उसने पूछा कि मैं क्यों रो रही हूँ, और मैंने बिना सोचे-समझे उसे बता दिया कि मेरी माँ का निधन हो गया है। मैंने कहा कि मैं इस दुख को सहन नहीं कर पा रही थी, इसलिए मैं सड़क पर निकल पड़ी थी। उसने गहरी सहानुभूति व्यक्त की और अपने घर से साके की एक बड़ी बोतल और दो गिलास ले आया।
327

जब हम वहाँ बैठकर शराब पी रहे थे, तब रेतीले समुद्र तट पर तेज़ हवा चल रही थी। उसने मुझे बताया कि जब वह 16 साल का था, तब उसकी माँ का देहांत हो गया था। कभी स्वस्थ न रहने वाली उसकी माँ सुबह से शाम तक काम करके थक गई थी। मैं उसकी बातें आधी-अधूरी सुन रहा था, अपनी साके की चुस्की ले रहा था और बीच-बीच में हल्की-हल्की आवाज़ें निकाल रहा था। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी दूर लोक की कहानी सुन रहा हूँ। आखिर वह किस बारे में बात कर रहा है? मैं सोचने लगा, और अचानक ही मुझे ज़बरदस्त गुस्सा आ गया: मैं उसका गला घोंटना चाहता था। तुम्हारी माँ की किसे परवाह है? मैंने नाओको को खो दिया है! उसका सुंदर शरीर इस दुनिया से चला गया है! तुम मुझे अपनी माँ के बारे में क्यों बता रहे हो?!
लेकिन मेरा गुस्सा जितनी जल्दी भड़का था, उतनी ही जल्दी शांत भी हो गया। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और मछुआरे की अंतहीन बातों को आधे मन से सुनता रहा।
आखिरकार उसने मुझसे पूछा कि क्या मैंने खाना खाया था। मैंने कहा, नहीं, लेकिन मेरे बैग में ब्रेड और पनीर, एक टमाटर और चॉकलेट का एक टुकड़ा था। उसने पूछा, मैंने दोपहर के खाने में क्या खाया था?

मैंने जवाब दिया, "ब्रेड और पनीर, टमाटर और चॉकलेट।" "यहीं रुको," उसने कहा और भाग गया। मैंने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन वह पीछे मुड़े बिना अंधेरे में गायब हो गया।

मैं बस अपनी साके पीता रहा। किनारा पटाखों के टुकड़ों से भरा पड़ा था जो रेत पर फूटे थे, और लहरें ज़ोरदार गर्जना के साथ समुद्र तट से टकरा रही थीं। एक दुबला-पतला कुत्ता पूंछ हिलाता हुआ आया और मेरे छोटे से अलाव के आसपास कुछ खाने की तलाश में सूंघने लगा, लेकिन आखिरकार उसने हार मान ली और इधर-उधर भटकने लगा।

युवा मछुआरा आधे घंटे बाद सुशी के दो डिब्बे और खातिर की एक नई बोतल लेकर लौटा। उसने कहा, "मुझे ऊपर वाला डिब्बा तुरंत खा लेना चाहिए क्योंकि उसमें मछली है, लेकिन नीचे वाले डिब्बे में केवल नोरी रोल और तले हुए टोफू के टुकड़े हैं, इसलिए वे कल तक चलेंगे।" उसने नई बोतल से हमारे दोनों गिलास खातिर से भर दिए। मैंने उसे धन्यवाद दिया और ऊपर वाला पूरा डिब्बा खुद ही खत्म कर दिया, हालाँकि उसमें दो लोगों के लिए पर्याप्त से ज़्यादा था। जब हम जितना खा सकते थे उतना खा चुके थे, तो उसने मुझे रात भर अपने यहाँ ठहराने की पेशकश की, लेकिन जब मैंने कहा कि मैं समुद्र तट पर अकेले सोना पसंद करूँगा, तो उसने बात वहीं खत्म कर दी। जाते समय उसने अपनी जेब से 5,000 यूरो का एक मुड़ा हुआ नोट निकाला और उसे 328 नंबर के बॉक्स में डाल दिया।

मेरी कमीज की जेब में। "लो," उसने कहा, "अपने लिए कुछ पौष्टिक खाना ले लो।"

"तुम बहुत बुरे दिख रहे हो।" मैंने कहा कि उन्होंने मेरे लिए ज़रूरत से ज़्यादा किया है और मैं बाकी सब चीज़ों के साथ-साथ पैसे भी नहीं ले

सकती, लेकिन उन्होंने पैसे वापस लेने से इनकार कर दिया। "यह पैसे की बात नहीं है," उन्होंने कहा, "यह मेरी भावनाएँ हैं। ज़्यादा मत सोचो, बस इसे ले लो।" मैं बस उन्हें धन्यवाद दे सकी और पैसे स्वीकार कर लिए।

उसके जाने के बाद, मुझे अचानक अपनी पुरानी प्रेमिका की याद आ गई, जिसके साथ मैंने स्कूल के आखिरी साल में पहली बार शारीरिक संबंध बनाए थे। यह एहसास होते ही मेरे रोंगटे खड़े हो गए कि मैंने उसके साथ कितना बुरा बर्ताव किया था। मैंने शायद ही कभी उसके विचारों, भावनाओं या उसे पहुँचाए दर्द के बारे में सोचा था। वह बहुत प्यारी और कोमल थी, लेकिन उस समय मैंने उसकी इस कोमलता को हल्के में लिया था और बाद में तो उसके बारे में कभी सोचा भी नहीं।

मैंने सोचा, अब वह क्या कर रही होगी? और क्या उसने मुझे माफ कर दिया होगा?

मुझे जी मिचलाने लगा और मैंने पुराने जहाज के पास उल्टी कर दी। बहुत ज़्यादा साके पीने से मेरा सिर दुख रहा था और मछुआरे से झूठ बोलकर उसके पैसे लेने का मुझे बहुत बुरा लग रहा था। मैंने तय किया कि अब टोक्यो वापस जाने का समय आ गया है; मैं इसे हमेशा के लिए जारी नहीं रख सकता। मैंने अपना स्लीपिंग बैग अपने बैकपैक में ठूसा, हाथों को पट्टियों में डाला और स्थानीय रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़ा। मैंने टिकट काउंटर पर बैठे आदमी से कहा कि मैं जितनी जल्दी हो सके टोक्यो पहुँचना चाहता हूँ। उसने अपना टाइमटेबल देखा और कहा कि अगर मैं एक रात की ट्रेन से दूसरी में बदल लूँ तो सुबह तक ओसाका पहुँच सकता हूँ, फिर वहाँ से बुलेट ट्रेन ले सकता हूँ। मैंने उसे धन्यवाद दिया और 5,000 डॉलर का टिकट ले लिया।

मछुआरे ने मुझे टोक्यो का टिकट खरीदने के लिए एक नोट दिया था। ट्रेन का इंतज़ार करते हुए मैंने एक अखबार खरीदा और तारीख देखी: 2

अक्टूबर, 1970। इस तरह मैं पूरे एक महीने से यात्रा कर रहा था। मुझे पता था कि मुझे असली दुनिया में वापस जाना होगा।
यात्रा के उस महीने ने न तो मेरा मनोबल बढ़ाया और न ही नाओको की मृत्यु के सदमे को कम किया। मैं टोक्यो लगभग उसी हालत में लौटा जिस हालत में मैं वहां से गया था। मैं मिदोरी को फोन करने की हिम्मत भी नहीं जुटा पाया।
मैं उससे क्या कहता? मैं शुरुआत कैसे करता? "अब सब खत्म हो गया है; हम दोनों साथ में खुश रह सकते हैं"? नहीं, यह तो मुमकिन ही नहीं था।
329

मैं इसे चाहे जैसे भी कहूँ, तथ्य वही थे: नाओको मर चुकी थी, और मिदोरी अभी भी जीवित थी। नाओको राख का ढेर थी, और मिदोरी एक जीवित, साँस लेती हुई इंसान थी।
मुझे अपने ही अपवित्र होने का अहसास सताने लगा। टोक्यो लौटने के बावजूद मैंने कई दिनों तक अपने कमरे में ही खुद को बंद रखा। मेरी स्मृति जीवितों की बजाय मृतकों पर ही टिकी रही।
मैंने नाओको के लिए जो कमरे अलग रखे थे, वे बंद थे, फर्नीचर सफेद चादरों से ढका था, खिड़कियों की चौखटें धूल से भरी थीं। मैं दिन का अधिकांश समय उन्हीं कमरों में बिताता था। और मैं किज़ुकी के बारे में सोचता था। "तो तुमने आखिरकार नाओको को अपना बना लिया," मैंने खुद को उससे कहते सुना। "खैर, वह तो शुरू से ही तुम्हारी थी। अब, शायद, वह वहीं है जहाँ उसे होना चाहिए। लेकिन इस दुनिया में, जीवितों की इस अपूर्ण दुनिया में, मैंने नाओको के लिए अपनी पूरी कोशिश की। मैंने हम दोनों के लिए एक नया जीवन बसाने की कोशिश की। लेकिन

भूल जाओ, किज़ुकी। मैं उसे तुम्हें सौंप रहा हूँ। आखिरकार, उसने तुम्हें ही चुना था। अपने दिल की गहराइयों जितनी गहरी अंधेरी जंगल में, उसने खुद को फांसी लगा ली।"
एक समय की बात है, तुमने मेरे एक हिस्से को मृतकों की दुनिया में खींच लिया था, और अब नाओको ने मेरे दूसरे हिस्से को उस दुनिया में खींच लिया है।
कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं किसी संग्रहालय का रखवाला हूँ - एक विशाल, खाली संग्रहालय जहाँ कभी कोई नहीं आता, और मैं केवल अपने लिए ही उसकी देखभाल कर रहा हूँ।"

टोक्यो लौटने के चार दिन बाद, रेइको का एक पत्र आया।
विशेष संदेश। एक छोटा सा नोट था: मैं कई हफ्तों से आपसे संपर्क नहीं कर पा रहा हूँ और चिंतित हूँ। कृपया मुझे कॉल करें। सुबह 9 बजे और रात 9 बजे मैं फोन के पास इंतजार करूँगा।
मैंने उस रात नौ बजे उसे फोन किया। रीको ने एक ही घंटी बजने पर फोन उठा लिया।
"क्या तुम ठीक हो?" उसने पूछा।
"लगभग," मैंने कहा।
"क्या आपको बुरा लगेगा अगर मैं परसों आपसे मिलने आऊं?"
"मुझसे मिलने आओगे? तुम्हारा मतलब टोक्यो में?"
"मेरा मतलब बिल्कुल यही है। मैं आपसे अच्छी और लंबी बातचीत करना चाहता हूं।"

"क्या आप पागलखाने से जा रहे हैं?"

"यही एक तरीका है जिससे मैं तुमसे मिलने आ सकता हूँ, है ना? खैर, अब मेरे लिए इस जगह से निकलने का समय आ गया है। आखिरकार, मैं यहाँ आठ साल से हूँ।"
अगर वे मुझे और ज्यादा देर तक रखेंगे तो मैं सड़ने लगूंगा।"
मुझे बोलना मुश्किल लग रहा था। थोड़ी देर चुप रहने के बाद, रेइको बोली: "मैं परसों 3:20 बजे वाली बुलेट ट्रेन में होऊंगी। क्या तुम मुझे स्टेशन पर मिलोगे? क्या तुम्हें अभी भी मेरी शक्ल याद है? या नाओको की मौत के बाद अब तुम्हारी मुझमें कोई दिलचस्पी नहीं रही?"
मैंने कहा, "बिल्कुल नहीं। परसों टोक्यो स्टेशन पर 3:20 बजे मिलते हैं।"
"मुझे पहचानने में आपको कोई परेशानी नहीं होगी। मैं गिटार केस वाली बूढ़ी औरत हूँ। ऐसी औरतें बहुत कम हैं।"

और सच कहूँ तो, भीड़ में रीको को ढूंढने में मुझे कोई परेशानी नहीं हुई। उसने पुरुषों की ट्वीड जैकेट, सफेद पतलून और लाल जूते पहने हुए थे। उसके बाल हमेशा की तरह छोटे थे, जिनमें हमेशा की तरह कुछ लटें ऊपर उठी हुई थीं। उसके दाहिने हाथ में भूरे रंग का चमड़े का सूटकेस था और बाएं हाथ में काले रंग का गिटार केस। जैसे ही उसने मुझे देखा, उसने मुझे एक बड़ी, झुर्रियों वाली मुस्कान दी और मैं भी मुस्कुरा उठा। मैंने उसका सूटकेस लिया और उसके साथ-साथ पश्चिमी उपनगरों के लिए ट्रेन पकड़ने चला गया।
"अरे, वातानाबे, तुम कब से यह भयानक चेहरा बनाए हुए हो? या टोक्यो में आजकल यही फैशन चल रहा है?"
मैंने कहा, "मैं कुछ समय से यात्रा कर रहा था, हर समय जंक फूड खाता था। आपको बुलेट ट्रेन कैसी लगी?"
"बहुत बुरा!" उसने कहा। "खिड़कियाँ खोली नहीं जा सकतीं। मैं स्टेशन के

किसी बुफे से लंच बॉक्स खरीदना चाहती थी।"
"वे उन्हें जहाज पर ही बेचते हैं, आपको पता है।"
"हाँ, महंगे प्लास्टिक के सैंडविच। भूखा घोड़ा भी उसे हाथ नहीं लगाएगा। मुझे गोतेनबा स्टेशन पर मिलने वाले डिब्बाबंद लंच हमेशा पसंद आते थे।"
"एक समय की बात है, बुलेट ट्रेन के आने से पहले।"
"खैर, मैं उस ज़माने से हूँ जब बुलेट ट्रेन भी नहीं थी!"
331

किचिज़ोजी जाने वाली ट्रेन में, रेइको ने खिड़की से गुजरते हुए मुसाशिनो के परिदृश्य को एक पर्यटक की सारी जिज्ञासा के साथ देखा।
मैंने पूछा, "क्या आठ साल में इसमें बहुत बदलाव आया है?"
"तुम्हें नहीं पता कि मैं अभी कैसा महसूस कर रहा हूँ, है ना, वातानाबे?"
"नहीं, मुझे नहीं पता।"
"मैं डरी हुई हूँ," उसने कहा। "इतना डरी हुई हूँ कि मैं पल भर में पागल हो सकती हूँ। मुझे नहीं पता कि मुझे क्या करना चाहिए, मैं यहाँ बिल्कुल अकेली पड़ी हूँ।"
वह थोड़ी देर रुकी। "लेकिन 'बस यूं ही पागल हो जाओ।' यह एक बढ़िया मुहावरा है, है ना?"
मैंने मुस्कुराते हुए उसका हाथ पकड़ लिया। "चिंता मत करो," मैंने कहा। "सब ठीक हो जाएगा। तुम्हारी अपनी हिम्मत ने ही तुम्हें यहाँ तक पहुँचाया है।"
"मुझे उस जगह से बाहर निकालने में मेरी अपनी ताकत का कोई योगदान नहीं था," रेइको ने कहा।
"यह नाओको और तुम थे। नाओको के बिना मैं वहाँ नहीं रह सकता था, और तुमसे बात करने के लिए मुझे टोक्यो आना पड़ा। बस इतना ही।

अगर कुछ नहीं हुआ होता तो शायद मैं अपना बाकी जीवन वहीं बिता देता।"
मेंने सिर हिलाया।
मैंने रेइको से पूछा, "अब आगे तुम क्या करने की योजना बना रही हो?"
"मैं असाहिकावा जा रही हूँ," उसने कहा। "होक्काइडो के सुदूर जंगली इलाके में! मेरी एक पुरानी कॉलेज की दोस्त वहाँ एक संगीत स्कूल चलाती है, और वो पिछले दो-तीन सालों से मुझसे मदद मांग रही है। मैंने उससे कहा था कि मुझे वहाँ बहुत ठंड लगेगी। मतलब, मुझे आखिरकार अपनी आज़ादी वापस मिली है और मुझे असाहिकावा जाना है? ऐसी जगह के बारे में उत्साहित होना मुश्किल है - जैसे कोई गड्ढा हो।"
मैंने हंसते हुए कहा, "यह इतना बुरा भी नहीं है। मैं वहां जा चुका हूं। यह कोई बुरा छोटा शहर नहीं है। इसकी अपनी एक खास पहचान है।" "क्या आप सच कह रहे हैं?"
"बिल्कुल। टोक्यो में रहने से तो यह कहीं बेहतर है।"
"अच्छा, ठीक है," उसने कहा। "मेरे पास कहीं और जाने की जगह नहीं है, और मैंने अपना सामान पहले ही वहाँ भेज दिया है। हे वातानाबे, मुझसे वादा करो कि तुम असाहिकावा में मुझसे मिलने आओगे।"
"बिल्कुल, मैं आऊंगा। लेकिन क्या आपको अभी तुरंत जाना होगा?"
क्या आप कुछ समय के लिए टोक्यो में नहीं रुक सकते?
अगर संभव हो तो मैं यहाँ कुछ दिन रुकना चाहूँगा। क्या आप मुझे अपने यहाँ ठहरा सकते हैं?

मैं आपके रास्ते में नहीं आऊंगा।
मैंने कहा, "कोई बात नहीं। मेरे पास एक बड़ी अलमारी है जिसमें मैं अपने स्लीपिंग बैग में सो सकता हूँ।"

मैं तुम्हारे साथ ऐसा नहीं कर सकता।
"नहीं, सचमुच। यह एक बहुत बड़ी कोठरी है।"
रेइको ने अपने पैरों के बीच रखे गिटार केस पर ताल बजाते हुए कहा, "शायद मुझे असाहिकावा जाने से पहले खुद को थोड़ा तैयार करना पड़ेगा। मुझे बाहरी दुनिया में रहने की आदत नहीं है। बहुत सी चीजें हैं जो मुझे समझ नहीं आतीं, और मैं घबरा रही हूँ। क्या आप मेरी थोड़ी मदद कर सकते हैं? आप ही एकमात्र व्यक्ति हैं जिनसे मैं मदद मांग सकती हूँ।"
मैंने कहा, "मैं तुम्हारी मदद करने के लिए हर संभव प्रयास करूंगा।"
"मुझे उम्मीद है कि मैं आपके रास्ते में बाधा नहीं बन रही हूँ," उसने कहा।
"मेरे पास आपके अंदर आने का कोई रास्ता नहीं है," मैंने कहा।
उसने मेरी तरफ देखा और मुस्कुराते हुए अपने होंठों के कोनों को ऊपर उठाया, लेकिन कुछ नहीं कहा।

किचिज़ोजी स्टेशन तक और मेरे घर वापस आते समय बस में हमने मुश्किल से ही बात की। हमने टोक्यो में हुए बदलावों, रेइको के संगीत महाविद्यालय में बिताए समय और असाहिकावा की मेरी एक यात्रा के बारे में कुछ इधर-उधर की बातें कीं, लेकिन नाओको के बारे में कुछ नहीं कहा। रेइको को देखे हुए दस महीने बीत चुके थे, लेकिन उसके साथ चलते हुए मुझे अजीब सी शांति और सुकून महसूस हुआ। मुझे लगा कि यह एक जानी-पहचानी सी अनुभूति है, और फिर मुझे याद आया कि टोक्यो की सड़कों पर नाओको के साथ चलते समय मुझे ऐसा ही महसूस होता था। और जिस तरह नाओको और मैंने मृत किज़ुकी को साझा किया था, उसी तरह रेइको और मैंने मृत नाओको को भी साझा किया था। इस विचार ने मेरे लिए आगे बात करना असंभव बना दिया। रेइको थोड़ी देर

बोलती रही, लेकिन जब उसे एहसास हुआ कि मैं कुछ नहीं कह रहा हूँ, तो वह भी चुप हो गई। बस में हम दोनों में से किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा।
यह शरद ऋतु की उन शुरुआती दोपहरों में से एक थी जब प्रकाश तेज और स्पष्ट होता है, ठीक वैसे ही जैसे एक साल पहले जब मैं क्योटो में नाओको से मिलने गया था। बादल सफेद और हड्डियों की तरह पतले थे, आकाश खुला और ऊंचा था। हवा की खुशबू, प्रकाश का रंग, 333

घास में खिले नन्हे फूल, ध्वनियों के साथ आने वाली सूक्ष्म प्रतिध्वनियाँ: इन सबने मुझे बताया कि शरद ऋतु फिर से आ गई है, और ऋतुओं के प्रत्येक चक्र के साथ मेरे और मृतकों के बीच की दूरी बढ़ती जा रही है।
किज़ुकी अभी भी 17 साल की थी और नाओको 21 साल की: हमेशा के लिए।

"अरे वाह, ऐसी जगह आकर कितनी राहत मिली!" बस से उतरते ही रेइको ने चारों ओर देखते हुए कहा।
मैंने कहा, "क्योंकि यहाँ कुछ भी नहीं है।"
जब मैं उसे बगीचे के पिछले द्वार से होते हुए अपनी कुटिया तक ले जा रहा था, तो रीको वहां देखी गई हर चीज से प्रभावित हुई।
"यह तो बहुत बढ़िया है!" उसने कहा। "क्या तुमने ये अलमारियां और मेज बनाई हैं?"
"हां," मैंने चाय डालते हुए कहा।
"तुम्हारे हाथों में गजब का हुनर है। और तुम इस जगह को इतना साफ-सुथरा रखते हो!"
मैंने कहा, "स्टॉर्म ट्रूपर का असर है। उसने मुझे सफाई का दीवाना बना

दिया है। वैसे मेरे मकान मालिक को इससे कोई शिकायत नहीं है।"
"ओह, आपके मकान मालिक! मुझे उनसे अपना परिचय देना चाहिए।"
मुझे लगता है कि बगीचे के दूसरी तरफ उनका कमरा है। "उनसे अपना परिचय देना? किसलिए?"
"तुम्हारा मतलब 'किसलिए' से क्या है? कोई अजीब सी बूढ़ी औरत तुम्हारे घर आकर गिटार बजाने लगे, तो वो सोचेगा कि आखिर चल क्या रहा है। शुरुआत अच्छी होनी चाहिए। मैं उसके लिए चाय के साथ खाई जाने वाली मिठाइयों का एक डिब्बा भी लाई हूँ।" "बहुत बढ़िया," मैंने कहा।
"उम्र के साथ आने वाली समझदारी। मैं उसे बताऊंगी कि मैं तुम्हारी मां की तरफ से तुम्हारी चाची हूं, जो क्योटो से मिलने आई हूं, इसलिए मेरी बात का विरोध मत करना।"
ऐसे समय में उम्र का अंतर काम आता है। किसी को शक नहीं होगा।
रेइको ने अपने थैले से मिठाई का डिब्बा निकाला और श्रद्धांजलि अर्पित करने चली गई। मैं बरामदे में बैठकर एक और कप चाय पीता रहा और बिल्ली से खेलता रहा। बीस मिनट बीत गए, और जब रेइको आखिरकार वापस आई, तो उसने अपने थैले से चावल के बिस्कुट का एक डिब्बा निकाला और कहा कि यह मेरे लिए उपहार है।

मैंने बिस्कुट चबाते हुए पूछा, "तुम इतनी देर से किस बारे में बात कर रहे थे?"
"बेशक, तुम ही हो," रेइको ने बिल्ली को गोद में लेते हुए और अपना गाल उससे रगड़ते हुए कहा। "वह कहता है कि तुम बहुत ही सभ्य नौजवान हो, एक गंभीर छात्र हो।"
"क्या आपको यकीन है कि वह मेरे बारे में ही बात कर रहा था?"

"मुझे इसमें ज़रा भी शक नहीं है कि वह तुम्हारे बारे में ही बात कर रहा था," उसने हंसते हुए कहा। फिर, मेरी गिटार देखकर उसने उसे उठाया, उसकी ट्यूनिंग ठीक की और एंटोनियो कार्लोस जोबिम का गीत "डेसाफिनाडो" बजाना शुरू कर दिया।

मुझे रेइको का गिटार सुने हुए कई महीने हो गए थे, और इसे सुनकर मुझे वही पुराना, सुखद एहसास हुआ।

"क्या तुम गिटार बजाने का अभ्यास कर रहे हो?" उसने पूछा।

"यह मकान मालिक के गोदाम में पड़ा हुआ था, इसलिए मैंने इसे उधार लिया और कभी-कभार इस पर थोड़ा-बहुत बजा लेता हूँ। बस इतना ही।"

"मैं तुम्हें बाद में सिखाऊँगी। बिलकुल मुफ़्त।" रेइको ने गिटार नीचे रखा और अपनी ट्वीड जैकेट उतार दी। बरामदे के खंभे से टेक लगाकर बैठी वह सिगरेट पी रही थी। उसने मद्रास चेक वाली आधी बाजू की कमीज़ पहनी हुई थी।

"अच्छी शर्ट है, है ना?" उसने पूछा।

"हाँ," मैंने कहा। वास्तव में, यह एक सुंदर पैटर्न वाली आकर्षक शर्ट थी।

"ये नाओको के कपड़े हैं," रेइको ने कहा। "मुझे यकीन है कि तुम्हें पता नहीं था कि हम दोनों का साइज़ एक जैसा है। खासकर जब वो पहली बार सैनिटोरियम आई थी। उसके बाद उसका वज़न थोड़ा बढ़ गया था, लेकिन फिर भी हम दोनों का साइज़ लगभग एक जैसा ही था: ब्लाउज़, पैंट, जूते, टोपी। ब्रा ही एक ऐसी चीज़ थी जिसे हम आपस में बाँट नहीं सकते थे। मेरे पास यहाँ लगभग कुछ भी नहीं है। इसलिए हम हमेशा कपड़े बदलते रहते थे। असल में, ये एक तरह से संयुक्त स्वामित्व जैसा था।"

अब जब उसने इस बारे में बताया, तो मैंने देखा कि रीको का शरीर नाओको से लगभग मिलता-जुलता था। उसके चेहरे की बनावट और

पतली बांहों और टांगों के कारण, मुझे हमेशा ऐसा लगता था कि वह नाओको से छोटी और पतली है, लेकिन वास्तव में वह आश्चर्यजनक रूप से मजबूत थी।
335

"जैकेट और पैंट भी उसी की हैं," रेइको ने कहा। "ये सब उसी की हैं। क्या आपको मुझे उसके कपड़े पहने देखकर कोई परेशानी होती है?"
"बिल्कुल नहीं," मैंने कहा। "मुझे यकीन है कि नाओको को खुशी होगी अगर कोई उसके कपड़े पहने - खासकर तुम।"
"यह अजीब है," रेइको ने उंगलियां चटकाते हुए कहा। "नाओको ने कोई वसीयत नहीं छोड़ी - सिवाय कपड़ों के बारे में। उसने अपनी डेस्क पर रखे मेमोपैड पर एक लाइन लिखी थी। 'कृपया मेरे सारे कपड़े रेइको को दे दीजिए।' वह बड़ी अजीब थी, है ना?"
जब वो मरने की तैयारी कर रही है, तो भला उसे अपने कपड़ों की चिंता क्यों होगी? कपड़ों की परवाह कौन करता है? जरूर उसे और भी बहुत कुछ कहना होगा।
"शायद नहीं," मैंने कहा।
सिगरेट का कश लेते हुए, रेइको गहरी सोच में डूबी हुई लग रही थी। फिर उसने कहा,
"मुझे लगता है कि आप पूरी कहानी क्रम से सुनना चाहते हैं।"
मैंने कहा, "हाँ, मुझे पता है। कृपया मुझे सब कुछ बताएँ।"

ओसाका के अस्पताल में किए गए परीक्षणों से पता चला कि नाओको की हालत में फिलहाल सुधार हो रहा है, लेकिन उन्हें कुछ लंबे समय तक वहीं रहना चाहिए ताकि उनका बेहतर इलाज किया जा सके।

भविष्य में इसके लाभों के लिए गहन चिकित्सा जारी रखें। मैंने आपको अपने पत्र में इतना ही बताया था - जो मैंने आपको लगभग 10 अगस्त को भेजा था।"
"ठीक है। मैंने वह पत्र पढ़ लिया है।"
"खैर, 24 अगस्त को मुझे नाओको की माँ का फोन आया, उन्होंने पूछा कि क्या नाओको मुझसे सैनिटोरियम में मिलने आ सकती है। नाओको अपना सामान पैक करना चाहती थी जो उसने मेरे पास छोड़ा था, और क्योंकि वह कुछ समय तक मुझसे मिल नहीं पाएगी, इसलिए वह मुझसे आराम से लंबी बातचीत करना चाहती थी, और शायद हमारे फ्लैट में एक रात बिताना चाहती थी। मैंने कहा कि ठीक है। मैं उससे मिलने और उससे बात करने के लिए बहुत बेताब थी। तो नाओको और उसकी माँ अगले दिन, 25 तारीख को, टैक्सी से आ गईं। हम तीनों ने मिलकर नाओको का सामान पैक किया और बातें कीं। दोपहर बाद, नाओको ने कहा कि उसकी माँ घर जा सकती है, 336

वह ठीक हो जाएगी, इसलिए उन्होंने टैक्सी बुलाई और माँ चली गई। हमें बिल्कुल भी चिंता नहीं थी क्योंकि नाओको बहुत खुश लग रही थी। दरअसल, तब तक मैं बहुत चिंतित थी। मुझे लग रहा था कि वह उदास, थकी हुई और दुबली-पतली होगी। मेरा मतलब है, मुझे पता था कि उन अस्पतालों में होने वाले परीक्षण, थेरेपी और अन्य उपचारों से कितना तनाव हो सकता है, इसलिए मुझे इस मुलाकात को लेकर काफी संदेह था। लेकिन उसे एक नज़र देखने से ही मुझे यकीन हो गया कि वह ठीक होगी। वह मेरी उम्मीद से कहीं ज्यादा स्वस्थ लग रही थी और मुस्कुरा रही थी, मजाक कर रही थी और पिछली बार जब मैंने उसे देखा था, उससे कहीं ज्यादा सामान्य तरीके से बात कर रही थी। वह हेयरड्रेसर के पास

गई थी और अपने नए हेयरस्टाइल को दिखा रही थी। इसलिए मैंने सोचा कि अगर उसकी माँ हमें अकेला छोड़ भी दे तो भी चिंता की कोई बात नहीं है।

नाओको ने मुझसे कहा कि इस बार वह अस्पताल के डॉक्टरों से ही अपना इलाज हमेशा के लिए करवाएगी, और मैंने कहा कि शायद यही सबसे अच्छा होगा। फिर हम दोनों टहलने निकल गए, लगातार बातें करते रहे, खासकर भविष्य के बारे में। नाओको ने मुझसे कहा कि उसकी दिली इच्छा है कि हम दोनों इस पागलखाने से निकलकर कहीं साथ रहने लगें।

"क्या आप दोनों साथ रहते हैं? आप और नाओको?"

“हाँ, बिल्कुल,” रेइको ने थोड़ा कंधे उचकाते हुए कहा। “तो मैंने उससे कहा कि मुझे तो यह अच्छा लगा, लेकिन वातानाबे का क्या? और उसने कहा, ‘चिंता मत करो, मैं उससे सब ठीक कर लूंगी।’ बस इतना ही। फिर उसने इस बारे में बात की कि हम कहाँ रहेंगे और क्या करेंगे, इस तरह की बातें। उसके बाद हम पक्षीशाला गए और पक्षियों के साथ खेले।”

मैंने फ्रिज से एक बियर निकाली और उसे खोला। रीको ने एक और सिगरेट जलाई, बिल्ली उसकी गोद में गहरी नींद में सो रही थी।

"उस लड़की ने अपने लिए सब कुछ पहले से ही तय कर रखा था। मुझे यकीन है कि इसीलिए वह इतनी ऊर्जावान, मुस्कुराती हुई और स्वस्थ दिखती थी। यह जानकर उसके मन को बहुत राहत मिली होगी कि उसे पता है कि उसे क्या करना है। फिर हमने उसका सामान छाँटना खत्म किया और जो कुछ उसे ज़रूरत नहीं थी उसे बगीचे में रखे धातु के ड्रम में फेंककर जला दिया: वह नोटबुक जिसे वह डायरी के रूप में इस्तेमाल करती थी, और उसे मिले सभी पत्र। आपके पत्र भी। यह मुझे थोड़ा अजीब लगा, इसलिए मैंने 337 से पूछा।"

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि वो इस तरह की चीज़ें क्यों जला रही थी। मेरा मतलब है, वो हमेशा से ही चिट्ठियों को सुरक्षित जगह पर रखने और बार-बार पढ़ने का बहुत ध्यान रखती थी। उसने कहा, "मैं अतीत की हर चीज़ से छुटकारा पा रही हूँ ताकि भविष्य में मेरा पुनर्जन्म हो सके।" मुझे लगता है मैंने उसकी बात पर पूरा भरोसा कर लिया। इसमें एक तरह का तर्क था। मुझे याद है मैं सोच रही थी कि मैं कितनी चाहती हूँ कि वो स्वस्थ और खुश हो जाए। उस दिन वो कितनी प्यारी और सुंदर लग रही थी: काश तुम उसे देख पाती!

"जब वह सब खत्म हो गया, तो हम हमेशा की तरह भोजन कक्ष में रात के खाने के लिए गए। फिर हमने स्नान किया और मैंने एक अच्छी शराब की बोतल खोली जो मैंने ऐसे खास मौके के लिए बचाकर रखी थी, और हमने शराब पी और मैंने गिटार बजाया। हमेशा की तरह, द बीटल्स, "नॉर्वेजियन वुड"।

"मिशेल", उसका पसंदीदा नाम। हम दोनों काफी अच्छा महसूस कर रहे थे। हमने लाइटें बंद कीं, कपड़े उतारे और अपने बिस्तरों पर लेट गए। यह उन उमस भरी गर्म रातों में से एक थी। खिड़कियाँ पूरी तरह खुली थीं, लेकिन हवा का नामोनिशान नहीं था। बाहर स्याही जैसा काला था, टिड्डे चीख रहे थे, और कमरे में गर्मी की घास की इतनी तेज़ गंध थी कि साँस लेना मुश्किल हो रहा था। अचानक, नाओको तुम्हारे बारे में बात करने लगी - उस रात के बारे में जब उसने तुम्हारे साथ शारीरिक संबंध बनाए थे। अविश्वसनीय विस्तार से। तुमने कैसे उसके कपड़े उतारे, कैसे उसे छुआ, कैसे वह उत्तेजित हो गई, कैसे तुम उसके अंदर गए, कितना अद्भुत एहसास हुआ: उसने मुझे यह सब विस्तार से बताया। तो मैंने उससे पूछा: तुम मुझे यह सब अब, अचानक क्यों बता रही हो? मेरा मतलब है, तब तक उसने मुझसे कभी खुलकर यौन संबंध के बारे में बात नहीं की थी।

बेशक, हमने एक तरह की थेरेपी के तौर पर कुछ खुलकर यौन बातें की थीं, लेकिन वह विस्तार से बताने में बहुत शर्म महसूस करती थी। अब मैं उसे रोक नहीं सका। मैं हैरान रह गया।
तो उसने कहा, "मुझे नहीं पता, बस इसके बारे में बात करने का मन कर रहा है। अगर आप नहीं सुनना चाहते तो मैं रुक जाऊंगी।" "नहीं," मैंने कहा, "कोई बात नहीं। अगर आपको कुछ कहना है तो कह दीजिए। मैं आपकी हर बात सुनूंगा।"
तो उसने अपनी कहानी जारी रखी: "जब वह मेरे अंदर गया, तो मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि कितना दर्द हो रहा था। आखिरकार, यह मेरा पहला अनुभव था। मैं इतनी गीली थी कि वह आसानी से अंदर चला गया, लेकिन फिर भी, मेरा दिमाग सुन्न हो गया - बहुत दर्द हो रहा था।"

मुझे लगा कि उसने उसे जितना हो सके अंदर तक डाल दिया, लेकिन फिर उसने मेरे पैर ऊपर उठाए और और भी अंदर तक डाल दिया। इससे मेरे पूरे शरीर में सिहरन दौड़ गई, मानो मैं बर्फीले पानी में भीग रही हूँ। मेरे हाथ-पैर सुन्न हो गए और ठंड की एक लहर मेरे पूरे शरीर में दौड़ गई। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। मुझे लगा कि मैं वहीं मर जाऊँगी, और मुझे इसकी कोई परवाह नहीं थी।
लेकिन उसे एहसास हुआ कि मैं दर्द में हूँ, इसलिए वह हिलना बंद कर दिया, और अभी भी मेरे भीतर गहराई तक, उसने मुझे हर जगह चूमना शुरू कर दिया - मेरे बाल, मेरी गर्दन, मेरे स्तन - बहुत देर तक। धीरे-धीरे मेरे शरीर में गर्माहट लौट आई, और फिर, बहुत धीरे-धीरे, उसने हिलना शुरू किया। ओह, रेइको, यह कितना अद्भुत था! अब ऐसा लग रहा था जैसे मेरा दिमाग पिघल जाएगा। मैं हमेशा के लिए ऐसे ही रहना चाहती

थी, जीवन भर उसकी बाहों में रहना चाहती थी। यह इतना अद्भुत था।
तो मैंने उससे कहा, "अगर यह इतना अच्छा था, तो तुम वातानाबे के साथ ही क्यों नहीं रहीं और हर दिन ऐसा करती रहीं?" लेकिन उसने कहा, "नहीं, रेइको, मुझे पता था कि ऐसा दोबारा कभी नहीं होगा। मुझे पता था कि यह एक ऐसी चीज है जो मेरे जीवन में एक बार आएगी, फिर चली जाएगी और कभी वापस नहीं आएगी। यह जीवन में एक बार होने वाली घटना होगी। मैंने पहले कभी ऐसा कुछ महसूस नहीं किया था, और उसके बाद भी मैंने कभी ऐसा कुछ महसूस नहीं किया। मुझे कभी दोबारा ऐसा करने की इच्छा नहीं हुई, और मैं दोबारा कभी उस तरह से उत्तेजित नहीं हुई।"
"बेशक, मैंने उसे समझाया कि यह अक्सर युवा महिलाओं के साथ होता है और ज्यादातर मामलों में उम्र के साथ यह अपने आप ठीक हो जाता है। और आखिरकार, उस एक बार तो यह ठीक हो गया था: चिंता करने की कोई जरूरत नहीं थी कि यह दोबारा नहीं होगा। मुझे खुद भी शादी के शुरुआती दिनों में कई तरह की परेशानियां हुई थीं।"
लेकिन उसने कहा, "नहीं, ऐसा नहीं है, रेइको। मुझे इसकी बिल्कुल भी चिंता नहीं है। मैं बस इतना चाहती हूं कि कोई भी मेरे अंदर दोबारा प्रवेश न करे। मैं बस दोबारा किसी के द्वारा इस तरह से प्रताड़ित नहीं होना चाहती।"
मैंने अपनी बियर पी ली, और रेइको ने अपनी दूसरी सिगरेट खत्म कर ली। बिल्ली रेइको की गोद में लेट गई, एक नई जगह ढूंढी और फिर सो गई। रेइको को समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या करे, तभी उसने अपनी तीसरी सिगरेट जला ली।
उसके बाद नाओको रोने लगी। मैं उसके बिस्तर के किनारे बैठ गया और

मैंने उसके बालों पर हाथ फेरा। "चिंता मत करो," मैंने कहा, "सब ठीक हो जाएगा। तुम्हारे जैसी खूबसूरत जवान लड़की को गले लगाने और खुश करने के लिए एक आदमी की ज़रूरत होती है।" नाओको पसीने और आंसुओं से भीगी हुई थी। मैंने एक तौलिया लिया और उसका चेहरा और शरीर सुखाया। उसकी पैंटी भी पूरी तरह भीगी हुई थी, इसलिए मैंने उसे कपड़े उतारने में मदद की।

उन्हें - ज़रा रुकिए, कोई गलतफ़हमी मत पालिए, कुछ भी गलत नहीं हो रहा था। हम हमेशा साथ नहाते थे। वह मेरी छोटी बहन जैसी थी।

"मुझे पता है, मुझे पता है," मैंने कहा।

खैर, नाओको ने कहा कि वह चाहती है कि मैं उसे गले लगाऊं। मैंने कहा कि गले लगाने के लिए बहुत गर्मी है, लेकिन उसने कहा कि यह हमारी आखिरी मुलाकात होगी, इसलिए मैंने उसे गले लगा लिया। बस थोड़ी देर के लिए। हमारे बीच एक तौलिया रखा ताकि हमारे पसीने से भीगे शरीर एक-दूसरे से चिपक न जाएं। और जब वह शांत हुई, तो मैंने उसे फिर से सुखाया, उसे नाइटड्रेस पहनाई और उसे बिस्तर पर लिटा दिया। वह तुरंत गहरी नींद में सो गई। या शायद वह सोने का नाटक कर रही थी। जो भी हो, उस रात वह बहुत प्यारी और सुंदर लग रही थी, उसका चेहरा 13 या 14 साल की उस लड़की जैसा था जिसे जन्म से लेकर आज तक कभी कोई तकलीफ नहीं हुई हो। मैंने उसके चेहरे पर वह भाव देखा, और मुझे पता चल गया कि मैं निश्चिंत होकर सो सकता हूं।

जब मैं सुबह छह बजे उठी, तो वह जा चुकी थी। उसकी नाइटड्रेस वहीं थी जहाँ उसने गिराई थी, लेकिन उसके कपड़े, जूते और वो टॉर्च जो मैं हमेशा अपने तकिए के पास रखती हूँ, गायब थे। मुझे तुरंत समझ आ गया कि कुछ गड़बड़ है। मतलब, टॉर्च ले जाने का मतलब ही यही था कि वह अंधेरे

में ही निकली थी। मैंने एहतियात के तौर पर उसकी डेस्क भी चेक की, और
वहाँ एक नोट था: कृपया मेरे सारे कपड़े रेइको को दे दीजिए। मैंने तुरंत सबको जगाया और हम सब उसे ढूंढने के लिए अलग-अलग रास्तों पर निकल पड़े। हमने पूरे इलाके का एक-एक कोना छान मारा, छात्रावास के अंदर से लेकर आसपास के जंगल तक। उसे ढूंढने में हमें पाँच घंटे लग गए।
वह अपनी रस्सी भी साथ लाई थी।
रेइको ने आह भरी और बिल्ली को थपथपाया।
मैंने पूछा, "क्या आपको चाय चाहिए?"

"जी हां, धन्यवाद," रेइको ने कहा।
मैंने पानी उबाला और चाय का एक बर्तन बरामदे में ले आई। सूर्यास्त होने वाला था। दिन का उजाला कम हो गया था और पेड़ों की लंबी-लंबी छायाएँ हमारे पैरों तक फैली हुई थीं। मैंने चाय की चुस्की ली और उस विचित्र से बगीचे को देखा जिसमें पीले ग्लोबफ्लावर, गुलाबी अज़ेलिया और ऊँचे-ऊँचे हरे नंदीन के फूल एक साथ खिले हुए थे।
"फिर एम्बुलेंस आई और नाओको को ले गई और पुलिस ने मुझसे पूछताछ शुरू कर दी। वैसे तो इसमें कोई शक नहीं था। एक तरह का सुसाइड नोट मिला था, और यह साफ तौर पर आत्महत्या थी, और उन्होंने मान लिया कि आत्महत्या मानसिक रोगियों द्वारा की जाने वाली आम चीजों में से एक है। तो यह सब एक औपचारिकता मात्र थी। उनके जाते ही मैंने आपको टेलीग्राम भेज दिया।"
“कितना दुखद अंतिम संस्कार था,” मैंने कहा। “उसके परिवार को साफ

तौर पर इस बात का दुख था कि मुझे नाओको की मौत के बारे में पता चल गया था। मुझे यकीन है कि वे नहीं चाहते थे कि लोगों को पता चले कि उसने आत्महत्या की थी। शायद मुझे वहां होना ही नहीं चाहिए था। जिससे मुझे और भी बुरा लगा। वापस आते ही मैं तुरंत निकल पड़ा।”

"अरे, वातानाबे, चलो टहलने चलते हैं। हम रात के खाने के लिए कुछ खरीद सकते हैं, शायद। मुझे बहुत भूख लगी है।"

"ज़रूर। क्या आप कुछ खाना चाहेंगे?"

"सुकियाकी," उसने कहा। "मैंने सालों से ऐसा कुछ नहीं खाया है। मैं सुकियाकी के सपने देखती थी - बस गोमांस, हरी प्याज, नूडल्स, भुना हुआ टोफू और साग से अपना पेट भर लेना।"

"ज़रूर, हम वो ले सकते हैं, लेकिन मेरे पास सुकियाकी पैन नहीं है।"

"छोड़ो मुझे। मैं तुम्हारे मकान मालिक से उधार ले आती हूँ।" वह दौड़कर मुख्य घर गई और एक बढ़िया पैन लेकर वापस आई।

एक बड़े आकार का पैन, गैस कुकर और रबर की नली। "बुरा नहीं है, है ना?"

"इतना खराब भी नहीं!"

हमने पड़ोस की छोटी दुकानों से सभी सामग्री खरीद ली।

गोमांस, अंडे, सब्जियां, टोफू। मैंने एक ठीक-ठाक सफेद वाइन चुनी। मैंने भुगतान करने की कोशिश की, लेकिन रेइको ने सब कुछ खुद ही देने पर जोर दिया।

"सोचो, अगर परिवार को पता चले कि मैंने अपने भतीजे से खाने का बिल भरवाया, तो वे मुझ पर कितना हँसेंगे!" रेइको ने कहा। "इसके अलावा, मेरा वज़न भी काफी ज़्यादा है!"

काफी नकदी है। इसलिए चिंता मत करो। मैं खाली हाथ अस्पताल से

निकलने वाला नहीं था।
रेइको ने चावल धोकर उबालने के लिए रख दिए, जबकि मैंने बरामदे में खाना पकाने की तैयारी कर ली। जब सब कुछ तैयार हो गया, तो रेइको ने अपना गिटार निकाला और बाख की धीमी धुन बजाकर उसका अभ्यास करती हुई प्रतीत हुई। कठिन हिस्सों पर वह जानबूझकर कभी धीमी तो कभी तेज़ बजाती, कभी उसे भावहीन तो कभी भावुक बना देती, और वाद्य यंत्र से निकलने वाली विभिन्न ध्वनियों को बड़े आनंद से सुनती। गिटार बजाते समय रेइको एक 17 वर्षीय लड़की की तरह लग रही थी जो नई पोशाक देखकर खुश हो रही हो। उसकी आँखें चमक रही थीं और वह हल्की सी मुस्कान के साथ होंठ फुला रही थी।
जब उसने अपना काम पूरा कर लिया, तो वह एक खंभे से टेक लगाकर बैठ गई और गहरी सोच में डूबी हुई सी आकाश की ओर देखने लगी।
मैंने पूछा, "क्या मैं आपसे बात करूँ?"
"बिल्कुल नहीं," उसने कहा। "मैं बस यही सोच रही थी कि मुझे कितनी भूख लगी है।"
"क्या आप यहां रहते हुए अपने पति या बेटी से मिलने की योजना नहीं बना रही हैं? वे टोक्यो में कहीं न कहीं तो होंगे ही।"
"काफी करीब है। योकोहामा। लेकिन नहीं, मेरा उनसे मिलने का कोई इरादा नहीं है। मुझे यकीन है मैंने आपको पहले भी बताया था: उनके लिए यही बेहतर है कि उनका मुझसे कोई वास्ता न रहे। उन्होंने एक नई जिंदगी शुरू कर दी है। और अगर मैं उनसे मिल भी जाऊं तो मुझे बहुत बुरा लगेगा। नहीं, सबसे अच्छा यही है कि मैं उनसे दूर रहूं।"
उसने सेवन स्टार्स सिगरेट का खाली डिब्बा मसल दिया और अपने सूटकेस से एक नया डिब्बा निकाला। उसने सील तोड़ी और एक सिगरेट मुंह में रखी, लेकिन जलाई नहीं।

"एक इंसान के तौर पर मेरा अस्तित्व समाप्त हो चुका है," उसने कहा। "आप जो देख रहे हैं, वह मेरे अतीत की धुंधली सी याद है। मेरा सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा, जो मेरे भीतर हुआ करता था, वह वर्षों पहले मर चुका है, और मैं अब केवल स्वतःस्फूर्त स्मृति के सहारे जी रही हूँ।"
"लेकिन मुझे तुम अब भी पसंद हो, रेइको, जैसी तुम हो, चाहे पुरानी यादें हों या कुछ और। और इस बारे में मुझे जो कहना है उससे शायद कोई फर्क न पड़े, लेकिन मुझे सच में खुशी है कि तुमने नाओको के कपड़े पहने हैं।"
रेइको मुस्कुराई और लाइटर से अपनी सिगरेट जलाई। "इतनी कम उम्र में भी, तुम जानते हो कि एक औरत को कैसे खुश किया जाता है।"

मुझे लगा जैसे मेरा चेहरा लाल हो गया हो। "मैं बस वही कह रही हूँ जो मैं सच में सोचती हूँ।" "हाँ, मुझे पता है," रेइको ने मुस्कुराते हुए कहा। उसके तुरंत बाद जब चावल पक गए, तो मैंने पैन में तेल डाला और सुकियाकी बनाने की सामग्री को व्यवस्थित किया।
"मुझे बताओ कि यह सपना नहीं है," रेइको ने हवा को सूंघते हुए कहा।
"नहीं, यह बिल्कुल असली सुकियाकी है," मैंने कहा। "अनुभव के आधार पर, बिल्कुल।"
बातें करने के बजाय, हम चॉपस्टिक से सुकियाकी पर टूट पड़े, खूब सारी बीयर पी और आखिर में चावल खाए। खुशबू से आकर्षित होकर एक सीगल वहाँ आ गई, तो हमने अपना मांस उसके साथ बाँट लिया। जब हमारा पेट भर गया, तो हम बरामदे के खंभों से टेक लगाकर चाँद को देखने लगे।
"संतुष्ट हो?" मैंने पूछा।

"बिल्कुल," उसने कराहते हुए कहा। "मैंने अपनी जिंदगी में इतना कभी नहीं खाया।"
"अब आप क्या करना चाहते हैं?"
"सिगरेट पीकर सार्वजनिक स्नानघर में चलते हैं। मेरे बाल बहुत उलझे हुए हैं। मुझे इन्हें धोना पड़ेगा।"
"कोई बात नहीं। गली के उस पार एक है।"
"अगर आपको कोई आपत्ति न हो तो वातानाबे, मुझे बताइए। क्या आपने उस लड़की मिदोरी के साथ संबंध बनाए हैं?"
"तुम्हारा मतलब है कि क्या हमने सेक्स किया है? अभी नहीं। हमने फैसला किया है कि जब तक सब कुछ ठीक नहीं हो जाता, तब तक हम सेक्स नहीं करेंगे।"
"अच्छा, अब तो मामला सुलझ गया, है ना?"
मैंने सिर हिलाया। "अब जब नाओको मर चुकी है, तो तुम्हारा मतलब यही है?"
नहीं, ऐसा नहीं है। नाओको की मृत्यु से बहुत पहले ही तुमने यह फैसला कर लिया था कि तुम मिदोरी को कभी नहीं छोड़ोगे। नाओको ज़िंदा है या मर गई, इससे तुम्हारे फैसले पर कोई फर्क नहीं पड़ता। तुमने मिदोरी को चुना। नाओको ने मरने का फैसला किया। अब तुम बड़े हो गए हो, इसलिए तुम्हें अपने फैसलों की ज़िम्मेदारी लेनी होगी। वरना, तुम सब कुछ बर्बाद कर दोगे।
"पर मैं उसे भूल नहीं सकता," मैंने कहा। "मैंने नाओको से कहा था कि मैं उसका इंतज़ार करता रहूँगा, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सका। अंत में मैंने उससे मुँह मोड़ लिया। मैं किसी को दोष नहीं दे रहा: यह मेरी अपनी समस्या है। मुझे लगता है कि अगर मैंने उससे मुँह नहीं मोड़ा होता, तब भी चीजें वैसी ही होतीं। नाओको शुरू से ही मौत को चुन रही थी। लेकिन

यह बात अलग है।"

असल बात तो ये है कि मैं खुद को माफ नहीं कर सकता। आप कहते हैं कि भावनाओं में स्वाभाविक बदलाव के बारे में मैं कुछ नहीं कर सकता, लेकिन नाओको के साथ मेरा रिश्ता इतना आसान नहीं था। अगर आप ज़रा सोच-विचार करें तो हम दोनों जीवन और मृत्यु के बीच की सीमा पर एक-दूसरे से जुड़े हुए थे। हमारे लिए ये शुरू से ही ऐसा था।
"अगर नाओको की मौत से आपको किसी तरह का दुख है, तो मैं आपको सलाह दूंगी कि आप उस दुख को जीवन भर महसूस करते रहें। और अगर इससे आपको कुछ सीखने को मिलता है, तो वह भी जरूर सीखें। लेकिन इन सब बातों को छोड़ दें तो आपको मिदोरी के साथ खुश रहना चाहिए। आपका दुख मिदोरी के साथ आपके रिश्ते से जुड़ा नहीं है। अगर आपने उसे पहले से ज्यादा दुख पहुंचाया, तो घाव इतना गहरा हो सकता है कि उसे भरना मुश्किल हो जाए। इसलिए, चाहे कितना भी मुश्किल हो, आपको मजबूत रहना होगा। आपको और समझदार बनना होगा, और ज्यादा वयस्क बनना होगा। मैं आपको यह बताने के लिए ही अस्पताल छोड़कर टोक्यो तक आई हूं - उस ताबूत जैसी ट्रेन में सफर करके।"
मैंने रेइको से कहा, "मैं तुम्हारी बात समझ रही हूँ, लेकिन मैं अभी भी इस पर अमल करने के लिए तैयार नहीं हूँ। मेरा मतलब है, वह अंतिम संस्कार कितना दुखद था! किसी को भी इस तरह नहीं मरना चाहिए।"

रेइको ने अपना हाथ बढ़ाया और मेरे सिर पर हाथ फेरा। "हम सबको एक दिन ऐसे ही मरना है। मैं भी मरूँगी, और तुम भी।"

हम नदी किनारे-किनारे पाँच मिनट पैदल चलकर स्थानीय सार्वजनिक स्नानघर गए और तरोताज़ा होकर घर लौटे। मैंने शराब की बोतल खोली

और हम बरामदे में बैठकर उसे पीने लगे।
"अरे, वातानाबे, क्या तुम एक और गिलास ला सकते हो?"
"ज़रूर," मैंने कहा। "लेकिन किसलिए?"
"हम नाओको का अंतिम संस्कार अपने तरीके से करेंगे, सिर्फ हम दोनों ही होंगे।"
एक ऐसा जो इतना दुखद न हो।"
जब मैंने उसे गिलास दिया, तो रेइको ने उसे पूरा भर दिया और बगीचे में रखे पत्थर के लालटेन पर रख दिया। फिर वह बरामदे में एक खंभे से टेक लगाकर बैठ गई, हाथों में गिटार लिए सिगरेट पीने लगी।
और अब क्या आप माचिस की डिब्बी ला सकते हैं? सबसे बड़ी 344 माचिस की डिब्बी लाएँ।

एक जिसे आप ढूंढ सकते हैं।"
मैंने रसोई की माचिस की एक छोटी डिब्बी निकाली और उसके बगल में बैठ गया।
"अब मैं चाहता हूं कि जब भी मैं कोई गाना बजाऊं, आप एक माचिस की तीली नीचे रख दें, बस उन्हें एक कतार में लगा दें। मैं जितने भी गाने सोच सकता हूं, सब बजाऊंगा।"
सबसे पहले उन्होंने हेनरी मैनसिनी के गीत "डियर हार्ट" का एक मधुर और प्यारा संस्करण प्रस्तुत किया।
"आपने इसकी रिकॉर्डिंग नाओको को दी थी, है ना?" उसने पूछा।
"मैंने किया था। पिछले साल क्रिसमस पर। उसे वह गाना बहुत पसंद आया था।"
"मुझे भी ये पसंद है," रेइको ने कहा। "कितना मधुर और सुंदर है..." और उसने शराब का एक और घूंट लेने से पहले धुन की कुछ पंक्तियाँ फिर से

दोहराईं। "पता नहीं मैं पूरी तरह नशे में धुत होने से पहले कितने गाने बजा सकती हूँ। ये एक अच्छा अंत्येष्टि गीत होगा, है ना - इतना दुखद नहीं?"
रीको ने इसके बाद बीटल्स के गाने "नॉर्वेजियन वुड" की ओर रुख किया। "यस्टरडे", "मिशेल" और "समथिंग"। उन्होंने गाया और बजाया।
मैंने पहले "हियर कम्स द सन" खेला, फिर "द फूल ऑन द हिल" खेला। मैंने लगातार सात मैच जीते।
"सात गाने," रेइको ने और शराब पीते हुए और एक और सिगरेट पीते हुए कहा। "वे लोग जीवन के दुख और कोमलता के बारे में वाकई बहुत कुछ जानते थे।"
"उन लोगों" से रीको का मतलब ज़ाहिर तौर पर जॉन लेनन, पॉल मैककार्टनी और जॉर्ज हैरिसन था। थोड़ी देर आराम करने के बाद, रीको ने अपनी सिगरेट बुझाई और फिर से अपना गिटार उठा लिया। उसने "पेनी लेन" बजाया।
"ब्लैकबर्ड", "जूलिया", "व्हेन आई एम 64", "नोव्हेयर मैन", "एंड आई लव हर", और "हे जूड"।
"इसमें कितने गाने हैं?"
मैंने कहा, "चौदह।"
उसने आह भरी और मुझसे पूछा, "तुम्हारा क्या ख्याल है? क्या तुम कुछ बजा सकते हो?"
शायद एक गाना?
"बिल्कुल नहीं। मैं बहुत बुरा हूँ।"

"तो इसे बेहद खराब तरीके से खेलो।"
मैंने अपना गिटार निकाला और लड़खड़ाते हुए "अप ऑन द रूफ" गाना

शुरू किया। रेइको ने आराम किया, सिगरेट पी और शराब पी। जब मेरा गाना खत्म हुआ, तो उसने ताली बजाई।
इसके बाद उन्होंने रावेल की "पावने फॉर ए डाइंग क्वीन" का गिटार रूपांतरण और डेबुसी की "क्लेयर डे लून" का एक सुंदर और साफ-सुथरा वादन प्रस्तुत किया।
"नाओको की मृत्यु के बाद मैंने इन दोनों कलाओं में महारत हासिल की," रेइको ने कहा। "अंत तक, संगीत के प्रति उसकी रुचि कभी भी भावुकता से ऊपर नहीं उठी।"
इसके बाद उन्होंने बाचाराच के कुछ गाने गाए: "क्लोज टू यू"।
"रेनड्रॉप्स कीप फॉलिंग ऑन माय हेड", "वॉक ऑन बाय", "वेडिंग बेल ब्लूज़"।
मैंने कहा, "बीस।"
"मैं चलती-फिरती ज्यूकबॉक्स की तरह हूँ!" रेइको ने हैरानी से कहा। "अगर मेरे प्रोफेसर मुझे अभी देख लें तो बेहोश हो जाएँगे।"

वह लगातार घूंट भरती, कश लगाती और गाने बजाती रही: कई बोसा नोवा, रोजर्स और हार्ट, गर्शविन, बॉब डायलन, रे चार्ल्स, कैरोल किंग, द बीच बॉयज़, स्टीवी वंडर, क्यू सकामोटो का "सुकियाकी सॉन्ग"।
"ब्लू वेलवेट", "ग्रीन फील्ड्स"। कभी-कभी वह अपनी आंखें बंद कर लेती और धुन पर सिर हिलाती या गुनगुनाती थी।
जब शराब खत्म हो गई, तो हमने व्हिस्की का सहारा लिया। बगीचे में रखे गिलास में जो शराब थी, उसे मैंने पत्थर के लालटेन पर उड़ेल दिया और उसकी जगह व्हिस्की रख दी।
"हमारी गिनती कैसी चल रही है?" रेइको ने पूछा। "अड़तालीस," मैंने कहा।

हमारे उनतालीसवें गीत के लिए रेइको ने "एलेनोर रिग्बी" बजाया, और पचासवें गीत के लिए उन्होंने "नॉर्वेजियन वुड" की प्रस्तुति दी। इसके बाद उन्होंने अपने हाथों को आराम दिया और थोड़ी व्हिस्की पी। "शायद इतना काफी है," उन्होंने कहा।
मैंने जवाब दिया, "हाँ, यह अद्भुत है।"
रेइको ने मेरी आँखों में देखकर कहा, "अब मेरी बात सुनो, वातानाबे। मैं चाहती हूँ कि तुम उस दुखद छोटे से अंतिम संस्कार को पूरी तरह से भूल जाओ जो तुमने देखा था। बस 346

हमारे इस अद्भुत व्यक्ति को याद रखें।"
मेंने सिर हिलाया।
"एक और बढ़िया धुन बजाते हैं," उसने कहा, और अपने इक्यावनवें भाग के रूप में उसने बाख की अपनी पसंदीदा फ्यूग बजाई। जब वह बजाना समाप्त कर चुकी, तो उसने लगभग फुसफुसाते हुए कहा, "वातानाबे, क्या तुम मेरे साथ इसे बजाओगे?"
"अजीब बात है," मैंने कहा। "मैं भी यही सोच रहा था।"

हम अंदर गए और पर्दे खींच दिए। फिर, अंधेरे कमरे में, रेइको और मैंने एक-दूसरे के शरीर को ऐसे छुआ जैसे यह हमारे लिए दुनिया की सबसे स्वाभाविक बात हो। मैंने उसका ब्लाउज और पैंट उतार दिया, और फिर उसकी अंडरवियर।
"मैंने एक अजीबोगरीब जिंदगी जी है," रेइको ने कहा, "लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझसे 19 साल छोटा आदमी मेरे लिए मेरी पैंटी उतारेगा।"
"क्या आप इन्हें खुद उतारना पसंद करेंगे?"

"नहीं, ठीक है। लेकिन मेरी झुर्रियों को देखकर ज्यादा हैरान मत होना।"
मुझे तुम्हारी झुर्रियां पसंद हैं।
"तुम मुझे रुला दोगे," उसने फुसफुसाते हुए कहा।
मैंने उसे हर जगह चूमा, अपनी जीभ से उसकी झुर्रीदार जगहों को खास तौर पर छुआ। उसके स्तन एक छोटी बच्ची जैसे थे। मैंने उन्हें सहलाया और उसके निप्पल्स को अपने दांतों में दबाया, फिर अपनी एक उंगली उसकी गर्म, नम योनि में डाली और उसे हिलाने लगा।
"गलत जगह है, वातानाबे," रेइको ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा। "ये तो बस एक झुर्री है।"
"मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि तुम ऐसे समय में चुटकुले सुना रहे हो!"
"माफ़ करना," उसने कहा। "मैं डरी हुई हूँ। मैंने सालों से ऐसा नहीं किया है। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं 17 साल की लड़की हूँ: मैं बस एक लड़के से उसके कमरे में मिलने गई थी, और अचानक मैं नग्न हो गई।"
सच कहूं तो, मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं एक 17 वर्षीय लड़की का यौन उत्पीड़न कर रहा हूं।
उसकी "झुर्री" में उंगली रखकर, मैंने अपने होंठ उसकी गर्दन से ऊपर उसके कान तक ले जाकर उसकी एक निप्पल को अपनी उंगलियों में ले लिया। जैसे ही उसकी सांसें तेज हुईं और उसका गला कांपने लगा, मैंने उसकी लंबी, पतली टांगों को फैलाया और 347

मैं उसके अंदर था।
"अब तुम मुझे गर्भवती तो नहीं करने वाले? तुम इसका ख्याल रख रहे हो ना?" रेइको ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा। "अगर मैं इस उम्र में गर्भवती हो गई तो मुझे बहुत शर्म आएगी।"
मैंने कहा, "चिंता मत करो। बस आराम करो।"

जब मैं पूरी तरह से अंदर चला गया, तो वह कांप उठी और उसने एक आह भरी।
उसकी पीठ सहलाते हुए, मैं उसके अंदर चला गया और फिर अचानक ही मेरा वीर्य निकल पड़ा। यह एक तीव्र, अनियंत्रित स्खलन था। जैसे ही मेरा वीर्य बार-बार उसकी गर्माहट में प्रवाहित हुआ, मैंने उसे कसकर पकड़ लिया।
मैंने कहा, "मुझे माफ कर दीजिए। मैं खुद को रोक नहीं पाई।"
"बेवकूफी मत करो," रेइको ने मेरी कमर पर हल्का सा थप्पड़ मारते हुए कहा। "तुम्हें इसकी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। क्या लड़कियों के साथ ऐसा करते समय हमेशा यही बात तुम्हारे दिमाग में रहती है?"
"हाँ थोड़ा सा।"
"खैर, आपको मेरे साथ इस बारे में सोचने की जरूरत नहीं है। भूल जाइए।"
जितना मन करे उतना खुलकर जियो। कैसा लगा? "शानदार।"
इसीलिए मैं खुद पर काबू नहीं रख पाया।
"यह खुद को नियंत्रित करने का समय नहीं है। यह ठीक है। मेरे लिए भी यह बहुत अच्छा रहा।"
"तुम जानती हो, रेइको," मैंने कहा।
"यह क्या है?"
"तुम्हें फिर से एक प्रेमी बना लेना चाहिए। तुम बहुत शानदार हो। यह बहुत बड़ी बर्बादी है।"
"ठीक है, मैं इस बारे में सोचूंगी," उसने कहा। "लेकिन मुझे आश्चर्य है कि क्या असाहिकावा में लोग प्रेमी वगैरह रखते हैं।"
कुछ मिनट बाद मेरा लिंग कड़ा हो गया और मैं फिर से उसके अंदर चला गया। रेइको ने अपनी सांस रोक ली और मेरे नीचे छटपटाने लगी। मैंने

धीरे-धीरे और शांति से अपनी बाहों में उसे पकड़े हुए आगे बढ़ना शुरू किया और हम बातें करने लगे। इस तरह बातें करना बहुत अच्छा लगा। अगर मैं कोई मज़ेदार बात कह देता और वह हंसने लगती, तो मेरे लिंग में सिहरन दौड़ जाती। हम काफी देर तक एक-दूसरे को इसी तरह पकड़े रहे।
"ओह, यह तो बहुत ही शानदार लग रहा है!" रेइको ने कहा।
मैंने कहा, "स्थानांतरण भी बुरा नहीं है।"

"आगे बढ़ें, इसे आजमाएं।"
मैंने उसके कूल्हों को ऊपर उठाया और जितना हो सके अंदर तक चला गया, फिर गोलाकार पैटर्न में हिलने की अनुभूति का आनंद लिया, और जब मुझे इसका पूरा आनंद मिल गया, तो मैंने खुद को स्खलित होने दिया।

उस रात हमने कुल चार बार एक-दूसरे के साथ शारीरिक संबंध बनाए। हर बार के अंत में, रेइको मेरी बाहों में थोड़ी कांपती हुई, आंखें बंद करके लेटी रहती और एक लंबी आह भरती।
"मुझे अब कभी ऐसा नहीं करना पड़ेगा," रेइको ने कहा, "पूरी जिंदगी में। ओह, कृपया, वातानाबे, मुझे बता दो कि यह सच है। मुझे बता दो कि अब मैं आराम कर सकती हूँ क्योंकि मैंने जीवन भर के लिए काफी कुछ कर लिया है।"
मैंने कहा, "यह बात कोई नहीं बता सकता। इसे जानने का कोई तरीका ही नहीं है।"
मैंने रेइको को समझाने की कोशिश की कि हवाई जहाज से जाना तेज और आसान होगा, लेकिन उसने असाहिकावा जाने के लिए ट्रेन पर ही

जोर दिया।
“मुझे होक्काइडो जाने वाली फेरी पसंद है। और मुझे हवाई यात्रा करने की कोई इच्छा नहीं है,” उसने कहा। मैं उसके साथ उएनो स्टेशन तक गया। उसने अपना गिटार उठाया हुआ था और मैंने उसका सूटकेस। हम प्लेटफार्म पर एक बेंच पर बैठकर ट्रेन के आने का इंतजार करने लगे। रेइको ने वही ट्वीड जैकेट और सफेद पतलून पहनी हुई थी जो उसने टोक्यो पहुंचने पर पहनी थी।
"क्या आपको सच में लगता है कि असाहिकावा इतनी बुरी जगह नहीं है?" उसने पूछा।
"यह एक अच्छा शहर है। मैं जल्द ही आपसे मिलने वहाँ आऊँगा।"
"वास्तव में?"
मैंने सिर हिलाया। "और मैं आपको पत्र लिखूंगा।"
"मुझे आपके पत्र बहुत पसंद हैं। नाओको ने आपके भेजे हुए सारे पत्र जला दिए। और वे वाकई बहुत अच्छे पत्र थे!"
मैंने कहा, "पत्र तो बस कागज़ के टुकड़े होते हैं। उन्हें जला दो, तो जो तुम्हारे दिल में रहेगा वो रहेगा; उन्हें संभाल कर रखो, तो जो तुम्हारे दिल में रहेगा वो रहेगा।"
जो गायब हो जाएगा, वह गायब हो जाएगा।
"तुम्हें पता है, वातानाबे,"
मैं असाहिकावा में अकेला हूँ। इसलिए मुझे पत्र जरूर लिखना। जब भी मैं तुम्हारे पत्र पढ़ता हूँ, मुझे ऐसा लगता है जैसे तुम मेरे ठीक बगल में हो।
"अगर आप यही चाहते हैं, तो मैं हर समय लिखूंगा। लेकिन चिंता मत करो। मुझे 349 पता है।"

तुम: तुम जहाँ भी जाओगे, अच्छा करोगे।

"और एक और बात। मुझे ऐसा लगता है जैसे मेरे अंदर कुछ फंसा हुआ है। क्या यह मेरी कल्पना हो सकती है?"
"बस एक धुंधली सी याद," मैंने कहा और मुस्कुरा दी। रीको भी मुस्कुराई।
"मुझे मत भूलना," उसने कहा।
मैंने कहा, "मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूंगा। कभी नहीं।"
"हो सकता है हम फिर कभी न मिलें, लेकिन मैं जहां भी जाऊं, मैं हमेशा तुम्हें और नाओको को याद रखूंगा।"
मैंने देखा कि वह रो रही थी। देखते ही देखते मैं उसे चूमने लगा। प्लेटफार्म पर खड़े दूसरे लोग हमें घूर रहे थे, लेकिन मुझे अब इन सब बातों की परवाह नहीं थी। हम दोनों ज़िंदा थे। और हमें बस यही सोचना था कि हमें जीना है।
ट्रेन में चढ़ते हुए रेइको ने मुझसे कहा, "खुश रहो। मैंने तुम्हें सारी सलाह दे दी है। अब मेरे पास कहने को कुछ नहीं बचा है। बस खुश रहो। मेरी और नाओको की सलाह को मिलाकर अपने लिए इस्तेमाल करो।"
हमने एक पल के लिए हाथ थामे और फिर अलग हो गए।

मैंने मिदोरी को फोन किया।
मैंने कहा, "मुझे तुमसे बात करनी है। मुझे तुमसे लाखों बातें करनी हैं। हमें लाखों बातें करनी हैं। इस दुनिया में मुझे बस तुम चाहिए। मैं तुमसे मिलना और बात करना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि हम दोनों सब कुछ नए सिरे से शुरू करें।"
मिडोरी ने एक लंबी, बेहद खामोशी के साथ जवाब दिया - ऐसी खामोशी जैसे दुनिया भर की धुंधली बारिश दुनिया के सभी नए कटे हुए लॉन पर गिर रही हो। मैंने अपना माथा शीशे से टिकाया, आँखें बंद कीं और

इंतज़ार किया।
अंत में, मिदोरी की शांत आवाज ने सन्नाटा तोड़ा: "तुम अब कहाँ हो?"
मैं अब कहाँ था?
रिसीवर को कसकर पकड़े हुए, मैंने अपना सिर उठाया और फोन बूथ के उस पार देखने के लिए मुड़ा। मैं अब कहाँ था? मुझे कोई अंदाज़ा नहीं था। बिलकुल भी नहीं। यह जगह कहाँ थी? मेरी आँखों के सामने बस अनगिनत लोगों की आकृतियाँ कौंध रही थीं जो कहीं भी नहीं जा रहे थे। बार-बार मैं इस जगह के ठीक बीचोंबीच से मिदोरी को पुकार रहा था, जो कि 350 नंबर का स्थान था।

जगह।
351

अनुवादक की टिप्पणी

1987 में जब हारुकी मुराकामी ने नॉर्वेजियन वुड प्रकाशित की, तो उनकी सामान्य छह अंकों की पाठक संख्या अचानक लाखों में पहुँच जाने पर वे स्तब्ध और निराश हो गए। प्रसिद्धि एक बात थी, सुपरस्टारडम दूसरी, और इस पागलपन ने उन्हें यूरोप की गुमनामी में वापस भेज दिया (उन्होंने यह पुस्तक ग्रीस और इटली में लिखी थी)। 1991 में वे संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए। 1995 तक वे जापान में रहने के लिए तैयार नहीं थे, लेकिन पूरी तरह से अपनी शर्तों पर, एक बेस्टसेलिंग जापानी लेखक से अपेक्षित टेलीविजन प्रस्तुतियों और पेशेवर उपदेशों के बिना।
नॉर्वेजियन वुड अभी भी मुराकामी की एकमात्र ऐसी किताब है जिसे

जापान में "हर किसी" ने पढ़ा है, लेकिन मुराकामी के युवा पाठक उनके साथ बड़े हुए हैं क्योंकि उन्होंने जापान के काले अतीत (द विंड-अप बर्ड क्रॉनिकल में) और 1995 के कोबे भूकंप और अंडरग्राउंड में टोक्यो सबवे पर सारिन गैस हमले के दोहरे झटके से जूझना शुरू कर दिया है।
रहस्यमयी भेड़ों और गायब होते हाथियों पर आधारित उनकी शांत, खंडित, अमेरिकी शैली की कहानियों के आदी मुराकामी के कुछ शुरुआती पाठकों को यह देखकर निराशा हुई कि नॉर्वेजियन वुड "महज" एक प्रेम कहानी प्रतीत होती है - और वह भी उस तरह के जापानी मुख्यधारा के आत्मकथात्मक उपन्यास से मिलती-जुलती है जिसे मुराकामी ने 1979 में अपनी रोमांचक शुरुआत के बाद से ही अस्वीकार कर दिया था। जैसा कि मुराकामी स्वयं कहते हैं, "मेरे कई पाठकों ने सोचा कि नॉर्वेजियन वुड मेरे लिए एक पीछे हटना था, उन मूल्यों के साथ विश्वासघात था जिनके लिए मेरी रचनाएँ तब तक जानी जाती थीं। हालाँकि, मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से, यह बिल्कुल विपरीत था: यह एक रोमांच था, एक चुनौती थी। मैंने कभी उस तरह की सीधी-सादी कहानी नहीं लिखी थी, और मैं खुद को परखना चाहता था। मैंने नॉर्वेजियन वुड की पृष्ठभूमि 1960 के दशक के उत्तरार्ध में रखी। मैंने नायक के विश्वविद्यालय के वातावरण और दैनिक जीवन के विवरण अपने छात्र जीवन से लिए। परिणामस्वरूप, कई लोग इसे आत्मकथात्मक उपन्यास मानते हैं, लेकिन वास्तव में यह 352

यह बिल्कुल भी आत्मकथात्मक नहीं है। मेरा अपना बचपन उनके बचपन की तुलना में कहीं कम नाटकीय और कहीं अधिक उबाऊ था। अगर मैंने अपने जीवन की सच्चाई को अक्षरशः लिखा होता, तो उपन्यास 15 पृष्ठों से अधिक लंबा नहीं होता।"
लेखक भले ही इसे आत्मकथात्मक होने का मजाक उड़ाकर टाल दें,

लेकिन यह पुस्तक आत्मकथा जैसी ही लगती है; यह बौद्धिक खेलों और अलौकिक घटनाओं के बजाय वास्तविक अनुभवों को प्राथमिकता देती है, और वास्तव में यह हमें उनके अन्य उपन्यासों की तुलना में कहीं अधिक सीधे तरीके से बताती है कि युवा हारुकी मुराकामी का जीवन कैसा था जब वह पहली बार कोबे से टोक्यो आए थे।

उस समय, यानी 1968-70 के वर्षों में, जो उपन्यास का अधिकांश भाग समाहित करते हैं, मुराकामी का अनुभव छात्र आंदोलन की उथल-पुथल के बीच अपनी जीवन संगिनी, अपनी पत्नी योको से मिलने के इर्द-गिर्द घूमता रहा। लेखक सही कहते हैं: इसमें कल्पना का भरपूर समावेश है, व्यंग्य और हास्य का भी, और प्रतीकों का भी, जिन्हें मुराकामी के नियमित पाठक तुरंत पहचान लेंगे। यह किसी भी तरह से "महज" एक प्रेम कहानी नहीं है।

विदेश में मुराकामी के उत्साही पाठकों को अल्फ्रेड बिर्नबाम द्वारा किए गए नॉर्वेजियन वुड के पहले अनुवाद की प्रतियां मिल गई होंगी, जो जापान में वितरण के लिए तैयार किया गया था और जिसके पीछे व्याकरण संबंधी नोट्स दिए गए थे, ताकि छात्र अंग्रेजी की पेचीदगियों से जूझते हुए भी अपने पसंदीदा लेखक का आनंद ले सकें। हालांकि यह उपन्यास प्रकाशित हो चुका है

फ्रेंच, इतालवी, चीनी, कोरियाई, नॉर्वेजियन और हिब्रू भाषाओं में उपलब्ध यह संस्करण पहला अंग्रेजी अनुवाद है जिसे मुराकामी ने जापान के बाहर प्रकाशन के लिए अधिकृत किया है।

जे रूबिन

353

sjeet